॥ श्रीः ॥

अथ

वैश्यकुलभूषण

और

इतिहासकल्पद्रुम
माहेश्वरीकुलशुद्धदर्पण

और

साढीबारह व चौरासी न्यातका वर्णन

ताहूं
शहा शिवकरण रामरतन दरक माहेश्वरी
मारवाड़ी मूंडवेवाला इन्दोर निवासीनें

बनायकर
" लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर " छापखाना,
कल्याण-(मुंबई) में छापा.

द्वितीयावृत्ति.
संवत् १९५७, ता० २५ । २ । ९९.

॥ श्रीः ॥

प्रार्थना.

यह ग्रन्थ विक्रम सम्वत १८९८ शके १७६३ से आजपर्यन्त संग्रहकर छंद बंद व वार्तिक बनायाहै और आ.क्ट २५ सन १८६७ के नियमानुसार रजीष्टरी कराके सर्वहक्क हमारे स्वाधीन रक्खाहै इस्के सोध करनेमें बहोतही परीश्रम व अधिक द्रव्य व्यय हुवाहै इस लिये सर्व भूमंडलके भ्रातृगणोंसें प्रार्थना है कि इस्कों व इस्मेंसें कोईभी आश्यय लेकर छापने छपवानेका इरादा न करें जरा सरकारी कायदेका लिहाज रक्खें और सूक्ष्म लोभ वश्य हो अधिक नुकसान न उठावें.

आपका कृपाभिलाषी

लहा शिवकरण रामरतन दरक
माहेश्वरी मारवाड़ी मूंडवेवाला
रामसागर छापखाना
इन्दोर.

Shiwakaran Ramratan Dark,
MAHESWARI MARWARI MUNDVA
RAMSAGAR PRESS,
INDORE CITY.

॥ श्रीः ॥

विज्ञापन.

विदितहो के यह वैश्यकुल भूषण व श्रीश्रीमाहेस्वरी जाती कुल धर्मरक्षक ग्रंथ (इतिहास कलपद्रुम माहेश्वरी कुल शुद्ध दर्पण नामक) जिस्का खुल्लासा विशेष सूचना पत्र में लिखाहे ओर सम्वत (१८९८) सें आजपर्यंत जो कुछ संग्रह हुवा उस्मेंसें किंचित वर्णन किया है. इस्का सौधकरनेमें प्रवलपरिश्रम व आयू द्रव्य व्यय हुवा सोतो हे मित्र-गणों जब आप इसें पूर्णतासे वाचोगे जब विदित होगा परतूं हमको एक वडा संदेहहै कि इस मेरे तुच्छबुद्धिके वनायेहुये ग्रंथकों कौनतो वाचेगा और किस्कों ज्ञातीके बंदोवस्तका फिकर व किस्कों अवकाश्यहै इसी सबबसें अतिसूक्ष्म तत्वसारही वर्णनकर छापाहै बाकी १०००० दस-हजार ग्रंथ पुन्ह शेष मोजूदहै.

यही तत्वसारदर्पणमेंभी ज्ञातीप्रबंद्धका सुगममार्ग दर्पणवतही दिखा दिया है और प्रथमावृत्ति विक्रम संवत १९५० भाद्र. शु. ५ कों ७५० पुस्तक छाप श्रीश्री १०५ श्रीश्री माहेश्वरी ज्ञातके अर्पणकी पुन्ह सुधारणासह द्वितियावृत्ति छाप नजरगुदराय सविनय प्रार्थना करताहूं के मुझे अपना अल्पबुद्धि तौतलासा बालक समझ ममकृतग्रंथकों महरवानहो दयालुतासें बाच पढ श्रवण मनन कर वर्तनूकपें लावें जिस्सें हमारा ५० वर्षका किया हुवा प्रवलपरिश्रम सुफलहो और ज्ञाती में भी भूलकर किसीतरहका उलटा पुलटी सगाई सगपण दत्तपूत्रादि वखेड़ा पड़नेका भ्रमनरहे यह धर्म मर्य्यादा रूपी सड़क व पुल कायम रख स्वीकारकर वर्तनूपकपें लावे. यह आशाहै.

आपका अनुचर चर्णरजवंछिक.

सेढ शिवकरण रामरतन दरक माहेश्वरी मारवाड़ी मूंडवेवाला.

श्रीरामसागरछापखाना इन्दोर.

॥ श्रीः ॥

विशेष सूचना.

इति हासकल्पद्रुम माहेश्वरी कुलशुद्धदर्पण व वैश्यकुलभूषण।

श्रीमाहेश्वरी प्रियवर महाशय मित्रों अहिंशक (शुद्ध) धर्मधारिक जाती भाइयों जरा इधर चित देकर अर्ज श्रवण करोके (भवसमूद्र. की अधार्मिक अथाहधाराकों टालनेके लिये प्रबंद्धरूपी पाल बाँधो- अवल तो अपनी ७२ खांपे थी और प्रचारभी थोडीसी भूमीके गोलमें था अब ईश्वर कृपासे महेश्वरी कुलकलपतरुकी शाखा बढकर हजारों कोसोंके फेरमें फैल गये और बौंकभी ९८९ बोलने लग गये हैं यहाँ- तक भ्रम खड़ा हो गया कि किस्के कौन कौन भाई है और किनसे सगपन करना व किस्का पूत्र दत्तक लेना जबके च्यार साख टालके सगपन किया और खुद अपने भाइयोंके नामकी मालूम न होकर आपसमें सगपन हो विवाह हो गया तो वो कैसा अधर्म है कि उस अधर्मियोंका बिलकुल मेदनीहीं भार नहिं सह सके इधर धनवान अपू त्र है और निर्धन बहु पूत्र है और आपसमें भाई है पर अपने भाइ- योंकी बौलती फलियोंसे ना वाकिफ है तो धनवान अपूत्र ना औलाद जावे तब धन व कुल दोनोंका क्षय होना उधरनिर्धन बहु पूत्र बगैर धन कुँवारे रहकर स्वर्गवासी होवे वो ऐसें कुल का नाश होना वा कुँवार रहनेसें विना स्त्रिके कामांध होकर नीच स्त्रियोंसें व्यवहार कर कुल डुबोना ऐसी २ अपनी जातमें कितनी बडी हानियें होतीहै इस हानीका मिटना इतनांहीं जाणनेंसें हो सक्ता है के केवल अपनेमेंसें कौन कौन फलियें फूटकर नाम पृथक् पृथक् बोले जाते है और हम कौन कौन भाई हैं तो दत्तपूत्र (खोले लेनेमें) वा सगपनमें सुभीता व समझना आसानींसें हो जायगा ऐसा यह अति अलभ्य चमत्कारिक

ग्रंथ बना है कि इस्में सृष्टिकी रचना सूर्यवंश चंद्रवंशकी पीढियोंसे लगाय कर अपनी आद उत्पत्ती पेढ, वंश माता, गुरु, गोत्र, भैरव, देवी, सती, प्रवर, वेद शाखा, न्यातगुरी ७२ खाँप ९८९ नख व भरतखंडके कुलमाहाजन जातीसंख्याका खुलासा व १२॥ न्यात व ८४ न्यात व कन्या, पूत्र, सिक्षा, व. दत्तपूत्र ८५ प्रस्न. व. भाई भाइयोंका जुदे होकर हिस्साबंट ९८ प्रस्न व अपूत्रणी विधवा स्त्रियोंका हक्क. ७ प्रस्न व भाई भाई सामिल रहनेका नतीजा प्रस्न व छव न्यातके ब्राह्मणोंकी न्यात गुरी (पुन्ह) महेश्वरी ७२ खाँप मेंसें जुदे होकर जैसें धाकड ३२ गोत्र पोकरा १४ गोत्र अर्धविस्वा १० इत्यादि अनेकबातें वर्णन कियाहुवा (इतिहास कल्पद्रुम माहेश्वरी कुलशुद्ध दर्पण व वैश्यकुल भूषण साढीबारह न्यातका कल्पतरु हमने बनाकर छापके प्रथमावृत्ति ७५० पुस्तकभी गाँव गाँव में श्रीमहेश्वरी ज्ञातीकेनजराणेमें वगेरमूल्य भेजीगईहै और बहोतसे ग्रामोंमें स्वीकारहोकर इस ग्रंथानुसार प्रबंद्धभी बाँधागया वो शुरूहै अब सुधारणा सहित द्वितियावृति छापकरतैयारहै और यहनयम बाँधा गयाहै कि चहारमहिस्से तो हरआवृती में श्रीमहेश्वरी ज्ञातीके नजराणार्थ है व तीनहिस्से विक्रियार्थ है मूल्यही अल्प केवल १॥ डेडरुपया. व डाकव्यय जुदा रक्खागयाहै.

अब सविनय प्रार्थनाहै कि सर्वमहाशय इस कुलशुद्ध दर्पणकों दृष्टि गौचर करके जरा ह्रदेस्थानमें धारन करहीलेवें आसा है कि जो अगर इस अमूल्य अवषधी कों ह्रदयस्थानमें धारण करलेवोगे तो फिर अधार्मिक प्रमत्त भयकारी धर्म नाशिक रोग दूरही रहेगा परंतु एक अद्भुत दिनोदिन भय उत्पन्न होताहै कि कलिप्रवाहकी प्रवल प्रचंड धारा होकर धर्म कुल जाती नष्ट करने के हितार्थ बढकर धर्म लुप्त किये जातीहै जोअगर ज्ञातीप्रबंद्ध कार्यमें गाफिल रहोगेतो फिर इस असाध्य रोगकी दवा नहींहै ॥ क्योंके जिसराजकुलीमेंसें अपनी उत्प-

त्तिहै उसीमेंसें ३६ वर्णोत्पत्तिहै परंतु वगेरप्रबंद्ध आपसमें कुरीतियों औरकुसगपनादि चालचलन होकर वहलोग अंतजसमान नीचक्रिया धारिक होगये तो वगेर प्रबंध एसी हानीहोना कुछ असंभव बातनहिंहै सो हेमित्रगणों जरा प्रथमही चेतकर कुल शुद्ध धर्म धारणरूपी नवका की सवारी जल्दकीजिये फिरकोईभीप्रयत्न नहिं है जैसें राजनीती में लिखा है कि ।

निर्वाणदीपे किम् तेल दानम् चोरेगते वा किम् सावधानम्
वयो गते किम्वनिता विलास पयोगतेकिम् खलुसेतुबंध ॥ १ ॥

भावार्थ दीपकबुझे वादतेल पूरना चौरीहोनेबाद सावधानी आयु-पूर्णहो वृद्धाऽवस्थामें स्त्रियोंसें आनंदकीइच्छा नदीपूरआनेपर पुलबांधनेकाविचार सर्वथा मिथ्या (अफल) है. फिरकुछप्रयत्न चलतानहीं. इसवास्ते भ्रमांधकार निवाणार्थ दर्पणवत यह अमूल्य पुस्तक एक एक जरूर मंगवालीजिये फक्त १॥ रुपया कुछ बडीचीज नहिं है केवल कागज पुट्टेकी कीमतहै यह पुस्तक ५० वर्षमें संग्रहहुवाहै और कुलउम्मर व द्रव्य इसीपरीश्रममें व्ययकियाहै सो हमारीमहिनततो आप प्रियमित्रों इसे स्वीकार कर जाती सुधारणा करोगे तबही हमारे प्रबल परिश्रमका साफल्य मानेंगे.

आपका चर्णरजवंछिक.

सहा शिवकरण रामरतन दरक मूंडवे वाला

श्रीरामसागर छापखाना इन्दोरसहर.

SHIWKARAN RAMRATAN DARAK

INDORE.

ॐ ३

अथ इतिहास कल्पद्रुममाहेश्वरी कुलशुद्धदर्पण सहाशिवकरण रामरतन दरक माहेश्वरी मारवाड़ीमूंडवेवालाकृत लिख्यते.

प्रथम रचनाका वृतांत आदि प्रनालिका वर्णन करताहूं तो विषमय (आचर्य) है कि ग्रंथानुसार अनेक भेदाभेद पाया जाता है. कहीं लिखा है कि पृथ्वि और प्रजा अनादीसिद्ध है. और कहीं लिखा है कि. ब्रह्मतेंपूर्ष पूर्षतें प्रकृति प्रकृतितें महतत्त्व महतत्त्वतें अहंकार अहंकारतें तीनगुण तीनगुणतें पांचतत्व पांचतत्वतें संपूर्ण रचना ऐसे अनंत भेदसे अनेकबातें ग्रंथोंमें पृथक २ लिखी है. पर इस समयके मान्य क्षत्रियोंकी उत्पत्ति श्रीमद्भाग्वतके नवमें स्कंधमें सूर्यवंश व चंद्रवंशकी पीढियेंभी लिखी है. और यहां क्षत्रियोंकाही इतिहास बहोत लोगोंके मान्य चाहिये था वो संक्षेपमात्र वर्णन किया है. प्रथम आद आदतें जुगाद जुगादतें अंड अंडतें वैराट वैराटतें नारायण नारायणतें नाभ नाभतें कमल कँमलतें ब्रह्मा ब्रह्माके दस पूत्र चक्रमें देखो.

नाम	मरीची १	अत्रीह २	अंगीरा ३	रुचि ४	पुलह ५
नाम	पुलिस्त ६	दक्ष ७	भृगु ८	वसिष्ठ ९	नारद १०

इन दसपुत्रोंकी जुदी २ प्रनालिका चली सो तो ग्रंथोंमे जगह २ लिखा है परंतु यहां केवल सूर्य और चंद्रवंशकी प्रनालिकाका प्रयोजन है. सो यही लिखा है.

प्रथम ब्रह्मा ताके पुत्र मरूची १ मरूचीतें कश्यप कश्यपतें सूर्य ता सूर्यतें सूर्यवंश कहलाये और ब्रह्माके द्वितीयपुत्र अत्रीह २ अत्रीहतें सोम (चन्द्र) ता चन्द्रतें चन्द्रवंश कहलाया.

पुन्हःसूर्य वंशकाविस्तार इस के आगे चक्रमें देखो श्रीब्रह्माजीसें श्रीरामचन्द्रतक ६३ पीढी हुई.

(अथसूर्यवंशपीढियांकोष्टक)

१	ब्रह्मा	१४	शावस्ति	२७	हर्यस्व	४०	वाहुक	५३	अस्मक
२	मरीच	१५	ब्रह्मदस्व	२८	अरुण	४१	सगर	५४	मूलक
३	कश्यप	१६	द्वंद्धमार	२९	त्रिवंदन	४२	असमंजस	५५	दशरथ
४	सूर्य	१७	दढास्व	३०	सत्यवृत	४३	अंसुमान	५६	इड़वड़
५	वैवस्वतमनू	१८	हयास्व	३१	तृसकू	४४	दलीप	५७	विस्वसह
६	इक्ष्वाकू	१९	निकुंभ	३२	हरिश्चन्द्र	४५	भागीरथ	५८	षड्वांग
७	विकृती	२०	वर्हणास्व	३३	रोहित	४६	श्रुत	५९	दीर्घवाहु
८	कुकुस्थ	२१	कृश्यस्व	३४	हरित	४७	नाभ	६०	रघू
९	अनेन	२२	शैनजित	३५	चंप	४८	सिंधुदीप	६१	अज
१०	प्रिथू	२३	युवनास्व	३६	देव	४९	अयुतायु	६२	दशरथ
११	विस्वरंध्री	२४	मानधाता	३७	विजय	५०	ह्रतुवर्ण	६३	श्रीरामचन्द्र
१२	चन्द्र	२५	पुरुकुत्स	३८	रुरक	५१	सर्वकाम		
१३	युवनाश	२६	अनरण्य	३९	ब्रक	५२	सुदास		

ब्राह्मणक्षत्रियोंकासमग्रतावर्णन ॥

देखनाचाहियेके आगू ब्राह्मणोंसें क्षत्रि और क्षत्रियोंसें ब्राह्मण होजातेथे और भोजन विवाहादि परस्पर होताथा यह प्रनालिका बहोतदिनोंसें प्रचलितथी पीछे जमदग्न ऋषीके पूत्र परसरामजी अपने पिताकी आज्ञानुसार सहश्रवाहुसें युद्धकर उस्कों निपातकीया और कामधेनु गऊ पीछीलाये और यहप्रतज्ञा धारणकरी के इस पृथ्विपर क्षत्रियोंका अवींजकरदूंगा (वीजनास) और एकसहश्रचक्र फिरके लगाऊंगा यह विचार फरसाउठाय इकीसवेर पृथ्वि निपातकरी माहाघोर युद्ध करतेरहे उनकीधाक (धमकी) सें स्त्रियोंके गर्भ निपात होजातेथे तापीछे सूर्यवंशमें दशरथी रघुकुलनायक श्रीरामचंद्रजीसें परसरामजी युद्धकरनेलगे प्रथम नैत्रयुद्धकिया तवरामचंद्रजीनें परसरामजीके नेत्रोंका संपूर्णबल हरन कर असक्तकरदिया फिर फरसा धनुषसें भिडाया तो धनुष और फरसा भिडतेही लोहचुंबकवत परसरामजीके संपूर्ण अस्त्र शस्त्र शरीरादिका वल हरणकरलिया जब परसरामजी

निर्वलहोके श्रीरामचंद्रजीकों आसिर्वाद देकर तपस्याकरनेकों वनमें चले गये पीछे रामचंद्रजी रावणादिकोंकूं मारकर बहौत वर्षतक निष्कंटक राज्य किया.

अथ श्रीरामचंद्रजीके पुत्र पौत्र वर्णन.

श्रीरामचंद्रतें कुस्य कुस्यतें अतिथि ० याप्रकारचक्रमेंदेखो.

६३	श्रीरामचंद्र	७५	वज्रनाभ	८७	महस्थान	९९	वीर	१११	वद्री
६४	कुश्य	७६	स्वगण	८८	विस्ववाहव	१००	बृहदस्व	११२	कृतजय
६५	अतिथि	७७	विघ्रती	८९	प्रसेनजीत	१०१	भानुमान्य	११३	रणजय
६६	निषध	७८	हिरण्यनाभ	९०	तक्षिक	१०२	प्रतिकास्य	११४	संजय
६७	नभ	७९	ध्रवसंधि	९१	ब्रहद्वल	१०३	सुप्रतिक	११५	सक्य
६८	पुंडरीक	८०	सुदर्शण	९२	ब्रहदइण	१०४	मरुदेव	११६	श्रुद्वोद
६९	क्षेमधन्या	८१	अग्निवर्ण	९३	उपाक्रिय	१०५	सुनक्षत्र	११७	लागल
७०	देवानिक	८२	सिघ्र	९४	वत्सवृद्ध	१०६	पुष्कर	११८	प्रसेनजीत
७१	अहनी	८३	मरुक	९५	अतिव्योम	१०७	अंतरिक्ष	११९	क्षुद्रक
७२	पारिपात्र	८४	प्रसुश्रुत	९६	भानुः	१०८	सुनपा	१२०	रुणक
७३	वलस्थल	८५	संधिः	९७	द्विवावाक	१०९	अमित्रजित	१२१	सुरथ
७४	अर्कसंभव	८६	अगमर्षण	९८	सहदेव	११०	बृहदभानु	१२२	सुमित्र

यहांतक सूर्यवंशी सुमित्रतक अयोध्यामें राज्य करतेरहे रघुकुलराजा सूर्यवंशी धर्मनीतिपालक और प्रतापिक हुये इनके राज्यमें अनेक तट सागर कूप नदी पुलगउरक्ष्याप्रतिबंध इत्यादि अनेकधर्मनीतिका चालचलन रहकर संपूर्ण रय्यत आनंदयुत रहती और राजाबोकों आसीर्वाद दिये करती.

अथ चंद्र बंसकी पीढियाँ कोष्टक

१	ब्रह्मा	५	पुरषा	९	यदु	१३	शत्रजित	१७	प्रद्युम्न
२	अत्रीह	६	आयु	१०	कोशठी	१४	सूरसेन	१८	अनिरुद्ध
३	चंद्रमा	७	नहूस	११	बृजनिवान	१५	वसुदेव	१९	वज्रनाभ
४	बुध	८	ययाती	१२	उसेक	१६	श्रीकृष्ण		

यहाँतक चंद्रवंस द्वारकाराज्य रहा.

इतिहास.

इसीतरह चंद्रवंसियोंनें भी बलप्राक्रमसें अपनें २ स्वस्थानोंपें राज्य करते रहे. तदनंतर कोई ऐसा दैव चक्र संपूर्ण प्रथ्वीपर हुवा. जिस वखत क्षत्रिः मात्र क्षत्रत्वधर्मकों छोड करके अशस्त्र (शस्त्ररहित) बौधधर्मधारिक (जैनी) होकर वेदोक्तधर्ममें हिंसा मानणें लगे. मख आदिक संपूर्णक्रियाकर्मकांडदानादिक बंधकरके ब्राह्मणोंकों दुःखदेनें लगगये. तापीछे आभूके पूर्वकौंणकी कोई किंन्नरा (गुफा) में बहुत ब्राह्मण इखटे होकर रहणें लगे वहाँभी कोईदिनोबादजेनियोंनें हल्ला मचाया तब वसीष्टऋषीनें वह जो क्षत्रिःबौधहोगयेथे उनमेंसें ४ च्यार क्षत्रिवडे बलवानथे वह पहले वसीष्टकेही सिष्य थे. परंतू बौधहोगयेथे. जिनकों पुन्ह आदेसउपदेस देके. पीछे वेदोक्तधर्ममें प्रवर्त कीयेऔर अग्निकुंडमेंसें निकालके वेदौपनीषदोंका मंत्र देके पुनर्संष्कार पुनर्जन्म ऐसा अग्निके कुंडमेंसें निकालके शुद्धकीये और कितेक लोगोंकों तपतमुद्रा और श्रावणी कर्मकरिके यज्ञोपवित्रदे उनका बौधमत निवार्ण किया पुन्ह उन क्षत्रियोंकों अस्त्रशस्त्रविद्या बहुधा प्रकार सिखायके क्षत्रत्वधर्मधारण करवाया और अपनी रक्षाके निमित उनकों वहाँ रक्खे जहाँके परगनेका नाम अबइनदिनोंमें गोढवाड़देस और गांमकानाम नाडोलाई कहतेहैं. और आभूके पहाडसें पूर्वउत्तर कोंनपे है. और च्यार क्षत्रियोंकों पुनर्संस्कार दीया जिनका नाम कोष्टकमें देखो.

चतुर ४ क्षत्रिकोष्टक.

प्रथमजाती	पढार १	चालुक २	परमार ३	चहुवान ४
प्रगटनाम	पडिहार १	सौलंखी २	पंवार ३	चहुवान ४

यह च्यार जात ब्राह्मणोंनें इन ४क्षत्रियोंकों देकर च्यार जातके क्षत्रि ठहराये तदनंतरभी इस ब्राह्मण क्षत्रियोंके आपसमें रोटीव्यवहार दुतरफा

और बेटीविवहार इकतरफा हौतारहा रोटी ब्राह्मणके हातकी क्षत्रि और क्षत्रिके हातकी ब्राह्मण खाते और बेटी क्षत्रिकी ब्राह्मण लेते परंतू ब्रह्माण बेटी क्षत्रिकूं नहिं देते माहाभारतमें जगें जगें लिखाहैके पांडवोंके यहाँ दुर्वासा आदिक ऋषी भौजन कीया करतेथे तदनंतर विक्रमांके समयमें कालिदास नाम पंडितराज कन्यासें पाणीग्रहण कीयाथा. पीछे इसदेसमें यवनोंका प्रचार होनेसें क्षत्रियोंका आचार और आचरण बराबर नहिं रहणेसें सामिल भौजन और विवाहादि सब व्यवहार ब्राह्मोंनें अपना जुदा करलिया बस यहाँ इतनाँहीं लिखेंगे कारन तातपर्य हमकूं वैश्योंका लिखणाहै प्रथम इन ब्राह्मणोंमेसें इख्वाक नाम क्षत्रि राजा प्रथ्विपालक हुवा उस्के प्रतापकातोम्हें कहांतक वर्णन करूं कारन ग्रंथबढजावे जिस्सें संक्षेपमात्रही वर्णन कीयाहै इख्वाकूके बंसमें एक पुरष वैश्य धन्वा बडा विवेकीऔर चतुर संसारव्यवहारमें प्रवीण और राज्य कार्यमें विचीक्षण स्वामींसेवामें तत्पर महाधर्मग्य एसा प्रगटहुवा जिस पुरषकों राजानें महाजनपददेके अपने घरका काम सुपरतकर दिया उस पुरषकी प्रनालिकाके लौग इख्वाकबंसी वैश्य कहलाये गये ता पीछे वैसंपायन और नंद आदनेंभी वैश्यपद पाया पीछे अग्रसेंनसें अगरवालेभये पीछे क्षत्रियोंसें वैश्यहौतेही गये जैसेके.

महेश्वरी १ औसवाल २ चित्रवाल ३ श्रीमाल ४ श्रीश्रीमाल ५ पौरवाल ६ वघेरवाल ७ पल्लीवाल ८ पौकरा ९ खटौडा १० टींटौडा ११ खँडेलवाल १२ इत्यादि ये तो सारीही बारह न्यात माहाजन और इससिवाय और भीअनेक माहाजन चौरासी जातके कहलाये गये अब म्हेंयहाँ संक्षेपमात्र लिखताहूंके इस भरतखंडमें तो अनेक जातीके महाजन हौवेंगे परंतू २२० दोसो बीस तरहके माहाजनमेनें सुनें और मिले जिनजिनजातियोंका नाम समूहछंदबंदवर्णन करताहूँ अतिविस्तारवर्णन करनेसें ग्रंथ बढकरबडाहौजाय तो फेरकौन बाचे इसहेतुसें

मुख्यखुलासा महेश्वरीयोंकाही कीयाहै और समूहनाम सर्वजातीके महाजनौंका लिखते हैं.

अथ दिल्लीमंडलके संपूर्ण जातिके महाजनौंकी संख्या

दोहा ॥ प्रथमवैश्यइख्वाकपुनि वैसंपायनजाँन ॥ फिर प्रजंन्नके नंद-नव अउरअनेकप्रवाँन ॥ १ ॥ केइविक्रम पीछे भये० क्षत्रतछाडवईस ॥ सोउआपसमेंफूटिके उभयपक्षकररीस ॥ २ ॥ कवित्त ॥ सिरीमाल श्री-खंडा कुरंदवाल कठनेरा सिरीश्रिमाल श्रीखंडः करंट वालबानिये ॥ कारेगराया खत्री आरोडा खँडेलवाल खेमवाल खंडवस्त खेडवालजा-निये ॥ कसर वानी लोईवाल कूसरचाकपोला खरुवा कांकरिया कठाडा कोहले सिरीगौड ठानिये ॥ गौल वाल गंगर वाल गौगल वाड गंगराडा गौलवाला गौलापुरा गींदौड्या मानिये ॥ ३ ॥ ककस्तन कसारा कौनड कौमठी कसूँबीवाल गौनध गौलालढूंसर गौ धराल गनिये ॥ गूजरासिंघाडे गौल गाहोई चुँडेलवाल श्रीगुरुकथाराडीडू बदनौरे ब-निये ॥ चौरडिया गौलराड गाहोई जेसवाल चौराँडिया चक्क चाप भटनेरा भनिये ॥ चक्कड कँदोइया कमाइया तरोडा चाल कसंबे खँडेर धाकड बंभर बरसनिये ॥ ४ ॥ हलदिया तनवार उम्मर अवकथवाल अग्रवाल मेडतवाल मत्तवाल भूँगडवाल भाखूंहूँ ॥ अजमेरा भावसार इंद्रपुरा ओ-सवाल भाकरिया बागरोड बालमींकबाखूहूँ॥बागोला पितादी मटिया मह त्त्या सोरठ्ठवाल पोकरा सहेलवाल विदियादादाखूहूँ॥भाटिया पसाया मो डमाँडलिया वाल रायक पारख पंवाडा बीजाबरगीबिसाखूहूँ ५ बागडि-यालबेचू वेहड्या भवनगे रगोलपुरा राजून्याती अष्ट वौर अंडवाल आनूँ हूँ॥सेतवाल सौरंडिया उस्तवाल उदेपुरा राजपुरा रुस्तगी राजिया सुजा नंहूँ॥अस्तकी अजोधिया अडालिया सौहिलवाल सौरमियाँ सौहितवाल मेवडियामानूं हूँ ॥ जंबूसरा जौधपुरा रतकरा रायकुली अहिछत्ते खडा

यते बहोरियाबखानूंहूँ ॥ ६ ॥ जुईवाल जायलवाल गुठेला गुरवार डूं-
सर चतुरथ चितौड़ा इख्वाकबंसिआदूहे ॥ जालोरा जानोरा डिड-
उम्मर दिल्लीवाल दंसवाल देहीवाल टींटोड़ा सादूहे ॥ चौसका दसौरा
धँवलकोसटी नृसिंघ पुरा दीसावाल नाथचल्ला नागर लाड जादूहे ॥
टगचल्ला पंचम टंटेरिया भटेरासाढ माघदे मलीनघोर माथुरियामादू-
हे ॥ ७ ॥ जोधरा बधेरवाल पदमावति पोरवाल हरसौरा हाकारिया
संगमारसाठेहें ॥ नागिंद्रानरार्णीवाल नाछेला नेकधर्न नागोरी नराया-
नेमा पोकर वालपाठेहे ॥ पल्लीवाल पोहकवाल पोसरा पवारछिया ना-
डिया वोगारवेंस लिंगायत लाठेहें ॥ नरसिया रगोलापुरा नौटिया वप-
छवाल झालराप्रवार हरद हूमड़ हरहाठे हें ॥ ८ ॥ डीडूमहेश्वरी सराव
गीरुबेदबरगी वदवइया वैसंपायन वडगूजरूकाहिये ॥ चातुरवेदीमोड़
नारनगरेसा सुनवानी सोनैया सुखंडरा समोधिया सहिये ॥ सेरिया
सिंहार मुरले माहुरा सुरान माइया बडेलाबरेया भुरला लवार्णां सुल-
हिये ॥ सुरंद्रिया सडोइया सिरोहिया प्रमाका सींपी नवांभरा वेरटिया
भुजपुरे भइये ॥ ९ ॥ दोहा ॥ आनंदे अडूसके सोहिल लोहितवाल ॥
भृंगबागडीबानिये खटवाडेचित्रवाल ॥ १० ॥ इतेवैश्यभ्रतखंडमें सुन-
हमकीयालेख ॥ मालदोयसेबीसकी बाकीरहेवसेख ॥ ११ ॥ मेंश्रवणा
सुनकरकह्यो करनिश्चयनिरधार कहेदरकशिवकरणियों बाकीरहेअ-
पार ॥ १२ ॥ तुच्छबुद्धिकबलगगिनों माहाजनभेदअनेक ॥ नामउ
जागरलिखलिये लखिशिवकरणबसेख ॥ १३ ॥

अथ दिल्लीमंडलके संपूर्ण जातके माहाजन ॥

श्रीमाल	श्रीगुरु	कपोला	कंदोइया	कथार	खंडेलवाल	खतुरी
श्रीश्रीमाल	कठाड़ा	कूसरचा	कमोइया	कारंटवाल	खेडवाल	खंडवस्त
श्रीखंड	कठनेरा	कुरंदवाल	कारेगराया	कसंबे	खेमवाल	खरुवा
श्रीखंडा	कांकरिया	कोहले	कौमठी	कसुंबीवाल	खंडेर	खडायते
श्रीगोड	कखस्तन	कौनड़	कसारा	कसरवानी	खटोड़ा	गोइलवाल

गोलवाल	चित्रवाल	धॅवलकौष्टी	पॅवाडा	भाकरिया	रायकवाल	सौरामिया
गोंगवाल	चाल	नरराया	पोकरा	भाटिया	राजून्याती	सींहार
गंगर वाल	जंबूसरा	नरसिया	वधेरवाल	भावसाररगारे	रुस्तंगी	हरसौरा
गोधराल	जायलवाल	नरसिंघपुरा	वपरछवाल	भाँग	लवेचू	हलदिया
गौलाल	जालौरा	नराणींवाल	वरमाका	भूंगडवाल	लवाणा	हरद
गुढेल	जानौरा	नवांभरा	वदवइया	भूँरला	लाड	हाकरिया
गाहोई	जादू	नाड़िया	वरैया	भुजपुरे	लिंगायत	हूमड
गंगराडा	जेसवाल	नागर	वदनौरा	भटेरा	लौहिता	अजमेरा
गौलवाडा	जोजरा	नारनगरेसा	वडगूजरु	मत्तवाल	सहेलवाल	अवकथवाल
गौलराड	जोधपुरा	नागिंद्रा	वहौरिया	मलिनघोर	सडौइया	अगरवाल
गूजरा	जुईवाल	नाथचल्ला	विरमाका	महत्या	संवौधिया	अजौधिया
गिंदौडिया	झालरा	नाछेला	वागौला	माहेश्वरी०	संगमार	अडालिया
गुर वार	टगचाल	नागोरी	वालमींक	माथुरिया	सरावगी	अटूसका
गौगंध्र	टींटोडा	नेकधर्न	वागडिया	माहुरे	साढ	अहिछते
गौलापुरा	टंटेरिया	नेमा	वारहिया	महागदे	सिरौह्या	अष्टवार
गौलसिंघाडे	डीडू	नौटिया	वीजावरगी	माइया	सुखंडरा	अस्तकी
गौलापूर्व	डिडउम्मर	पल्लीवाल	विदियाद	माटिया	सुरान	आनंदे
गौरारेजैनी	डूसर	पदमावतिपोर	वैंस	मूरले	सुनवानी	आरौडा
छींपी	ढूंसर	पोरवार	वैंसंपायन	मेरतवाल	सुरांद्रिया	औसवाल
चौरांडिया	तनवाल	पसाया	वेदवरगी	मेवाडिये	सेतवाल	अंडूवाल
चौराडिया	तरौडा	पवाराछिया	वेहड्या	मौडचातुर्वेद	सेरिया	इंद्रपुरा
चीतौडा	दंसवास	पारख	वैराटिया	मौडमाँडल	सौहिले	इख्वाकवशी
चक्कड	देहीवाल	पितादि	वौगार	रतंकरा	सौरठवाल	उस्तवाल
चतुरथ	दसौरा	परवाल	वंभर	राजपुरा	सोहिलवाल	उम्मर
चुडेलवाल	दीसावाल	पौहकवाल	वडेला	रागौलापुरा	सौधितवाल	उदेपुरा
चौसका	दिल्लीवाल	पौसरा	भटनेरा	राजिया	सौरंडिया	
चकचाप	धाकड	पंचम	भवनगें	राजकुली	सौनेइया	

(सू वाल प -सभतखंडमेंअनेक प्रकारके माहाजनभये तिनका-
वर्णन सुक्षमम वाल २ ीया कारनयहाँइतिहास महेश्वरीयोंकावर्णनकरना
मुख्यहै ॥ दोहा ॥ भवन या रखंडइलऊपरे माहाजन जातिअनेक ॥ नामल
खेवरणनकिये संख्या गोत वसेक ॥ १ ॥ इनसबहीतेंविनययह कर-
जुहार अरदास ॥ कलपव्रक्षवर्णनकरूं प्रथममहेश्वरिखास ॥ २ ॥

॥ श्रीः ॥

अथ

इतिहास कल्पद्रुम माहेश्वरीकुलशुद्धदर्पण

सहा शिवकरण रामरतन दरक माहेश्वरी मार वाडी मूँडवे वाले कृत लिख्यते

मंगला चरण कवित्त छप्पय.

॥ श्रीगुरुसारदमाय सदाविद्यागुनदायक ॥ ब्रह्मांविशुमहेस शेषसुमरूँ गननायक ॥ अनभौकरतावंदुँ बहुरिकविबुधके आगर ॥ देंहिंअरथइतिहास सदासुखसंपतिसागर ॥ शिवकरण नमित तनमन बचन बरअक्षर बरदिज्जिये ॥ इतिहास कल्पद्रुमबर्णहूं सुयेहकृपामोहिकिज्जिये॥१॥ ॥ सुगरासुघड सपूत जिकेकुलबंसउजाले ॥ सुगरासुघडसपूत धरममरजादापाले ॥ सुगरासुघडसपूत आदकीरतविसतारै ॥ सुगरासुघडसपूत श्रवणरसनाउरधारै ॥ शिवकरणधन्यजगजसतिलक कलपब्रक्षनितप्रतिगुणें ॥ कुलकेकुठारनरनीचवह इतिहासकाँनदेनासुणें ॥ २ ॥ अबसुनियेंदेकाँन चित्त एकागरकीजें ॥ अबसुनियेदेकाँन बचन अमृतरसपीजें ॥ अबसुनियेदेकाँन बडनकीकीरतगाऊँ ॥ अबसुनियेदेकाँन बिवद बिधि भेद जनाऊँ ॥ शिवकरणसभासबह्वै सुचित रुचिकरके यहसंभरौ ॥ कलब्रक्षमहेश्वरिजातकौ पूश्वपत्रफलउरधरौ ॥ ३ ॥ अथन्यातमहिमाँ ॥ श्लोक ॥ ज्ञातिगंगाप्रयागं भृगुरपिच गया पुष्करं सर्वतिर्थम् ॥ ज्ञाति माता पिता वै प्रहरतिदुरितं पावकः पापहारि ॥ ज्ञाति चिंतामणि वैं सुरतरुसदृशो कामधेनु नराणाम् ॥ नास्ति ज्ञाति परः किम् तृभुवन भवने ज्ञाति रेका प्रसिद्धा ॥ ४ ॥ कवित्तछप्पय ॥ पतितपावनीगंग सुनतकीरतमनमोहे ॥ पतितपावनीगंग परसपंचनमेंसोहें॥ पतितपावनीगंग न्हायकेसबजगआवे ॥ पतितपावनीगंग न्यातघरन्यूत

जिमावै ॥ शिवकरणमाहातमअति प्रवल कौउपमासरभरलहें ॥ कर-जोरिमौरितनमनबचन सीसनायधनधनकहें ॥ ५ ॥ पतितपावनीगंग न्हातदरसणअघनासें पततपावनीगंग न्यातमिलबुद्धिप्रकासें ॥ पतित-पावनीगंग नामसुननिरमलअंगा ॥ पतितपावनीगंग पाँतजलछौलत-रंगा ॥ शिवकरण सकलतीरथसुफल जानन्यातदरसणकरें ॥ सिधहोत सकलमनबाछिफल पापतापदूषणटरें ॥ ६ ॥ दोहा ॥ श्रवणनेंनमुखमनसु-फल पढतगुनतकलब्रिक्ष ॥ दरसणतेंअघजातहै शुद्धहोतअंत्रीक्ष ॥ ७ ॥

॥ अथमाहाजनमहिमाँ कवित ॥ माहाजनमहिमाँअपार बरणतकोपावे-पार देसदेसग्रामग्राम धनकोप्रकासहैं माहाजनजहाँहोत तहाँ नाँनाँउछ रंगरंग माहाजनजहाँहोततहाँ अबिचलसुखरासहैं ॥ माहाजनजहाँहोत तहाँ पंचपंचातहोत माहाजनजहाँहोततहाँ देवनकोबासहैं ॥ राजनपें रावनपें देसदरियावनपें साहबादस्याहुनपें माहाजनदरखासहैं ॥ ८ ॥

॥ माहाजनजहाँहोततहाँ हट्टीबाजारसार माहाजनजहाँहोत तहाँनाज-व्याजगल्लाहैं ॥ माहाजनजहाँहोततहाँ लेनदेनबिधिविव्हार माहाजनजहाँ-होततहाँ सबहीकाभल्लाहैं ॥ माहाजनजहाँहोततहाँ लाखनकोफेरफार माहाजनजहाँहोततहाँ हल्लनपेंहल्लाहैं ॥ माहाजनजहाँहोततहाँ लक्षमी-प्रकाशकरें माहाजननहिंहोततहाँ रहवौबिनसल्लाहैं ॥ ९ ॥ माहाजन ज हाँहोततहाँ मिलतहैअनेकचीज माहाजनजहाँहोततहाँ भरेदामगल्लाहे ॥ माहाजनजहाँहोततहाँ देखियेसवायानूर माहाजनजहाँहोत दानपुन्यके-हमल्लाहे ॥ माहाजनजहाँहोततहाँ अष्टसिद्ध नऊँनिद्ध कीमियाँरसाँण करामातकरेभल्लाहैं ॥ माहाजनहैंकामधेनु कलपव्रक्ष चिंतामन अमर-बेल अमी और पारसकेडल्लाहैं ॥ १० ॥ माहाजनभयोनमंत्रि गयो-राजरावणको माहाजनकीसल्हाबिन सिसूपालन्हास्योहैं ॥ भयोथोभि-ख्यारीनल हरचँदमेंबिखोपरचो माहाजनबसीटीबिन कैरवकुलनास्योहैं॥ माहाजनमुसद्दीबिन केतेराज्यबदलगये माहाजनीकबुद्धिबिन जादवकुल

घास्यौ हैं ॥ माहाजनदिवान राजरानामाहारानाजूके उदयभयौभाँण जाँण कमलज्यूँप्रकास्यौहैं ॥११॥ माहाजनअनेक भर्तखंडमेंबिराजमान तिनकौंजुहार मेरीबीनतीबचाऊँहूँ॥कियौचाहुँकलपब्रक्ष डीडूमहेश्वरीको पूरबइतिहासलेके पद्धतीरचाऊँहूँ॥आद मूल पेढबंस गोत्र बेद शाखाकहूँ नाम कर्म देवी देव गोत्र बोंक ल्याऊँहूँ॥देसकाल ग्राम ठाम कारनवसेष- भेद दरक शिवकरण सोझ मेलसौमिलाऊँहू ॥ १२॥ इति ज्ञातिमहिमाँ ॥

अथ ग्रंथबनानेकापूर्वइतिहास.

दोहा ॥ प्रथमग्रंथप्रारंभकौ कारनकहूँबनाय ॥ पूर्वसौखऐसेंलग्यौ सबविधिदेहुँजनाय ॥ १ ॥ समतअठारेठान्हवें भरभादूसुदतीज ॥अति- बिरखाबादलपवन भलहलचमकीबीज ॥ २ ॥ ताहिसमयदसमेसरी जुडबेठेइकजाग ॥ घरबिधकी बाताँकरे आपसमेंअनुराग ॥ ३ ॥ इत- नेंइकमेवाडको मिल्यौसाहजीआय ॥ जेगोपालकरपरसपर बेठौआदर- पाय ॥ ४ ॥ पूछणलागेजातकुल कह्यौनौगजागौत ॥ तबसबहसिकहनें लगे यहहमरेनहिंहोत ॥ ५ ॥ तबवहपूछनकौंलग्यौ यहबोलेकछुऔर ॥ वोकहयहहमरेनहीं भईपरसपरझौर ॥ ६ ॥ जबतोअतिचगरौचल्यौ लिखबेलागेबौंक ॥ मँडेपचासेकमूँडवे चलीपरसपरचौंक ॥ ७ ॥ खाँप वहौतरसुनतहे यहतौबढीअपार तबसबहीपूछतभये, मौसालेससुरार ॥ ॥८॥ कछुकनामतामेंबढे सेवगमिल्यौमन्होर ॥ यादहुतेजाकेजिते ० आ- नलिखायेऔर ॥ ९ ॥ चढ्यौछंदमोकौंअधिक फिरचौदेसपरग्राम ॥ थौडेदिनकेअंतरे लिखेतीनसौनाम ॥ १० ॥ ताहिसमयअनभौखुली कहणलग्यौकछुछंद ॥ जबदिलमेंऐसीभई किन्येजातिप्रबंध ॥ ११ ॥ छंदकुंडलिया ॥ मनसौबाकरतोरयो बहुतदिवसमनमाँह ॥ कलपब्रक्ष- कैसेंबने मित्रमिल्योकोउनाँह ॥ मित्रमिल्योकोउनाँह बरसबीसकयुँहि बीता ॥ मिलेनपूरेनाम रहीदिलभीतरचिंता ॥ उगणीसौनें ठारवें ब्रक्षभै-

दकछुपाँह ॥ मनसौबाकरतोरयो ॥ बहुतदिवसमनमाँह ॥ १२ ॥ अति महिनतबहुकष्टतें कछूकपायोममँ ॥ तदपिबहुतविस्तारकहि मित्थ्योन पूरोभमँ ॥ मित्थ्योनपूरोभमँ खोजकितहूनहिंपायो ॥ देशाटनकेकाज पुरीइंद्रावतिआयो ॥ अतिअनंदमंगलमई माहाशुद्धआसमँ ॥ अतिम-हिनतबहुकष्टतें कछूकपायोममँ ॥ १३ ॥ छापाकोधंधौकियौ इंद्रपु रीमेंआय ॥ तदपिकलपतरुनाँबन्यौं हौंसरहीमनमाँय ॥ हौंसरहीमनमाँ य मिल्या बलदेवजुराठी ॥ दीन्हींहिमतकरार बाँधकहिकम्मरकाठी ॥ द्यौअरजीपंचाँमहीं आगेदेहुँसुनाय ॥ छापाकोधंधौकियौ इंद्रपुरीमें आय ॥ १४ ॥ जुडेमेसरीसहसद्वय इंद्रपुरीमेंजाँन ॥ विनतीकरीबका-रके किनहुनदीन्हौंकाँन२अरजबहुभांतसुनाई ॥ सुनसुनकेसबहसे बात-कछुमनानभाई ॥ पंचपांचदसमुख्यथे समुझेचतुरसयान ॥ जुडेमेसरीस सहद्वय इंद्रपुरीमेंजान ॥ १५ ॥ कहौहगीगतआदतें बौलेपंचसुजाँन ॥ कहाअरजनीकेकहौ हमसुनिहेंदेकाँन ॥ हमसुनिहेंदेकाँन ॥ कियातुम-ज्ञातीकारण ॥ कलपब्रक्षअबरचौ ॥ माहामंगलकुलतारण ॥ जागाँकौं-बुलवायके करेंमानसनमाँन ॥ कहौहगीगतआदतें हमसुनिहेंदेकाँन॥ १६॥ जबउनतेंहमनेंकही यूँकछुसरेनकाँम ॥ कबजागेआवेइहाँ कौखरचेंगे-दाम ॥ कौखरचेंगेदाम खरचजागाँकौभारी ॥ अमलतमाखूभाँग ऊंठ-घौडाँअसवारी ॥ पाँचसातदसआदमीं साथमंडलीगाँम ॥ जबउनतेंहम-नेंकही यूँकछुसरेनकाम ॥ १७ ॥ हसकरबोलेपंचमिल जागालेंहँबुलाय॥ सबविधउनकौं पूछल्यौ पोथीदेंहखुलाय२दामलागेसोहिदीजें ॥ करौक-लपतरुत्यार विलमछिनभरनहिंकीजें ॥ यहसुनकेजागागुपत वसेअंत-कहुँजाय ॥ हसकरबोलेपंचमिल जागालेंहँबुलाय ॥ १८ ॥ तबपंचनतें अरजलिख और सुनाईजाय ॥ जहाँबहुमहाजनमेसरी बैठेजाजमआय ॥ बैठेजाजमआय अरजसुणराजीहूवा ॥ कहीख्यातबहुठौर नामसुनखूवा-जूवा ॥ घाडगाँवएकभादवो दीन्हींतुरतबताय ॥ तबपंचनतेंऔरलिख

अरजसुणाईजाय ॥ १९ ॥ एककयोएकभींवडी दूजेसेवगपास ॥ लिखे-
कवितदेखेनयन तबकछुबाँदीआस ॥ तबकछुबाँदीआस देखिच्यारूंठाँ-
आयो ॥ फिरचौदेसचहुँओर ख्यातएकजूनींपायो ॥ गढनराण गनपत-
गुरू मिलेआनअनियास ॥ एककयोएकभींवडी दूजेसेवगपास॥ २० ॥
॥ पंथचलतएकबिप्रतें भईअचानकभेट ॥ करतबातकलब्रक्षकी नगर-
पहूँताठेट ॥ नगरपहूंताठेट तिन्हेंपौथीएककाढी ॥ न्यातगुरीतामाँहिं
छटा अधिकीसीबाढी ॥ दौय प्रहरनिसलौंपढी फेरगयेहमलेट ॥ पंथच-
लतयेकबिप्रतें भईअचानकभेट ॥२१॥ करमुकामवानग्रमें राखिबिप्रकूँ-
लीन॥द्विजदछनादेप्रसनकर परतदूसरीकीन२फेर फिरकेगुरहेरे ॥ कौतु-
मरेजुजमान आपगुरहोकिनकेरे ॥ कछुतामेंथेसौकढे कछुमिलगयेनवीन॥
करमुकामतानग्रमें राखिबिप्रकूँलीन ॥ २२ ॥ तापीछेजागानको डेरो-
आयोजाँन ॥ कपासणकोजोरजी तिनतेंभईपिछाँन ॥ तिनतेंभईपिछाँन
मदतपंचनतेंपाई ॥ कलपब्रक्षकेकाज बातऐसीफरमाई ॥ पौथीखोलब-
तायद्यौ मुखतेंकरोबखाँन ॥ तापीछेजागाँनको डेरोआयोजाँन ॥ २३ ॥
उगणींसत्तावीसमें नवमींकृष्णकुँवार ॥ पुखनखत्रपौथीखुली शुभमहुर-
तशशिवार ॥ शुभमोहोरतशशिवार आणपौथ्याँपधराई ॥ दिनरहिस-
त्तावीस रातदिनकलमभराई ॥ कछुकभेदइनतेंलख्यौ तौपणपड्योन-
पार उगणींसत्तावीसमें नवमींकृष्णकुँवार ॥ २४ ख्यातपुराणींबहीमें
रहीकहीछौगेस ॥ एकमासकौकवलकर गयेआपनेंदेस ॥ गयेआपनेंदेस
फेरपीछेनहिंआये ॥ लिखचिट्ठीगयेभूल पंचनितयादकराये ॥ बरसअढा-
ईतीनलौं परीनहींकछुपेस ॥ ख्यातपुराणींबहींमें रहीकहीछौगेस २५ ॥
पीछेजागौमगनमल इंद्रपुरीमेंआय ॥ पंचनतेंआसिकदई पायोमाँनस-
वाय॥ पायो माँनसवाय सुनीभीलाडामाँहीं ॥ चलेसिध्यशिवकरण आँण
मिलियाइणठाहीं ॥मँगनाँसूँपंचाँकही दीन्हींबहीदिखाय ॥ पीछेजागौमग-
नमल इंद्रपुरीमेंआय ॥ २६ ॥ दोहा ॥ छटामगनछौगातणीं बहीएकअ-

नुमान ॥ मुखदरपणअस मानजल इजैविजैदोयजाँन ॥ २७ ॥ पुनिदेसाटनकरतभौ कलपब्रक्षकेकाम ॥ खानदेसअरु ब्राङफिर देखीदखणतमाम ॥ देखीदखणतमाम तहाँकछुभेदनजानें ॥ जातपाँत की बात करे तौउलटीतानें ॥ गौत्रगांवगुरयादनाँ बडपुरषन केनाम॥पुनिदेसाटन करतभौ कलपब्रक्षकेकाम ॥ २८॥ फिरकरआयौ जालणें तहाँकेलौगप्रवीण बहुप्रकार दस दिवसलौं तिनतेंबातेंकीन २ लौकसबहीजुडिआवै ॥ पंडितजनतहाँबसे रातदिनसभाभरावै ॥ बहुविवेकचातुरकवी वहाँसेवकथेतीन ॥ फिरकरआयोजालनें तहाँकेलौगप्रवीन ॥ २९ ॥ विनकहिदेवलगाँवमें जुडतजातराएक ॥ बालाजीमहाराजके आवतवैश्यअनेक २ पंचपंचायतभारी ॥ निमटेन्यावनिसाफ मेसरीहैअधिकारी ॥ साढीबारहन्यातके सुधरत झोडअनेक ॥ विनकहिदेवलगाँवमें जुडतजातराएक ॥ ३० ॥ मासपांचतेंफिरगये मिलेपंचतेंजाय ॥ रीतभाँतमरजादतें बैठेआदरपाय२ताँहाँकोइमोहिनजानें॥करैन्यावततछान दूधपानीनितछानें॥ पंचनमेंएककाबरौ सहादामौद्रसवाय ॥ मासपांचतेंफिरगये मिलेपंचतेंजाय ॥ ३१ ॥ यहाँबहुतविस्तारहै तनकवाँनगीलेहु ॥ पंचनतेंअरजीकरी तातपिरजलिखदेहु ॥ तातपिरजलिखदेहु अरजबहुभाँतसुनाई ॥ हिंदीभाषामाँह पंचकेसमझनआई ॥ कहीमरेठीबातमें लिखौअरजतुमयेहु ॥ यहाँबहुतविस्तारहै तनकबाँनगीलेहु ॥ ३२ ॥ तबहमदूसरेबर्षमें तुरततरजुमाँकीन ॥ छापमरेठीबातमें डाकमारफतदीन ॥ डाकमारफतदीन सकलविधिलिखसमुझाई ॥ सुनसबराजीभये पंचकेचितमेंआई बँदौबस्तबहुभाँतकौ कियौपंचपरवीन ॥ तबहमदुसरेबर्षमें तुरत तर्जुमाँकीन ॥ ३३ ॥ बँदौबस्तसुणपंचकौ जागेगयेपराँहिं ॥ दक्षणदेसबराडमें कितहूमिलेनआँहिं२ पंचबहुचौकसकीन्हीं॥खंजनज्यूँदुरगये खबरकितहूनहिंचीन्ही॥जाहिरातलिखदेसमें हमभेजीसबठाँहिं॥बँदौबस्तसुणपंचकौ जागेगयेपराँहिं ॥ ३४ ॥ दोहा ॥ आजकालभूमंडमें जागेरहेदु-

राय ॥ छप्योसुनेंगेकलपतरू मिलिहैंफिरअतुराय ॥ ३५ ॥ कवित्त ॥
खंजनसेलुकंजन आज भयेहैंअद्रिस्यजागे दुरेभूमंडमाँहिं पंचसेंनराचेंगे ॥
छिपगईपँयालपोथीरसातलभँडारबैठे छपेपीछेकलपब्रक्ष घरघरफिरबा-
चेंगे ॥ अबहीकलब्रक्षकाज ढँढेतेनमिलतआज ॥ छपगयोसुनेंगेकान
फेरआनमाचेंगे ॥ आजकालहककचरीखाय बैठेझारपिंछपीछे छपेतेंपरेवा-
लंकी मोरहोयनाचेंगे ॥ ३६ ॥ याहीप्रकारप्रस्नउत्तरकेपत्रछापि भेजें-
सबठामसोतौजाहरसबबातहै ॥ बहुतसेजगोंकेपंच आग्रहकररजादीनीं
छापकरप्रसिद्धकरो अद्भुतयहख्यातहै ॥ पंचोंकाहुकमपाय ग्रंथकूंबनाय-
पूर्ण धर्महूकीरक्षाकाज सारेजगचातहै ॥ कहैशिवकर्ण रामरत्न दरक
तावेदार ज्ञातीकाग्रंथछाप कीयाविख्यातहै ॥ ३७ ॥

अथ ग्रंथारंभकापूर्वइतिहासबार्तावंदवर्णनप्रारंभ

विक्रमसंवत १८९८ शकेशालीवाहन ॥ १७६३ के भाद्रपदशुक्ल ३
के दिन रात्रिकीबखत मारवाडके गाँव मूँडवेमें दसबीस माहेश्वरी माहा
जन इक्खट्टेहोकर एक बारादरीमें बेठेबातेंकररहेथे ॥ और पाणींकी वृ-
ष्टिभी स्वच्छतासें मधुर २ होरहीथी तासमय एक मेवाडदेसका महे-
श्वरी आके जेगोपाल कीया तब हमलोगोंनें पूछा तुमकौनहो जब उस
नेंकहा म्हें माहाजन महेश्वरी नौगजाहूँ यहसुन सबलोगोंनेंपूछा नौगजा
भी महेश्वरियोंमें होताहैक्या उसनें कहा हाँ होताहै वहाँ एक आगसूड
वोला हमनेंतो नौगजा गौत आजहीसुना तबवो नौगजासाहजीबोला
आपकाक्यागोतहै उसनेंकहा आगसूडगोतहै तबवोकहनेंलगा आगसू-
ड गोतभी हमनें आजहीसुना एसें चरचा आपसमें होनेंलगी तब सब-
लोग कहनेंलगेकि कुलखाँपेंअपनी कितनीं होगा तब एकनेंकहा अप
नीं बहोत्तरखाँपहै वहाँमेंभीहाजरथा जबमेंनेंकहा अपनेंगाँवमें कितनीं
खाँपेंहोंगी तब सबगिणनेंलगे तो ४१ खापके बौलतेनाम मूडवे-

मेंथे जवहमनेंजाना येक्या मुलकमेंतौ वहोतसेनामहोंगे तव वौ मेवाड्वा ला नौगजा बौलाके तुम्हारेयहाँ चरखा डांगरा तुरक्या तेला सतूरचा भूँरगड बिदादा मरौठिया भूत्या भकावा छाछ्या यह गौतकहां है तव उसकौं पूछनेंलगे तौ २५ सेक खाँपें उसनें नविनभतलादी ॥ तवतौ वहोतसा चगरा चलगया जव हम आपसमें पूछनेलगेकी तुम किसकेव्या हे और किसकेभानेजहो एसें पूछते २ वहोतसे नाम फेरभी नूतन पायेगये तोखूवही चगराचला इतनेंमें एकमनोरजी सेवग वडा वूढा और चतुर जूना आदमींथा वौ आनिकला तव हम उनसें पूछनेंलगे कि ये क्याहे खाँपतो ७२ कहतेंहें और यहतौनाम वहोतसेहोगये तव उन्होंने फेरवी आसपीसके गांवौंका सुम्मार लगाकर सिकची वसहर कासट दगड्या सुरजन खटवड एसें वहोतसे नाम औरभी वतलादिये वौयाद्दास्त मेनें लिखली तौ करीव १६० नामहोगये जवतौ मेरेकू उसदिनसें येहीछंदचढा कि ये कुलनाममेरेपास इख्वटे होजायतौ अच्छाहे ॥ यहविचारके जिधरजाऊँ उधर यहीतल्लास कीयेकरूँ और रातादिन यही विचार करतारहूँ के जोअगर सवगौत्र मेरेपास इख्वटे होजायतौ इतिहास कल्पद्रुम माहेश्वरी कुलसुद्ध दर्पण बनाना सरूकरूँ ॥ पर जिधर जाउँ उधर दसपाँच गौत्र जादाही लिखेजाय इस तरह लिखतें२चंदरौजमें ३८० नाम लिखेगये तव एक वडा भ्रम पेदाहुवा के सवलौग ७२ खाँप कहतेंहें और यह इतनकिसेंहुई क्याकोई दुसरीजातीके इनमें आमिले कि इनमेंसेंही नाम जुदेवौलेगये कि और कुछभेदहे जव एक वुजरगनें कहाके यह इतनेंनाम इन ७२ खाँपमेंसेंही केईसवव और धंधेसें वौंक जुदेवौलेगयेहें यहसुनके मेरेकूँ एक दुसरा वडाही भ्रमपेदाहुवा के अवम्हें इसमैसें ७२ मूलखाँपें कैसेंजानूँ और कौंनसेखाँपकी कौनकोनसी फलीहे यह कैसेंपहचानूँ इसीफिकरमें वर्ष २० यूँहींनिकलगये फेरदैवइछ्यासें म्हें देशाटननिमंत इंदोर आया जवएक वलदेवजी राठी मेड्तावाले मि-

लें उनकों सबमाजरा कहसुनाया वो यहबात सुन बहौत प्रसन्नहो कहनें-
लगें मेंभी यहीचाहताहूँ और बहोतसी बातेंकी मदतभीदूंगा यहइतिहास
जरूरबनानेंयोग्यहै इस्में अपनी जातीका बंदोबस्त साथधर्मके रहाक-
रेगा पर तुमयहाँके पंचोंकों अरजीदेवो हमनें प्रियमित्रकीसल्लासें अर-
जीलिख पंचोंकेपासहाजरहुवा एकभंडारेमें २००० केकरीब महेश्वरी
जम्माथे वहाँम्हेंखडाहोकर बडेवेगसें अरजीसुनाई पर उसहल्लेमेंपंचोनें
कुछनहिंसुनवाईकी नेंकोई इसतातपर्यमेंसमझे उलटी मेरीहासीकरनें-
लगे जबमें नृमान्यहोकर चुपहोकेबैठगया परंतू उसीपंचोंमेंसें केईकलोग
विवेकी और विचारवानथे उनलोगोंनें मेरेकूं पूछा कि ये क्याअर्ज है
जबमेंनेंपिछाडीकी सबहगीगत कहसुनाई जब उनोंनेंकहा येतोबहोत
अच्छीबातहै बनजायतो यहतो अपनेंकुलकीरक्षा और धर्ममर्यादा के
वास्ते बडासा परकोटाहोजावे तबमेंनेंकहा देखो मेरीमहनतकी तरफ
तोकिसीनेंभीनहिंदेखा और उलटी हासीकरनेंलगेगये ॥ तब पंचोंनें
कहा कुछफिकरनहीं आजसें आठरोजकूं एकबडा नुखताहै. वहाँ तुम-
फेरवी एकअरजी सुनावो जब मेनेंकहाकि कोंनतोसुनताहै और इस्में
मेरेकूँक्यालाभहै ॥ नाहकमेरीहासीकराऊँ जब वहपंचबोलेकि अबके
जोकोइ तुमकूँहसेगा सो तुमकूंनहीं हमकोंहसेगा तुम अरजीसुनावो ॥
जब फेरभीदुसरेभंडारेमें अरजीसुनाई तो वोहीहासी और वोहीठठे बल-
केकेईलोगोंनें तालियेंभीपीटी पर वोजोविचीक्षण और चातुरलोगथे.
उनोंनें वो हसनेंवालोंकों बंदकीया और मेरेकूं हकीकतपूछनेंलगें जबमेंनें
बडेधीर्यसें सर्वपंचोंकों वहीअरज समझा २ के सुनाई तो सबलोगबोले-
कि बाततोसच्चहै पर इस्कातुम हमकों क्या पूछतेहो और हमक्यामद-
तदेवे जबमेनेंकहा पंच परमेश्वरतुल्य कहलातेहैं सो आपतो सर्व बातो
सें लायकहो जब पंचबोलेकि कुछपैसेका कामहोयतो हमकों कहो जब-
मेनेंकहा पैसेका मांगनातो जाचकलोगोंका कामहै म्हेंतो अपनीजातकी

वर्तेनूक अच्छिःरहनेकेवास्ते जातीःनिबंध बनानाचाहताहूँ इसवास्ते अपनें जागे व कुलगुरु वहीभाट रमइये सेवग भौजक इत्यादि कोईभी अपनी बंसावली कुलावली पूर्वइतिहास व ख्यात जोकोई जानताहौ इनलोगौंकोंपूछकर वा आप जूनेंलोगौंकों यादहौ वा लिखी लिखाई कुछहौ वौ मेरेकूं मिलकर यह इतिहास कल्पद्रुम संपूर्णहोजावे यहीमदतमाँगताहूँ और पैसा मेराघरका खरचना चाहताहूं ॥ तब एकबोला घाड गाँव जिल्लेबूँदीके एकबोला भादवागांव जिलेपाटनके एकबोला भींवडी कौकनदेसमें एकबोला एक सेवगकेपास इत्यादि ख्यातेंहै पंच कागदलिखदेंगे तुम जाकरलिखके संग्रहकर मनौच्छितग्रंथ पूर्णकरौ जवम्हें पंचौंकी मदतयहींके पत्रलेकर सबजगें जौजौभतलाईथी वहाँ जाकर संग्रहकरलिया पर पूराइतिहास कहींमिलानही और भी अनेकप्रकारकी संका नविन प्रस्न खडेहोकर हृदय कंपितहुवकि इतनेंवर्ष सौधकरनेमें व्यतीत हुये और ग्रंथ पूर्णहुवानहीं इसशरीरका क्याभरौसाहै अवतो जलदी ग्रंथपूर्णहोतो अच्छाहै यहसोध करते २ दोवर्ष व्यतीतहुवा फेर एकअर्जलिख इंदोरके पंचौंकेनजरकी हेतूयहके ग्रंथ पूर्णसंग्रह हुवानहीं जब पंचबोले कि यहबातहोनेसेंतो हम बहोतराजीहैं पर इनतुमारे प्रस्नौंकी संका निवार्ण कैसेंहो जब हमनेंकहा क्या अपनें जागेजी नहीं जानते होंगे जब पंचौंनेंकहाठीकहे उनकों पूछनाचाहिये तब कईदिनौंकेबाद जागाजीकाडेराआया जब पंचौंनें उनसें कहाके शिवकरण दरक के प्रस्नका उत्तरदेनेसें तुमकोंविदामिलेगी तब वह जागाजी मेरेघरपे आकर कहनेलगेकि तूँक्याप्रस्नकरताहै जब मेनेंकहाकि हमारी आदउत्पती व बहुत्तरखाँप व बहुत्तरखाँपकीफलियें किसकिसखाँपकी कौनकौनहै वो मेरेकूँ बतलानाचाहिये जबजागाजीनें बडेसेघमंडसें आँखफेरकर मेरेकूँकहाकि कोई एसाकर्म नहींकरनाँकि इसपूछनेमें कोई तेरेदरवज्जेपर जागामर जावे और जँव्हरहोजावे जब मेनेंहातजोडके बडी-

निम्रतासें पूछाके हे जागाजी तुम हमारे कुलउच्चारणकरनेंवाले जागे वा वहीभाटहौ और म्हें माहेश्वरीकाबेटाहूँ तुमकूँ हमारी जात व उत्पत्ति पूछनेमें आप मरक्यूँजावौगे इसका तुममेरेकूँ अच्छीतरहसें भेदभतलावो जब उन्हौंनेंकहाकि हजौरोंवरसौंसें नाँतो किसीनेंपूछा और नाहमनें भतलाया और नाँकिसीकूं भतलावेंगे और तूंक्यापूछेव पूछनेंवाला तूं अकेलाकौंनहे ॥ जबमेनें कहाकि पंचपूछतेहैं फेर दुसरेरौज एकभंडाराथा वहाँ जागाजी अमल पानी चंदी चारा मांगनेंकौंआयेथे उसी वखत मेंनेंवही बात जौ जागाजीनेंकहीथी वोपंचौंकूं जागाजीकेरूबरू कहसुनाई जबपंचबोले मरनेंकाक्याकामहै हम सबपंचमिलकर शिवकरणकूं पूछनेंका अधिकारदियाहै सौ तुम जागेजी इनके प्रस्नोंकाउत्तर यथौचित्तलिखवादो नहींतो विदागी व अमल पाणी कुछनहिंमिलेगा ॥ खैर आयेतो जीमजावौ अमल पानी तुमकौं प्रस्नकाउत्तरदेनेसें बिदागीकेसंगमिलेगा तब बादउसरौजसें जागेजीतो डेराकूचकरगये सो वर्ष ५ तक ईदोर जिल्हमेंभीनहिंआये बाद ५ वर्षके एक छौगालाल नाम जागा अचानक इंदौरमें आकर पंचौंसें आशीर्वाददेनेलगा जब पंचौंनें कहा तुमारीपोथियें श्रीपंचायतीमंदिर श्रीज्यानकीवल्लभजीकेमें या शिवकरण दरक के मकानपे लेजाकर सबइतिहास उनकौं लिखवादो और खानेपीनेका बंदोवस्त तुमारे वास्ते पंचायतीसें होजायगा जब जागाजीबोलेकि म्हें उत्तरादूंगा परमेरेपास छवऊंठ दोघोडे दस आदमीं उनकाखर्च चंदी चारारौटी इनसिवाय अमल तमाखू भी दोरुपे रौजकी लगतीहै यहजौबंदौवस्त पंचौंकितरफसें होजायगा तो म्हें सबइतिहास लिखवादूंगा जब पंचौंनें जागेजीके मनसायमुजब खर्चेका बंदोस्त करदिया जब जागाजी पांचऊंठपे दसपौथी बडी २ मेरेयहाँ लायरखी और २७ दिनतक पोथियौंसें सिररगडाकिये पर जागाजीनें कुछलिखाया और कुछन लिखा या और कहनेंलगेकिवाकीख्यातें मेरेघरपे दुसरीवहि-

योंमेंरहगई सो एकमहिनेंबाद ल्याकर सबबातेंलिखवादूँगा यहकौल पंचोंसेंकर चिठीलिखगयासो २।३वर्षतक पीछानहिंअया परंतू मेरेकूंतो यहीसोकथा कि ग्रंथपूर्णकरूं सू यहीउद्योग पूछताछकरनेंका शरूरहा और बहोतसाग्रंथ संग्रहकर छंदबंद भी बनालिया बाद चंदमुद्दतके जागा मंगनीराम. ....

इंदोरमें आकर पंचोंकों आशीर्वाददिया तब पंचोंनेंवहीवात जो जागा छोगालालकूँकहीथी सोकहा उनदिनोंमें म्हें मेवाडके महेश्वरियोंसें यहीपूछताछ करताहुवा भीलवाडेआया और पंचोंसें अर्जगुजर जाजमबिछकर पंचइखटेहोके जागा परतापजीकों बुलवाया और यहकहाके शिवकरण दरक जोबातपूछे वो लिखवादो जब उसनेंकहा हमारेसबडेरोंमें जागा मंगनीरामका डेरातेजहै और वो अभी इंदोरमें है इनके प्रस्नोंका उत्तर वहीदेगा जबम्हें यहबात पक्कीसुनकर पीछा इंदोरआया और पंचोंकेपासगया वहां जागा मंगनीरामभी आयआशीर्वाददिया और मेरानामपूछ बहोतराजीहोय प्रसन्नतासें बातें करनेंलगा और यहीजागा मंगनीराम बालपनेमें हमारे गाँव मूँडवे आयाथा और मेरेबनायेहुये कुछकवितभी उसनें सीखेथे वोबोलनेंलगा और जूनी पहचाननि काली वहाँ पंचोंकाभी वोहीकहनाहुवा जोपहले उनकों कहाथा जब वहबोला मेरेपास जोकुछहोगा सो सबलिखवादूंगा पर तुमनेंक्याबनायाहै सो कहो॥ जबमेनें उस्के मिष्टबोलणेंसें और जूनीपहचानसें जोकुछग्रंथ संग्रहकीयाथा सबकहसुनाया तबजागाजीदेख चक्रितहो कहनेंलगे हमारेपास इस्सें क्या जादानिकलेगा ओहो तुमनेंतो खूबही संग्रहकरलिया और मेरीभी पोथियें यहाँ सबहाजरहै देखलो और जोकुछ कमजादाहोयसो मिलालो जब सबपोथियें देखीतो वोहीबातपाईगई जोकुछ जागा छोगालालकी पोथियोंमेंथी जब जागा मंगनीरामबोलाकि अबम्हें बीइसीकल्पब्रक्षकों यजमानोंकेयहाँ वाच्याँपढ्याँकरूंगा बस यहमेरेकूंलि-

खदी सो एकपरत उनकोंभी बाचनेंको लिखदी पर मेरेदिलमेंतो कईबातों का संशयहीरहा जबमें फेर देशाटनपे कम्मकरबाँधी॥और इसग्रंथकी पूर्णताहेतू सोधकरताहुवा मेवाड खेरवाड ढूँढाड हाडोती झालावाड इनदेशोंमें चौकसकरीतो बहोतसीबातें हासलहुई॥पीछे एकनराणगढमें गुराँसाब श्रीगणपतलालजीकेपास एक ख्यातमिली वोभीसंग्रहकरली बाद चंदमुदतके एकरस्तेचलते वृद्धविप्रमिला तिनकेपास न्यातगुरीकी ख्यातमिलीतब उनको प्रार्थना के साथ दक्षिणा देकर उस्की नकल भी उतारली पुन्ह देशाटनकर बहोत्तरखाँपके गुरूनकोंभी पूछकर खूबतल्लासकरी तो कुछवो न्यातगुरीमेंथी सो निश्चयहुई और कुछ नविनभीबातेंसंग्रहहुई फेरतो कम्मरखूबहीमजबूतबंदी और ग्रंथ पूर्णताहोनेकीभी निश्चयहुई फिरम्हें पीछा इंदोरआकर सर्वदेसीपंचोंसें एक अरज और समूहगोत्र नाम कुलके पत्र ६०००छवहजार कागदछापके देस २ औरगांव २ में जहाँतक पहुंचासके वहाँतक हातोंहात व पोष्टद्वारा पहुंचाये और कईदिनतलक इसीबातका हुल्लड मुलक २ और गाँव २ में होतारहा पर कहींसेंभी जादाबातकी ख्यात नहिंआई जब जानागयाके जागोंकेपासभी इस्सें जादा कुछनहीं तो माहाजनकोई कहाँसें बतलासकेंगे पर तोही मेनेंतो वही पूछताछकरनेंका सोखरक्खा सो इंदोरसें फेर देशाटनका इरादाकर दक्षणकीतरफचला तो नीमाड खानदेस बराड मरेठवाडी करनाटक तैलंगदेसके महेश्वरियोंकों चंदरोज पूछताफिरा पर वोतोभोलेभालेमनुष्य सिवायकमाखानेके औरकुछ नहीं जानें यहाँतककी आपसें दादे प्रदादे केनामकीभी पूरीमालूमनहीं वोके सेंजानसकेगें कि हम अमुक खाँपमेंसें निकलेहैं वा हमारेमेंसें अमुक गोत निकलाहै. इश्वरहीधर्मरक्खें॥फेर जालणाकेपास वालाजीका देवलगाँवका हालसुना के एक बडीयात्राभरतीहै और साढीबारहज्ञातके माहाजन पंच इकट्ठे होकर ९ दिनन्यावनिसाफ करदिलकामनोर्थपूर्ण करतेहैं

और मेलाभी बडाचमत्कारी धामधूँमसे भरताहै ॥ कवित्त ॥ साढीबारह न्यात देवलगाँवमेंइखट्टेहोत बालाजीमाहाराजकीप्रतक्षजोतजागेहैं ॥ लगतहैंबजार जहँहजारनदुकानखुले जातराआसोजसुदीदसेरासेंलागेहैं ॥ जाजमबिछायबैठे पंचपंचायतहोय बडेबडेन्यावबादीखडेरहतआगेहैं ॥ करतहैंनवेरा दूधपानीकोंनिकारभिन्न साचझूटछाँट आँट अँतरकीभाँगेहैं.

॥ पाँचपंचोंकानामगाम ॥

श्रीश्रीश्रीश्री १०८ श्रीबालाजीमाहाराज॥ १ ॥

जेकिसनजी बिहारीलालजी मूघडा जालणेवाला ॥ २ ॥

गोयंदरामजी दामोदरजी मालपाणी अंबडवाला ॥ ३ ॥

शिवदासजी किसनलालजी गहलडा बदनापुरवाला ॥ ४ ॥

गोयंदरामजी दामोदरजी कावरा येवलावाला ॥ ५ ॥

यहजातरा अश्विनशुक्लमें होनेकी सुन इंदोर आय एक अरजी हिंदीभाषामें पंचोंके नाम छाप पीछा मेलापेजाय अर्ज दाखलकी जब पंच व सिरेपंच बोलेकि जाजमबिछाईके ११ रुपये हाजरकरोगेतो कल जाजमबिछकर तुमारी अरज सुनी सुनाई. जायगी. जब मेनें ११ रुपये उसीवखत पंचोंके साम्हनें रखादिये. और थोडेसे आदमी व सिरेपंच व हांबैठेथे. जहाँ मेनें अरजीभी बाचके सुनादी. जब एकपंचबोला क्योंजी इस्में तुमकों क्यालाभहै सो घरके रुपे खरचके. पंचोंकों अरजी सुनाते हो. जब मेनें कहाकि इस्का फायदा जब आपलोगजानजावोगे तब मेरे इतनें रुपेतो क्या है पर अपना कुलशुद्धरहनेका इतिहास करोडोंरुपे खरचकरनेसेंभी नहीं बनें एसा बनजायगा जिस्सें अपनेंकुलकी वर्तनूक सदाबंदशुद्धाचार कुलधर्ममें चलेगी और हजारोंवर्षोंतक कोईबातका खटका नहीं उठेगा. एसा कुलधर्मरक्षक ग्रंथहोगा यहवार्ताहोरहीथी इतनेमेंही एक और अरजदार सगाईके झगडेवाला आकर हाजरहोय ११ रुपये जाजमबिछवाईके पंचोंके समक्षरक्खे॥ तब पंचबोलेकि जाजमतो

इननिसाफवालेकीबिछेईगी अब इन शिवकरणजी दरकके रुपे नाहक खरचकरवानाअच्छानहीं कारन येतोकाम अपनी समस्त जातकाहै तव पंचोंनें महरवानीकरके मेरेरुपे मेरेकूं जबरदस्ती मनुहारकेसाथ पीछे देदिये और जाजम उसी निसाफवालेके लिये बिछगई परवो न्याव एसा डेढानिकला सो सबरात्रि पंचोंकेबेठेहीबेठे निकलकर अरुणोदयहोगया और न्यावनहींटूटा आखर उस्कान्याव आवतीसालपे ठहरा इधर मेरी अरजीभी वगेरसुनीरहगई जवमेनें पंचोंकों उठतीबखत साढीबारह न्यातकी सौगंददिराई केमेरीअरजी सुने बगेर कोईमतऊठौ तब पंचौंनेमेरे कूं अरजसुनानेका हुकम दिया उसबखत सर्वपंच साढीबारहन्यातके और छन्यातके ब्राह्मण इत्यादि मिलकर करीव सात आठ हजार आदमीं जुडेथे वहाँ सेवगोंकीमारफत अर्जसुणनेंकेवास्ते चुपहो कर स्वचित्तबेठनेंका हुकमदिया तब सबलोग श्रवनदे एकागरचित्तकर सुणनेंलगे और मेनेंबी बडेऊंचेशब्दसें झपटकर अरजमालूमकरी सो केईलोगतो सुनकर समझगये. और कईकलोगोंको हिंदीभाषा समझमेंनहिंआई क्यूँके वोसिवाय दक्षिणीलिपी और वोलीके दुसरा इलम वाकिफकार नहीं वोलोग वोले हमकुछबराबरसमझेनहीं तवमेनें मराठीजवानमें हगीगत मुखसेंकही परउनलोगोंकों रात्रिभरके निद्राकीत कलीफथी और जातराभी उसीदिन रुखसतहोनेंवालीथीं तब सर्वपंचबोले तुम आतेवर्षफेरआवो ओर यहीअर्ज मराठीजवानमें छापकर पंचोंके नजरकर जो कुछमदतमांगोगे वोही मिलेंगी जब मेनेंअरजकरीके मेरेकूं कुछरुपे पैसेकीतो गरजनहीं इसकार्यमें बहोतसेरुपेतोखरचेहैं और बहोतसेफेरखरचनाचाहताहूँ पर केवलयहीमदतके जागे वहीभाट कुलगुरू इत्यादि अपनें गोत्रउच्चारणकरनेंवालोंसें फकत निश्चयकरवानाहे तव उनोंनेंकहा होसकेगा जवमेनें दुसरेवर्ष विक्रमसंवत १९३८ ॥ शके १८०३ मेंबोहीअर्ज गुदस्तांदीथी उसीकीनकलमरेठीभाषामें वा एकओर विनयपत्र

इसअर्जेकूंसुनकर बंदोबस्तकरानेका छापकर करीव पत्र २००० तैय्यारकीया परउसदिनोंमें कुछ शरीर अवस्यथा (वीमार) इस्सबबसें मेराजानातो देवलगांवकूँ नहीं हुवा और अरजियें सविनयपत्रोंके पोष्ट द्वाराभेजदी पर मेरेनहींजानेंसें बंदोवस्त कुंछपक्कानहिंहुवा फेर संवत १९३९ शके १८०४ में वहाँजानेका इरादाकिया और रेलमेंवेठ जालनेतक आनाचाहा पर दैवइछ्चा अप्रवल रोगाग्रिस्थहुवा सो नहिंपहुँचसके और जलगांवमें ४ मुक्कामकिये मजबूरन लाचारीके आरामहोनेकी सूरतनहींपाईगई तब जलगांवके पंचोंकी मारफत अरजियेंपत्रतो

देवलगाँवभेजदीये औरम्हेंवापिस इंदोर आया परअरजीमेंयहशर्तथी कि जागोंको बुलवाकर अपनेंकुलकी प्रनालिका और बहोत्तरखापके नख बोंक इत्यादि प्रस्नपूछनेका बंदोवस्तहोकर मेरेकोबुलानेंकीआज्ञामिलें जोअगर जागेजी मेरेप्रस्नोंका यथोचित उतरदेंगेतो मेरीशक्तिप्रमाण पंचोंकीसल्लाःसें इनामदेऊँगा और जागाजीका कुलखरचभीदेऊंगा यहपत्र सर्वजगें महेश्वरी प्रियमित्रोंके पासभेजे और बंदोवस्तभी हुवा व चंदमुद्दततक मेंनेंराहाभीदेखी पर नतोजागाजीआये और न कहींसेंमेरेको बुलानाआया न जानेंक्याहुवा जैसें कूपमेंपथ्थरपटका बुदबुदाभीनहिंउठा पर जानागयाकि यहग्रंथछपेपीछे बह लोग झूटीहलावणकर कूकडे सी बाँगदेनेंकूँ खडेहोवेंगे पर उनकेहक्कमेंअच्छानहीं क्योंके पंचोंसेबेमुखहोनेसें ह्रदयस्थानसें भावलुप्तहोजाताहै और उधरसेंकुछमदत इतिहासख्यातेंकी नहींमिली पर मेरेकोंतोइसीग्रंथके पूर्णताकरनेकीही आवस्यकताथी सो ग्रंथबनानाशरूरहा और बहोतसीबातें भी ह्रासलकर छंदबंद व बारताबंद व साढीवारहन्यातके व चोरासियोंकाभी संग्रहकर ग्रंथपूर्णतासेंवनाकर श्रीमान श्रीश्रीमाहेश्वरीपंच इंदोरवालोंसें ग्रंथसुनानेकी अरजकरी तब पंचोंनें यथोचित्तबातसमझकर सेवगोंकेसाथ सर्वज्ञातिके स्वज्ञपुरषोंकों बुलाकर श्रीज्यानकीवल्लभजी

केमंदिर पंचायतीमें स्थितहुये और संवत १९३९ फाल्गुनकृष्ण १ के दिन सुचित्तहोकर कल्यब्रह्म सर्वजनोंनेंसुन और राजीहोकेबोले के यहतोतुमनें अपनींजातीका साख्यातकार दर्पणहीबनादिया अबतुमकूँ क्याहोना और क्यामदतमाँगनाचाहतेहो सोकहो तबमेंनेंअर्जकीके मेरे कोंतो आपकीकृपा और महरवानीहीचाहिये तब पंचोंनेंफेरफरमायाके यहतोबनीहीहै पर कुछऔरमदत चाहतेहोसोमाँगो ॥ तबमेनें यहअर्ज स्पष्टकरीके मेरेकोंकुछरुपयेपैसेकीतो चाहनाँ हैनहीं फकत आपलोगसुनके इसग्रंथकों छापनेकीतोआज्ञादिरावें और इस मेरेतुच्छबुद्धिके बनायेहुयेग्रंथकों अंगीकृतकर वर्तनूकपेंलावें और प्रथम कुछ सगाईसगपण डोडावाँका होगयाहोय सोतो भूलकरहुवाकसूर पंचमाफकरावें और अबहीइसग्रंथानुसार भाई और व्याही का खयालरखें कि कौंन कौंन भाई हें और च्यार साख छोडकर बाकीकेव्याहीहे इत्यादि दत्तपूत्रभीलेनेमें अपनेंगोतभाईकी निश्चयरहेगा एसे २ अनेकफायदेहोंगे और अपनीं जातीमें कोईभी प्रकारका घाँदाधूँदी कभी नाहिं पडेगा यहसुनकर पंचोंनेंफरमाया के तुमतो छापो छापो और छापके सर्वदेसदेशाँत्तरोंमें प्रसिद्धकरो जिस्सें अपनीं जातीकी वर्तनूक अच्छीबनीरहेगी. यहतो अपना कुलशुद्धरहनेका अच्छाही खुलासा होगयाहे पर अब इस्कोंछापनेंकी क्यादेरीहे तबमेनें यह अरजकरीके श्रीबालाजीमाहाराजके देवलगाँवके पंचोसें जरा कॉनोंबारे औरभीनिकालनाहे सू ग्रंथ अविलोकनकराके उनकी और आपकी आज्ञानुसार जलदीही छापकर नजरकरूंगा तब पंचवोलेकी जरूरहे उनकीभीआज्ञालेनाचाहिये तब इसीप्रकारसें श्रीबालाजीमहाराजके देवलगाँवके कार्त्तिकमासकी बडीयात्रामें कृष्ण २ द्वतियाकों श्रवणकराके छपानेकीआज्ञामाँगी तो वहाँभी यथोचित्त प्रसन्नताकेसाथ सर्वपंचोंनें छापके प्रसिद्धकरनेकी आज्ञादी ऐसेंऔरभी केईजगोंसें यथोचि-

त्तआज्ञामिली अबमेनें बडेमहनतकेसाथ ५० वर्ष परीश्रमकरिके यह-
जातीनिबंध छंदबंद व वार्तावंद उदाहरण कोष्टक सहितबनाके छापक-
रपंचौंके नजरकीयाहै सो सर्वपंच इसग्रंथकौं अंगीकृतकरके इसीबरत-
नूकपर अपनींजातीकी कारगुजारी करतेजावेंगेतौ अपनाँकुल वहोतउ
त्तमबनारहेगा. नहींतौ एककासगपण एकसें अपनें भाईबंदौंहींमें गुंथ
मगुंथाहोजावेगा. देखो आगू कलूकालकाबखतहै जिसकारनक-
रके यहइतिहास कल्पद्रुम माहेश्वरी कुलशुद्धदर्पण सबकेपासरहनाचाहि
ये. और सगपणसगाई दत्तपूत्र खोलेलेनाँभी इसीकेप्रमाँणसें करनाचा-
हिये इसपर अखतियार पंचोंकाहै मरजादातौ पंचरखेंगे म्हेंतौ फकतलि
खणेंकाताबेदारहूँ. सो मेरीबुद्धिःकेअनुसार संवत १८९८ सें आजपर्यंत
अतिमहिनत और अधिकद्रव्यखरचकरके ग्रंथसंग्रहकर यथोचित्त
ख्यातें पंचौंके नजरकर सविनय प्रार्थनाकरताहूँके इस्को अंगीकृतकरें.
पंचौंकोयोग्यहैकि यह धर्ममर्यादाकीबात जरूरपालनाचाहिये ताकरिके
मेरीभी महनत सुफलहो और जातीमेंभी प्रबंध स्वच्छतासेंबनारहे
॥ यहइतनालिखना केवल मेरीमूर्खताहै क्योंकि अगाडीबडेबडे ऋषी
कवी माहात्माहोकर अनेकग्रंथ धर्ममारगके बनाकर प्रसिद्धकरगये और
इतनीप्रार्थनाँ किसीनेंनहिंलिखी एसाकोईकहेगातौ वोबातठीकहै वह
निशप्रिय वार्तावर्णनकर्ताथे और समयकालभी अत्युत्तम शत्ययुग त्रेता
द्वापुर था अब जरासमझनाँचाहिये इधरतौ कलूकालहै और धर्मकाभी
विच्छेपहोनेंकी विवस्तानजरपडने लगी और विद्याभी अपनेंलों-
गोंमें सिवायकमाखानेके जादाबाचनेंपढनेंकी नजरनहिंआती और इस
समयके मनुष्यभी बडेआलसीहोनेंलगे जब जातीके धर्ममार्ग शुधारन-
विषयमें फिकरकिस्कों है और ग्रंथबढजावेतौ कोईबाचेभीनहीं इसहे-
तूसें बहोतही सारांसखेच २ कर लघुकरदिया नहींतो ये ग्रंथ अलबतें
बीसहजार २०००० श्लोकोंका भरणाँहोजाता पर इतनाहींबाचकर बर्ते

नूकपेंलावेंगेतो यहीधन्यवादमानूँगा इसवास्ते सविनय वारुंवारयहीप्रार्थ-
नाहै कि जराइस्कौंवाचकर महरवानीकेसाथ स्वीकारकरेंगे.

आपका अनुचर.

सहाशिवकरण रामरतन दरक माहेश्वरी मूँडवाका.

अथ वार्तिक मूल कल्पवृक्ष ॥

इतिहास कल्पद्रुम माहेश्वरी कुलशुद्धदर्पण वार्ताबंद प्रारंभ ॥

श्रीयुत श्रीश्रीमान श्रीश्री माहेश्वरी महाजन सकलगुँणनिधाँन धर्म
धुरिंधर धर्मपालक शुद्धाचार ग्राही अनाचारके त्यागी बडभागी निर-
हिंसक धर्मकेधारी परौपकारी ताकी आदि प्रनालिका किंचित् २ सूच-
ना वार्तावंद वर्णन ॥ सहा शिवकरण रामरतन दरक माहेश्वरी मारवाडी
मूँडवेवाला कृत लिख्यते ॥ सूर्यवंसीराजावौंमें चहुवानजातीके
खडगलसेंणनामराजा खँडेलानग्रमें राज्यकरे वह राजाबडा बरवीर रण-
धीर प्रजाकेपालक न्यायाधीस पृथ्विके भूषण धर्मके धौरी एसेराजा
महाराजाधिराज निष्कंटक राज्य करतेहुते तिनकेराज्यमें सकलसुखपूर
दुखदालीद्रदूर ॥ रयतके मुख नूर जहूर और खजानेंभरपूर सवरियास-
त हजूरके हजूर ॥ हुकमपेंहाजररहती तिनके राज्यमें मृघ और मृघ
राज एक जगह पानीपीतेथे जालम व जुलमी पेटऔरही रजवाडेंमें
जायके भरतेथे यहाँके दडवडाटेसें आसपीसके वडेवडेराजावौंके जी-
भीडराकरतेथे और दूरदूरकेकितेकराजा पेसवाईभराकरतेथे ॥ राजा-
माहाराजाँके श्रवणअवाज आनंदवधाइयोंकी ही आतीथी व आठपोहोर
चौसटघडी खुसीहीमेंजातीथी ॥ वडा दयावान और दानींराजाथा पर
उस्कें एकपूत्रनहींथा इसी चिंतामें सवरयत और राजधानीथी एक स-
मय राजामाहाराजानें भौदेव जगतगुरु ब्राह्मणौंकूं वडेआदरपूर्वक अपनेंमं

दिरमें बडीहीनिम्रताके साथ अर्घपाद्य सेवनप्रार्थना प्रेमभावप्रीतिकरि-
के अतिद्रव्य अर्पणकरतेभये तब ब्राह्मणप्रसन्न होकर बरदेते भये राजा-
नें हातजोडकर बरअंगीकारकीया बर ब्राह्मणवाक्य हेराजन तेरा मन
बाँछितसिध्धहो तबराजाबोला हे माहाराज मेरेकूँतो एकपूत्रकीबाँछनाहै.
तब ब्राह्मणोंनेंकहा हे राजन तेरे पुत्रहोगा तूँ शिवशक्तिकी सेवाकर
तेरे चक्रवर्तिक पूत्र शिवजीकेबर और हमारी आसिर्वादतें बडाबल और
बुद्धिःमानहोगा परंतू सोलह वर्षतक उत्तरदिसाकोंतो नहिं जाय. और
सूर्यकुंडमें नहिं न्हाय. और ब्राह्मणोंसें द्वेस नहिंकरेतो चकवेराज्य-
करेगा नहींतो इसीदेहसें पुनर्जन्महोजायगा तब राजानें बचनदियाके सो-
लावर्षतक उत्तरादिसाकों गमननहिंकरेगा और नें सूर्यकुंडन्हावेगा तब
ब्राह्मणोंनें पुन्याःवाचन पढके आसिर्वाददे अक्षतदिया राजानें द्रव्य गऊ
पृथ्वि दे ब्राह्मणोंकूँ धनपूरितकर बिदाकिये तब भोंदेव अतितुष्टवाँन्हो-
के वरदेबिदाभये राजा प्रार्थनाकरिकेकहाके आपकाबरमेरेकूँसिद्धहो जब
तथास्तुकह अपनें २ स्थानोंपेगयें ॥ राजाके चौवीसराणियाँथी जिस्में
चांपावतिराणीके ग्रभाधानहोके राजाकेपूत्रहुवा और साइयाँ बधाइयाँ
बँटनेंलगी सर्वजोतसी लग्नमहूर्त घडीसाधके राजपुत्रकानाम सुज्ञानकँवर
रक्खा अवतोराजकुमार राईबधता तिलवधे और तिलवधता जवबधे
दिन २ अधिकतें अधिक जन्मतेही बडेबीर बिचिक्षणभये वर्ष पांच
सातका होतेही घोडे और शस्त्र साधन करनेंलगे बारावर्षकी उम्मर
में होतेही शत्रूतो धूजणेंलगे और मित्र पगपूजणेंलगे चवदेविद्यानि-
दान पढकरपरिपूर्णभये ॥ और नित्यप्रति गायन सांगीत नट नाद
विद्या समझणेमें बडेप्रवीणहोके ब्राह्मण व जाचकोंकों नानाप्रकारके दान
औरदक्षिणाँ मनबाँछितदेतेभये तबतोराजाकों वडा आनंदआवताभया
ताहिसमयमें एकबौध (जैन) मतवालेनें आयके राजवूत्रकों जैनधर्मो-
पदेसदेके शिवमतसें बिरुद्धकरादिया और ब्राह्मणोंके नानाप्रकारसें दोष

वर्णनकरता भया ताकरिके कुंवरकीबुद्धिः शिवमतसें विरुद्धहोके जैन-मतमें प्रवर्तभई और ब्राह्मणोंसे द्वेसकरनेंलगा व अपनें सम्पूर्णराज्यमें शिवमूत्रिका खंडनकरिके जैनमंद्र स्थापनकरादिये उसदिनोंमें कोईभी ब्राह्मण शिवालयजाता उनको जैनवादी माहादुखित्तकर यज्ञोपवित्र तोड्डालते और राज्यकुमारकी सहायतासें जैनियोंनें वडाझगडाम-चादियाथा कहींबी जग्य जाग्य देवपूजा हवनादिक नहिंहोनेंदेते केवल जैनमतस्थापनहोगयाथा और तीनूँहीदिसामें राजपुत्र फिरकर जैनादि-ग्विजयकीया फगत उत्तरदिसाही बाकीरहीथी वहाँजानेंका राजानेंबर्ज-रखाथा और ब्राह्मणभी वहाँ यज्ञकराकरतेथे यहबात राज्यकुमारसुणकर बडाक्रोधितहोता पर राजामहाराजाका बरज्याहुवा वहाँ जानहिंसकताथा परंतू प्रारब्धरेषाकोंनमिटावे एतो पुनर्जन्महोनाँहिंथा सू एकसमयमें प्रारब्धरेषाने जोरकिया तवउमरावोंसहित बुद्धिपलटकर उतरदिसामें-चलेगये नहिंजानाथा वहींजाकर सूर्यकुंडपेखडेहुये वहाँ छवरिषेश्वर पारासुर गौतम आदिलेके जग्यारंभकर कुंड मंडप ध्वजा कलसादि स्थापनकर बेदध्वनिसहित जग्यकरतेथे तहाँराज्यपूत्र बेदध्वनि सुनकर और जग्यसाला मंडपदेखकर बडाआचर्यकीया किदेखो मेरे कोतो यहाआनामन्हाँकीया और राजानें यहाँ छुपकर जग्यारंभकीयाहे यहजतुराईमेरेकूँ आजमालूमहुई तबतो अपनेंसंगके सुभटोंकों कहनें लगाकि इनब्राह्मणोंकोंपकडो और मारो व जग्यसांमग्री संपूर्णछींनकर नेष्टकरदो यहसुन ब्राह्मणोंनेंजानाके राक्षसआनपडे और राज्यकुमारतो यादनहिंआया राक्षसजान घोरश्रापदेतेभये केहे अबुद्धियों तुम जड-पाषाणवतहोजावो तब वहोत्तरतोउमराव और एकराजपुत्र घोडाँसमेत जडबुद्धिः पाषाणवतभये जिनकीहलनें चलनें और देखने बोलनेकी सरधामिटकर मोहनिद्रामें प्राणप्रवेसभये यहवार्तां राजा और नग्रके-लोगोंनें सुनके वहाँआकर देखेतो कुँवर और उमराव सब श्रापितहोके

जडबुद्धिः पाषाणवतखडेहै तवराजादुःखितहो अपनाँप्रानतजदिया जब इनकेसंग सोल्हराणियाँ सतीहुई और बाकीकारावला व राव्हणाँ रहे-सोब्राह्मणोंके सरणागतजायभये जब आसपीसके रजवाडेवालेंनें राज्य दबालिया तब राजकुँवरकीकुवराणीं बहोतरउमरावोंकीं स्त्रियाँकूँ संग लेके रुदनकरतीहुई ब्राह्मणोंके चरणारविंदोंमें आकरपरी तवब्राह्मणोंने धर्मोपदेसदीया और एकगुफावतलादी जिस्मेंसबकों जोगक्रियाकासा-धन और अष्टाक्षरमंत्रदेके अष्टांगजोगसधातेभये पुन्ह वरदियाके तुम्हा रेपती महादेवपार्वतीकेवरसें शुद्धबुद्धिहोजावेंगे तवतो सबस्त्रियोंनें वडीहीतपस्यापें कम्मरबांधी और माहादेवकासुमरणकरनेंलगी तबकोईकालकेपीछे महादेव पार्वतिवहाँआवतेभये तहाँ श्रीपारबती जीनें महादेवजीकूं पूछाकेहेमाहाराज येक्याविवस्ताहै तवशिवजीनें पूर्वइतिहासवर्णनकरके पार्वतीजीकों समझानेंलगे ताहिसमय राजाके-कुँवरकीराणीं व वहोत्तरउमरावोंकी ठुकराणियोंनें जानाके सहीतो शिवपार्वती पधारे ऐसासमझके सबस्त्रियोंआकर पार्वतीजीके पगेलाग-तीभई जब पार्वतीजीनें आसीसदी के तुमस्वाग्य भाग्य धन पुत्रवान-हुवो और तुमारेपतीनके सुखदेखो और तुम्हारेपति चिरंजीवरहो एसा-बरसुनकर राणियें हातजोडके कहणेंलगी के हेमाहाराज बरसमझकर देवो यहाँतो हमारेपतियोंकी यहविवस्ताहोरहीहै ब्राह्मणोंकेश्रापतें ऐसी दुरदसा और दुरगतीकों प्राप्तभयेहैं जवपार्वतीजी माहादेवजीसें प्रार्थनाकर चर्णारविंदोंमें गिरपडी और कहाके माहाराज इनकाश्रा-पमोचनकरो जवमहादेवजीनें इनकी मोहनिद्राछुडाकर चैतन्यकीये तव तोवहसुभटजागपडे और माहादेवजीकोंहींघेरलिये जव शिवजीहसकर वरदिया के तुमक्षमाकरो तवतेंक्षमावानहोगये तहाँ सुज्ञानकँवर पार्वती जीका स्वरूपकोदेखके लुभायमानभयो जवपार्वतीजीनें श्रापदियाके अरेमंगत माँगखा सोतो जागतेहीजागा होकर मांगनेंलगा और मिश्री

लाल कायस्थ पूत्रकामदारथासू कोटवालहुवा ॥ जब बहोत्तरउमरावबोले हे महाराज अबहमक्याकरें हमारेघरमेंराज्यतोरहानहीं तब माहादेवजी-नेंकहाके तुम क्षत्रत्व व शत्रछोडके वैश्यपदधारणकरो जब यहबरशुभ टोंनेंअंगीकृतकीया परंतूहातोंकीजडता नाहिंमिटणेंसें हातोंमेंसें शस्त्र-नाहिंछूटे तब माहादेवजीनेंकहा तुमसूर्यकुंडमेंन्हावो जबसूर्यकुंडमेंन्हा-तेही शस्त्रछूटगये तबतरवारसेंतोलेखणी और भालोंकीडाँडी और ढालें नकीतराजू बनाके वाणिज्यपद धारणकीया तहाँ ब्राह्मणोंकों खबरभईकि वहश्रापतो माहादेवजीनें मोचनकरके उनको वैश्यबनादिया तबब्राह्मण आकर शिवजीसें प्रार्थनाँकी के हेमाहाराज इन्होंनें हमारा जग्यवि-ध्वंसनकीयाहे सोतोश्राप आपनेंमोचनकर बरदिया अब हमाराजग्य संपूर्णकेसेंहोगातबशिवजीनेंकहा अभीतो इनकेपासदेनेंकूँकुछनहींहे परंतूइनकेघरमें मंगलउत्सावहोगा जबतुमकूँ सधोमाफक यथाशक्त द्रव्यदीयेजाँयगे और तुमइनकों स्वधर्ममें चलानेकीइच्छाकरोएसेंबरदेके संभूतो अपनेंलोककोंसिधारे और ब्राह्मणोंनेंइनकों वैश्यधर्मधारणकर वाया जब वोहीबहोत्तरउमराव छवरिषेश्वरोंके चरणारबिंदोंमेंपडे तब एक २ रिषेश्वरके बाराबारासिष्यभये सोही अबयजमाँनकहलायेजातेहे केईदिनपीछे खंडेलाछोडकर डीडवाणेंआबसे वो बहोत्तरखाँपकेउमरा-वथे जिस्के बहोतरखांप डीडूमहेश्वरी कहलानेंलगे अबतो ईश्वरकी-कृपा और माहादेवपार्वतीके बरदान व ब्राह्मणोंके आशीर्वादतें बहोत्तर खाँपका बढावहोकर देस २ और गाँव२ में महेश्वरियोंकीजय और विज-यहोकर बडीफेलावटहोगई हे यहमूलकलपतरु वार्ताबंद किंचितवर्णन-कीया अब छंदबंद विस्तारपूर्वकवर्णनकरेंगे ॥ इतिबार्तिककलपब्रक्ष ॥

अथ

माहेश्वरी आदउत्पत्ती प्रनालिका छंदबंद.

॥ दोहा ॥ प्रथममहेश्वरिजातकौ कहूँकलपतरुजाँन ॥ पुनिचौरासीन्यात-
कौ करहुँयथावाखाँन ॥ १ ॥ छंदछप्पय ॥ राजाखडगलसैंन बंसचौहा-
नउजागर ॥ रिधूखँडेलेराज बुद्धिबारदगुणआगर ॥ भुजप्रचंडबरवीर
धीरधरधरमधुरिंधर ॥ कुलदीपकअसभाँण पहुमिंपरतापपुरिंदर ॥ आ-
णदाँणचहुँओर सझेसाँवतसैनावर॥रूपसीलगुणरास नराँनरअडिगनृभे-
नर ॥ नरियंदयेमभोगेइला नहिंपाटपूत्रविलखौरहें ॥ द्विजजनमुनेसस-
नमाँनिके फलदेहुप्रसन्नपयूँकहें ॥१॥ जबबोलेभोंदेव नृपतसंकरवृतकी-
जे॥ अष्टाक्षरततमंत्र तुरतरसनाँरटलीजें॥मनबाँछितसुतलेहु बरषसोला-
सुखपावो ॥ पुनर्जन्मइणदेह जतनविधिकोटकरावो ॥ सूर्यकुंडनहिंन्हाय
त्यागउत्तरदिसराई ॥ षोडसबर्षनृभाव चक्रजगअमिटफिराई ॥द्विजदो-
षभूलकीज्यैनको बहुतभाँतिडरतोरहें भोश्वरनरिंद्रसमुझायके गूप्तभेद-
पर गटकहें ॥२॥ राजोवाच ॥ दोहा ॥ द्विजआसकमोपूत्रहे सूर्यकुंडन-
हिंन्हाय षोडशवर्षनृभायहूँ उत्तरदिशानजाय ॥ ३ ॥ पुनाःवाचनवि-
प्रपढ दीआसिकद्विजदेव ॥ पढोमंत्रसुतपायहो शिवशक्तीकरसेव ॥ ४ ॥
विवदभाँतकरवीनती पूजिनृपतिद्विजपाय करसनमाँनविदाकिये निज-
घरबैठेआय ॥ ५ ॥ रटेमंत्रजजजग्यबृत दानधर्मतपकीन शिवपूजतप-
रसनभये रीझिपूत्रफलदीन ॥ ६ ॥ छंदपद्धरी ॥ आनंदकरतखंडेले-
राज ॥ भिडसाथसदानृपसैन्यसाज चांपावतिराणींपाटथान ॥ तिनके
सुतजनम्योवंसभान ॥ ७ ॥ सुज्जानकुँवरनृपनामदीन्ह ॥ जसवासजगत
बहुतभाँतलीन्ह ॥ तिलबधतबधतजोराजबीर चढअश्वफिरावतअति
सुधीर ॥ ८ ॥ सझिसाथसखालेआपजोड ॥ नाहराँथाहराँकरतदोड ॥
ससूतरांसंकभागीसुचित्त ॥ कांकडाँअडवियाँकरतनित्त ॥ ९ ॥

झगडालूदावालेतआप ॥ निष्कंटप्रजापहुमींप्रताप ॥ बरसाँअबद्वादस-केप्रवाँण ॥ पढगयौचातुरीअतिसुजाँण ॥ १० ॥ नटनादकलाचाहत सुचित्त ॥ मनबांछिजाचकिनदेतबित्त ॥ एकबौधबेकरीरूपधार ॥ छललयौतुरतभौपतिकुमार ॥ ११ ॥ द्रिजदौषदृढायेअतिप्रसंग ॥ भ्रमभूलफिरचौध्रमपलटरंग ॥ भनजैनग्रंथसुचिकंठकीन ॥ रुचिबढत पढतदिनदिननवीन ॥ १२ ॥ तजजग्यकर्मश्रुतिधर्मछौड ॥ गुरईष्ट आदिमरियादतौड ॥ जपजापदानमखबंधकीन्ह सिद्धांतएकमतजैनची-न्ह ॥ १३ ॥ आचारनेष्टचरचाचलाय द्विजजातशिवालयदेपलाय ॥ बेदोक्तधर्मकौकरतखंड ॥ बादाविवादकरदेतदंड ॥ १४ ॥ चूकेतेंपुस्त-कछींनलेत ॥ उपहास्यकरतकरतालदेत ॥ अटकेकोउजैनींकहअनाद ॥ पखछौडलगावतस्यादबाद ॥ १५ ॥ कौसकेजीतकरकुँवरखीच ॥ बक-वादकरतबाजारबीच ॥ शिवधर्मछौडकोउबौधथाय ॥ धनदेतकुँवरकर मित्रआय ॥ १६ ॥ सझिबौधमंडलीसाथलेत ॥ गलशूत्रदेखिअतित्रा-सदेत ॥ करजैनमंद्रपुरठामठाम ॥ ताकीदहोक्मदरग्रामग्राम ॥ १७ ॥ बाचालफिरतबहुतेकबौध ॥ कहुँहौतजग्ययहकरतसौध ॥ कोउ आनकहैअमुकेसथान ॥ चढिजायतुरतधर धनुषबान ॥ १८ ॥ यहिभाँतअहेडेचढतसूर ॥ स्यामंतसाथपखपाणपूर ॥ भलकं तसेलढलकंतढाल ॥ खलबलहिंपिसुनजनदेखिकाल ॥ २९ ॥ दिग्विजयबौधमतथापदीन्ह ॥ उत्तरदिसबाकीएकचीन्ह ॥ तहँबसतबीप्र-सुनिउठतझाल ॥ परबसअजौरनृपदयोपाल ॥ २० ॥ अबऔरसुनौअ-दभुतप्रसंग ॥ पूरबतेंपश्चिमउलटिगंग ॥ बरज्जौनहिंमान्यौंनृपतकेर ॥ उत्तरदिसचालपौअर्णीफेर ॥ २१ ॥ यहहौंनहारकौसकेटार ॥ भवतव्य-दइवमायाअपार ॥ सबभूलिगयेप्रक्रतीसुभाय ॥ वहसूर्यकुंडपैंखडेजाय ॥ २२ ॥ भामनींरेखप्रारब्दजोग ॥ अटकावतहाँमिलवौसँजोग ॥ जहँज-ग्यकरतमिलरिषिसमाज ॥ पाराश्वरगौतमभारद्वाज ॥ २३ ॥ दाधीच-

सारस्वतशृंगिवाल ॥ नितकरतवेदध्वनिअतिबिसाल ॥ तहाँरच्ये कुंडमंडपअपार ॥ साकल्यहव्यघ्रतश्रवतधार ॥ २४ ॥ दोहा ॥ सुनत-रिचानृपसुतनकूँ भयौक्रोधअतिघोर करतकवनमखदेसमम बाँधहुमार-हुचोर ॥ २५ ॥ हमकोंबरजतआतइत रौपियज्ञनृपराज ॥ पैइनकीजा-नींपरी यहचतुराईआज ॥ २६ ॥ हुकमलोपहिंसाकरे दीज्येताकोंदंड ॥ जैनधर्मपालेजरू आनसकलमतखंड ॥ २७ ॥ जिनकोंघरप्याराल‌गे पहुँचोपरबतपार ॥ साथरहोसोसाथियाँ हातगहोहतियार ॥ २८ ॥ धायधायकरखड्गले बाहिबाहिमुखभाक तांम्रकोटद्विजतबरच्यौ अश्वग-येसबडाक ॥ २९ ॥ भोश्वरअतिअकुलायके भयेअचानकभीत ॥ आन-परेराकसजनूँ नृपसुतनायोचीत ॥ ३० ॥ छंदपद्धरी द्विजदेवदयोअति घोरश्राप शटहोहुउपलसमसहहुताप ॥ जडबुद्धिभयेअश्वनसमेत ॥ शरशस्त्रहातथिररहेखेत मनबुद्धिचित्तहंकारलीन ॥ जियमोहनींदपरबे-सकीन जडभयेसकलपथ्थरसमान ॥ सबभूलिगयेदेहाभिमान ॥ ३२ ॥ तबलिंगदेहमेंबसेप्राँन ॥ जलशस्त्रअग्निकोनाँहिंभाँन ॥ गुरसेवाकोफल-लग्योआय ॥ जनुपरमहंसपदलयोपाय ॥ ३३ ॥ परचंडपापयहप्रबल-पूर ॥ करजग्यबिध्वंसनकर्मकूर ॥ मंडलीमाँहिंकोउबच्योनाँहिं ॥ उम-रावबहोतरकुँवरमाँहिं ॥ ३४ ॥ दोहा ॥ सुनआयेनृपनग्रनर भयोबहुत-संताप ॥ करेंनृधारबिचारिके छुटतनदारुणश्राप ॥ ३५ ॥ देखिकुँवर-पाषाणसम मुरछिपरचोनरनाथ ॥ प्राणतज्योएकपलकमें सतीसोहोला-साथ ॥ ३६ ॥ उतजडबुद्धिकुँवरभो इतनृपतज्येपिरान ॥ दटेहुतेशत्रू-जगे छीनलईधरआन ॥ ३७ ॥ छंदपद्धरी ॥ देहांतभयोखड्गलनरेस॥ तबऔरपलटभयोभूपदेस ॥ नृपसंगसतीसोलाप्रसिद्ध ॥ रहिऔरआन-रिषिसर्णलीद्ध ॥ ३८ ॥ कुवराणींकरबिनतीअपार ॥ संगलीन्हबहूतर-सुभटनार ॥ परपायकरतनाँनाँबिलाप ॥ द्विजदयोमंत्रउपदेसजाप॥३९॥ एकगुफादईतपकरनजान ॥ स्वज्ञानकरहिंपतिसंभुआन ॥ बरदयोमुनि-

नत्रियसीसधार॥ तपकरनलगीएकचितअपार॥४०॥पद्मासणथिरकर-
प्राणरौध जपमंत्रउलटनिजदेहसोध॥ सुखमणाँध्याँनत्रिकुटीप्रवेस॥सझि-
राजजौग्यश्रमनाँहिंलेस॥ ४१ ॥ मनइच्छयागढचढिउतरजाय ॥ नित
करतपतिनकीसेवआय॥ आरतकरटेरतबारबार॥ हरहरसंकरमिलक-
रपुकार ॥ ४२ ॥ दोहा ॥ धरतध्यानसबबालमिल कंदमूलफल-
खाय॥करतजौगअभ्यासनित शंकरशक्तिमनाय॥ ४३ ॥ छंदपद्धरी
चिरकालबीतिगयेसंभुनाथ॥ नरप्रतिमाँदेखीशस्त्रहात भयेशूष्कअंग-
विडरूपदेह करप्राणायाम्यनहिंस्वासलेह ॥ ४४ ॥ करजौरिप्रस्नपू-
छतरधंग॥ केहिभाँतभयेजडपुरषअंग विधिपूरबकहियेशिवसुजान॥
तुमकरहुकृपानिजदासिजान ॥ ४५ ॥ शिवकह्योसकलइतिहास-
तांत ॥ विधिसहितभेदपूरबबृतांत ॥ यहकथापरसपरहौतजान॥
वहसुभटनारढाढीसुआन ॥ ४६ ॥ परपायबिनयबहुभातकीन्ह सुन-
शक्तिबिवदआसीसदीन्ह ॥ ह्वौस्वाग्यभाग्यधनपूत्रवान ॥ चिरजिवौ-
नाहतववढौमान॥ ४७॥ नृपनारिकहैंवरसमुझिदेहु ॥ जडबुद्धिभये
पतिदेखिलेहु॥ यहसुनतशिवाअतिचिंतकीन्ह ॥ शिवचरणजायनिज-
सीसदीन्ह॥ ४८॥ बहुभाँतिविनयकरहररिझाय ॥ कहिकरहुसुचेतन
नाथयाहि॥संकरतबतीक्षणफूँकिनाद॥ लगिश्रवणद्वारछुटगइसम्हाद४९
नैत्रनपरअमृतछाँटदीन्ह॥ खौलेकपाटपरकासकीन्ह॥ इंद्रियाँचेततनभ
यौग्यान छुटिगयौसुषोपतस्वप्नध्यान॥ ५०॥ तजमौहनींदचेतनसुभा-
य॥ अकुलायकहैंधरधायधाय॥ करक्रौधसंभुकौंलयौघेर ॥ ल्यौमारि
जग्यनहिंकरेफेर॥ ५१ ॥ हसिविश्वनाथवरअखिलदेह ॥ करक्षमाँअ-
तहिआनंदलेह थिरभयेरहेचरणनलुभाय॥ हमकरेंकवणविधिसौउपाय
॥ ५२॥ तवसंभुदयौवरबइश्यहौहु कलुकालकलपतरुअखिलमौहु ॥
शुभटनकेशस्त्रकरछुटतनाँहिं॥ शरगलेलुहागरकुंडमाँहिं॥५३ ॥ किर
पाणत्यागकरकलमलीन्ह तजढालतराजूतुरतकीन॥ नृपकुंवररूपवस-

मतमलीन उमियाँआप्योंखामाँगदीन ॥ ५४ ॥ तबतेंयहमंगनलगेलार ॥
जागाकुलबौलतजगपुकार ॥ भइअर्द्धखाँपभिक्षुकीकर्म ॥ रहिखाँपबहू-
त्तरवैश्यधर्म ॥ ५५ ॥ सुनकेरिषिआयेशिवनकेत तिनकहीकथाकारन-
समेत इनजग्यविध्वंसनकियोमौर वहआपमोच्यभयोंक्रपातौर ॥ ५६ ॥
यहबसेआनकहुँदेसजाय ॥ वहजग्यसपूरणकेमथाय ॥ संकरसुनयहनिर-
धारकीन्ह ॥ धनलक्षनिनाणूँजौडदीन्ह ॥ ५७ ॥ यहव्याजसहिततवपूत्र
लेह ॥ इनकेसुतमंगलमाँहिदेह ॥ षटरिषिनबहूतरलगेपाय ॥ गुरुएकद-
वादससिष्यथाय ॥ ५८ ॥ क्षत्रत्वछाडकरवैश्यकर्म ॥ भयेसमाश्रित्य-
धरिविष्णूधर्म उपनयनमंत्रउपदेसकीन्ह ॥ बहुभाँतआसिकारिषिनदीन्ह
॥ ५९ ॥ वाणिज्यबृद्धिसुरतरुसमान ॥ तवसमपदवीकोउलहनआन ॥
धनपूत्रबुद्धिवरपुरहुतौर शिववचनफुरहुआसीसमौर ॥ ६० ॥ कलुप्रथ-
मचरणशकप्रथमजाँन संमतनौकेशुद्धज्येष्टठान ॥ नौमीबुधउत्तराबृष-
कोसूर ॥ ग्रीषमरितुदिनमध्यानपूर ॥ ६१ ॥ तासमयमाहेसीश्वरीआन॥
माहाजनपदवीदीप्रगटजान ॥ खंडेलेनग्रगिरिमालकेत ॥ पुनिबसेडीड-
पुरउद्यमहेत ॥ ६२ ॥ तबतेंयहडीडूछापलीध ॥ अवफेलगयेसबजग
प्रसिद्ध ॥ कहदरकसहाशिवकरणवात ॥ सुनलेहुआदिसाखाविख्यात ॥
॥ ६३ ॥ दोहा ॥ राजकुलीछत्तीसके सुभटबहूतरजान॥ एक कुलीकी
खाँपद्वय पंडितलेंहिंपिछान ॥ ६४ ॥ च्यारजातछवचक्कवे आदिधराप-
तिईस छत्रछोडमाहाजनभये राजकुलीछतीस ॥ ६५ ॥ छंदजातभुजं-
गी ॥ प्रथममूलकीविगतऐसेंबरवानी ॥ कहूँऔरआगेजिसीभाँतजानी ॥
पहलीगुराँकेपगेजायलागौ ॥ सुजानोंचुहानंअर्द्धखाँपजागौ ॥ ६६ ॥
॥ अबेखाँपनीकेबहूतरगनाऊँ ॥ सुनौचित्तदेछंदआछेबनाऊं ॥ सोनी १
और सोमाणीं २ जाखेत्या ३ सौढाणीं ४ ॥ हुरकट ५ न्याति ६ हेडा
७ करव्वा ८ काँकाणीं ९ ॥६७॥ मालू १० सारडा ११ कहाल्या १२
गिलड १३ जाजू १४ ॥ बाहेती १५ विदादा १६ बिहाणीं १७बजाजू॥

१८ कलंत्री १९ रु. कासट २० कचौल्या २१ कल्हाणीं २२ ॥ झँवर २३ कावरा २४ डाड २५ डागा २५ गटाणीं २७ ॥ ६८ ॥ राठि २८ बिड्हला २९ दरक ३० तौसणीवाल ३१ राजे ॥ अजमेरा ३१ भँडारी ३३ छपरवाल ३४ छाजे ॥ भटड ३५ भूतड़ा ३६ बंग ३७ अट्टल ३८ इँदाणीं ॥ ३९ भुराड्या ४० भन्साली ४१ लढा ४२ मालपाणीं ४३ ॥ ६९ ॥ सिकची ४४ लाहौटी ४५ गदइया ४६ गग्राणीं ४७ ॥ खटव्वड ४८ लखोट्या ४९ असावा ५० ॥ चेचाणीं ५१ मुणधण्याँ ५२ मूँधड़ा ५३ चौखड़ा ५४ चँडक ५५ राजे ॥ बलदवा ५६ बालदी ५७ बूब ५८ बाँगड ५९ बिराजै ॥ ७० ॥ मंडोवरा ६० तौंतला ६१ आगिवाल ६२ आगसौडं ६३ ॥ प्रताणीं ६४ नाहूंधर ६५ नवालं ६६ पलौडं ६७ ॥ तापड्या ६८ मिणियार ६९ धूत ७० धूपड़ ७१ मोदाणीं ७२ ॥ सहा दरक शिवकरण बहुतर बखाणीं ॥ ७१ ॥ दोहा ॥ पौरवार १ पुनि देपुरा २ मंत्रि ३ नवलखा ४ जान ॥ जैमधर्मकुलत्यागकर असपतमिलियाआन ॥ ७२ ॥ मावेटीमह्लातणीं टाँवर भाटीटोड ॥ जिणसूँबागाटाँवरी चँवरीदीन्हाचौड ॥ ७३ ॥ पुसकरणाँबीसागुरू ॥ चेलाचावंडकेर ॥ माकरणसगोतरकह्यौ मिलियाजेसलमेर ॥ ७४ ॥ अथ बीकानेरवालामहता कवित ॥ महताबखतावरसिंध राठी सहलाणींबोंक फतेसिंगोत ताके उरवसीखवासथी ॥ नाथीनामताकेसुत सहजराम रूपचंद रूपपुत्रहीन सहजरामकेऔलादभी ॥ रावतसरबूलचंदकरवाकीपरण्योंधीय राजकीहिमायततें ताकेसुतत्रयभये ॥ सेरसिंघ ग्यानसिंघ मेघसिंघ जंगजीत रंगदयौराजापैंनाथीसुतकहगये ॥ ७५॥ दोहा सहजरामसगपणकरण कीन्हाँकेईउपाय ॥ दैवजोगभटनेरमें मेलमिलायोजाय ॥ ७६ ॥ सहजरामकूँबूलचंद बेटीदेनब्रव्योह ॥ भीरपरी भटनेरमें घेरामाँहिंग्रह्योह ॥ ७७ मुकरगयौफिरबूलसाः परणावणइनकार ॥ बीकाणेंसरकारकी हुईमदततिणवार ॥ ७८ ॥ राजहिमायतक-

रपरण कीन्हौंजगबिवहार ॥ ताकेसुततृयबुद्धिवर जंगजीतजोधार॥७९॥ मूलखाँपएसेंभई ताकासुणोविचार अबआगेविस्तारबहु बौंकनामनिरधार ॥ ८० ॥ रिखिजनकेआसीसतें बढचौबहुतपरिवार ॥ चढचौसघन घनकल्पतरु कवियनपावैपार ॥ ८१ ॥ छंदजातभुजंगी ॥ जणेंपूतपौता फलीबागवाडी ॥ गिनौंबौंकनोसौनियासीअगाडी ॥ मिलेहीरपुखराज माणंकपंन्ना ॥ भिलेनीलमोतीप्रवालंरतंन्ना ॥ ८२ ॥ भईबेझडीखीचडी· भेलसेलं ॥ लखेनाहिंभाईसगाकोसहेलं इसीबिद्धदेखीमुजेत्रासआई ॥ जबेपंचसौंएकअरजीसुनाई ॥ ८३ ॥ दोहा ॥ आदिबहौत्तरखापथी बढभयेबौंकअपार ॥ किनकिनकोंभाईकहै किनतेंसगपणसार ॥ ८४ ॥ किनकासुतगोदीलहै किनकोंबेटीदेहँ ॥ यहघमचौलाजातमें पंचअरजसुनलेह ॥ ८५ ॥ पंचबायक चौपई ॥ खाँपबहूतरआदिप्रमान ॥ अधिकनामहमसुनेंनकान ॥ बडेबडेरेकहीसुनाई॥ खाँपबहौत्तरअधिकनभाई॥.

तबहमछापआठसोदीया ॥ सुनसबलोगअचंभाकीया ॥ सौसबनामखीचडीकेहूं ॥ करछँटणींखाताफिरदेहूँ ॥ ८७ ॥

अथ आठसानोमबौंकसमूहवर्णन. ॥

छंदमोतीदाम ॥ कहीबिधिआदिबहूतरखाँप ॥ भयेअबफेलिकेबौंक अमाप ॥ गनाहुँ एकत्रसमग्रहनाम ॥ बनावहुँ छंदसुमोतिहिदाम ॥१॥ मोराणि मीमाणि न्याती नंदवाल ॥ काकाणि काल्हाणि कसूं बिहिवाल॥ मालाणि मुसाणि फोग्या आगीवाल ॥ राघाणि बाघाणि धनाणि नवाल ॥२॥ रूपाणि मेमाणि भया ऊनवाल ॥ कानाणि कोकाणि दमाणि दलाल ॥ दुदाणि दुढाणि मोदाणि मुछाल ॥ ईदाणि ऊंधाणि कटारचा कुदाल ॥ ३ ॥ जटाणि जेसाणि छुरचा छप्रवाल ॥ लालाणि ललाणि नराणिंहिवाल ॥ तुरक्किया तोडा भाला भुँगडवाल ॥ सीलाणिं सोढाणि डाणी पेडिवाल ॥४॥ गटाणि चिया गट्टु गाहलवाल ॥ सुखाणिं समाणि

केला पङ्चीवाल ॥ सीहाणि सुजाणिं रु तौसणिवाल ॥ सेसाणि सोमा-णि बँबू पडवाल ॥५॥ चेचाणि टुवाणि दगा फोगीवाल ॥ धाराणि धि-राणि घराणि खुँवाल ॥ बाहेति विदादा भुवानिंहिवाल ॥ नाथाणि नापा णि ऋनाणि कयाल ॥ ६ ॥ पीयाणि बिहाणि दाखेडा दंताल ॥ पीपाणि पनाणि माळू माळीवाल ॥ पदाणि बनाणि धौला धूणवाल ॥ बछाणि बोगाणी काग्या अग्रपाल ॥७॥ प्रागाणि पचीस्पा रुया रेणिवाल ॥ बासाणि बिठाणि लढा लोइवाल ॥ भौलाणि भिराणि मोदी मुँजिवाल भराणि भोजाणि खूँच्या खेड्विवाल ॥ ८ ॥ मानाणि मोराणि मुँवार्णिहिं वाल ॥ मूँजाणि माधाणि राठी राइवाल ॥ भोराणि मोडाणि भिष्याणि स्यहार ॥ साल्हाणि सादाणि सागाणि काहार ॥ ९ ॥ रदाणि रधाणि रीमाणि प्रवार ॥ लखाणि लेखाणि चेनाणि चमार ॥ साबूण्या मसाण्या माधाण्या सिलार ॥ जालाणि जिंदाणि जेठा पोरवार ॥ १० ॥ उलाणि कलाणि तेजाणि मिण्यार ॥ होलाणि खेमाणि साहा संगमार ॥ नाटाणि नेताणि लुलाणि दुसाज ॥ खेताणि खाबाणि बोराणि वजाज ॥ ११ ॥ चोखाणि भोलाणि गग्राणि नरड्ड ॥ चाँच्या चोखडा तोतला रु हिंगडे ॥ क्रिनाणि मुलतानि खटोड खरड्ड ॥ सिकाचि स्यहाणा सिरचा लोगडे १२ असावा आसोफा अठारचा अटल्ल ॥ कोठारि कसेरा खोभा खटमल्ल ॥ कोढ्याका कानूगा कचौल्या कासट ॥ कुलथ्या कलंत्रि लँबू नाडा-गट्ट ॥१३॥ कलंक्या कसूम काहारा काहोर ॥ करम्मा करवा किलल्ल खावोर ॥ जोला तापड्या तुमड्या रूचरख ॥ डागा दादल्या दागड्या रुदरक्क ॥ १४ ॥ भन्सालि भगूल्या भकावा भकड्ड ॥ मिरच्या मरो-ठि मिञ्याजि मकड्ड ॥ भूत्या भाँगड्या भुरिया रु वेकट्ट ॥ भकावा भँ-डारिपीनाणि फोफट्ट ॥ १५॥ चिमक्या चरक्खा चेनारचा मलक्क॥लटू-रचा लखोव्या लोईका कलक्क ॥ दुजारा धारूका रु धीरण डाड ॥ नागोरि राहूरचा लाहोटि अघाड ॥ १६ ॥ सिंगाड्या स्याहारा हलव्या

मीलक्क ॥ छाछ्या भाँगड्या नरेड्या रु किलक्क ॥ जाजू जेथल्या नोग-
जा रु लोलण ॥ सराप चावंड्या लोगर्ड झोलंण ॥ १७ ॥ काह्ना गोक-
न्या चोधरी रु. चँडक्क डौड्या डामडी रावत्या रु. मँडक्क ॥ बोराणि
गिदोड्या मोराणि गगड्ड ॥ हेडा पापड्या पुँगल्या रु. लोहड्ड ॥ १८ ॥
॥ डँडी डाँगरा पालड्या रायमौड ॥ लेलाणि पसारि पेमाका पलौड ॥
डेड्या खुँभड्या खिंवज्या रु धूपड्ड ॥ केला काँकरचा नाथड्या रु ध-
नड्ड ॥ १९ ॥ सेठी साँभरचा सागरचा रु. सागरं ॥ नागा नोलखा नु-
गरा रु. कौकरं ॥ राहूरचा सतूरचा साहाणि संकरं ॥ लोईका मेमाणि
साँवल्ल नेवरं ॥ २० ॥ कुया काकडा कुकड्या धनवाल ॥ किया काब-
रचा तौरण्या टकचाल ॥ रोल्या झिंतड्या चमड्या रु राँदर्ड ॥ रूघा
गिगल्या नाँगल्या रु बाँगर्ड ॥ २१ ॥ रूड्या घूबड्या खोगटा रु. लद्-
ड्ड ॥ मेण्याँ फोफल्या सारडा र मलड्ड ॥ तेला मोठडा माँडम्या रु मूँ-
गर्ड ॥ कला थेपड्या बेहड्या रु हरड्ड ॥ २२ ॥ केरा जुहरी जगरामा
सेवरं ॥ मेरा सुगरा चपटा रु केवरं ॥ ढोली दागड्या दगडा रु झँवरं ॥
मोडा भूतडा मूँधडा रु मछरं ॥ २३ ॥ जेरामा मूँजी माहिया रु नाहरं
केला बावरी बागडी रु पाहरं ॥ भलीका भुराड्या भटड्ड रु नाग ॥ ब-
टड्या बेजारा कलंक्या रु काग ॥ २४ ॥ बारीका नौसल्या कील्या
निकलंक्क ॥ काल्या बंग बंबु भूरा गुलचक्क ॥ मजीया मजीड्या मुर-
क्क्या भगत्त ॥ साहा शिवकर्ण सु जाणजगत्त ॥ २५ ॥ कवित्त ॥ अ-
जमेरा आगसूड़ कटसूरा खेडावाल गीगलिया घरडोद्या देसवाणीं बा-
णिये ॥ कुचकुचिया चिगतोडा झालरिया चापसाणिं चहाडका रु छी-
तरका जाखेड्या जाणिये ॥ घरडोद्या सोन साबू गरविया मोनाण हींग्या
नरअमडा परसरामा सूम सो बखानिये ॥ डबकोड़्या टोपीवाला दुरढा
णी द्वारकाणीं देसवाणीं दुरगड दास भलीभाँतमानिये ॥ २६ ॥ जज-
नोत्या नगवाड्या परताणीं नानगाणीं मुकनाणीं मथराणीं मालपाणीं

जानूं हूं ॥ श्रीचँदाणी कर्मसाणीं ठाकुराणीं सातलाणीं मुहलाणीं रतनाणीं लखवाणीं ठानूं हूं ॥ साहताणीं सुंदराणीं साकराणीं अरजनाणीं तिरथाणीं थिरराणीं सावताणीं आनूँ हूँ ॥ महरा ठाकुराणीं सेठ तुलछाणीं भाकराणीं बिसताणीं बावलाणीं राघवाणीं मानूं हूं ॥ २७ ॥ समवाणीं हरकाणीं देवदत्ताणी सूँघा देवगट्टणीं सिंधी डाणीं जगजानेहै ॥ देवराजाणीं बीलयाहुरकट काहालाणीं मूथा धौलेसरचा किस्तूरचा मातेसरचा मानेहैं ॥ दीहराजाणी रूप नाहूँघराणीं पाँत्या बालेपौता ग्यानेपौता देसावत ठानेहैं ॥ हरचँदाणी नरेसाणीं केसावत रामाणी खेतावत रामावत डाहाल्या प्रमानेहैं ॥ २८ ॥ हडकुटिया लाठी कूँभ्या गुलचट तहनाणीं गोऱ्या टीलावत पूरावत पौसऱ्या बसेषेहै॥ मौलसऱ्या हौलसऱ्या भानावत मानावत कल्लावत परसावत दूदावत देखेहै ॥ श्रीचंदौत मेसराणी मुलतानी ऊजवाल सौभावत मल्लावत लालावत लेखेहै ॥ कर्मचंदौत लौया वहगटाणीं प्रहलादाणीं नौसऱ्या नहूँधर ठींगा पावरिया पेखेहै॥२९ बुगदाल्या पूँदपाल्या महरा बापेचा सूँण डोडमूथा राजमूथा सुरहरा सुणिये ॥ रणदौता बापडौता बाजरा मीचरा सौनी पूँजलिया चिगतौडा माणुधणाँ मुणिये ॥ देवपुरा सुरजन मंडौवरा कचौल्याराय लेखखिया लालणिया लक्खावत लुणिये ॥ नेतसोतकरमसोत माणम्या कचौल्यासौन मणक्या मुलतानी मल्ल गौकलानि गुणिये ॥ ३० ॥ महलाणा महदाणा माणुधण्याँ मरचून्याँ बृजवासी भाकरोद्या भीचलानी भाखेहैं॥मेडिया मरौठचा मात्या मालण्याँ कचौल्याफूल सांवलका पटवारी दम्मलका दाखेहैं ॥ पाहड़का बाहड़का वलडिया माणकिया चातुरभुजाणी भूत सकरेण्या साखेहैं ॥ मडदा पावेचा भूक्या मूहणदासौत डामाँ नागणेच्या नरवरिया बसहर कविआखेहैं ॥ ३१ ॥ हरीदासौत धूत निकलंक खरनाल्या बंब बसदेवाणीं बाघला वडहका बखानूंहूँ ॥ भागचंदौत डोडालालचंदोत माडा अखेसिंगौत कौडच्या अठास

णिया आणूंहूँ ॥ मंतरी अटेरण्यानरेसण्याँ अखेसिंगौत लीकासण्याँ जुजेसरचा मदसुनौत मानूंहू ॥ साखइया दरवारिया नैणसर प्रतीसिंगौत तुलावटचा फतेसिंगौत एतेगौतजानूंहूँ ॥ ३२ ॥ छंदइन्द्रवज्र ॥ रामचँदौतकपूरचँदौत रु मान सिंगौत ए गौत कहेहैं ॥ बौतप्रकारसुमारकियोतव नामसमग्रह भेलेभयेहैं ॥ बौंकअमापअपारअपंपर भौमिठढेरविकैसेंगहेहैं ॥ यादकिये शिवकर्ण समस्तपें केतेक भूलमें बाकिरहेहैं ॥ ३३ ॥ दोहा ॥ यहवेझडकीखीचडी अधिकआठसौनाम ॥ अबखातादेबहूतर कहूँ ठामकेठाम ॥ ३४ ॥ बार्ता ॥ इसबहोतर खाँपके डीडूमहेश्वरीनकी ७२ खाँपतो प्रथमही वर्णनकीहै उन मूलखांपेंमेंसें फलियेंफूट २ कर अनेकनाम बौलेगये किसी २ खांपमेंतो यहां तकनामवढेकि १५० नामबोलतेहै इसीतरहसें बहोतर खाँपके आठसोनामतो हमने सौधलगायकर इखट्ठे करके समूहवर्णनकीये वो छंदबंदलिखेहै पुन्ह वहीनाम चक्रकोष्टकमें खुलासें लिखेंगे पुन्ह वहीनाम अपनी २ खाँपमें खतावणीकरके माता गुरु गोत्र वेद साखा परवर समेंत वर्णन करेंगे प्रथम समूहनामचक्रमें लिखेहैं सोतोकुल बौंक व खांपसामललिखेहैं अव इन्हीवौंक व खाँपकौं अनुक्रमसें अकारादि कौष्टककरके खुलासा लिखाजायगा जिस्के देखनेसें मूलखांपें और उनमेंसें निकले हुये बौंक पृथक २ मालूमहोजायगा जैसेंके कोठारीसोनी कौठारीदरक कौठारीसारडा कौठारीमूंधडा इत्यादि येसेंमूलखाँप और बौलतीफलियें अमुकमेंसें अमुक निकले और अमुक २ आपसमेंभाईहै यहखुलासा तादृश्याकार मालूमहोगा फलीकोष्टकनंबर १ मूलखांपकोष्टकनंबर २ याप्रकारसें चक्रमेंदेखनासू खुलासा दर्पणमुखवतमालूमहोगा

प्रथमसमूह नामचक्रमें देखो.

स्वतिश्री डीडूमहेश्वरी बहोत्तर खाँप अमर बेलके गुथेहुयेतंतू आठसौनाम समग्र संग्रहावली चक्र लिख्यते.

श्री.	कटारचा	काळा	केवर	खाडावाला	गींदौडचा	घूबरचा
श्रीचंदाणी	कसेरा	काला	केसावत	खींवज्या	गींगल	च
श्रीचंदौत	कचौल्या	काहा	केरा	खींवज्या	गिलडा	चरखा
अ.	कचौल्या	कासट	कौठारी	खुंवाल	गिलगिलिया	चहाडका
अजमेरा	कटसूरा	काकडा	कोठारी	खूंच्या	गुलचक	चमडचा
अठासएया	कलक	काग	कौठारी	खूंभडा	गुलचट	चतुरभुजाणी
अटेरएया	करनाणी	काकरचा	कौठारी	खेमाणी	गूजरका	चतरभुजौत
अखेसिंगौत	करमचंदौत	कान्हाणी	कौठारी	खेताणी	गेनाणी	चमार
अघाड	कपूरचंदौत	काल्या	कौठारी	खेतावत	गौठणीवाल	चापका
अठारचा	कलाणी	काहाल्या	कौठारी	खेडीवाल	गौरचा	चावंड्या
अग्रपाळ	कलाणी	काहालाणी	कौठारी	खोगटा	गौराणी	चापसाणीं
अर्जनाणी	कलंकिया	कालाणी	कौकर	खोडावाला	गौधा	चांच्या
अटल	कलंत्री	कावरा	कौकाणी	खौभा	गौकन्या	चिगतौडा
अठाणी	कलक्या	काहौर	कौडचाका	ग	गौदावत	चिमक्या
आसौफा	कसूम	काग्या	कौडचा	गगराणी	गौकलाणी	चितलंगी
आगसूड	कलक	किस्तूरचा	क्रमसाणी	गरविया	गौवरचा	चेचाणी
आगीवाल	कर्मसौत	किलल	ख	गहलडा	गौराणी	चेनाणी
असावा	करमाणी	कीया	खरड	गहलडा	गौराणी	चेनारचा
इ	करनाणी	कील्या	खरड	गट्	गांव्या	चौधरी
ईनाणी	कहरा	कुदाल	खरड	गफरचा	गांधी	चौधरी
ऊ	कल्लावत	कूया	खरड	गगड	गांधी	चौधरी
ऊलाणी	कला	कूकडचा	खरड	गटाणी	गांधी	चौधरी
ऊजवाल	करमा	कुलथ्या	खटमल	गदइया	गांधी	चौधरी
ऊनवाल	कसंडा	कुचकुच्या	खडलौद्या	गदूका	ग्यानेपौता	चौधरी
ऊंघाणी	करवा	कूभ्या	खटवड	गवदूका	घ	चौधरी
क	करनाणी	केला	खरनालिया	गवलाणी	घरडौल्पा	चौधरी
कयाल	कसूंबीवाल	केला	खावर	गायलवाल	घरडौलिया	चौधरी
कयाल	कूंभ्या	केला	खावाणी	गीगल्या	घीया	चौधरी

चौधरी	झींतड्या	तापडिया	दागड्या	धूपड	नांहुधराणी	पडवाल
चौखडा	ट	तिरथाणी	दादल्या	धूत	नाग	परताणी
चौखाणी	टकचाल	तुलावस्या	दास	धूणवाल	न्याती	परमरामा
चौराणी	टीलावत्त	तुलछाणी	दीहराजाणी	धौलेसरचा	नाडागट	पटवारी
चंडक	टुवाणी	तूमड्या	दुढाणी	धौलेसरचा	नांगल्पा	पटवारी
छ	टौपीवाला	तुरक्या	दूढाणी	धौल	नागला	पटवारी
छापरवाल	ठ	तैला	दुरढाणी	धौल	निकलंक	पटवारी
छाछ्या	ठाकुराणीं	तैजाणी	दुजारा	धौल	नुगरा	पटवारी
छैंतरका	ठींगा	तौसणीवाल	दुसाज	धगडावत	नेवर	पटवा
छुरचा	ड	तौडा	दूदावत	धामाणी	नेतसौत	पटवा
छोटापसारी	डबकौड्या	तौतला	दूदाणी	न	नेताणी	पाहर
ज	डंडी	तौरण्यां	देवगटाणी	नरेसण्या	नेणसर	पांत्या
जठाणी	डागा	थ	देवगटाणी	नरड	नौसरचा	पावरिया
जजनोरया	डावा	थिरराणी	देवदत्ताणी	नथड	नौसरचा	पापड्या
जाखेटिया	डामडी	थेपड्या	देवराजाणी	नगवाड्या	नौलखा	पापड्या
जालाणी	डाड	द	देसावत	नथाणी	नौगजा	पालड्या
जिंदाणी	डाणी	दरक	देसवाणी	नंदवाल	नौगजा	प्रागाणी
जुजेसरचा	डाखेडा	दमाणी	देवपुरा	नरेसणी	प	प्रतिसिंगौत
जुगरामा	डाल्या	दमाणी	द्वारकाणी	नवाल	पसारी	प्रहार
जूंहरी	डांगरा	दरावरचा	ध	नगणेच्पा	पसारी	प्रहलादाणी
जेथलपा	डौडा	दलाल	धराणी	नरअमडा	पसारी	प्रहलादानी
जेसाणी	डौड्या	दमलका	धनड	नराणीवाल	पसारी	पीथाणी
जेठा	डौडिया	दगा	धनाणी	नरवर	पसारी	पीथाणी
जेरामा	डौड्या	दगडा	धनाणी	नरेड्या	परसावत	पीनाणी
जौला	डौडमहूता	दगडा	धनाणी	नावंधर	परसरामा	पीपाणी
जौधाणी	ढ	दरंगड	धारूका	नागौरी	पनाणी	पीपाणी
जाजू	ढेड्या	दसवाणी	धाराणी	नागा	पलौड	पूंगल्पा
झ	ढौली	दंताल	धाराणी	नाहार	पचीस्पा	पूंगल्पा
झंवर	त	दमलका	धीरण	नाटाणी	पदाणी	पूंगल्पा
झालरिया	तहनाणी	दागड्या	धीराणी	नानगाणी	पढावा	पूंजलिया
झालरिया	तापड्या	दागड्या	धीराणी	नापाणी	पडचीवाल	पूनपाल्या

पूरावत
पेडीवाल
पोसरचा
पौरवार
(फ)
फांफट
फतेसिंगोत
फूलकचौल्पा
फोग्या
फौफल्या
फौफल्या
फोगीवाल
(ब)
बजाज
बरघू
बनाणी
बहगटाणी
बडाल्या
बलडिया
बडहका
बछाणी
बहाडका
बलदवा
बलवाणी
बगरा
बरसलपुरीया
बांगर्ड
बागडी
बापेचा
बालेपोता
बावरी

बारीका
बाजरा
बापडौता
बाहेती
बावलाणी
बाघाणी
बाघाणी
बाघला
बाघला
बालदी
बिसहर
बिडहला
बिदादा
बिसताणी
बिहाणी
बिठाणी
बिलावडचा
बीच्छू
बीसाणी
बीसाणी
बीझाणी
बिन्यायका
बुगडाल्या
बेहड्या
बेजारा
बेजारा
बेकट
बेडीवाल
बेषटाणी
बोघाणी
बौदासिंगी

बौसा
बंग
बंब
बंबू
बूब
बागर्ड
ब्यपती
ब्रजवासी
बसदेवाणी
बील्या
बटंड्या
बलवाणी
बौरण्या
बौरद्या
(भ)
भइया
भइया
भैय्या
भगत
भगत
भगत
भन्साली
भलीका
भराणी
भकड
भटड
भकावा
भगूत्या
भाकराणी
भाकराणी
भाकरौद्या

भाकरौद्या
भानावत
भांगडचा
भाला
भालचंदौत
भिचलाती
भिषाणी
भूरा
भूत
भूरिया
भूतडा
भूक्या
भुराड्या
भुवानीवाल
भूत्या
भूंगड्या
भूंगरड
भेराणी
भौलाणी
भौलाणी
भौजाणी
भौजाणी
भौराणी
भंडारी
(म)
मडदा
मकड
मक्कड
महेसराणी
मरौठी
मल्लावत

मल्ल
मल्लड
मल्लड
मडिया
मडिया
महलाणा
महराठाकुरा०
महरा
महरा
मथराणी
मरचून्या
मदसुनौत
मरौठिया
मछर
महदाणा
मणियार
मणक्या
मलक
मानाणी
मात्या
मातेसरचा
माहलाणा
माळू
माडा
मालीवाल
माधावत
माधाणी
माधाणी
माधाणी
मानावत
मानसिंगौत

मॉडम्या
माणम्या
मालपाणी
माइया
माणूधण्यां
माणूंधणॉ
मामौणी
माणक्या
मालण्यॉ
मालाणी
मालाणी
मिरच्या
मिज्याजी
मिलक
मीचरा
मीचरा
मीमाणी
मीमाणी
मीमाणी
मुरक्या
मुरक्या
मुवाणीवाल
मुकनाणी
मुहणदासौत
मुलतानी
मुलतानी
मुलतानी
मुहलाणी
मुसाणी
मुसाणी
मुंजीवाल

मूंजी
मूंजाणी
मूंदडा
मूंगर्ड
मूछाल
मूलाणी
मूथा
मूथा
मेरा
मेण्या
मेणिया
मेमाणी
मौराण्यॉ
मौराणी
मौडा
मौडाणी
मौवण्या
मौदाणी
मौनाणा
मौठडा
मौड
मौदी
मौदी
मौदी
मौदी
मौदी
मंजीळ्या
मंत्री
मंडोवरा
मुलाणी

मौलासरचा	राजमहूता	लखवाणी	लंबू	स्याहा	सुरहरा	संकर
मौराणी	रावत्या	ललाणी	लाहौटी	सॉवलका	सुंदराणी	स्यहणा
(र)	रामचंदौत	लालावत	(स)	सादाणी	सुखाणी	स्यहरा
रणदीता	राहूडा	लाठी	सकरेण्या	सातवाणी	सुखाणी	साहा
रतनाणी	राठी	लालचंदौत	सखइया	सांभरचा	सुखाणी	(ह)
रदाणी	रांदरड	लालाणी	समदाणी	सांभरचा	सूंघा	हेडा
रधाणी	रेणीवाल	लालणिया	सतूरचा	साबू	सूंदा	हरड
राय(सोमाणी)	रूप	लीकासण्या	समाणी	साबूण्या	सूम	हरकाणी
राय (नाहूधर)	रूडच्या	लूलाणी	सहरा	सागाणी	सूणा	हलद
राय (भडारी)	रूडच्या	लु:लाणी	सकराणी	सिंगाडच्या	सेठ	हडकुटिया
राय(अजमेरा)	रूया	लेखाणी	सकराणी	सिंघी	सेठी	हलद्या
राय(चेचाणी)	रूघा	ले:लाणी	सराप	सिकची	सेठी	हलद्या
राय(कचौल्या)	रूपाणी	लेखणिया	सराफ	सिरचा	सेवर	हरिदासौत
रामावत	रौल्या	लोईवाल	सारडा	सिंगी	सेसाणी	हरचंदाणी
रामावत	(ल)	लोईका	साहा	सिंगी	सेसाणी	हींग्या
रामसिंगौत	लढा	लौगडे	सातलाणी	सिंगी	सोनी	हींगरड
राघाणी	लखावत	लौगडे	स्याहार	सिंगी	सोभावत	हीरा
राघवणी	लखावत	लौहरड	साहताणी	सीलानी	सौढाण्या	हुरकट
रामाणी	लखासरचा	लौलण	साहणी	सीलार	सोनकचौल्या	हौलाणी
रामाणी	लद्दड	लौह्या	साकरचा	सीलार	सोन	हौलासरचा
रामाणी	लखौटिया	लौह्या	सालहाणी	सुगरा	सोमाणी	
राहूस्या	लटूरचा	लोसल्या	सागर	सुजाणी२	सौमाणी	
राईवाल	लखाणी	लौसल्या	सांवल	सुरजन	संगमार	

अथ माहेश्वरीमूलखाँप व फलियोंकीसमग्रता

॥ इसचक्रमें याप्रकारसें देखो फलीकोष्टक नम्बर १ में है और मूलखाँपकोष्टक नम्बर २ में है यह आपसमें भाई जानों जैसें (कौठारी-सोनि) कौठारी दरक) कौठारी सारडा) कौठारीमूंधडा) इत्यादि ऐसे चक्रमें खुलासा देखो. सम्पूर्ण पुस्तकका तत्वसार यहीहै

अथ

माहेश्वरी कल्पद्रुम तत्वसारदर्पण.

बौंक खाँप ।

फलियॉ नं. १	खांप. नं २	फली. नं. १	खांप. नं. २	फली. नं. १	खांप. नं. २
(श्री)	————	कयाल	जाजू	काला	गगराणी
श्रीचंदाणी	राठी	कयाल	सोमाणी	काल्या	खटवड
श्रीचंदोत	राठी	कसेरा	सोमाणी	काल्या	का:लाणी
अजमेरा	अजमेरा	कचौल्या	कचोल्या	कहाल्या	कहाल्या
असावा	असावा	कचौल्या	चेचाणी	काहा	लाहोटी
अठासण्या	लढा	कटसूरा	कासट	कानूगा	सारडा
अटेरण्यॉ	मूंधडा	करनाणी	राठी	कासट	कासट
अखेसिंगोत	राठी	करनाणी	डागा	काकडा	पलौड
अठारचा	कावरा	कर्मचंदोत	राठी	काकरचा	पलौड
अमृपाल	वाहेती	कपूरचंदोत	राठी	कानाणी	डागा
अर्जनाणी	राठी	कलंत्री	कलंत्री	काकाणी	काकाणी
अटल	अटल	कलंक्या	चेचाणी	काबरा	काबरा
अठाणी	मूंधडा	कसूम	व्वाहेती	काहालाणीं	काहालाणीं
आगीवाल	आगीवाल	कर्मसौत	राठी	काहौर	करवा
आगसूड	आगसूड	कसंडा	बाहेती	काग्या	करवा
आसोफा	सोमाणी	कहरा	राठी	किस्तूरचा	बजाज
अघाड	————	कलाणी	बलदवा	किलल	बिदादा
ईनाणीं	ईनाणीं	कलाणी	राठी	किलल	करवा
ऊलाणी	मूंधडा	कल्लावत	राठी	कीया	करवा
ऊंधाणी	राठी	कल्ला	राठी	कुदाल	सोमाणी
ऊजवाल	————	करमा	राठी	कूया	लाहोटी
ऊनवाल	————	करवा	करवा	कूकड्या	अजमेरा
(क)	————	कसुंबीवाल	देवपुरा	कुलथ्या	अजमेरा
कयाल	हुरकट	काला	भंडारी	केला	सारडा

फली. नं. १	खापनं. २	फली. नं. १	खांप नं. २	फली. नं. १	खांप नं. २
केला	भटड	खरड	चेचाणी	गटाणी	गटाणी
केला	पलोड	खटवड	खटवड	गवलाणी	मूंधडा
केसावत	डागा	खरनाल्या	मणियार	गवलाणी	राठी
केरा	भटड	खडलोया	बाहेती	ग्यानेपोता	सोमाणी
कौठारी	सोनी	खटमल	राठी	गायलवाल	झंवर
कौठारी	दरक	खावाणी	बाहेती	गांठ्या	बिडहला
कौठारी	सारडा	खाडावाला	सोमाणी	गांदी	नावंधर
कौठारी	मूंधडा	खींवज्या	बाहेती	गांदी	राठी
कौठारी	राठी	खींवज्या	झंवर	गांदी	भटड
कौठारी	तोसणीवाल	खूंच्या	झंवर	गांदी	खटवड
कौठारी	काबरा	खुनाल	नवाल	गांदी	झंवर
कौठारी	भुराड्या	खूभडा	बाहेती	गांदी	बाहेती
कोड्याका	सोमाणी	खेमाणी	राठी	गींदोड्या	बाहेती
कौड्या	अजमेरा	खेताणी	राठी	गिलडा	गिलडा
कौकाणी	राठी	खेतावत	राठी	गिरधराणी	राठी
क्रमसानी	राठी	खोगटा	कासट	गीगल	गिलडा
कुचकुच्या	——	खोडावाला	सोमाणी	गुलवाणी	राठी
करनाणी	——	खावर	——	गुलचक	भंडारी
केवर	——	खौभा	——	गूजरका	बिहाणी
कटारचा	——	खेडीवाल	——	गेनाणी	राठी
कौकर	——	(ग)	——	गेनाणी	सोमाणी
कलक	——	गगराणी	गगराणी	गोठणीवाल	अटल
काग	——	गरविया	बाहेती	गोरचा	बिडहला
कालाणी	——	गहलडा	पलौड	गोरा	भंडारी
कलक्या	——	गहलडा	गिलडा	गोपालाणी	राठी
कील्या	——	गरूरचा	बिडहला	गोमलाणी	राठी
कूभ्या	——	गदइया	गदइया	गोयंदाणी	राठी
(ख)	——	गदूका	बजाज	गोदावत	बजाज
खरड	सारडा	गबदूका	बजाज	गौधा	बजाज
खरड	खटवड	गगड	गगराणी	गौकन्या	बाहेती
खरड	झंवर			गौकन्या	भंडारी

फली. नं १	फली. नं. २	फली. नं.१	खांप. नं.२	फली. नं. १	खांप. नं. २
गौबरचा	बिहाणी	चौधरी	दरक	झुंहरी	मालपाणी
गौराणी	चंडक	चौधरी	सारडा	जुगरामा	लखौटिया
गौराणी	डागा	चौधरी	लढा	जेथल्या	पलोड
गौराणी	मूंधडा	चौधरी	मूंधडा	जेसाणी	राठी
गटू	——	चौधरी	मालू	जेठा	भटड
गिलगिलिया	——	चौधरी	राठी	जौला	लढा
गौकलाणी	——	चौधरी	भूतडा	जौधाणीं	राठी
गीगल्या	——	चौधरी	माणूधण्यॉ	जौगड	चंडक
गुलचट	——	चौधरी	झंवर	जेरामा	——
(घ)	——	चोधरी	हुरकट	(झ)	——
घरडोल्या	माणुधण्यॉ	चौधरी	गदइया	झालरिया	झंवर
घीया	मालू	चौखडा	चौखडा	झालरिया	तोसणीवाल
घूबरचा	बिडहला	चौखाणी	राठी	झीतञ्या	बाहेती
घरडोल्या	——	चंडक	चंडक	झंवर	झंवर
(च)	——	चेनाणी	——	झंवर	सोमाणी
चरखा	बाहेती	चौराणी	——	(ट)	——
चहाडका	कहाल्या	(छ)	——	टीलावत	राठी
चमडचा	मूंधडा	छापरवाल	छापरवाल	टुवाणी	खटवड
चतुरभुजाणी	राठी	छाछचा	तापड्या	टौपीवाला	गटाणी
चमार	बजाज	छींतरका	बंग	टकचाल	——
चतरभुजोत	राठी	छुरया	बिडहला	(ठ)	——
चापटा	पलौड	छोटापसारी	मूंधडा	ठाकुराणी	राठी
चावंड्या	पलौड	(ज)	——	ठींगा	झंवर
चापसाणी	राठी	जटाणी	राठी	(ड)	——
चांच्या	भूतडा	जजनोरया	जाजू	डबकौड्या	अजमेरा
चिगतोडा	चौखडा	जाजू	जाजू	डागा	डागा
चिमक्या	मूंधडा	जाखेटिया	जाखेटिया	डावा	तौसणीवाल
चितलंगी	पलौड	जालाणीं	राठी	डामडी	तौसणीवाल
चेनारचा	तोसणीवाल	जिंदाणी	राठी	डाखेडा	सौढाणी
चेचाणी	चेचाणी	जुजेसरचा	पलौड	डाडरचा	डाड

फली. नं. १	खांप. नं. २	फली. नं. १	खांप. नं. २	फली. नं. १	खांप नं २
डाणी	झंवर	(थ)		देसवाणी	राठी
डाल्या	बाहेती	थिराणी	सोमाणी	देवपुरा	देवपुरा
डांगरा	बाहेती	थेपड्या	डाड	दंताल	सोढाणी
डूंडा	डागा	थारावत	बंग	दीहराजाणी	——
डोड़्या	गगराणी	(द)	——	दगड़ा	——
डोड्या	मूंधड़ा	दगडा	लढा	देसावत	——
डोडमहूता	राठी	दमाणी	डागा	दलाल	——
डोडिया	पलौड़	दमाणी	राठी	दुरढाणी	——
डोडा	अजमेरा	दरावरचा	डागा	(ध)	
डांसर	——	दरक	दरक	धराणी	नावंधर
डंडी	न्याती	दमलका	मूंधडा	धनाणी	नावंधर
(ढ)	——	दगा	तोसणीवाल	धनाणी	बाहेती
ढेळ्या	मूंधड़ा	दसवाणी	राठी	धनाणी	राठी
ढोली	सोढाणी	दरगड	बाहेती	धनड़	बाहेती
(त)	——	दागड्या	लढा	धगड़ावत	राठी
तहनाणी	राठी	दागड्या	परताणी	धामाणीं	राठी
तापड़्या	तापड़्या	दागड्या	पोरवाल	धारूका	बजाज
तापड्या	बांगड़	दास	तोसणीवाल	धाराणी	नावंधर
तिरथाणी	राठी	दादल्या	सारडा	धाराणी	लढा
तुरक्या	बाहेती	द्वारकाणी	राठी	धीराणी	नावंधर
तुळावत्या	जाजू	दुढाणी	नावंधर	धीरण	नावंधर
तुलछाणी	राठी	दुढाणी	राठी	धूपड़	धूपड
तूंमड्या	बाहेती	दुसाज	छापरवाल	धूत	धूत
तेला	माळू	दुजारा	छापरवाल	धूणवाल	बाहेती
तेजाणी	राठी	दूदावत	राठी	धोलेसरचा	अजमेरा
तोसणीवाल	तोसणीवाल	दूदाणी	चेचाणी	धोलेसरचा	मंडोवरा
तोड़ा	खटवड	देवगटाणी	राठी	धोल	अजमेरा
तोतला	तोतला	देवगटाणी	भूतडा	धोल	काबरा
तोरण्या	——	देवदत्ताणी	भूतडा	धोल	बाहेती
		देवराजाणी	राठी		

फली. नं. १	खांप. नं २	फली. नं. १	खांप. नं. २	फली. नं १	खांन. नं १
(न)		नौसरचा	झंवर	पालड्या	काबरा
नरेसण्यां	भंडारी	नौगजा	नौलखा	पीथाणी	बिहाणी
नरड	सारड़ा	नौगजा	बाहेती	पीथाणी	भठड़
नथड	बाहेती	नौलखा	नौलखा	पीपाणी	राठी
नथाणी	राठी	न्हार	डागा	पीपाणी	बिहाणी
नरेसणी	खटवड	नंदवाल	—	पूंगल्या	भटड
नवाल	नवाल	नरअमडा	—	पूंगल्या	चंडक
नगणेच्या	बाहेती	नागा	—	पूंगलिया	चंडक
नराणीवाल	कांकाणी	(प)		पूनपाल्या	परताणी
नरवर	बाहेती	पसारी	मूंधडा	पूरावत	राठी
नरेड्या	बाहेती	पसारी	बिहाणी	पेडीवाल	बलदवा
नापाणी	राठी	पसारी	मिणियार	पदाणी	राठी
नाऊंधराणी	बाहेती	पसारी	बंग	पौसरचा	अजमेरा
नाग	असावा	पसरावत	सौमाणी	पौसरचा	झंवर
नाडागट	बाहेती	पनाणी	नावंधर	पौरवार	पौरवार
नागला	झंवर	पलौड	पलौड	प्रतीसिंगोत	राठी
नांगल्या	तोतला	पचीस्या	पलौड	प्रागाणी	चंडक
नावंधर	नावंधर	पड़चीवाल	बाहेती	प्रहलादाणीं	मूंधड़ा
नागोरी	तोससीवाल	परवार	पौरवार	प्रहलादाणीं	चंडक
नाटाणी	राठी	पटवारी	तोतला	परसरामा	—
नानगाणीं	राठी	पटवारी	बंग	पीनाणी	—
नगवाड्या	ईनाणी	पड़वाल	बलदवा	पसारी	—
न्याती	न्याती	परताणी	परताणी	पूंगल्या	—
निकलंक	न्याती	पटवा	सारड़ा	पूजलिया	—
नुगरा	सौनी	पटवा	चंडक	पाहर	—
नेवर	तोसणीवाल	पढावा	अजमेरा	पावरिया	—
नेतसौत	राठी	परमरामा	लखोटचा	पटवारी	—
नेताणी	राठी	पांत्या	सोमाणी	(फ)	—
नेणसर	भंडारी	पापड्या	बिहाणी	फतेसिंगौत	राठी
नौसरचा	अजमेरा	पापड्या	बाहेती	फाफट	राठी

फली. नं. १	खांप. नं. २	फली. नं. १	खांप. नं. २	फली. नं. १	खांप. नं. २
फूलकचौल्या	कचौल्या	बापडौता	पलौड़	बंव	बूव
फौगीवाल	पलौड	वाहेती	वाहेती	बंबू	भुराड्या
फौफल्या	न्याती	बासाणी	बाहेती	वालदी	बालदी
फौफल्या	पलौड	बाघाणी	राठी	बृजवासी	राठी
फौग्या	——	बाघाणी	बाहेती	बोरण्या	——
(ब)	——	बाघला	बाहेती	बाघाणी	——
बजाज	बजाज	बावरेचा	गगराणी	बेजारा	——
बनाणी	राठी	बिसहर	लाहौटी	बोदासिंगी	——
बहगटाणी	राठी	बिदादा	बिवादा	बावलाणी	——
बसदेवाणी	राठी	बिसताणी	राठी	बौरड्या	——
बलडिया	मूंधडा	बिहाणी	बिहाणी	बाघला	——
बडहका	बिहाणी	बिलावड्या	बाहेती	(भ)	——
बछाणी	बिहाणी	बिठाणी	डागा	भया	राठी
बछाणी	राठी	बील्या	बाहेती	भया	चंडक
बहाडका	कहाल्या	बीसाणी	भटड़	भया	लखौट्या
बटंट्या	बाहेती	बीझाणी	चंडक	भगत	झंवर
बगरा	राठी	बीसा	भटड़	भगत	काबरा
बरसलपुरिया	राठी	बीछू	भटड़	भगत	अजमेरा
बरघू	मिणियार	बिनायक्या	अजमेरा	भन्साली	भन्साली
बलवाणी	भठड	बिड़हला	बिड़हला	भलीका	सारड़ा
बलदवा	बलदवा	बुगडाल्या	बाहेती	भराणी	मूधड़ा
बडाल्या	बिडहला	बूब	बूब	भटड़	भठड़
व्यपती	असावा	बेहड्या	बजाज	भकड़	पलौड़
बांगरड	बांगरड	बेजारा	राठी	भकावा	भंडारी
बागडी	सोमाणी	बेकट	राठी	भगुत्या	अजमेरा
बापेचा	राठी	बेखटाणी	राठी	भाकराणी	मूंधड़ा
बालेपौता	सोमाणी	वेड़ीवाल	बलदवा	भाकराणी	राठी
बावरी	मूंधड़ा	बोरण्या	बूव	भाकरोद्या	लढा
बारीका	मूंधड़ा	बंग	बंग	भाकरोद्या	तौसणीवाल
बाजरा	राठी	बंब	मोदाणी	भानावत	सोनी

फली. नं. १	खांप. नं. २	फली. नं. १	खांप. नं. २	फली. नं. १	खांप. नं. २
भांगड्या	सारड़ा	मल्ल	बाहेती	माहलाणा	मूंधड़ा
भाला	खटवड़	मल्लड़	बाहेती	माँडम्यॉ	काबरा
भागचंदोत	राठी	मलड़	भटड़	मालपाणी	मालपाणी
भिचलाती	राठी	मजीव्या	डागा	माणम्याँ	काबरा
भीखाणी	चंडक	मड़िया	डागा	माड्या	मिणियार
भुवानीवाल	जाखेटिया	मड़िया	राठी	माणक्या	अजमेरा
भुराड़या	भुराड़या	महराठाकुराणी	राठी	मालण्या	बाहेती
भूरा	मालपाणी	मथराणी	राठी	मालाणी	राठी
भूरिया	खटवड़	मरचून्या	दरक	माल्हाणी	खटवड़
भूतड़ा	भूतड़ा	मरचून्या	बजाज	मालावत	राठी
भूक्या	भंडारी	मदसुनोत	राठी	मिरच्या	भंडारी
भूत्या	खटवड़	मरोठिया	अटल	मिज्याजी	तोसणिवाल
भूंगड्या	भुराड्या	मच्छर	कलंत्री	मिलक	गटाणी
भौलाणी	राठी	महदाणा	मोदाणी	मीचरा	राठी
भौलाणी	हुरकट	महनाणा	मोदाणी	मीमाणि	नावंधर
भौजाणी	डागा	मणियार	मणियार	मीमाणी	चंडक
भौजाणी	राठी	मनक्या	मणियार	मीमाणी	राठी
भौराणी	मूंधड़ा	मलक	गठाणी	मुरक्या	काल्हाणी
भंडारी	भंडारी	मानाणी	सोमाणी	मुरक्या	बाहेती
भूंगरड़	———	मात्या	भंडारी	मुवाणीवाल	झंवर
भेराणी	———	मातेसरचा	मंडोवरा	मुकनाणी	चंडक
भूत	———	माळू	माळ्	मुहणदासोत	भटड़
(म)	———	माळू	राठी	मुलतानी	बाहेती
मड्दा	सोमाणी	माडा	डागा	मुलतानी	चंडक
मकड़	सौमाणी	मालीवाल	बाहेती	मुलतानी	राठी
महरा	राठी	माधाणी	डागा	मुलाणी	राठी
महरा	भटड़	माधाणी	राठी	मुहलाणी	राठी
महेसराणी	राठी	माधाणी	चंडक	मुसाणी	राठी
मरौठी	राठी	मानावत	राठी	मुसाणी	बाहेती
मल्लावत	राठी	मानसिंगोत	राठी	मूंजीवाल	सारड़ा

फली. नं.१	खांप. नं. २	फली. नं. १	खांप. नं.२	फली. नं १	खांप. नं २
मूंजीवाल	पलोड़	मंडोवर	आसावा	राजमहूता	मूंधड़ा
मूंजी	तोसणीवाल	मंत्री	मंत्री	रावत्या	पलोड़
मूंजी	लढा	मातेसरया	मंडोवरा	रामचंदोत	राठी
मूंधड़ा	मूंधड़ा	माणूँधण्या	माणूंधण्या	राहूड़ा	राठी
मूंजाणी	राठी	माणुधणाँ	माणूंधण्याँ	राठी	राठी
मुकनाणी	डागा	मेमाणी	झंवर	रामसिंगोत	राठी
मूंरगड़	तापड़्या	मूलाणी	——	रांदरड	बाहेती
मूछाल	खटवड़	मामोणी	——	रूप	कचौल्या
मूथा	मालपाणी	मडक	——	रूड़्या	राठी
मूथा	गिलड़ा	महरा	——	रूड़्यां	बाहेती
मेण्या	डागा	मीचरा	——	रूया	बाहेती
मेडिया	डागा	मौराणी	——	रूघा	बाहेती
मौराणी	मूंधड़ा	(र)	——	रूपाणी	राठी
मोराणी	बाहेती	रणदोता	अजमेरा	रौल्या	बजाज
मौडा	पलौड़	रतनाणी	राठी	रेणीवाल	——
मोडाणी	नावंधर	रघाणी	राठी	राहूरया	——
मोदाणी	मोदाणी	राय	सोमाणी	रदाणी	——
मौनाणा	लखोट्या	राय	नावंधर	(ल)	——
मौठडा	लखोट्या	राय	भंडारी	लढा	लढा
मौलासरया	खटवड़	राय	अजमेरा	लखावत	राठी
मौड़	डागा	राय	चेचाणी	लखावत	बजाज
मौवण्या	झंवर	राय	कचौल्या	लखावत	राठी
मोटावत	बंग	रामावत	राठी	लदड़	भटड़
मौदी	लढा	रामावत	सोनी	लखौट्या	लखौट्या
मौदी	मूंधड़ा	रामावत	बजाज	लटूरया	बाहेती
मौदी	तौसणीवाल	राघाणी	बाहेती	लखाणी	राठी
मौदी	राठी	रामाणी	बाहेती	लखवाणी	राठी
मौदी	गिलड़ा	रामाणी	भटड़	लाहोटी	लाहोटी
मौदी	मालपाणी	राघवाणी	वलदवा	लालावत	बिहाणी
मंडोवरा	मंडोवरा	राईवाल	बाहेती	लालचंदोत	राठी

फली· नं १	खांप· नं· २	फली· नं· १	खांप· नं· २	फली· नं· १	खांप· नं· २
लालाणी	राठी	सकराणी	मूधड़ा	सुखाणी	चंडक
लीकासण्या	बाहेती	सराप	बिहाणी	सुखाणी	राठी
लुःलाणी	राठी	सराप	राठी	सुखाणिया	राठी
लुःलाणी	मालपाणी	सारड़ा	सारड़ा	सेठ	सारड़ा
लूणाणी	राठी	साहा	सोमाणी	सेठी	सारड़ा
लेखणिया	राठी	साहा	राठी	सेठी	पलौड़
लोईवाल	मालू	सातलाणी	राठी	सेसाणी	मूंधड़ा
लोईका	बिहाणी	स्याहर	माणूधण्याँ	सेसाणी	बाहेती
लोगरड	बाहेती	साहणी	राठी	सौनी	सौनी
लोह्या	बाहेती	साहताणी	राठी	सोभावत	बंग
लोह्या	बिहाणी	साकरचा	गटाणी	सौढाणी	सौढाणी
लौसल्या	पलौड़	सालाणी	राठी	सुगरा	सौनी
लौसल्या	खठवड़	सागर	चंडक	सूँदा	भटड़
लंबू	तोसणीवाल	सांवल	चंडक	सूम	माणधण्याँ
लोलण	मालपाणी	सांवलका	बंग	सुजाणी	राठी
लाठी	भंडारी	सादाणी	राठी	स्यहणा	राठी
ललाणी	——	सागाणी	राठी	सुरजन	कासठ
लालणिया	——	सावताणी	राठी	सूणाँ	राठी
लौगरड	——	सांभरा	मूंधड़ा	सुंदराणी	चंडक
लोहरड	——	सांभरीया	काकाणी	सौन	कचौल्या
लेखाणी	——	सिकची	सिकची	सोमाणी	सोमाणी
लेहाणी	——	सीलाणी	सिकची	सोमाणी	झंवर
लेहलाणी	——	सीलार	सिकची	साबू	मालू
स	——	सीलार	नौलाखा	सुरहरा	——
समदाणी	जाजू	सीहाणी	राठी	सकरेण्या	——
सतूरचा	बाहेती	सीधड़्या	बाहेती	सीलाणी	——
स्यहरा	नावंधर	सिंगी	तोसणीवाल	सिंधी	——
सहरा	बाहेती	सिंगी	जाजू	संगमार	——
समाणी	राठी	सिंगी	माणूधण्यॉ	सिरचा	——
सकराणी	बाहेती	सिंगी	कावरा	सेवर	——

फली. नं. १	खांप. नं. २	फली. नं. १	खांप. नं. २	फली. नं. १	खांप. नं. २
साबूण्या	———	हलद्या	दरक	हेडा	हेडा
सरवइया	———	हलद	भटड़	हौलाणी	जाखेस्या
सुजाणी	———	हमीरपुरा	बाहेती	हरड़	———
सिंघाड्या	———	हींग्या	लढा	हलद्या	———
ह	———	हींगरड	गदइया	हौलासऱ्या	———
हरकाणी	राठी	हीरा	माणूधण्याँ	हरिदासौत	———
हडकुटिया	सौढाणी	हुरकट	हुरकट	हरचंदाणी	———

॥ यह मूलखाँपें और फलियें जिस्की जिस्केसांमिलकर खानापूरित कीहै परंतू कईक फलीयेंकी मूलखाँप निश्चयहुईनहीं सू फगतफली लिखदी है मूलखाँपकी निश्चयहौनेसें खानापूरितकर तृतियावृत्तिमें लिखीजायगी यहउद्योगसरूहै वा आपलौगकृपाकरलिखें

इतनी फलियोंका मूलपेढ क्याहै पत्तानहीं ॥

अघाड	कूम्या	टकचाल	पसारी	बाघला	ललाणी	सेवर
ऊजवाल	खावर	डांसर	पूंगल्या	भूंगर्ड	लालणिया	साबूण्या
ऊनवाल	खोभा	तौरण्या	पूंजलिया	भेराणी	लोगर्ड	सरवइया
कुचकुच्या	खेडीवाल	दिहराजाणी	पाहर	भूत	लेखाणी	सुजाणी
करनाणी	गट्टू	दगड्या	पावरिया	मूलाणी	लोहर्ड	सिंघाड्या
केवर	गिलगिलिया	देसावत	पटवारी	मामोणी	लेहाणी	हरड़
कगरचा	गोकलाणी	दलाल	फौग्या	मडक	लेहलाणी	हलद्या
कोकर	गीगल्या	दुरढाणी	बोरण्या	महरा	सुरहरा	होलासरचा
कलल	[illegible]लचट	नंदवाल	बाघाणी	मीचरा	सकरेण्या	हरिदासौत
काग	घर[illegible]ोदिया	नरअमड्या	बेजारी	मोराणी	सीलाणि	हरचंदाणी
कालाणी	चे[illegible]णी	नागा	बोदासिंगी	रेणीवाल	सिंधी	
कलक्या	चौर[illegible]णी	परसरामा	बावलाणी	राहूरचा	संगमार	
किल्या	जेरा[illegible]	पीनाणी	वोरद्या	रदाणी	सिरचा	

दोहा ॥ कह्योतनकइतिहासयह कथाबहुतसकुचाय अबसाखागुरुगौत्र-नख देहुँसकलसमुझाय ॥ १ ॥ (छंदभुजंगी) बधीबेलतंतू कलीबौत-फूटी ॥ सँधीगुंथगुथं जिमेजालजूटी ॥ तिकेनालआगे चलीसोभताऊँ मिल्यौनीरखीरं जुदाकरजताऊँ ॥ २ ॥ कहूँपेढसाखा गुरूवेदआणूं ॥ पुन्हगोत्रमाता सबीजातजाणूँ ॥ जराकानदेके हृदयसुद्धकीजैं ॥ बडौं-कीबडाई मनौंलाभलीजैं ॥ ३ ॥ दोहा ॥ आदबंसगुरुगौत्रसति माता-पर्वरवेद ॥ खाँपखाँपमें सूँफली प्रगटकहूँसबभेद ॥ ४ ॥ छंदघनाक्षरी (सोनी) सोनोजीसौनगरा मातासेवल्पा धूम्रांसगौत्र गुरुसिख-वालओझा सोनीसौबखानिये ॥ सुगरा १ नुगरा २ रामावत ३ भाना-वत ४ कोठारी ५ सोनी ६ भाडल्यांसरिषि जाको यजुरवेदजानिये ॥ १ ॥ (सोमाणी) स्यामोजीसौलंखीपेढ माता बंघराय गुरु दाय-माआसौफासोतो आदरिषिआनिये ॥ आसोफा सोमाणी गोत्रली याइंसकहुआगे कुदालसोमाणींसोतो भलीभाँतजानिये ॥ दायमात्रिवा-डीगुर कुदालकुदालनके गोत्रमातएक दोनूंसोमाणींप्रमानिये॥ सोमाणी १ आसौफा २ राय ३ कुदाल ४ कोठ्याका ५ मडन्दा ६ मानाणीं ७ कयाल ८ पांत्या ९ मकड १० साहा ११ मॉनियें ॥ बागडी १२ प्रसावत १३ खाडावाला १४ वाले १५ ग्यानेपौता १६ गेनाणी १७ कसेरा १८ झंवर १९ थिरराणीं बखानियें २० ॥ २ ॥ (जाखेत्या) जालमसिंघजादूज्यासूँ जाखेत्यासिसणायमात गौतरसीलांस सती-सौढलभतावेंहैं ॥ मूँडक्याथांभाकाव्यास खटोडपारीकगुरु जाखेत्या १ भुवानींवाल २ हौलाणी जतावेंहैं ॥३॥ (सोढाणी) सोढोजीसोहड-जांसू सौढाणी सोढांसगौत्र गुरूसुखंडेलवाल मूछालत्रिवाडीहैं ॥ यजू वेंद माध्यनी प्रवरतीन गोरोभेरूँ उम्रकौटथान माताझीणसोदिहाडीहैं॥ सोढाणी १ दंताल २ ढोली ६ डाखेडा ४ हडकुटिया ५बाजे ॥जैसलमेर माँहींजाकी जुदी बौंकपाडीहैं ॥ ४ ॥ (हुरकट) देवडाहीरोजीपेढ

देवीबिसवंतगौत्रकस्यपहुरकटव्रत पोकरणबटूलहै ॥ हुरकटाँमेंच्यारवौंक भोलाणी कथालनाम चौधरी सांभरमांय याहीबाततेंकहैं ॥५॥ (न्याती) नानणसीनूबाणन्याती चांदसेंणमातागोत्र नानसेंणदेपियाउपादियापारी कहैं ॥ न्याती १ निकलंक २ डंडी ३ फोफल्या ४ येच्यारभाँत न्याति- याँकीसतीसोतो नवासण न्यारीकहैं ॥६॥ (हेडा) हीरोजीदेवडाहेडा फलौधीधनांसगौत्र गुरुसिखवालओझा आदसूँजतावैहैं. ॥पल्लीवालधा- मटाँकेग्रहणेंधरीहैबूत बवांसमुग्दलांसगौत्रआपकोभतावैहैं ॥७॥ (करवा) कँवरसीकछावामाता कछवायमाँनेंकाग्या फलोधीकरवांसगोत्र धामटगु रजान्योंहैं ॥ कागिया १ काहोर २ कीया ३ किलल ४ सुस्यामवेद ५र- वरपांचखांपकरवोंबखान्यौंहै ॥ ८॥ (काँकाणी) कूकसिंघजौयापेढ आ- मलकहीजेमात गोतमकपलांसगोत्र गूजरगोडजानूँहूं ॥साँभरकेजखींबा- चौबे विद्यामेंप्रवीणभये च्यारबेदकंठपाठ ऐसीबिधआनूँहूं ॥गुरांकीलाछ- नदेवी कोऊककाडजमानें माध्यनीयजुरपंचप्रवरप्रमानूँहूं ॥ लावरचौपि- तरभेरूँ गूघरचौलाछनसती कांकाणीं१नराणींवाल २सांभरचा ३ बखा- नूँहूं ॥९॥ (मालू) मलोजीपंवारपेढ मातासचियायजाके गौतरखलाँयंससू स्यामवेदमानिये ॥सारस्वतलहोडओझा प्रवरसुतीनजाके साहागोतमालू सोतो नीकेकरजानिये ॥ मालू ॥ साबू २ घीया ३ तेला४चौधरी ५रुलो ईवाल६ सारस्वतलहोडओझा मालवाँकेमानूंहूं ॥साबूकेगूजरगोड गोना- डच्यांत्रिवाडीगुर तेलाँकेजौपटव्यास दायवाँबखानूहूं ॥ १० ॥(सारडा) सीहडपंवारजासें सारडाखरडजानों दूसरानरडदोनूँ आपसमेंभाईहै ॥ स्यामवेद थौवडासगौतर कहीजेजाको औसियाँनगरजामें सचियामह- माईहै ॥ नरडाँकेगुरसारस्वतलहोडओझाजानौं खरडांकेगुरसोपारिक- हीप्रमानिये ॥ बरणाजोस्याँकेमांहींदुरगेपौतांकेव्रत औरांकेविरतनाँहिं सेसेपौताजानिये ॥ केला १ मूंजीवाल २ सेठी ३ कोठारी ४ कानूगा५ सेठ ६ चौधरी ७ भलीका ८ पटवा ९ दादल्या १० सुमानिये॥ नरड११

खरड १२ अरु भांगडया १३ कहीजेसाह १४ आदगौतसारडा १५ सू नीकेकहबखानिये ॥ ११ ॥ (काहाल्या) काहाजीकछावाजासूँ काहाल्याकागांसगोत्र लीकासणदेवी भेरुँसौन्याणाँजीजानिये ॥ दायमाँ मिसरगुरुकाकडाकहीजेव्यास थाँभादोयचहाङ १ पहाङ २ का पछानिये ॥ १२ ॥ (गिलडा) गांगजीगहलोतजासूँ गीलडाडाहरीमात गौतमस्यगौत्र सतीमात्रिसूबखानूहूँ गिलडा १ गीगल २ और गहलड़ा ३ रु मूथा ४ मौदी ५ सारस्वतगुरु ल्होड़ओझासुप्रमानूंहूँ ॥ १३ ॥ (जाजू) जूजोजीसांखलापेढ गोतरबालांसजाजू समदाणीफलोधीमात गोरोभेरूँमानिये ॥ गुरूगूजरगौड़कौंच्या जांगलाउपाद्याजाणों बिनाब्रतमेघासरचा थीरपालजानिये ॥ जाजू १ समदाणीं २ सिंगी ३ तुलावट्या ४ कयाल कहुं ५ जजनोत्या ६ करायोजग्य ख्यातमेंबखानिये ॥ १४ ॥ (बाहेती) बेहड़नूबाणजासूँ बाहेतीछतीसभाँत गौतमातभिन्नभिन्न आपससगाईहै ॥ १५ ॥ (बिदादा) ब्रधसिंघसौढाजासूं बिदादा किलल मातपाढायगजांसगौत्र खटवड़व्यासहै ॥ खटोड़ाँमेंथाँभादोय एकतोगटाणींमाँगें दूसराबिदादा १ किलल २ कलंत्रि ३ सुख्यासहै ॥ १६ (बिहाणी) बिहारीपंवारपेढ मातासचियायकहूँ गौतरबालांसपुनि कौसिकबतावैहै ॥ दायमाबोराडच्यागुर स्यामबेदसाखानंत परवरपांचसोतो बीहाणीजतावैहै ॥ बीहाणी १ पीथाणी २ लोह्या ३ पीपाणी ४ बछाणी५ और लालावत ६ गूजरका ७ श्राप ८ बडहका ९ कहीजैहै ॥ गोबरचा १० पसारि ११ और लोईका १२ ॥ सुड़ीडवाणें पापड्या १३ विहाणी बासमेड़तेरहीजैहै ॥ १७ ॥ (बजाज) बीजोजीभाटीहैमाता गाहलभन्सालीगोत्र गुरूहैत्रिवाड़ीकंठ बजाजबखाणूँहूँ ॥ बजाज १ बेहडचा २ रौल्या ३ मरचून्या ४ चमार ५ और धारूका ६ गबदूका ७ फेर गटूका ८ प्रमाणूंहूँ ॥ रामावत ९ गोदावत १० गोधा ११ लखावत१२ किसतूरचा१३ केहूँ किस्तूरचा मरचून्या कौटा पाटण मेंजाणूंहूँ॥१८॥

(कलंत्री) कालूजीकछावाजासूँ कलंत्री मछर मात चावंडा चमलाय केई पाढायभतावैहै ॥ गुरूहैखटौडव्यास पारीकपंडितजीरु बावरजी-कार्थांभादोय बाँटकरखावैहै ॥ १९ ॥(कासट) केवाटपड्हिारपेढ चान-णसंचायमात अत्लसांसगौत्र वेदस्यामहीवखान्यौंहै ॥ गूजरगौडलौय-माँ उपाद्यागुरकासटके आदथानकासटीसु मंडोवरथान्यौंहै ॥ कासट १ कटसूरा २ सुरजन ३ खौगटा ४ येच्यारवौंक खौगटाजाजणमात गौरो-भेरूँमान्यौंहै ॥ २० ॥ (कचोल्या) कंवरसीतँवरसती डासणी पाढाय-मात गोतरसीलांस सोतोकचोलआवखाणजे ॥ सोन १ रूप २ राय ३ फूल ४ च्यारभाईएकमात गुरूभिन्नभिन्न ज्याँरीबिगतप्रमाणजे ॥ रायके छांगाणीओर रूपकेजोपटव्यास सोनअरुफूलके त्रिवाड़ीकाठ्याजाणजे ॥ २१ ॥ (काह्लाणी) कलौजीकछावाजासूँ काल्हाणीपाढायसती पारीकखटौडगुर गौतरधौलांसहै ॥ स्यामवेदसाखानंत चेलक्यौभैरव पूजे चावंडादिहाडीकेई मानतकालांसहै ॥ काल्हाणी १ अपाणसती मुरक्या २ रु काल्या ३ तीन पंडितजीबावरजीथाँबा आपसमेंइकला-सहै ॥ २२ ॥ (झँवर) जाँझणसीजादवजासूँ झँवर गाह्लमात गौतर-झूम्रांस व्यासदायमाआसोफाहै ॥ झंवर १ मूवाणीवाल २ नागला ३ भगत ४ ठींगा ५ झालरचा ६ खरड ७ खूँच्या ८ पोसरचा ९ मेमाणी १० है ॥ नौसरचा ११ गाह्लवाल १२ सोमाणीझंवर १३ बौले खींव-ज्या १४ मौवणिया १५ गौत चौधरी १६ रु डाणीहै ॥ १७ ॥ २३ ॥ (काबरा) कुंभोजीगहलौतजासूँ काबराप्रथमतीन माँडम्या अठारचा पुनि पालड्या प्रमानिये ॥ संखवालमांडम्याँ अठारचा गुरपालड्यासु मातासुसमाद गौत्र अचित्रांसजानिये ॥ कावरा १ भगत २ सिंगी ३ माँडम्या ४ अठारचा ५ धौल ६ पालड़चा ७ कोठारी ८ जाकोगौत्र बिज्जेमाँनिये ॥ २४ ॥ (डाड) डूंगोजीदहइयाडाड भद्रकालीपूजेमात आमरांसगौत्र सतीलीकासणजतावैहै ॥ झींतरचोपितरमाँनें कालोभेरूँ-

मंडोवर दायमानवालगुर आचारजभतावैहै ॥ थेपडञ्चाँकीमातासोतो बंधरकहीजेकाली लखासणगौत्र बेदस्यामहीबतावैहै ॥२५॥ (डागा) डूंगोजीपंवारपेढ मातासचियायकहूँ गौत्रराजहँस गुरुगोलवालव्यासहै ॥ औस्याँगढओसवाल मेसरीभयेहैंआय डागागौतमिल्यौताय जूनौंइतिहासहै ॥ डागा १ मेण्याँ २ मंजीव्या ३ करनाणीं ४ मौड ५ केसावत ६ भोजाणी ७ बीठाणी ८ मंडिया ९ गौराणीं १० डूढांसहै ११ ॥ कान्हाणीं १२ दमाणीं १३ न्हार १४ मुकनाणी १५ माधाणी १६ माडा १७ दरारचा १८ फलोधीपोकर्णबीकाणारेवासहै॥२६॥ (गटाणी) गटूजीगहलोत माताचावंडा ढालांसगौत्र गुरूहैखटोड़व्यास गटाणीबखानिये ॥ गटाणी १ मलक २ टोपीवाला ३ रु साकरिया ४ कहूँ संकर ५ मिलक६ एते भलीभाँतजानिये॥२७॥ (राठी) रिडमलपंवारपेढ मातासचियायमानें गौत्रकपिलांस जाकौस्यामबेदपाठ्यौहै॥ जाकेगुरपुष्करणाँछँगाणीकौलाणींजाणौं, एकसोरुसाठनख राठीकुलबाव्यौहै॥२८॥(बिड़हला) बेहड़सीपंवारबिड़ला वालांसपिपलानरिषि बिस्वाहैपोकरणागुरु दीहाड़ीसंचायहैं॥ बिडहला १ मे छूरचा२ गांव्या ३ घूवरचा ४ गरूरचा ५ गोरचा ६ बडालियाँ ७ केगौत्रगुरू भिन्नसेबचायेहै ॥गरवरियात्रिवाड़ी संखवालरुझवरांसगौत्र पूजीजेफलौधीमात मंडलरचायेहैं ॥ सेखावाटीमांहींगोड बासौत्यासाडांसगौत्र लूटकोमूसलमिले सोहीलूँटखायौहैं२९ (दरक) दुरगदासखीचीपेढ मूसाहैमहमाईमात खेत्रपालसोनेबोजी बालौपित्रमानिये ॥ संखवालहलद्या उपाद्यागुरजायलवाल गौत्रहरिद्रास साखा मारध्वनि जानिये ॥ दरक १ मरचून्या २ हछ्या ३ चोधरी ४ कोठारी ५ पांच कँवलानामलक्ष्मी सूतो सदाथिरथानिये ॥ परवरपांच बेदयजुर उपासीराम रामनाथधाम सोतो दरक बखानिये ॥ ३०॥ (तोसणीवाल) तेजसीचुहाणपेढ खूँखरबाँबलैमात कौसिकगोत्रआदरिषि पीपलानमानिये ॥ दायमात्रिवाडीगुर डीडवाण्याँकहूँनामी तोसींणेंतोसणी-

वाल तोसासाबखानिये ॥ प्रगटतौसणीवाल १ नागौरी २ मिण्याजी ३ मौदी ४ नेवर ५ कोठारी ६ डाबा ७ डामडी ८ सुकेवेंहै॥लंबू९ सिंगी १० दास ११ दग्गा १२ झालरचा १३ चेनारचा१४ मूँजी १५ भाक-रोद्या १६ बाजेसोतो नागौरमेंरेवेंहै ॥ ३१ ॥ (अजमेरा) अजोजीचुहा-णज्याँसूँ अजमेराखटौडव्यास पारीकमानांसगौत्र नोसलसुमातहै ॥ बिन्यायक्याँकेअजमेरा पारीकगुर गणपतदेवी नौसरचाँकेदायमाँ गौठे चासोबिख्यातहै ॥ अजमेराँमें १ कौञ्या २ राय ३ कूकडच्या ४ रण-दीता ५ धौल ६ भगूत्या ७ डबकौञ्या ८ कुलथ्या ९ पढावाबजा-तहै ॥ १० माणक्या ११ बिन्यायक्या १२ नें धौलेसरचा १३ डौडा १४ भक्त १५ नौसरचा १६ पौसरचा १७ खूँच्या१८ झंवरसुजातहै ॥ ॥ ३२ ॥ (भंडारी) भंडलकछावाजाकी नागणेंच्याकहीमात गौतर-कौसिक व्यासखटौडपारीकहै ॥ काला १ गोरा २ नेंणसर ३ भंडारी४ भकावा ५ राय ६ गोकन्या ७ की मातासोतो गोकलन्यारीकहै ॥ भूक्या ८ मिरच्या ९ गुलचक्क १० नरेसण्या ११ नें लाठी १२ मात्या १३ माताभिन्नभिन्न बौंक तेराभंडारीकहै ॥ ३३ ॥(छापरवाल)छाजपाल-सांखलासु बंधरकहीजेमात गोतरकोसिकवेद युजुरसुगायेहैं ॥ डीडवा-णयाँदायवाँ त्रिवाड़ीगुरपोञ्याकहूँ छापरवाल १ दुजारा २ दुसाज ३ यूँजतायेहैं ॥ ३४ ॥(भटड़) भेरूँजीभाटीहैपेढ बीसलकहीजेमात गो-तभरद्यास सोतोभटड़भतायेहैं ॥ स्यामबेद साखानंत प्रवरहंतीनजाके गुरुपल्लीवाल सोतोधामटजतायेहैं ॥ भटड़ १ लदड २ सूंधा ३ मल्लड़ ४ हलद ५ किला ६ बीसाणीं ७ बलवाणीं ८ जेठा ९ रामाणीं १० बखानेहैं ॥ मूवणदासौत ११ गाँधी १२ कहरा १३ महरा १४ विच्छू १५ वीसा १६ पूंगल्या १७ बीसंतमात पीथाणीं १८ सुजानेहै ॥ ३५ ॥ (भूतड़ा) भूरसिंगसांखलासुभूतड़ा खींवजमात अत्लसांसगौत्र गुरु-द्विविधावखानूँहूँ ॥ सारस्वतबदर चंनणपलीवालपुनि दोऊँमिलबाँटे-

वंट इसीविधठानूँहूँ ॥ भूतड़ाँ १ में चांच्या २ देवगटाणी ३ दत्ताणी देव ४ चौधरी ५ कहीजेएक जौधपुरजानूँहूँ ॥ ३६ ॥ (बंग) बाघोजीपड़िहारसती कोठारीसौढांसगौत्र बंगाँकेगूजरगौड़ गौनड़चीत्रिवाड़ीहै ॥ युजुर्वेदकान्हणुसाखा परवरपांच भेरूँ मंडौवरकालौपूजे खाँडलदिहाड़ीहै ॥ महमलपित्र माताकींटल केईकपूजे धारादेसतीकीधामकल्याणीं कीनाडीहै ॥ बंगाँमें १ छींतरका २ साँवल ३ सौभावत ४ पटवारी ५ बाजे मौटावत ६ थारावत ७ कहिये मूंडवेपसारी है ८ ॥ ३७ ॥ ॥ अटल ॥ अटूजीगहलौतजाकी मातासचियायसुन मात्रिसत्ती गौतमस्यगौत्र ही सुजानेहै ॥ अटल १ गोठणिवाल २ मरोच्या ३ ये तीनबौंक अटलाँकेबटूगुर पोकरणाबखानेहैं ॥ पेःलीगूजरगौडछौडी बटुवाँभीत्यागदीनीं अबचित्तचावेसूं अटलगुरमानेहैं ॥ मरौव्याँकेगुर गूजरगौडहैबीजारण्यासु सुणींजूनीख्याततामें एसीविधआनेहैं ॥ ३८ ॥ (ईनाणी) ॥ इंद्रसीईदाईनाणी नगवाच्या जेसलमात गौतरससांस जेसलांसवीबतावैहै ॥ गुरुसंखवाल सोतोगरबरियात्रिवाडी सांखातेतरी प्रवरतीन यजुरजतावैहै ॥ ३९ ॥ (भुराड्या) भूरौजीचहुवाण माता मुणधणीं अचित्रगोत्र दायमानवालगुर, आचारजआनूँहूँ ॥ भुराड्या १ कौठारी २ बंबू ३ भूँगडच्या ४ ये च्यारनख सुनीसोविगतकहि एसीभांतजानूंहूं ॥ ४० ॥ (भन्साली) भाऊसिंधबांसजासूँ भन्सालीचावंडामात गौतरभन्साली सतीडाहरबिखानिये ॥ आचारजगुरुसोतो दायवाँनवालजानौं लाबरचोसौनाणोंभेरूँ भोलौपित्रमाँनिये ॥ ४ ॥ (लढा) लोहड़पंवारपेढ बंधरसंचायमात गुरुगौलवालव्यास पारीकभताऊंहूँ ॥ गौतरसीलांस वेदयजुर ऊपासीराम साहगौतलढा १ मौदी २ अठासण्याँ ३ जताऊंहूँ॥ भाकरोद्या ४ हींग्या ५ मूंजी ६ दागड़चा ७ धाराणीं ८ जौला ९ दगड़ा १० झंडेवालासेठ ११ चौधरीखताऊंहूँ ॥ ४२ ॥ (मालपाणी) मालदेजीभाटीजासूं मालपाणींसांगलमात गौतरभक्या-

स गुरुपुष्करणाछाँगाँणीहै ॥ मालपाणी १ मूथा २ मोदी ३ जूंहरी ४ छूलाणी ५ भूरा ६ लोलण ७ ये सातभाँत नीकेकविजाणीहै ॥ ४३ ॥ (सिकची) ॥ संकरपँवार जाकीमातासचियायकहूँ. गोतरकस्यप सतीभावजप्रमानिये ॥ सिकची १ सिलाणी २ औरसीलार ३ कहीजे- तीन गुरुभिन्नभिन्नजार्कोएसीबिधआनिये ॥ सिकच्याकेगुर जोसीचौ- वटियापोकरणाजाको पाराश्वरगोत्रदेवीचावंडासुमानिये ॥ सीलारांके- डीडवाण्याँ गुरूहैगूजरगौड ऊपाद्याआचार्जगौत्र भारद्वाजजानिये॥४४ (लाहोटी) ॥ लाभदेतंवरपेढ चामुंडाकहीजेमात सारस्वतबडओझा गुरुसोप्रमानिये॥ कागाँयंसगोत्र साखातेतरी प्रवरतीन बसर १ लाहोटी२ काहा ३ कूया ४ सोबखानिये ॥ ४५ ॥ (गदइया) गोरोजीगोयल- पेढ मातावंघरायजाकी गोतरगोरांस गुरुसारस्वतठानिये ॥ ल्होडओ- झाजाकी माता डाहरीमूसांसगोत्र यजुर्वेद साखानंत त्रिपरवर बखानिये॥ गदइयाँमेंबोकसोतो चोधरी हिंगर्ड जान सुनीसोबिगतकाहिएसीभाँत- जानिये ॥ ४६ ॥ (गगराणी) ॥ गांगसीगहलोत देवी पाढाय कस्यप- गोत्र गग्राणीं १ बबरेचा २ काला ३ डोड्या ४ गगड ५ जानिये ॥ गग्राण्यांकेगुर सोतो जोसीहैखंडेलवाल सारस्वतल्होडओझा डोड्यांकेप्र मानिये ॥ ४७ ॥ (खटवड) ॥ खडगलसिंघसांखलाके पाटवी खटौड १ जानौं मालाणी २ टुवाणी छोटा ३ भाला ४ तौडा ५ जानिये ॥ भूरिया ६ मूछाल ७ खड ८ कालिया ॥ लोसल्या १० कहूँ गोतरमूँगांस मातालोसल्या प्रमानिये ॥ मोलासरचा ११ गहलड़ा १२ नरेसण्याँ १३ सराप १४ गांधी १५ भूरिया १६ खटौड़ सोला खातेमेंबखानिये ॥ ४८ ॥ (लखोट्या) लोकसीपंवार जासूँलखोट्या लाखेचसती दीहाडीसंचाय गोत्रफांफडांस जानिये ॥ कोडमदेसभेरवपूजे बालक्योपितरजानौं गुर सारस्वतबडओझा सु प्रमानिये ॥ लखोट्या १ जुगरामा २ भइया ३ मौनाणां ४ परसरामा

५ मौठड़ा ६ खरीद्यामौठ पायोराजमाँनिये ॥ ४९ ॥ (असावा) आसपालदहिया जासूँ, असावा पंचांसगोत्र. आसावरिमात गुरुमंडौवर व्यासहै ॥ आसोपा १ व्यिपत्ति२नाग ३ मंडोवरा ४ कहुंच्यार माताभिन्नमांनें गोत्रखलाइंसखासहै ॥ नागलांकेगुरसोतो नागलात्रिवाडीजानौं दीहाड़ीदूदलपूजे एसोइतिहासहै ॥ ५० ॥ (चेचाणीं) चंद्रसेंणदहियाजासूं चेचाणी १ दूदाणी २ खड ३ कलंक्या ४ कचोलया ५ राय ६ गोतरअरड़ांसहै ॥ दधवंतदेवी रायकचौल्यापाढायमाने पाटल्योभैरवजाके गौतरसीलांसहै ॥ कचौल्यारायकेगुर दायवाँत्रिवाड़ीजानौं औराँके ईनाण्याँव्यास दायमाँबखाणजे॥न्यारान्यारागौत्र देवीपूजतप्रतच्छगुरु दौयमातजायेभ्रात जाकौभेदजाणजे ॥ ५१ ॥ (माणूँधण्याँ) मोवणजीमोहलपेढ माणूंधणींकहीमात जाखणसतीसु गौत्र जेसलानीमानिये ॥ रिषिहैकपिल गुरू दायवाँजौपटव्यास माणूंधण्यामुणधणियासु इसीविधजानिये गंगाधौरेदीन्हींदान लीन्हींहैखंडेलवाल मुणधणियांकीवृतसोतो प्रगटप्रमानिये ॥ बाकीनखचौधरी २ घरड़ोल्या ३ सूम ४ सिंधी ५ स्याहर ६ हीरा ७ सातवौंकगुरु जौपटप्रमानिये ॥ दोहा) कहैगौत्रपोलांसकेइ केइकपिलांसकहेस ॥ केइसुरल्यामाताकहै जाखणनामलहेस ॥ ५२ ॥ (मूंधड़ा) माधौजीमोयल मातामूँदल गोवांसगोत्र सारस्वतओझाबड गुरुसोप्रमानूंहूँ ॥ मूँधड़ा १ सकराणी २ डोव्या ३ सेसाणी ४ मौराणी ५ मौदी ६ भाकराणी ७ भराणी ८ भोराणी ९ चमक्या १० जानूंहूँ ॥ गोराणी ११ माहलाणा १२ छोटापसारी १३ कोठारी १४ चमव्या १५ ऊलाली १६ महूताराज १७ पन्सारीसुआनूंहूँ ॥ प्रहलादाणी १९ सांभरचा २० अटेरण्या २१ बारीका २२ ढेव्या २३ दम्मलका २४ बलड्या २५ चौधरि २६ बावरी २७ बरखानूंहूँ ॥ ५३ ॥ (चौखड़ा) चौखौजीसींदलजासूँ चौखड़ाजीवणमात गोत्रहैचंद्रांस सती झीण सो चहीजिये ॥ झींतरचोभैरवपूजे

पितरकहीजेजालो बेदहैयजुर तीनप्रवर लहीजिये ॥ गुरुगूजरगौड़ सोतोगौनव्यांत्रिवाड़ीकहूँ थांभातीनबूतभिन्न औरहूकहीजिये ॥ ५४ ॥
(चंडक) चाँपोजीचहुवाण माताआसापुरा सचियाय गोतरचंद्रांस जाको स्यामवेद गाइये ॥ गुरुपल्लीवालसोतो धामटप्रवरतीन तेतरीसु-साखा गौत्रचांडकवताइये ॥ चंडक १ पूंगलिया २ पटवा ३ गौराणी४ मुकनाणी ५ भइया ६ भीमाणी ७ प्रागाणी ८ सागर ९ सुंदराणी १० जानिये ॥ बीझाणी ११ भीखाणी १२ जौगड़ १३ माधाणी १४ सुखाणी १५ सांवल १६ प्रह्लादाणी १७ मुलतानी १८बसेककेबखाणिये ॥५५॥
(बलदवा) बाघोजीपंवार जासूँबलदवा गांगेवसती गोतरबालांस माताहिं गलांदजाँनिये ॥ गुरु संखवालसोतोपंडित प्रवरतीन स्यामवेद वाजस्नि लटूरच्योभैरव माँनिये ॥ बलदवा १ पड़वार २ पेडीवाल ३ और राघ-वाणीं ४ कलाणी ५ रु बेडीवाल ६ येछेभाईआँनिये ॥ गुरपेडीवालँके गूजरगौड़डीडवाण्याँ ऊपाध्या आचारजसोतो एकाँहींकेठाँनिये ॥ ५६॥
(बालदी)॥ बालोजीबडगूजरसु गारसकहीजेमात लौरसहैगोत्रजाको स्यामबेद जानिये॥ दायमाँत्रिवाड़्याँमाँहेबोरव्याकेबूत्तजानौं चंदवाण्याँ केबूतनाँहीं बालदीसुबानिये ॥५७॥ (बूब) बाघोजीतंवर जाकी भद्र-काली कहूँमात मूसायंसगोत्र बूब बोरद्या बखानिये ॥ गुरुलहौड़ओझा-सोतो अजमेराँकेथांभावाला औराकेबिरतनांहिं पूजारीप्रमानिये ॥ जोध पुरवाला करे चावंडामाताकीसेव बूबनमेंबंटनांहिं एसी बिधजानिये॥५८
(बांगरड़) बाघोजीबडगूजर बाँगर्ड १ तापड़्या २ संचायमात गौतरचूँडांस सतिघाड़ाय भताऊंहूँ ॥ एकगुरसारस्वत कहीजेखुँवाल-जौसी दूसरासिखवालजोसी बांगड़ांजताऊंहूँ ॥ ५९ ॥ (मंडोवरा) माँडोजीपड़िहारपेढ धौलेसरीमात गोरोभैरव वछांसगौत्र यजुर्वेद गायो है ॥ मंडोवरा १ मातेसरच्या २ धौलेसरचा ३ भाईमानें मंडोवरारूई-मात रूईन्हैबिछावेहै ॥ आदिगुरुसंखवालमंडोवराछोडीबृत पीछेतेंगद-

इयाव्यास दायवाँपुजावेहै ॥ ६० ॥ (तौतला) तोलोजीचुहाणजासूं तौतलाखूँखरमात गोत्रकपिलांस रिषिकपिलमारीचहै ॥ गूजरगोड्गु-रुसोतो गौनड्यांत्रिवाडीजानौं जालोजीजूझार सांभरनराणाँकेबीचहै ॥ तौतला १ नांगला २ बडका ३ पटवारी ४ भीलाडमांहींखोगटांसूंबेर कूवेपाणींनहिंसीचहै ॥ भौजनपंगतमांह जीमतनएकठौर खायेतंऊलट-गिरै एसीपडीखीचहै ॥ ॥ ६१ ॥ (आगीवाल) आगोजीभाटीहैपेढ मातासुभैंसादमानें गुरुसिखवाल आगीवाल सु बखानिये ॥ स्यामवेद तेतरी सु प्रवरहै तीनजाके गोतरचंद्रांस आगीवालसौप्रमानिये ॥६२॥ (आगसूड) अगरोजीतंवर माताजाखण कस्यपगौत्र आगसूड ज्याके गुर दायमाबखानूंहूं ॥ डीडवाण्याँतिवाड्याँमें रामाजीकेथांबे-बूत ख्यातमाँहींदेखीबात एसीबिधजानूंहूँ ॥ ६३ ॥ (परताणी) पूरो-जीपंवारपेढ मातासचियाय गोत्रकस्यप पोकर्णांबीसा प्रोयतगुरूकहूँ ॥ प्रताणी १ रु पूंदपाल्या २ दागड्या ३ कहीजेबौंक नीकीभांत जानूँ जाकी बिगतएसेंलहूँ ॥ ६४ ॥ (नावंधर) नवनीतव्रबाँणपेढ ध्रजल-कहीजेमात गुरुपल्लीवाल सोतोधामटबखानेंहै ॥ अथर्वणवेद गोत्रबुग्दा लिभ कहुँजाको नावंधर १ धराणी २ धीराणी ३ बौंकजानेहैं ॥ मीमाणी ४ दुढाणी ५ स्यहरा ६ राय ७ गाँधी ८ फेरजानौं मौडाणी९ धाराणी १० धीरण ११ धनाणीं १२ पनाणीहै १३ ॥ ६५ ॥ (नवाल) नानणसीनृबाँणजासूँ नवालनाँण्णांसगोत्र नवासणदेवी सती जाखणभताऊँहूँ ॥ नवाल १ खुंवाल २ मालीवाल ३ गोरोभेरुं-माँनें दायमाँनवाल सोतो आचारजजताऊँहूँ ॥ खुँवालाँकेगुरगूजरगौड हैत्रिवाडी माता खूँखर जाखड़ भेरूँ चेलक्यौपूजायेहै ॥ खेरवाड़छौड वसेहाडौतीकेमाँय जाय बादस्याहमाँहिंपित्र बालक्योजूझायेहैं ॥ ६६ ॥ (पलोड) पालोजीपड़िहारपेढ गोतरसाँडांस देवीचावंडा गूजरगौड आचारजजतावैहै ॥ बीसनख माताभिन्न गौत्र भिन्नभिन्न गुरुदायमाँ-

पलौडव्यास पारीकभीगावैहे ॥ पलौड़ १ चितलंग्या २ मौडा ३ लौसल्या ४ पचीस्या ५ डौडा ६ बापड़ोता ७ सेठी ८ कौठीवाल ९ मूंजी १० आनिये ॥ जेथल्या ११ रावत्या १२ केला १३ गहलडा १४ चावंड्या १५ भक्कड १६ कांकरचा १७ फौफल्या १८ डोड्या १९ जुजेसरचाजानिये ॥ २० ॥ माता गुर गौत्र वेद साखा न्यारीन्यारी बोले पलौड चितलंग्या देवी नोसल सु जानैहैं ॥ फौफल्या लौसल्या अरु चितलंग्या रु फौगीवाल पूजत नौसल्यामाता गोरोभैरव मानैहैं ॥ बापडौता डोड्या देवी पंचायमपूजे पुनि सेठी मातादायम जुजेसरचा जुजेसरी ॥ जेथल्यांकीमाताद्यौस चावंड्याचावंडामानैं कांकरचा चापटा मातासौढण प्रमेसरी ॥ २ ॥ बाकांस साडांस गौत्र कौसिक मानांस केई मामणांस मानहंस एसीभांतभाखैहैं ॥ रावत्यांकेकूंभ्या-जौसी जेथल्यांके गूजरगौड पलौडांपलौड़ गुर दायमांसोदाखैहैं ३ ॥ ६७ ॥ (तापड्या) तेजसींचुहाणजासूं तापड्या १ मूंगड़ २ छाछ्या ३ आसापुरामाता गौत्र पीपलानजानिये ॥ गुरुसारस्वतसोतो बदरकहीजेआद चनणबंटावेबूत ग्रहणेंप्रमानियें ॥ मूंगडांके दायमाचौ-लंख्यागुरुप्रोत जानौं गौत्रमोवणांस मातासंचाय पूजाईहै ॥ मोसालाका-गुर गोत्र दीहाडी भैरव मांनें तापड्या मूंगड छाछ्या आपसमें भाईहै ॥ ॥ ६८ ॥ (मिणियार) मौवणजीमोहलपेढ गौतरकौसिक मातादा-यम त्रिवाडीगुर पौड्यासोभतायेहैं ॥ मणियार १ पसारी २ बरघू ३ माइया ४ खरनाल्या ५ मनक्या ६ पसारीपींपाडमांय नीकेकहजता-येहैं ॥ ६९ ॥ (धूत) धारोजीधांधल धूत लीकासणपूजैदेवी फाफ-डांसगोत्र जासूं रघूवेदजानिये ॥ चींथरचोभैरव जालोपित्तर कहीजे गुरु सारस्वत गुडगीला आचारज प्रमानिये ॥ ७० ॥ (धूपड)
धीरसीधांधल माताफलौधी सिरसेसगौत्र धूपड गांधी के भैरव बाल-क्यौ बखाणजे ॥ परवरपांच गुरदायमांईनाण्यांजोसी पित्तरपरेवो जूझ्यौ

गायाँआगे जाणजे ॥ ७१ ॥ (मोदाणी) माधोजीमोहलजासूँ मोदाणी साँडांसगोत्र गुरुसुपलोडव्यास दायमाँत्रिवाडीहै ॥ मेडतामेंइष्टि पुनि मडिया नागौरमाँय सतीसुजाखण चावंडा बंधरदीहाडीहै ॥ मोदाणी १ महदाणा २ बंब ३ महनाणा ४ येच्यारभाई गुराँकीविगतकछु थाँबाँकी-अगाडीहै ॥ लाडणूँ १ छापर २ रौड ३ तीनभाईबाँटेब्रत सातेंकेथाँ-बाकेभाई बूतछोडपाडीहै ॥ ७२ ॥ (दोहा) पौरवार १ अरुदेपुरा २ मंत्रि ३ नौलखा ४ जाँन ॥ जैनधर्मकुलत्यागकर ॥ असपतमिलिया-आँन ॥ १ ॥ (पोरवार) पूरोजीपडिहार जासूँ पौरवार मात्रिमात नानणांसगोत्र हूते औसवालबानिये त्रिगुणायतवयभंज्यागुर सारस्व-तकहूँजाकी भद्रकालीदेवी विधिएसीभाँत आनिये ॥ पौरवार १ परवार २ दागडचा ३ भेरूँदामाँय मारवाडदेश जिल्लेमेडताकेजानि ये ॥ ७३ ॥ (देवपुरा) दीपोजीकसुँबीवाल दहियाबंसदेवपुरा माता-हैपाढाय गोत्रपारस बखाणजे ॥ दायमाँनवालव्यास आचारजगुरुकहूँ देपुराँनेंत्यागदीन्हाँ एसीविधजाणजे ॥ पारीककौसिकव्यास प्रोयतआम-लिवाला भाणपीकाथाँबा देवपुरा पूजे मानजे ॥ देवपुरा १ कसुंबीवाल २ आपसमेंभाईदोनुँ जैनधर्मछोडभये मेसरीप्रमानजे ॥ ७४ ॥ (मंत्री) मानोंजीपंवार मातासचियाय कहुँजाकी गोतरकँवलाय ताको स्यामबेद जानिये ॥ गुरुसारस्वतबडओझा सोतो केलवाड्या औसवालचौपडा-सु मंतरीप्रमानिये ॥ ७५ ॥ (नोलखा) नौलसीजादवजासूँ नौलखा कस्यपगोत्र गुरुहैगूजरगौड बीराकाप्रमानेहैं ॥ माताहैपाढाय आदूगुरु हैत्रिवाडीकंठ कहूँकहूँआजलों पारीकहीबखानेहैं ॥ जैनधर्मत्याग भये-मेसरीसुबिसुधर्म नोलखोंखिणायोबाव सारोजगजानेहैं ॥ कहशिवकरण-ये खाँपकुलखँटमुनि आदनैत्रमुँनि जग प्रासिध प्रमानेहैं ॥ ७६ ॥ ॥ दोहा ॥ खाँपवहौत्तरमूलके मातागुरुसबआन गोत्र सतीपरवरकहे भैर वबेदप्रमान ॥ ७७ ॥ एकखाँपमेंबहुफली फूटरुबढीअपार ॥ क्रमसेंध-

खवरणनकरी छंदवंदविस्तार ॥ ७८ ॥ अबहीकहूँखतावणीं लिखूँबिगतखुलास ॥ दरकसहाशिवकरणकह बाचत है हुल्लास ॥ ७९ ॥ म्हेंबालकसमझूँनहीं छंदाँभेदअपार ॥ भूलचूकपदभ्रम्मह्वै लीज्योकवीसुधार ॥ ८० ॥ इतिश्री इतिहास कलपद्रुम माहेश्वरी कुलशुद्ध दर्पण छंदबंद सहा शिवकरण रामरतन दरक माहेश्वरी मूँडवेवालाकृत सम्पूर्ण

अथ

माहेश्वरीकल्पद्रुम ७२

खाँपखतावणी।

(१ सोनी)

॥ सोनोजी पेढ सोनगरा मातासेवल्या गोत्रधूम्रांस भाडल्यासऋषी यजुर्वेद ———— गुरुसंखवालओझा गुराँकीमाताफलोधी गोत्रदमाइंस सोनी १ सुगरा २ तुगरा ३ रामावत ४ भानावत ५ कोठारी ६.

३ तुगरा, गांव, सांभर, डकाच्यासूंबाज्या, ६ कोठारी मेवाड, देवगढइलासूंबाज्या,

(२ सोमाणी)

॥ स्यामोजी पेढ सौलंखी माताबंधर गोत्रलीयाइंस ! (आसोपा १ गुरदायमा आसोफा) (कुदाल २ गुरदायमाकुदालव्यास)

१ सोमाणी	————	८ कयाल	सांभरघाड	१५ग्यानेपोता	बीकानेर
२ आसोफा	————	९ पांत्या	मेडतासें	१६गेनाणी	बीकानेर
३ राथ	————	१० मकड	मूँडवासें	१७कसेरा	डीडवाणा
४ कोव्याका	————	११ साहा	मेडतासें	१८थिरराणी	पोकरण
५ कुदाल	————	१२ बागडी	आसोप	१९खाडावाला	बूंदीसें
६ मडदा	राणीगांव	१३परसावत	फलोधी	२०झवरसोमाणी	झांवरसें
७ मानाणी	बीकानेर	१४वालेपोता	जेसलमेर		

॥ झंवरसोमाणीकीख्यात ॥ प्रगनेजोधपुरके गांव झाँवरमें संवत ८३२

की सालमें सौनपालजीसोमाणी आपकेनाँनाँ जांझणजी झंवरके गोदी- गया और सौनपालजीकी औलादचली वह झंवरसोमाणीवजे इस खांपमें साख पांचटले

(३ जाखेटिया)

जालमसिंघजीपेढजादव मातासिसणाय गोत्रसीलांस सतीसौढल गुरांकोगोत्र सांवलिया वा सालांस माता जाखण गांवमांडलमें साखा मारध्वनी पर्वरतीन ३ ॥ गुरपारीक खटोड़व्यास मूँडक्याथांभाका ॥ यजुर्वेद ॥ गुरांकाथांभा गांवसांभरमें कँवलापतजीसें समत १४४४ मेंफटे (थांभा २) सिरासणा १ सांभर २ (खुलासा) १ ॥ साभर १ जेतारण २ जोधपुर३ जैपुर४ रामसर ५ इतनीजगेंहै ॥२॥ सिरासणा१ मारौठ २ मेड्ते ३ सौझत ४ इतनीजगेंहै ॥ गुरांकेआदूवृत राजौरिया कायस्थकी १ ही इससमय झाँवरियाकायस्थ १ राजौरियाकायस्थ २ दौनोंकीहै (जाखेटिया १ हौलाणीं २ भुवानींवाल ३)

(४ सौढाणी)

सोढोजीपेढसोहड् माताझींण गोत्रसौढांस गोरौभैरव गांवऊमरकौ- टमें यजुर्वेद मारध्वनीसाखा प्रवरतीन ॥ सतीजीर गुरखंडेलवाल मूछा- लत्रिवाडी देवी संवाय (सौढाणी[1] दंताल[2] ढौली[3] डाखेंडा हडकुटिया)

हडकुटियागाँव जेसलमेर इलाखे मारवाड़सें वजे.

(५ हुरकट)

हीरोजीपेढदेवड़ा माताबिस्वंत गोत्रकस्यप गुरु पोकरणावटू हुरकट १ भौलाणी २ कयाल ३ चौधरी ४

३ कयालगांवनावाँसे ४ चौधरीसाभरसे वजे

(६ न्याती)

नानणसीजीपेढनिरवाण माताचांदसेण गौत्रनांनसेंण सतीनवासण

(फौफल्यांके गुरपल्लीवालधामट) गोत्रमुग्दलांस ॥ पारीकदेप्याउपाद्या मातारवींवज गांवदेईमें बृत १ न्यातीकी है ॥ न्याती इन्दोरमें है न्याती १ निकलंक २ फौफल्या ३ डंडी ४.

(७ हेडा)

हीरोंजीपेढदेवडा माताफलोधी गौत्रधनांस ववांस गुर संखवाल-ओझा माताफलोधी (गुरुपल्लीवालधामट गोत्रमुग्दलांस हेडा) १ (किसीजगेंसंखवालओझाबृतलाटेऔरकिसीजगेंपल्लीवाल).

(८ करवा)

कंवरसीपेढकछावा माताकछवाय संचाय गोत्रकरवास पवंर ५ स्यामवेद (गुरुपल्लीवालधामट) काग्याकीमाताफलोधी करवा १ काग्या २ काहोर ३ कीया ४ किलल ५ वा कलंकीबजे

(९ काँकाणी)

कूकसिंघजीपेढजोया माताआमल गोत्रगौतमस्य व कपलांस लाव-रचौपित्र गूगरचौभैरव यजुवेंद परवर ५ साखामारध्वनी सतीलाछन गुर गूजरगौड सांभरचा चौव्या देवीकाडज वा लाछन गोत्र गोतम काँकाणी[1] १ सांभरचा[2] २ नरांणीवाल[3] ३.

१ कांकाणी गोत्रकपलांस २ सांभरचामाताल़ोसल ३ ——

(१० मालू)

मल्लोजीपेढपंवार मातासंचाय गोत्रखलांस वा थेपडांस गौपालोहू-च्यौपित्र स्यामवेद परवर ३ (गुरु सारस्वतलहोडओझा मालूके) (गुरु गूजरगौड़गुनाड़च्यौत्रिवाडी साबूके) (गुरु दायमाँजौपटव्यास तैलांके) व्यासांमेंथांबा ३ मूंडवे १ अरडके २ रहण ३ येक थांबावालाकेवंगाकीबृत है वहव्यासकहलातेहैं १ मालू २ साबू ३

घीया ४ तेला ५ चौधरी ६ लोईवाल, पूर्वमेंलोई कारुजगारसेंवजे

४ तेला माताचावंडा गोत्रकँवलांस (ऊनंवस्त्र)

सोर्ठा—करसावणरुजगार साबूबाज्यासहृजमें ॥ तेरासेगुणसाठ तेज-नगरमहरामसाः ॥ १ ॥ करचौखरीदीतेल धरचौरह्यौजुगच्यारलौं ॥ तेलाबाज्यातेह जागानेंपुरस्योजहाँ ॥ २ ॥ दूजाभाईधीर जागानेंव्रत-घालियौ घीयानामधरीस सबकारनरुजगारसें ॥ ३ ॥

(११ सारड़ा)

सीहृडजीपेढपंवार मातासंचाय गोत्रथौबडांस स्यामवेद गुरु सार स्वत ल्होडओझा नरडसारडाँके (गुरु पारीक बरणाजोसी खरड-सारडाँके) गुरु पोकरणा व्यासू पोकरण फलोधीका केलांके-बाकीमारवाड मेवाड ढूंढाड वालांके गुरु सारस्वत ल्होडओझाहे

खरडसारडांकीबृत प्रथम सारस्वतओझाँके ही सू पारीकबरणा जौसी दुरगेपोताँकों तीर्थपें पुंन्यदी सूअबे पारीकवर्णाजोसी दुरगे पौ-ताके खरडसारडांकीवृतहे सेसेपौतांकेबृतनहीं

१	सारडा	४	केला	७	कानूंगा	१०	पटवा	१३	सेठ(डीडवाणें
२	नरड	५	मूंजीवाल	८	चौघरी	११	दादल्या	१४	सेठी(रामदेवरे
३	खरड	६	कौठारी	९	भलीका	१२	भांगड्या		————

(१२ काहाल्या)

काहोजीपेढकछावा मातालीकासण सतीचावंडा व फलोधी गौत्र.का-गायंस भैरव सौन्याणाजी गुरुदायमाँ काकड़ाव्यासमिसर ————

गुरु दायमाँ काव्यातिवाडी पिण पूजीजेहै गुरांकेथांभा ३ है मिसर डीडवाण्याँ नागोरकाथांभाका (कहाल्या १ चहाडका २ वहाडका ३) सोरठा ॥ काहाल्यावोंकजुतीन भाईनामप्रसिद्धजग गुरूउभयपूजीस, ग्राम भेद लखि पक्षतें ॥ १ ॥

(१३ गिलडा)

॥ गांगजीपेढ गहलौत मातामात्री गौत्रगौतमस्य सतिमात्रि गुरु सार-स्वल्हौडओझा (रिषिइष्ट) गिलडा १ गहलडा २ गीगल ३ मूथा ४ मौदी ५

(१४ जाजू)

॥ जूजोजीपेढसांखला माताफलौधी गौत्रवालांस गोरोभैरव ॥ गुरुगूज-रगौड जांगला उपाद्या काँच्या कौलासरचा ॥ गुरांकाथांभा ५ ॥ कौलासरचा १ मेगासरचा २ थिरपाल ३ बीसल्या ४ ———५इस्मे कौलासरचांकेबूतहै जाजू १ समदाणीं २ सिंगी ३ तुलावत्या ४ कयाल ५ जजनौत्या ६.

॥ समदाणियाँकीख्यात ॥

गाँवजाँगलूका जाजूहेमजी १ हरिधँवल २ हरिपाल ३ महिपाल ४ मामणसी ५ नरायण ६ माधोजी ७ समदरजी ८ पीढी आठवीं समद-रजीसें समदाणींबजे समदरजीतक जाजू कहलातेथे.

(गुरांकीख्यात)

गुरु जांगला उपाद्या काँच्या यहपेस्तर गूजरगोड़जोसीपिसागण्याँ कह लातेथे केसोजी जोसी साँखलाँके गुरुथे इधर जांगलोंके और उनकेग-नायतोंसें आपसमें तकरार (हाडवैर) थी इसकारनसें भयभीतहो माहादुखीरहते तब अपनेगुरु केशोजीपासजाय सरणाले हातजोडके कहाकि माहाराज आपसांवतहो और हम आपके सिष्यहै सो दीनजान हमारी आप रक्षाकरो जब केसोजीकही म्हेंतो सांवतहूं उधर उनके पास १००सूरवाँहै युद्धकीयेबराबरीहै अबदगेसें मारनाचाहिये यहवि-चार साँखलोंके गंनायतोंपासजाय कहीके सांखलोंकेयहां ३५० कन्या-कवारी उनका स्वयंवर रचाहे तुम चलके विवाहकरलो एसेंकह बरात

सजाय सबकों लाके एक वागर (वडापरकोटा) में उतार नीचे वारूद बिछाय सुरंगलगादी तबवह ३५० कँवारीकंन्या प्रणकर बोलीके यह सम्पूर्ण कर्म हमारे नामसें हुवा इच्छयाकर वरातसाथ आये वह हमारेपतीहोचुके यहकह सतीहो गई औरकेसोजीकों श्रापदिया के तुम्हा राकुटंब (परिवार) बांटबांटहोजाय (यह श्रापितशब्द उलटकर) आ-सरी वचनहो अतिशय बृद्धि होगई तबतें यह गूजरगोड पिसांगण्यांसे गूजरगोड जोसी जांगला उपाद्या वजे फेर किसीकारनतें कांच्यावजे.

॥ केसाजीके १२ बेटा जिस्काथाँभाहुवा कौलजीकाकौलासरचा १ मेगाजीकामेगासरचा २ थीरोजीकाथिरपाल्या ३ बीसलजीकाबीसल्या वह भौजगहुय देवपूजाकरे है.

॥ थाँभापांचकेजाजूसमदाणीयाँकीबृतहै ॥

॥ धेनाजीकाधेनाणीं १ चाचाजीका चांचाणीं २ बीसाजीकाबीसल ३ हापाजीकाहापाणीं ४ ब्रह्मदेवजीकाब्रह्मदेव ५ ॥ इसमेंहापाजीकोथांभो-गलतगयो बाकीथांवा ४ केवंसहै बृतमेंआवेसोपावे ॥ थांभा ४ मेंवंट वँटियाँपछैखेरूंजबचे जिसकोवंटएकथांभाके २० होयतोभीवंट १ मिले व.एकथांभाके१ हीहोयतोवंट१ लेवे जादाहोयतोपाँतीमेसें पात्याँकरलेवे प्रथम खेरूंजवंट थांभा ५ में था अब थांभा ४ मेंहुवेहै.

(१५ बाहेती)

॥ वेहडसिंहजी नृबाँणपेढ माता गोत्र भिन्नभिन्न ॥ (गौकन्या गुर दायमाँनवालआचारज गोत्रगोकलाँस मातागोकन) डाल्या गुर ——— मातासामणगौत्रचंद्रांस.व.चानणेस.॥ (डांगरा गुर ——— माता सौढर) ॥ मल्लड गुरपोकरणाव्यासू ——— ॥ (नावंध-राणी गुरदायमाँपलोडव्यास ———) ॥ लौगरड १ चरखा २ गुरपारीकगौलवालव्यास गौत्रराजांस मातादधवंत ॥ (लौह्या १ नरवरा

२ गुरगूजरगौडगुनारड़्या त्रिवाडी गोपीनाथजीकाथाँभावालांके बूतखांप २) ॥ खडलौद्या गुरपुष्करणाँछागाणीं कौल्याणीं माताबीजासण ॥ (बाघला गुरसंखवालपींपाडापाँज्या मातासौढल धौलेसरीसती महपालपित्रकालोभैरवगोत्रकस्यप) मालीवाल भीलडीकाव्यास इसमेंसें आधी खाँप भाणेज गलूँडवालाव्यासाँकों दीवीसू अब मालीवालांका दापादोनूं बराबर आदूँआद बाँटेहै ॥ नरवरा १ मुरक्या २ डाल्या ३ लोया ४ लटूरया ५ पांचखांपभाईहै गुर गूजरगौड गौनारड़्यात्रिवाडी माता गौत्रचंद्रांस (डांगरा गुर ——— माता नागणेची सती सौढर गोत्रकस्यप ॥ जागाबाहेत्याँमें व कापडीजुदीखांपबतावे) (खाबाणी गुरदायममाँपलौड मातागाहल चीतौडसेंबजे) धौल गुर गूजरगौड गुनारड्या माताडाहरी गौत्रहरडांस (दरगड गुरखंडेलवालडीडवाण्या मातालोईसण (नगणेच्या गोत्रकपलांस) धूँणवाल गुर ——— माताडांहरी॥ फाँफट गौत्रहरडांस॥ (मुसाणी गुर ——— गौत्रकाबरांस माता ———) नावंधराणीगुर ——— मातागाहल (लौया गुर ——— मातासावण गौत्रचंद्रांस) नरवरा गुर ——— मातासाडांस गौत्रनंदांस (बील्या१ बटंब्या२ बिलावड़्या३मातावंधर) ——— बाघला १ खींवज्या २ नींवज्या ३ नाणणेच्या ४ डांगरा ५ भाईहै मातासोढल (राईवाल १ रांदड़ २ गांधी ३ भाईहै) (लोगड़ १ गरविया २ धनाणीं ३ रूड़्या ४ चरखा ५) खूंभडा १ बासाणीं २ नौगजा ३ मालीवाल ४ सूम ५ मल्ल ६ दरगड ७ (मालाण्याँ १ मल्लड २ धन्नड ३ मुलतानी ४ मसाण्या ५ भाईहै) सतूरया १ मातासवासण गौत्रखीवसरांस गांवसतूरसें (तुरक्या ——— मातासवासण ——— नौगावांसें) नरेड़्या ३ ——— मातालीकासण ——— (नथड ४ ———) (गींदोड़्या ——— मातादायम ———) धनाणी१तापड़्या नागोरमें.

(वाहेती चक्र)

अमृपाल	जंगी	धूणवाल	पेडचीवाल	बंबड़ोता	रामाणी	लोगरड़
कसंडा	झीतड्या	धेनोत	वरोद्या	मल्ल	राघाणी	लोह्या
खडलोह्या	डाल्या	धोल	वटंड्या	मल्लड़	राईवाल	लोया
खाबाणी	डांगरा	नरेड्या	वाहेती	मसाण्या	रांधरड़	सतूरचा
खींवज्या	ढांगरा	नथड	वाघाणी	मालीवाल	रूथा	सकराणी
खूभडा	तापड्या	नरवरा	वाघला	मालण्या	रूह्या	स्यहरा
गरविया	तुरक्या	नावंधर	वासाणी	मुरक्या	रूवल्या	सेसाणी
गांधी	तूंमड्या	नाडागट	बिलावड्या	मुलतानी	रूड़्या	हमीरपुरा
गींदोड्या	दरगड	नागणेच्या	बील्या	मुसाण्या	लटूरचा	———
गोकन्या	धनड	नींवज्या	बुगडाल्या	मोराणी	लीकासण्या	———
चरखा	घनाणी	नोगजा	वेडीवाल	———	लोईवाल	———

(१६ बिदादा)

ब्रधसिंघजीपेढसोढा मातापाढाय गौत्रगजांस (सतीआसापुरा किल-लके) (सतीखूबणबिदादांके) गुरपारीकखटोड्यास पंडितजीका-थाँवाका माताखूबणगौत्रधोलांस बिदादा १ किलल २ बिदादा-डीडवाणों छौडनें गांवबिदियाद वसायौ

(१७ बिहाणी)

बिहारीजीपेढपंवार मातासंचाय गौत्रवालांस रिषीकौसिक स्यामवेद परवरपांच साखाअनंत सतीलाखेचा गुर दायमाँ वौरड्यात्रिवाडी

१ बिहाणी २ पीथाणी ३ लौह्या ४ पीपाणी ५ बछाणी ६ गूजरका ७ सराफ ८ बडहका ९ लालाणी डीडवाणांका इंदोर मऊकी छावणीमेंहे १० पसारी डीडवाणांका गांवसेरस्यामें हे ११ लौईका डीडवाणामें १२ पापड्यामेड्ते १३ गौवरचा

(१८ बजाज)

बीजौजीपेढभाटी मातागाहल गौत्रभन्साली भैरव झींव्यौ गुरदाय-

मॉंतिवाडीकंठ गौत्रगौतमस्य थांभा २ सतीको १ अटलाजी २ बेहड्या गौत्रबछांस मातापाढाय सतीपाटल (मरचून्या गौत्रआंवलेस मातालौसल (किसतूरच्या गुरांको गौत्रगौतमस्य मातालीकासण सतीसुबरणा)

१ बजाज २ बेहड्या	३ रौल्या ४ रामावत	५मरचून्या ६ चामर	७ धारूका ८ गवदूका	९ गटूका ११ गौदावत	११ गौधा १२ लखावत
५ मरचून्या हाडौतीमे.		+१३ किस्तूरिया हाडौतीमें.			१३किस्तूरचा

(१९ कलंत्री)

कालूजीपेढकछावा माताचावंडा व चमलाय व पाढाय गुरपारीकखटौ-ड़्व्यास थांबा २ पंडतजी १ बावरजी २ गौत्रकस्यप

कलंतरी १ मच्छर २ जोधपुरमेंहै.

(२० कासट)

केवाटजीपेढपड़िहार माताचानण व संचाय गौत्रअत्लसांस स्याम-वेद् गोरोभैरव खौगटामाता जॉंजर्ण गुरगूजरगौड़ लौयमाउपाद्या डीडवाण्यॉं कठैक बद्र चनण पलीवालभी कासटकीबृतखावैहै

१ कासट २ कटसूरा ३ सुरजन ४ खोगटा

॥दोहा॥ आपसमांहींबिरैहैं खौगटारुतोतलॉंन ॥

इकपंगतभोजनकरे उलटगिरेसचजान ॥ १ ॥

(२१ कचौल्या)

कंवरासिंघजीपेढतंवर मातापाढाय सतीडासणी गौत्रसीलांस (राय० गुर पुष्करणॉं छॉंगाणी) रूप० गुर जौपटव्यास (सौन फूल गुर काव्यातिवाडी कचौल्या १ राय २ सौन ३ फूल४ रूप ५

(२२ काःलाणी)

कलौजीपेढकछावा माताचावंडा सतीपाढाय गौत्रधौलांस व कालांस

स्यामवेद साखानंत चेलक्योंभैरव १ का:लाणी सतीअपाणपूजैहै गुर पारीकखटोडव्यास२ पंडतजी१ बावरजीका २ थांभादोय१ (का: लाणी २ मुरक्या ३ काल्या) का:लाणीं कलंत्री मुरक्या माता गुरु-गौत्रएकहै जिस्सें आपसमेंभाईपामांनेहै इससिवायऔरकुछभेदनहीं. गुरांकीविगत ॥ पारीकखटोडव्यास थाँभा२ पंडतजी बावरजी ॥ पंडितजीकाथांभावालांकेबूतखाँप७ सातहै बावरजीकाथांबावालांकेबूतखाँप ५ पांचहै और पंडितजीकाथांबावालांकेखांप २ (भंडारीराय १ बिदादा २) घरूहै बाकीखाँप पांचसीरमेंहै सू बंटवराबरबाँटे कालहाणी १ कलंत्री २ मुरक्या ३ गटाणी ४ कुलथ्या ५ येपांच०

(२३ झंवर)

जांजणजीपेढजादव —— मातागौत्रभिन्नभिन्न गुरदायमाँ आसोपा त्रिवाड़ीव्यास —— खरड़ १ खूँच्या गुरपारीक अजमेराजौसी (गायलवाल मातागायल) गौत्रझूम्रांस नागला खरड़ मातासुद्रासण गौत्रमाणंस खूँच्या माता गौत्रमंडवांस झालरचा —— गौत्रमौवणांस. १ गाहलवाल २ नागला ३ नौसरचा ४ पौसरचा ५ खरड़ ६ खूच्या ७ खीवज्या ८ ठींगा ९ मुवाणी १० मौवण्याँ ११ मेमाणी १२ झालरिया १३ भगत १४ डाणी १५ चौधरी १६ सौमाणीझंवर (सोमाणी झंवर साख ५ टाले)

खरड़झंवराँकी ख्यात

मारूधराका गांव आसोपमें नरड नोसरजी व पौसरजी दोयभाईथे उसमें छोटाभाई पौसरजी परदेसगमनकर बहोत द्रव्यपेदाकीया और नोसरजीकेपास भेजकर लिखाकि शुभकार्यमें खर्चकरो जब लघुभा-ईकी आज्ञावत नोसर सागर तालाव बनाया यहवातसुन पोसरजीकी बहूबोली के कमावेमेराखाविंद और उडावेजेठजी अपना नामप्रसिद्ध

करवडे सेठजीवजे यहवचनसुन नोसरजी इस्को जुदीकर तालावकेबीच पालन्हखाय नोसरसागर व पोसरसागर नामरखदिया चंदमुद्दतबाद पोसरजी परदेससें आये और तलावकेबीचमें पाल देखकर नाराजहो पूछनेलगे तहकीकातसें कसूरअपनीऔरतकापाया जब क्रोधितहो अपनीस्त्रिकोंदवागदे उसकेपीहर गामसांभर अजमेरांकेभेजदी उस्केग- र्भाधानथा पूर्णमासहोने सें पुत्रजन्मा पर्वतनामरक्खा जब गुरु आसो- फातिवाडी पोसरजीपासजाके पुत्रजन्मका रुपया १ मांगनेलगे तवपोसरजीनेकहा दवागदिवीस्त्रिके पुत्रोत्सवका रुपया हमनहिंदेगे पुत्र व इस्त्रि हमारेयोग्यनहिं यहाँतककि तलावकेपानीभी सीरनहिं जवगुरू आसोफातिवाडीभी उसपुत्रको त्यागकर वृतछोडदी वह ल- डका सांभरनांनेरे अजमेरांके प्रवरिसहो गुरुभीनानेरांके पारीकअज- मेराजोसी कों पूजनेलगा गुरुकृपासें बडाप्रतापीहोकर दिल्लीबादस्याहके कामेतीबना और खड (घास) कीमदतदी जबसें खरड़ झंवर प्रसिद्ध नाम ठहरा पुन्ह चूंगीकीमुट्टीउगाई जबसें खुणंच्याबजे और अपने नामसें पर्वतसरनामगामबसाया बडाप्रतापीहुवा

(२४ कावरा)

कुंभोजीपेढगहलौत मातासुसमाद गोत्रअचित्रांस गुरसंखवाल मॉंडम्यॉं १ पालड़्या २ अठारया ३ (खॉंपखॉंपके) गुरांकागौत्र वासी- ष्ट यजुर्वेद सारवा मारध्विनी परवरतीन देवीफलोधी पालड्या गौत्र विजेमान कालूपित्र देवगॉंव कावरा पालड़्या चीतोड़सूँ जायकर मॉंगरांस गांव टूंककनेबसायो १ कावरा २ मॉंडम्यॉं ३ पालड़्या ४ अठारया ५ भगत ६ सिंगी ७ धौल ८ कोठारी

(२५ डाड)

डूंगोजीपेढदहिया माताभद्रकाली सतीलीकासण गौत्रआमरांस

झींतरचौपित्र कालोभैरव मंडोवरमें स्यामवेद गुरदायमानूवालओ-चारज थेपड़्चा मातावंधर काली सती चंद्रकाली गौत्रलखासण १ डाड २ थेपड़्चा

(२६ डागा)

डूंगोजीपेढपंवार मातासंचाय व बंधर व दधवंत गौत्रराजहंस गुर पारीक गौलवालव्यास दवागणका मजीठ्या गुरसारस्वतबडओझा

डागा	केसावत	बिठाणी	दरावरचा	मुकनाणीं	मड्या
डूंडा	कोन्हाणी	गैराणी	न्हार	मजीठ्या	मौड़(मेवाडमरौठमे
करनाणी	भोजाणी	दमाणी	मेण्या	माधाणी	माडा

(२७ गटाणीं)

गटूजीपेढगहलौत माता चावंडा गौत्रढालांस रु. पड़ाइंस गुरपारीक खटौड़व्यास माता पांडूखाँ मेड़तासूँकोस ३ पश्चम

१ गटाणी २ मल्लक ३ टोपीवाला ४ साकरिया ५ संकर ६ मिलक

(२८ राठी)

रिड़मलजीपेठपंवार मातासंचाय औसियाँस्थान पीतवर्ण गौत्रकप-लांस स्यामवेद गणपतीबिन्यायक गढरणथंभोर भैरव बाँदरापुरजी नागौर शिवबाड़ीमें गढके दक्षण पश्चमकी कौणमें आदगुरपल्लीवाल गुर पुष्क रणाँ छाँगाणीं थाँभा ४ कीविगत १ छाँगाणीं २ कौलाणी ३ गडरिया ४ दरासरी.

श्रीचंदाणी	सातलाणी	सुखाणी	कलाणी	गवलाणी	गोयंदाणी	चतरभुजाणी
साल्हाणी	साहताणी	सुखदेवाणी	क्रमसाणी	गिरधराणी	गौपालाणी	चापसाणी
सावताणी	साहणी	सुजाणी	कौकाणी	गागाणी	गुलवाणी	जटाणी
सांगाणी	सालगाणी	सिहाणी	खेताणी	गेगाणी	चौथाणी	जसवाणी
सादाणी	समाणी	करनाणी	खेमाणी	गौमलाणी	चौखाणी	जेसाणी

जालाणी	नेताणी	महराठाकुराणी	हरकाणी	नेतसौत	कहरा	सहाणा
जिंदाणी	नापाणी	मथराणी	मुहलाणी	चतरभुजौत	महरा	मौदी
जिवाणी	नाटाणी	मदवाणी	लखाणी	मदसुदनौत	बाजरा	गांदी
जोधाणी	नानगाणी	माधाणी	लखवाणी	धगडावत	बेजारा	ईंदू
तहनाणीं	पदाणी	मालाणी	लालाणी	मानावत	मीचरा	सराप
तेजाणीं	पीपाणी	महेसराणी	लूलाणी	खेतावत	वगरा(जेसलमेरमे	साहा
तुलछाणी	बहगटाणी	मुलाणी	लुहलाणी	दूदावत	लखासरचा	सिरचा
तिरथाणी	बेखटाणी	मुसाणी	श्रीचंदौत	देदावत	बरसलपुरचा	कल्हा
दम्माणी	बनाणी	मुलताणी	करमचंदौत	पूरावत	कोठारी	बृजवासी
दसवाणी	बीनाणी	मूंजाणी	कपूरचंदौत	टीलावत	चौधरी	सांवलका
देसवाणी	बसदेवाणी	मीमाणी	रामचंदौत	कल्लावत	रूडचा	खटमल
देवराजाणी	बाघाणी	अरजनाणी	लालचंदौत	मल्लावत	राहूडचा	बापल
देवगटाणी	विसताणी	आफाणी	प्रतिचंदौत	मौलावत	मडिया	बापेचा
दुढाणी	बछाणी	ऊधाणी	मानसिंगौत	रामावत	लेखणिया	मरौठी
द्वारकाणी	भाकराणी	रंधाणी	फतेसिंगौत	लखावत	फाँफट	करमा
धनाणी	भौलाणी	रतनाणी	रामसिंगौत	भिचलाती	बेकट	राठी
धामाणी	भौजाणी	राघाणी	अखेसिंगौत	भागचदौतमूथा	भइया	
नथाणी	ठाकुराणी	रूपाणी	करमसौत	डौडमूथा	सूणा	

(२९ बिड़हला)

बेहड़सिंघजीपेढपंवार मातासंचाय गौत्रवालांस रिषिपिपलान (गुरपुष्करणाँविश्वा ———) सेखावाटीमें गुर आदगौड़ बासौत्या गोत्रसाडांस (वडालिया गुरसंखवाल गरवरिया त्रिवाड़ी गौत्रझवरांस माताफलौधी) १ बिड़हला २ छूरचा ३ गांध्या ४ घूबरचा ५ गरूरचा ६ गौरचा ७ बडालिया.

(३० दरक)

दुरगसिंघजीखीचीपेढ मातामूसा गौत्रहरिद्रास यजुर्वेद परवरपांच

साखामारध्वनी खेत्रपालसौनेवोजी कमुलानामलक्ष्मी वालौपित्र गणपतीविन्यायक विष्णुनाम सारंगपाणी ——— ——— (दरकाँके गुर संखवालहलद्याउपाद्या जायलवाल) (हलद्याँकेगुर संखवालहलद्या जौसी)मेवाड़में गांवहींण्यों माँगरांस पौटलांपास भेरूँ मौतीराम कुसाल नंदराम वगेराहे वहहलद्याजौसीवाजेहे दरकांमेंसें हलद्या हलदकारुजगार करणेंसें वजे और हलद्याँके घर हाडौतीमें जादाहे वाराँ माँगरोल अणते गेंते बूंदी पलायतें वंबौरी जिल्ह कौटाके मेंहे

१दरक२हलद्या ३मरचून्या ४ कौठारीगांवराहणमें ५ चौधरी मेड़तामें.

(३१ तौसणीवाल)

तेजसीपेढचहुवाण माताखूँखर सतीवाँवली गौत्र कौसिक रुषिपिप्यलान साँडौपित्र कालाभैरव पित्र हरदमलाला वडगाँव मालवेमेंआमझरेस्थान सतीगंगा आदूमाता भवानी गौत्रवसीष्ट चूड़ांसरुषी दगामातासंचाय (गुरदायमाडीडवाण्याँतिवाड़ी गुरांकीमातादधवंत)

१ तौसणीवाल २ नागौरी ३ नेवर ४ मिन्याजी ५ मौदी ६ मूंजी ७ डामा ८ डामड़ी ९ लंबू १० सिंगी ११ दास १२ दगा १३ झालरचा १४ जेनारचा १ मूंजी १६ भाकरौद्या १७ कौठारी

॥ गाँवतौसीणे तौसणीवाल तौसासाहहुवौ ॥

संवत ११३९ में तौसासाह आपकी कंन्याकाविवाहकीया और चीतौड़का कावरां की जान आई उससमयसें लुगायाँ जानमें आणी बंधहुई जिसकीख्यात (छंदकुंडलिया) दसहजारहातीहुता पैदलपनरालाख ॥ तौसेनूतजिमाइया हीरापंन्नाँपाक ॥ हीरापंन्नाँपाक थालकंचनकादीया ॥ जुगतेजानजिमाय सुजसजगमेंजिणलीया ग्यारहगुण चालीसमें सहीसूदन्यूँसाख ॥ दसहजारहातीहुता पैदलपनरालाख॥१॥ उतचढआयौकावरौ राणागढचीतौड़ ॥ इतमुरधरतौसातणीं समदीजौ-

ड़सजौड़ समदीजौड़सजौड़ जानएहिभाँतपधारे ॥ जरियाँजाजमढाल धरापरपगनहिंधारे ॥ धररेसमपगपाँतिया करसुखमलकीसौड़ ॥ उतचढआयोकाबरो राणागढचीतौड़ २ ॥ एकमतेउदमादिया एकरंगएकतोर एकसरीखाएकनर जाणकचितरचामोर ॥ जाँणकचितरचामोर एकपोसाखसँवारी ॥ घोड़ाएकणरंग जाँनइणभाँतजँव्हारी ॥ एकणरूपउतावला एकाएकणजोर ॥ एकमतेउदमादिया एकरंगएकतोर ॥ ॥ ३ ॥ जरीतणींजाजमजठे नौसेसाईवान ॥ तौसेसाहातेवड़कियौ आनउतारीजान ॥ आनउतारीजान सगीकाँधेउतरावो ॥ तबतौसासाः नटचौ लाखदसमोहोरलिरावौ करढेरमोहोरदसलाखको व्याहणरथ उतरान ॥ जरीतणींजाजमजठे नौसेसाईवान ॥ ४ ॥ परणघणाँनरआविया किणियनटाल्यौकंध ॥ तौसीणारेमाँढवे हुईलुगायाँबंध ॥ हुईलुगायाँबंध, तौसणीवालपलाई ॥ करगाधौतरगाल आणमरजादचलाई ॥ असलहुसीकोइमेसरी सहीमानसीसंध ॥ परणघणानरआविया किणी नटाल्यौकंध ॥ ५ ॥ रावनराँधेव्याहमें नारवरातनजाँय ॥ इणदोनाँमें एकगुण जानाँजोगीनाँयर२पसरथालीमेंजावे काहाकीताकरे नारनितराड़ फसावे ॥ कहेदरकशिवकरणियों यूँबरजीइणताँय ॥ रावनराँधेव्याहमें नारवरातनजाय ॥ ६ ॥ (पुराचीनकवित्त) ग्यारहसेगुणचालवें तौसासाहातेवड़कियौ ॥ समतग्यारसेगुणतालीसे छोलदेकालपड्यौदुकाले ॥ खुद्यातोबोहोतहीसताई ॥ तिणदिनमँडीकढाईरंकराणवाजिमाई॥ प्रगटचौधानप्रऔजरे॥जागेदेईदासकीरतकही ॥ तौसणीवालगोइंददेलौतणों करकीरतअविचलरही१(वार्ता)तौसासाह तौसणीवाल गांव तौसीणें माँढौ रचायौ और चीतौड़गढसूं कावरांकी बडीभारीजानआई जिसमें लुगायाँ आयकेहट कीयौ के पहलीव्याहीकेकाँधे पगधरके फेररथसूँनीचेऊतराँ तब तौसासाह कांधेपगधरायोनहीं और दसलाखमोहोरोंका ढेरकरायदीयाजब व्याहण उसद्रव्यऊपरपगधर नीचेऊतरी यहबात तौसासाहनें अद्भु-

चित (निरलज्य) मालूमहुई जब सर्वपंचोकीअनुमतिलेकर विचार कीया जैसेंके रावथालीमें पसरकर सर्वपकवानोंकी जगहँ रौकके आपकाहीअमला फेला करलेवे जैसेंहीं औरतकास्वभावहै कि आपथापी बातरक्खे व अनेकप्रकारकी कुतरकाँचलावै यहवात समझकर गाधौ तरेगालकी सौगन मुकररकराई के असलमेंसरीहोगासो यहकार उलंघन नहिंकरेगा याप्रकार बरातमें और तोंकाजानाबंधहुवा.

(३२ अजमेरा)

अजोजीपेढचहुवाण मातानौसल गौत्रमानांस रुषीपीपलांस (गुरपारीकखटौडव्यास ————) कुलथ्या मातासमराय गुरपारीकख टौड़व्यासपंडतजीका १(विन्यायक्या गुरपारीक अजमेराजौसी यजुर्वेद साखामारध्वनी पर्वरपांच कौषाभैरव शिवदुग्धेश्वर गणपतीढुंढिराज ॥ गौत्रबछांस सतीसगतकंवार देवीगणपत (नौसरचा गुरदायमाँगौठेचा मातानौसर) पौसरचा १ खरड़ २ खूँच्या ३ यहझंवरहै माता सुद्रासण गौत्रपौण्यास १ अजमेरा २ कौडचा ३ कुलथ्या ४ कूकड़चा ५ राय ६ रणदीता ७ धौल ८ धोलेसरचा ९ भगत १० भमूत्या ११ डवकौड़चा १२ डोडा १३ मानक्या १४ विन्यायक्या १५ नौसरचा १६ पौसरचा १७ खरड़ १८ खूंच्या १९ पढावा.

ख्यातअजमेरा

विन्यायक्या अजमेरामें पुहना का व नाडा बच्छा का थांभावालों कों जागानहिंमांगें कारन सरवाड़में दोयजागा जंव्हर कर प्राणत्यागन-किया और उनजागोंकी स्त्रियें सतीहुई जबजजमान अपनापुत्र जागाजी कों दत्तकदे जागोंकावंसरक्खा जबसें इसथांभेको जागामाँगनाछोडा

(३३ भंडारी)

भंडलसिंघजीपेढकछावा मातानागणेच्या गोत्रकौसिक गुरपारीक

खटवड़व्यास (राय गुरपंडतजीकाथाँबाका) ——— गोकन्या गुर गौड़त्रिवाड़ी मातागौकुल (मिरच्या १ लाठी २ गुर पारीक बामण्या-व्यास) मातालौहन १ भंडारी २ भकावा ३ भूक्या ४ काला ५ गोरा ६ गोकन्या ७ गुलचक ८ मात्या ९ लाठी १० राय ११ मिरच्या १२ नरेसण्या १३ नेणसर

(३४ छापरवाल)

छाजपालजीपेढसांखला मातावंधर गौत्रकौसिक यजुर्वेद सतीभद्रकाली (गुर दायमातिवाड़ी डीडवाण्या पौठ्या) १ छापरवाल २ दुजरा ३ दुसाज

(३५ भटड़)

भेरूँजीपेढभाटी माताबीसल सतीमूँदल गौत्रभटयास स्यामवेद साखाअनंत परवरतीन ——— (गुरुपल्लीवालधामट गौत्रमुग्दल मातावीसल) ॥ दोहा ॥ पनरासौपनड़ौतरे सुदसावणतिथि तेर ॥ भाटीसूँभट्टड़हुवा जैसाँजेसलमेर ॥ १ ॥ पुराचीनहे ॥

१	भटड	४	हलद	७	बीसाणी	१०	बिच्छू	१३	गांधी	१६	मल्लड
२	सूँधा	५	केला	८	बीसा	११	रामाणी	१४	पीथाणी	१७	मूहणदासो
३	लद्दड	६	कहरा	९	बलवाणी	१२	जेठा	१५	पुगल्या.मा.विस्वत	१८	महरा

(३६ भूतड़ा)

भूरसिंघजीपेढसांखला माताखींवज गौत्रअत्लसांस गुरसारस्वत बदर १ पल्लीवालचंनण २ गुरआवेसौपावे दोनूँआवेतो वंटबराबरवाँटे १ भूतड़ा २ चाँच्या ३ देवगटाणी ४ देवदत्ताणी ५ चौधरीजोधपुरमें

(३७ बंग)

बाघसिंघजीपेढपड़िहार माताखाँडल सतीकौठारी धारादे महमल पित्र गौत्रसौढांस रिषिवालांस मारध्वनीसाखा रहणकाथांभावाला माताकल्याणीपूजे मूँडवाकाथांभावाला माताखाँडलपूजे गुर गूजर-

गौड़ गौनारड़्या त्रिवाड़ीव्यास गौत्रवछांस १ बंग २ छीतरका ३ साँवलका ४ सौभावत ५ मौटावत ६ थारावत ७ पसारीमूँडवे ८ पटवारीमूँडवे

(३८ अटल)

अठलसिंघजीपेढगहलौत मातासंचाय सतीमात्री गौत्रगौतमस्य प्रथमगुरगूजरगौड़ (पछैपौकरणाबटू) अबचितचावैसौहीगुरुमान लेवें प्रमाणनहीं मरौठियागुरगूजरगौड़ पंचौलीबीज्यारण्याँ मेवाड़ देसमें चीतौड़गढकेपास गांवधनेतमें गुरयजमानदौनूँहै
१ अटल २ गौठणीवाल ३ मरौठिया

(३९ ईनाणीं)

इंद्रसिंघजीपेढईदा माताजेसल गौत्रससांस जैसलांस नगवाड़्या मातामात्री सारवातेतरी प्रवर ३ यजुर्वेद गुरसंखवालगरवरियात्रिवाड़ी
१ ईनाणी २ नगवाड़्या

(४० भुराड़्या)

भूरसिंघजीपेढचुहाण मातामुणधणी गौत्रअचित्र गुरदायमाँनवाल आचारज गौत्रसौढलांस गुरांकौ १ भुराड़्या २ कौठारी ३ बंबू ४ भूँगड़्या

(४१ भन्साली)

भाऊसिंघजी पेढबांस माताचावंडा सतीडाहरीगौत्रभन्साली भैरव लाबरचौ १ सौन्याणीं २ पित्रभोलौ गुरदायमा नवालआचारज भन्साली १

(४२ लढा)

लोहड़सिंघजीपेढपंवार मातासंचाय सतीबंघर गौत्रसीलांस यजुर्वेद रामउपासना

(गुरपारीक गौलवालव्यास बृत ३ लढा १ लौगरड़ २ डागा ३)

१	लढा	३	मूंजी	५	भाकरोद्या	७	दगड़ा	९	धाराणी	११ चौधरी
२	मौदि	४	अठासण्या	६	हींग्या	८	दागड़्या	१०	जौला	———

(४३ मालपाणी)

मालदेजीपेढभाटी मातासाँगल गौत्रभत्यास गुरपुष्करणाँछाँगाणीं कौलाणी (मालपाणी १ मूथा २ मौदी ३ जूँहरी ४ लूलाणी ५ लौलण ६ भूरा ७ नागौरमेंहै.

(४४ सिकची)

संकरजीपेढपंवार मातासंचाय सतीभावज गौत्रकस्यप सिकची गुरपुष्करणाजौसीचौवटिया गौत्रपाराश्वर माताचावंडा सीलार गुरगूजरगौड़ उपाध्या डीडवाण्याँ आचारज गौत्रभारद्वाज (१ सिकची २ सीलार ३ सीलाणी) सिकची इतनें गावौंमेंहैं हरदेसर मौलेसर, जगरामसर दावदसर, गरबदेसर, बरजांगसर, हरियासर, रूपालेसर, कीतलसर, भग्गू, आसौफ, माणकपुर धूँध्याड़ी, मूँडवे, कालू, कैकींद, भूँरासौ, नाडौलाई, भादल, रावड़्यावास, डेगाणा, उदेरामसर, मारौठ डीडवाणा भीलाड़ा, राहण, पालड़ीखौजीजीकी, घड़सरसहर,

(४५ लाहोटी)

लाभदेजीपेढतंवर माताचावंडा गौत्रकागांस परवर ३ साखातेत्री बिसहर ——— गौत्रफौफड़ांस मातागाहल गुरसारस्वत बडऔझा केलवाड़्या. १ लाहौटी २ बिसहर ३ कूया ४ काहा

दोहा—करणअंगसोबालचंद सुतसूजासुभियान ॥
लाहौटीप्रथमादमें दाददाददइवान ॥ १ ॥

(४६ गदइया)

गोरोजीपेढगौयल माताबंधर गौत्रगौरांस यजुर्वेद प्रवर ३ प्रथमगुरदायमा पड़वालऔझा गाडरमालाजीका थाँबाकाहा अबगुरु

सारस्वतलहोड़ओझा साखाअनंत ————————

१ गदइया २ चौधरीसोझतमें ३ हींगरड़

(४७ गगराणी)

गांगसिंघजीपेढ गहलौत मातापाढाय गौत्रकस्यप (गुरखँडेलवाल नवालजोसी बीकनवाल दवागणका माताडाहरी) डोड़्या १ बावरेच्या २ (गुरु सारस्वतलहोड़ओझा) डोडयामाता बागलेश्वरी गौत्रआम्रांस (बावरेच्या डोडयाँमेंसूँनीकल्या माताबाँगलौद गौत्रकपलांस)

१ गगराणी २ गगड़ ३ बावरेच्या ४ डोड्या ५ काला

(४८ खटवड़)

खड़गलसिंघजीपेढसाँखला मातानौसल्या गौत्रमूँगांस खटवड़ माता पाढाय गौत्रनिरमलांस गुरदायमाखटोड़ व्यासथाभा ४ (गुरदायमाकाकड़ामिसरव्यास) (काल्या गुरदायमा काठ्या तिवाड़ीव्यास) (मालाणी काहाल्या पहाड़का गुरदायमा काकड़ाव्यास डीडवाण्याँ तथा नागौरकाथाँभाका) (भाला चहाड़का तथाकाहाल्या गुरदायमा काकड़ा नींबड़ीकाथांभाका) भालासरच्या रायपुरसूँ गुरखटवडव्यास कुलधरजीकाथाँभाका माता फलोधी गौत्रकालांस (खटवड़) माल्हाणी माता फलोधीपाढाय गौत्रकछस करवांस (भाला मातापाडल गौत्रकरवांस) (टुवाणी.माताफलौधी. गौत्र. ————) (काल्या मातानांनण सतीलीकासण गौत्र ————) (लौसल्या माताफलौधी गौत्रमूँगांस मौलासरच्या मातापाढाय गौत्रनम्रांस)

१ खटवड़	४ तौडा	७ लोथा	१० लौसल्या	१३ नरेसण्या	१६ भूतिया
२ मालाणी	५ मूछाल	८ खड	११ गांधी	१४ सराप	१७ भूरिया
३ मौलासरचा	६ टुवाणी	९ काल्या	१२ गहलड़ा	१५ पहाड़का	१८ भाला

(४९ लखोठया)

लौकसिंघजीपेढपंवार मातासंचाय सतीलाखेचागौत्रफाफड़ांस भेरूँ

कौडमदेस पित्रबालक्यौ गुरसारस्वतबडऔझा गोत्र ररांईस १ लखोट्या २ जुगरामा ३ भइया ४ मौठड़्या ५ मौनाणा ६ परसरामा

(५० असावा)

आसपालजीपेढदहिया माता आसावरी गौत्रपचांस बालांस नाग मातादूदल गुरसंखवाल नागला त्रिवाड़ी मातागुरांकी आसावरी रिषि-दधसुर आसाइंस मंडौवरा गुरसंखवाल मंडौवराव्यास गौत्रखलांस गुराँकोगौत्र भारद्वाज माध्वंनीसाखा परवर ५ यजुर्वेद गुरांकीमाता दूदेसर १ असावा २ व्यपती ३ नाग ४ मंडौवरा ——

(५१ चेचाणी)

चंद्रसेंणजीपेढदहिया मातादधवंत सतीपाढाय व, पाडल गौत्रसीलांस रिषिअरड़ांस पाटल्यौभैरव गुरदायमाँईदाण्याव्यास आचारज —— रायके कचौल्याँके गुर दायमा काव्यात्रिवाड़ी कचौल्या माता पाढाय सतीपाडल गौत्रसीलांस १ चेचाणी २ दूदाणी ३ कचौल्या ४ कलक्या ५ राय ६ खड़

(५२ माणूंधण्याँ)

मौवणासिंघजीपेढमौहिल मातामाणूंधणीं सतीजाखण गौत्रजेसलानी कपिलरुषी (गुरदायमाँ जौपटव्यास माणूंधणाँके) माणूंधण्याँ गुरखंडेलवाल गौत्रपौलांस कपिलरूपी मातासुरल्या.(वार्ता) गुरदायमाजौपट व्यास माणूंधण्यांकीवृत तौ खंडेलवालांकोंदीवी (बाकी खाँपसातरहीसू दाय माँ जौपट व्यसाकेहै) १ माणूंधण्याँ २ माणूंधणाँ ३ चौधरी ४ स्याहर ५ घरड़ौल्या ६ सूम ७ सिंगी ८ हीरा

(५३ मूंधड़ा)

माधोसिंहजीपेढमोहिल मातामूंदल गौत्रगोवांस गुर सारस्वत बड औझा केलवाड़्या मैं सूँ रेण्याँ गांवरेंणका थँभाका गुरांकोगौत्र

भारद्वाज माताफलौधी थांभाकेलवाड़्या रेण्या ठिलीवाल भट नेरा हिरण्याँ.

(मूंधड़ा)

१	मूंधड़ा	७	सकराणी	१३	उलाणी	१९	अटेरण्या	२५	बावरी
२	मोराणी	८	भाकराणी	१४	डौड्या	२०	प्रहलादाणी	२६	बलाड्या
३	मोदी	९	भराणी	१५	ढेल्या	२१	पसारी	२७	दम्मलका
४	माहलाणा	१०	भौराणी	१६	चौधरी	२२	छौटापसारी		
५	सेसाणी	११	राजमहूता	१७	चमड्या	२३	कौठारी		
६	सांभरया	१२	गौराणी	१८	चमक्या	२४	बारीका		

(५४ चौखडा)

चौखसिंघजी पेढ सींदल माता जीवण गौत्र चंद्रांस पित्रजालौ झींत रचौभैरव यजुर्वेद परवर ३ सतीझींण गणपती गणाधीश गुर गूजर गोड़ गौनरड़्यात्रिवाडी (चौखड़ा १) सौरठा० कीन्हाँकामअनेक धर्म नीतपालीजरू ॥ छवसेगुणसटसाल जग्यकियौजेरामसाह ॥ १ ॥ वस यौमगधरबास चौखनगरपूरबधरा ॥ गुणगायौजागाह कीरतजग रहसीअखी २

(५५ चंडक)

चाँपसिंघजीपेढचहुवाण माताआसापुरा संचाय गौत्रचंद्रांस स्यामवेद पर्वर ३ तेतरीसाखा (पूंगल्या माताविस्वंत गौत्रछवाइंस) पूंगलिया मातादेल गौत्रबछाइंस पित्रचानणेश्वर (गुरपल्लीवालधामट गौत्रमुद्र-लांस गुरांकौ)

१	चंडक	५	मीमाणी	९	पूंगलिया	१३	भाइया	१७	सुंदराणी
२	गौराणी	६	माधाणी	१०	पटवा	१४	सागर	१८	जोगड
३	मुलतानी	७	प्रगाणी	११	बीझाणी	१५	सांवल		
४	मुकनाणी	८	प्रहलादाणी	१२	भीषाणी	१६	सुखाणी		

(५६ बलदवा)

बाघोजीपेढपंवार माताहिंगलाद सतीगांगेव गौत्रबालांस स्वामवेद

परवर ३ वाजस्निसाखा लटूरचौभैरव वलदवा माता गांगलेसपूजे गुरसंखवालपंडित (वेडीवाल गुर गूजरगौड डीडवाण्या उपाद्या आचारज गौत्रभारद्वाज मातासींदल साखामारध्वनी) १ बलदवा २ पडवार ३ पेड़ीवाल ४ रायबाणी ५ कलाणी ६ वेडीवाल

(५७ बालदी)

वालोजीपेढबडगूजर मातागारस गौत्रलौरस स्यामवेद पित्रगांगो गौत्रवच्छस चंद्रांस मातालौसल वा लौसी गुरदायामाबौरड़याव्यास तिबाडीकोकाणी (चंदवाण्याँ व, श्रीधराण्याँकेबूतनहीं बालदी १

(५८ बूब)

बाघोजीपेढपंवार माताभद्रकाली गौत्रमूसाइंस गुरसारस्वतलहौड-औझा अजमेरकाथांभावाला बाकी जौधपुरवाला वंठावतहै वह जोधपुरकागढमें चाँवंडामाताकीपूजाकरे सू खांपबूबकीमेंबंटनहींहै
१ बूब २ वौरद्या

(५९ बांगरड़)

बाघासिंघजीपेढबडगूजर मातासंचाय सतीघाडायगौत्रचूडांस गुरसारस्वतखुँवालजौसी गौत्रचंद्रांस गुरसंखवाल बांगरडाजौसी मंडौवरा तापड़्या गांवडीडवाणाँमें तापड़कारुजगारसेंवजे
१ बांगरड़ २ तापड़्या

(६० मंडौवरा)

माँडोजीपेढपड़िहार माताधौलेसरी रूई गौत्रवछांस धौलेसरचा माता धौलेसरी गोरोभैरव यजुर्वेदमंडौवरांकीमातारूईहै जिणसूं नीचे-रूईनहिंबिछावे आदगुरु संखवाल मंडौवराहा सू बूतछोडदी गौत्र भारद्वाज साखामारध्वनी यजुर्वेद परवर ५ मातादूदेसर (अबगुरु दायमाँगदइयाव्यास) १ मंडौवरा २ मातेसरचा ३ धौलेसरचा

(६१ तौतला)

तोलोजीपेढचहुवाण माताखूंखर गौत्रकपिलांस साखामारध्वनी रुषिकपिल मारीच पित्रजालो सांभरनराणाँकेबीचमेंस्थानहै गुर गूजरगौड़ गौनारड्यात्रिवाडी १ तौतला २ बडहका ३ नागला ४ पटवारी भीलाडेम्में है

(तौतलाखोगटा)

॥ ख्यात ॥ सांभर नराणाँके बीचमें खोगटा और तोतलाके आम्हीं साम्हीं बरातमिली जहां रस्ता (चहीला) छोडने बावत तकरारहुय तलवारचली और तोतलांकी सारीजान मारीगई फकतबींदरहा जब दिल्लीजाय बादस्याहसें मदतले खोगटांसें वैरलिया फेर जालाजी सांभर नराणके बीचमें खड़ागडगया वह जालाजी पीरनामसें प्रसिद्धहो पुजातेहै अब तोतला और खोगटाँके आपसमें यहरीतीहै कि तोतला जीमे जहाँ खोगटापुरसे वा नजीक जीमणेंको बैठजाय वा पंगतमेंआजायतो तोतलाको वमन (उलटी) होजाय और आपसमें सगपनभीकरनामना है (क्योंकेतिष्टे नहीं ऐसा हाडवैरहोरहाहै ॥

(६२ आगीवाल)

आगोजीपेढभाटी माताभैंसाद गौत्रचंद्रांस स्यामवेद तेतरीसाखा परवरतीन गुरसंखवाल आगीवाल (आगीवाल १)

(६३ आगसूड़)

अगरोजीपेढतंवर माताजाखण गौत्रकस्यप गुरदायमाँ डीडवाण्याँ तिवाडी रामाजीकार्थाभाकाके बूतहै थांभा ३ (पांडचा १ पौठचा २ रामाजीका ३) पांडचा पौठचाकेबूतनहीं १ आगसूड

(६४ परताणी)

पूरोजीपेढपंवार मातासंचाय गौत्रकस्यप गुरपोकरणाविसाप्रोत

(पारागौग्याँकेबूतनहीं १ परताणीं २ पूँदपाल्या ३ दागड्या-

(६५ नावंधर)

नवनीतसिंघजीपेढ निरबाण माताधरजल गौत्रबुग्दालिभ अथ वेणवेद नंदरांसरुषी गुरपल्लीवालधामट गुरांकागौत्रमुद्गल

१	नावंधर	४	धाराणी	७	मौडाणी	१०	पनाणी	१३	गांधी
२	धराणी	५	धीरण	८	मीमाणी	११	स्याहरा		———
३	धीराणी	६	दुढाणी	९	धनाणी	१२	राय		———

(६६ नवाल)

नाँनणसिंघजीनृबाणपेढ मातानवासण सतीजांखल गौत्रनानणांस गोरोभैरव (नवाल० गुर दायमाँ नवाल आचारज ———) खुँवाल० गुरगूशरगोड त्रिवाड़ी माताखूंखर जाखड भैरव चेलक्यो बालक्यो पित्र ——— (१ नवाल २ खुँवाल ३ मालीवाल)

(६७ पलौड)

पालौजीपेढपडिहार माताचावंडा गौत्रसाँडांस गुरगूजरगोड आचारजडीडवाण्याँ (पलौड लौसल्या गुर दायमाँ पलौडव्यास गोरोभैरव) (चितलंग्या गुरदायमाँ पलौड आचारज गौत्र कौसिकस्य) रावत्या गुर दायमाँ कूंभ्याजोसी) ——— (भकड गुरपारीक तिवाड़ी ———) (जेथल्या गुरगूजरगोड आचारज डीडवाण्याँ इष्टी.)

खांप	माता	खांप	माता	खांप	माता
१ पलौड	नौसल	८ चावंड्या	चावंडा	१५फौगीवाल	नौसल
२ चितलंग्या	नौसल	९ कांकरचा	सौढण	१६फौफल्या	———
३ रावत्या	नौसल	१० भकड	———	१७जेथल्या	दौस
४ लोसल्या	नौसल	११ केला	———	१८वापडौता	पंचायम
५जुजेसरचा १	जुजेसरी १	१२ सेठी	दायम	१९ डौड्या	पंचायम
६ गहलडा २	जुजसरी २	१३ चापटा	सौढणा	२०मूंजीवाल	———
७ पचीस्या ३	जुजेसरी २	१४ मौडा	———	———	———

(६८ तापड्या)

तेजपालजीपेठ चहुवाण माता आसापुरा सती समराई गौत्र पीपला-न (मूँगर्ड गुरदायमा चौलंख्या प्रौयत गौत्र मौवणांस माता संचाय ताप-ड्या गुरसारस्वतबद्र (पल्लीवाल चनण) आवेसौपावै दोनूँआवे तौ बंट बराबर बांटै तापड़्या १ छाछ्या खांप२(तापड़्या १ मूंगरड़२ छाछ्या ३)

(६९ मिणियार)

मौवणजीपेढमौहिल मातादायम गौत्रकौसिक पसारीपींपाड़में है गुरदायमाँ त्रिवाड़ीपौख्या १ मिणियार २ पसारी ३ बरघू ४ माइया ५ खरनाल्या ६ मनक्या

(७० धूत)

धूँरसिंघजीपेढ धांधल माता लीकासण गौत्र फाफड़ांस रघुवेद चींथरचोभैरव जालौपित्र गुरसारस्वत गुड़गीलाआचारज.

(७१ धुपड़)

धीरसिंघजीपेढधांधल माताफलौधी गौत्रसिरसेस वालक्योभैरव ॥ गुरदायमाँ ईदाण्या जौसी पित्रपरेवौं १ धूपड़ २ धूत

(७२ मौदाणी)

माधौजीपेढमौहिल माताचावंडा बंधर जाखणगौत्रसाडांस महनाणा गुरसारस्वतबडओझा गुरदायमाँ पलौड़व्यास तिवाड़ी (इष्टी मेड़तामें) मड़िया नागौरमेंवाजे) थांवा ४ छापर १ रौहू २ लाडणूं ३ सातेंका ४ इसमेंसातेंकाथांभावालांकेबूतनहीं १ मौदी २ बंब मातादाखण ३ महदाणा माताबंघर ४ महनाणा.

(७३ पौरवार १)

पूरोजीपेढपड़िहार मातामार्त्रि गौत्रनानणांस गुरसारस्वत त्रगुणा

यत वयभंड्या मातभद्रकाली सती मात्री १ पौरवार २ परवार ३ दाग ड़्याभेरूँदामेंमेङताप्रगने (ख्यात) दागङ्या लढामें १ परताण्यांमें २ पौरवालमें ३ खांपमें है.

(७४ देवपुरा २)

दीपौजीदहियापेढ कसुंबीवालअसपतबंस मातापाढाय गौत्रपारस गुरदायमौंनवाल आचारज आदगुरहै सू बूतछौडदी अबगुर पारीक कौसिकव्यास प्रौयत आमलीवाला भाणपीकार्थांभाकाहै

(१ देवपुरा २ कसुंबीवाल) देवपुरांकीख्यात कवित्त॥क्षत्रिन क्षित छौड बडे पाटपती ठाठसेती देसहूकनौजत्याग दिल्लीआनब्राजेहैं ॥ दहि याबंसमेंतेंवैस्य भयेहैंकसूंबीवाल भारीभिङभीमप्रथीराजपासगाजे हैं ॥ ताहीसमयराजबाई पीथलकौविवाहभयो रावलसमरसीजीनें लग्नआनसा जेहैं ॥ बौल्येचहुवाँणसेती दायजेदिवाणदीजे दीपाकुलभाँणमेरे करेका-मताजेहैं ॥ १ ॥ आनकेदिवानभयौ भानहिंदवानहूके चूकेनाँजबान मान शत्रुनकोचाटेहैं ॥ म्लेछनकौमारिके दबायदीयेठौर ठौर केतेगढतौर तौर हल्लेकरकाटेहैं ॥ दैवपुरजीतेताते देवपुराछापपाई मेसरीमेंमिलेआय जगमेंजसखाटे हैं ॥ पूरब अरु पश्चम उत्तर दक्षन लौं धाकपरी देश शिवकरणदिपे दौर दौरदाटेहैं ॥ २ ॥ (वार्ता) दीपाजीकाबेटा सिंघ-जीनें रावल समरसिजी कुरबदीयौ ॥ दोहा ॥ पाटकँवरअरुकुंभ्भगढ धराखजानाधींग ॥ च्याररतनचत्रकौटका समप्यातौनेसींग ॥ १ ॥

(वाता ऐसें कसुंबीबालसें देवपुरावज्ये)

(७५ मंत्री ३)

मानौंजीपंवारपेढ मातासंचाय जासूँ औसवाल चौपड़ातिणमेंसें धरमपालजी चौपडा मंत्री हुवा गौत्र कँवलाय स्यामवेद गुरसारस्व-तवडऔझा (मंत्री १)

मंत्रि ख्यात

साहा चोथजीराठी नग्रओसियांमें महोत्सव वैश्यजग्य किया संवत ४२९ माहा शुक्र ९ जिसबरवतमें ८४ गामके महेश्वरी सर्वत सविनय कुलवाये ॥ कवित्त छप्पय ॥ ओसियाँथानसुथान ठामराख्याँठकुराई ॥ समतच्यारसेपचीस न्यातपोखवेमिठाई॥ समतच्यारसेपचीस मोहोराल-हणबटाई ॥ समतच्यारसेपचीस रघूजसकीर्तरहाई ॥ जुगेजुगबातरहसी-अखी कराँअमिटनामीकियौ ॥ राठियाँबंसहूवोनरेस जिणसतूकारचौह-तदियौ ॥ १ ॥ बरअक्खेमहमाय कीर्तिजागाजसअप्पै ॥ बरअक्खेमह माय चरूसौवनासमप्पै ॥ बरअक्खेमहमाय चौथचौरासीकीन्हीं ॥ वर अक्खे महमाय लहणमोहोराँभलदीन्हीं ॥ औसियाँथानराठीधिनों जिन कराँदानकचनकिये॥ रिड़मालसुतनजागानकों लखपसावहाथीदिये॥२॥ (वार्ता) साहा चौथजी राठी एसा वैश्ययज्ञ स्वयंबर रचा और अपने मित्र धर्मपालजी वैश्य ओसवाल चोपड़ा गांव रहण मरूस्थलदेशमेंथे ॥उनकोंभीबुलाये ॥ वहाँ वैश्यजग्यमें सर्व विद्व्जन महेश्वरीयोंकों अति उज्लक्रिया स्वच्छतासें भोजनकरतेदेखे ॥ जैसेंगंगाकीसीछोल अति आनंद परस्परप्रीतियुक्त मान मनुहार होरहीथी एसासमयदेख धर्मपा-लजी अपनेमित्र चौथजी राठी सें कहनेलगेकी हमारेकोंभी महेश्वरीक-रलो तबसविनय प्रार्थना युक्त चोथजी सर्व महेश्वरि पंचोंसें अर्जकी तब इनकेमित्र समझ अपने पर्ममित्र जान मंत्रि पददे अपने सामिलकर लिया और जैनधर्म छुडा विष्णुधर्म धारण कराया ॥ दोहा ॥ प्रथमरह-णकाचौपड़ा धर्मपालजीजान ॥ मित्रमिल्याँसूंमंतरी पायोकुरबप्रमान ॥ ॥ १ ॥ (वार्ता) याप्रकारमंत्रि गोत प्रगटहुवा गांवरहण मेड़ते पारेवे मूँद्याड़ भकरी सावर वगेरे गांवोंमें बसे (पुन्ह) गांव सावर सगतावतों-की में २ सती हुई १ लाडमदे कँवारीथी तोरणबींदआयकरस्वर्ग-वासीहुवाजदसतीहुई २ पाटमदे यह दोय सतीपुजीजे है

(७६ नौलखा ४)

नौलसिंघजी जादवपेढ मातापाढाय गौत्रकस्यप (आदगुर दायमाँ तिवाडीकंठ) कठैक गुरपारीकपूजै (गुर गूजरगौड बीराका डीडवाण्याँ १ नौलखा २ नौगजा

(अपरख्यातें)

१ सारड़ा आपके नानेरे मालूके गौदीगया वह मालूसारडा बाजे हे और सगाईमें साख ५ टालै

२ बाहेती बाघला आपके नानेरे मालूके गौदी गया वह मालूबाघला बाजै साख ५ टालै

३ सौमाणी नानेरे झंवराके गौदी गया वह झंवर सौमाणी बाजै साख ५ टालै०

४ सारडा रूपचंदजी सांभरसें कालाणियाँके गौदीगया वह कालाणी सारड़ाबाजै साख ५ टाले गुरुभीपारीक खटौडव्यास नानेराके है

५ माणुधण्याँ कनीरामजी सांभरमें कालाण्याँके गोदीगया सू कालहाणी माणुधण्याबाजे है साख ५ टालकेसगपनकरे.

६ याप्रकारसें नागोरमें पिण दोहीता नाँनाँके गौदी अभीतक आताहे पुन्ह और भी केईजगें आल (बेटीकापुत्र) व औलाद (आपकापूत्र) इनदोनौंकाहक्कदत्त कमेंबरावरगिनतेहै

अथ

न्यातगुरी माहेश्वरी ७२

खाँपके गुरु प्रारम्भ ।

(१ दायमा)

१ दायमा आसोपातिवाडी वूत खाँप २ सोमाणीआसोपा १ झंवरगायलवाल २

१ दायमा कुदालतिवाडी सोडागणराजकाथांभाका गौत्र कचा-

इस खांप १ सोमाणीकुदाल १ वा इस्के नख फली (दाय मौतिवाडी बाजेहै उनके बृतनहींहै.)

१ दायमा डीडवाण्यातिवाडी थांभा ३ (पांड्या १ पौव्या २ रामाजीका३) बृतजुदीजुदीहै (उदा हरण)पांड्याके तौसणीवाल १ (पौ-व्याके छापरवाल १ मिणियार २) रामा जीका के आगसूड

१ दायमा कूम्भ्याजोसी थांभा ३ (रात्या १ वाणारस्या २ चाप-डा ३) खांप १ पलौड्रावत्या १

१ दायमा बेहड्तिवाडी खांप १ बिहाणी १

१ दायमाकंठतिवाडी मातादधवंत गौत्रमाइस खांप ७॥ बजाज १ बेहड्या २ काला ३ मरचुन्या ४ किसतूरचा ५ कटसूरा ६ मंडोवरा ७ (मंडोवरानेंछोडदीया)

१ दायमा तिवाडी वोराड्या व्यास थांभा २ कौकाणी १ चंदवा ण्याँ २ सू. चंदवाण्यांके बृतनहींहै (कौकाण्यांके खांप १ बालदी)

१दायमा कांकड्या मिसर व्यास बृतखांप ८ खटवड १ मालाणी २ टुवाणी ३ काल्या ४ भाला ५ मौलासरचा ६ गांधी ७ मूछाल८

१ दायमा खटवड व्यास बृत खाँप २ नगवाड्या १ गहलडा २

१ दायमा खटवड्व्यास थांभा ४ (कल्याणजीकौ १ सूरजीको२ मनौरजीको ३ गुरांकौ ४ (बृतखांप २) खटवड१ भाला २ वा दायमा काकडा मिसर व्यासवजे

१ दायमा जौपठव्यास बृत खांप२ माणूंधण्या १तैला२ (अ-परवृत सौनपचौलीकीहै)

१ दायमा गौठेचा बृत खांप १ अजमेरा नौसरचा १

१ दायमा ईनाण्याँ जौसी बृत-खांप १ धूपड

१ दायमा ईनाण्याँव्यास आचारज थांभा ३ साँगावत १ सवावत २ केलावत ३वृतखांप ४ चेचाणी १ दूदाणी२कलंक्या ३कचौल्या४

१ दायमा नवाल आचारज डीडवाण्या थाँभाका भाभडाबा-जैहै माता दधवंत गौत्रब्रह्मणौछ रिषि माइस बृतखांप ७ नवाल १ भन्साली २ गौकन्याबाहेती ३

डाड ४ थेपडव्या ५ भुराड़्या ६ कसुंवीवाल७ (देवपुरानेंछोडदीना सू अबे पारीकहै)

१ दायमा पलोड़व्यास थां भा ४ रोडू १ लाडणूं २ छापर ३ सा तेका ४सातेकाकेवृतन्हीं बृतखांप७ वंब १ मोदाणी २ चितलंगी ३ नथड़ ४ नौसल्या ५ खावाणी ६ नाहुधराणी ७

१ दायमा चौलंख्याप्रौयत पं-चौली वछाका बृतखांप १ ताप-ड़्यामेंसूंनख मूंगरड १

१ दायमा कौलीवाल भीलडी काव्यास बृतखांप १ बाहेत्यांमेंसूं नख मालीवाल १

१ दायमा गदइयाव्यास दवा-गणका आदोबाँटो खांप १ मंडो-वरा १ (आदगुर संखवाल मंडो-वराव्यास)

१ दायमा पापडव्या आचारज बृतरखांप ६ नावंधराणी १ बूब २ चितलंग्या ३ लदड ४ खाबाणी ५ जंग ६

१ दायमा काकड़ाव्यास बृतखांप ४ काहाल्या १ मोदाणी२ टुवाणी ३ खटवड राय ४

१ दायमा बेहड़्या तिवाड़ी थांभा ४ कांकाणीं १ रामाका २ खेमाका ३ श्रीधरणका ४ (बृतखां प १ बाहेतीबील्या १)

१ दायमा खटवड़ व्यास बृत (खांप १ खटवड़ १)

१ दायमा पेड़ीवाल वजाड़ां गरमलका थांभाका (बृतखांप १ गदइया १)

१ दायमा बेहड़व्यास बृतखांप १ बिहाणी १

दायमा डीडवाण्याँ बृतखांप १ तौसणीवाल १

१ दायमा कीसखवाल बछाका व्यास बृतखांप १ मूंगरड १

१ दायमा डीडवाण्यां पाठक पौव्याछापरवाल पौरवाल मणियार

(२ संखवाल)

२ संखवाल ओझा —— बृत खांप २ सोनी १ हेडा २

२ संखवाल हलद्या उपाद्या जायलवाल बृतखांप १ दरक

२ संखवाल हलद्याजोसी बृत

खांप १ दरकांमेंसूखांप हलद्या १ (कोटावूंदीकाराजमेंहैं)

२ संखवाल आगीवाल देवीब-राई (वृतखांप १ आगीवाल १

२संखवाल मंडोवराव्यास वृतखांप २ असावा १ मंडोवरा २ (मंडोवराअदगुरदायमामंडोवराव्यास)

२ संखवाल नागलातिवाडी देवीजेठाई वृतखांप १ असावानाग

२ संखवालपंडित वृतखांप १ बलदवा १

२ संखवाल पींपाड़्या पांड्या वृतखांप १ वाहेतीबाघला १

२ संखवाल थांभा ३ मांडम्याँ १ पालड्या २ अठारचा ३ (काव-रामाँडम्यां १ गौत्रअफडांस गुरसं-खवालमाँडम्याँ)कावरापालड़्या१ गौत्रमेसू माताफलौधी गुरसंखवाल पालड़्या) (कावराअठारचा१गौत्र मेसू माताफलौधी गुरुसंखवाल अठारचा)

२ संखवाल माँडम्याँ उपाद्या वेहड़्या गौत्र ४ माँडम्याँ १ उपा-द्या। २ पालड्या ३ अठारचा ४ प्रौयतबाजे है ॥

२ संखवाल गरवरिया तिवाड़ी वृतखांप ३ ईनाणी १ नगवाड़्या २ बडायल्या ३

२संखवाल मंडोवराजोसी देवी कनेश्वरी वृतखांप२बाँगड़ १सेठी२

संखवाल पंडत्या देवी राहीवाल वृत खांप १ पंडवार

२ संखवाल पांड्या देवीधौले-सरी डंडवालसती वृतखांप ३ वा-घला १ नींवज्या २ पनवाड़्या ३

(३ सारस्वत.)

३ सारस्वत बडओझा केलवा ड्या माता फलौधी गौत्र भद्रांस भाटन्यारोमांडै थांभा ४ उदाहरण भटनेरा १ ढल्लीवाल २ मारू ३ केलवाड़्या ४ खांप ४ भेली ला-होटी बिसहर १ मूँधडा २ मजी-ठ्या महदाणा ४

३ सारस्वत बडओझा ढली-वाल वृत १ सावत लखोट्या १

३ सारस्वत बडओझा रेण्या वृत १ सावतघरू च्यारखांपतौभे लीच्यारूंथांभामेंवंटबाँटेवदोयखां पजुदीआपआपकीहै (मंत्री १)

३ सारस्वत लहोडऔझा माता डाहरी गौत्रमूसा रुषीमाइंस खांप७ सारडा १ नरड २ भांगड्या ३ मालू ४ बूब ५ डौड्या ६ डूंडा ७ (सारस्वत अजमेरांके बूब जुदीघरू खांपहे बाकी में बंटबांटे) खरड सारड़ांका आदगुर सारस्वतहा सू पारीक बराणाजौसी दुरगेपोतांनें गंगापरदीनी व वरणीबांधी सू बरणाजौसीवाज्या अवे खरडसारड़ांका गुरबरणाजौसी है,

३ सारस्वत गुड़गीला आचारज वृतखांप १ धूत १

३ सारस्वत त्रिगुणायत बयभंड्या बृतखांप ३ पौरवार १ परवार २ दागड़्चा ३ दागड़्चा पौरवारमेंसें निकले वहमारवाडकेगांव भेरूदांमें है

३ सारस्वत खुंवालजौसी १ संख वालबांगरडाजौसी २ वृतखांप १ बांगरड़ांकीहै.

(४ गूजरगौड़)

४ गूजरगौड आचारज वृतखांप२ पलौड़१ खुंवालनवालांमेंका१ गूजरगौड़ पंचौली बीजारण्या देवी दायम गौत्र पंचौस्या मरौठिया अटलमेंसूं खांप १ (अटलांकेगुरम नौछित)

४ गुर गूजरगौड़ जांगला उपाद्या कांच्या देवी चावंडा झाड़ाई थांभा ५ (उदाहरण)

बीसलका १ हणफका हाकाणी २ भद्रका ३ चेचाणी ४ भनाणी ५ इस्में थांभा ४ केवृतनहीं फकत-थांभा १ जांगला उपाद्या कांच्या के बृत जाजू समदाणीकीहै

४ गूजरगौड़ बीराकाडीडवाण्यावृतखांप १ नौलखा १

४ गूजरगौड़ लौयमा उपाद्या जीवणजी का थांभाका माता सावज सतीखींवज बृत खांप ४ कासट १ तापड़्याचा२गदइया३भूंतडा४

४ गूजरगौड गुनारड्या तिवाडीव्यास देवी चावंडा थांत्रा २ एकतोव्यास १ दूजातिवाडीबृतबंटी(१ व्यासांके बंग १ कसुंबीवाल २) २तिबाडीके लौया१ लट्टूरच्या२नरवरा ३ मुरक्या४ डाल्या ५साबू ६ तौतला ७ बाहेतीधौल८चौखडा९

॥ कहालपा १० भूरचा १

४ गूजरगौड काकड़ा तिवाड़ी माता गुणाय वृतखाप १ ढींगरड़ १

४ गूजरगौड़ चौव्या सांभरचा माता कड़स बृतखांप १ कांकाणी

४ गूजरगौड़ डीडवाण्या उपाध्या बृतखांप १ ककल १

४ गूजरगौड़डीडवाण्य आचारज उपाध्या माता सहींदल सावज गौत्र भारद्वाज रघुवेद साखा मारध्वनी परवर ३ नरसिंगथाभाका गौत्रकशप बृतखांप ७ वेड़ीवाल १ खौगटा २ जेथलपा ३ चितलंगी ४ नौगजा ५ सीलार ६ सीलाणीसिकचीमेंका ७

(५ पारीक.)

५ पारीक गौलवालव्यास दवागणका देवीपाड़ाय गौत्र भारद्वाज थांभा ४ कालाणी १ मखाणी २ टीलाणी ३ खेमाणी ४ बृतखांप लढा १ डागा रांगर२ लौंगरड़३ चरखाबाहेती ४ डांगरा ५ नथड़ ६

पारीक बरणाजौसी थांभा २ दुरगेपोता १ सेसेपौता २ इस्मे सारड़ाकी बृत दुरगेपौतांकेहै सेसेपौतांके बृत नहीं ॥ रुयात ॥ सारड़ाखरड़कीबृत सारस्वतलौड़ओझाँकेही सू गंगाकीतीरपर धनवनकापुत्र पारीकबरणाजौसी दुरगेपोताको दीवीसूअबवर्णाजौसीकेहै खांप १ सारड़ाखरड़ १

५ पारीक अजमेरा —— बृतखांप १ अजमेराविन्यायक्या १

५ पारीक खटोड़व्यास मांडक्या मातारामणबृतखांप १ जाखेटिया १

५ पारीक गायलवाल मातापाढायगौत्राभद्रांस खांप ४ किलाण्याँ १मौखाणी२ डीलाणी३ कुंभाणी४

५ पारीकजौसी —— बृतखांप १ लाड़चा

५ पारीकप्रौयत कौसिकव्यास बृतखांप १ देवपुरा

५ पारीक देप्या उपाध्या मातास्वींवज बृतखांप १ (न्याती १)

५ पारीक वामण्या व्यास माता लोहन खांप २ मिरच्याभंडारी १ लाठीभंडारी १

५ पारीक खटोड़व्यास माता

फटकेस मारवाड़में मेड़ताकेपास गांव पांडूखां कोस ३ पश्चमकीतरफमेंहै थांभा २ पंडतजीको १ बाबरजीको २(बृतकीविगत)पंडतजीका थांभाके घरू बृत खांप २ विदादा १ भंडारीराय २ थांभोमेड़तासूँ यहदौयखांपतोघरू है बाकीखांप ५ पांच सीरमेंबंटै (उदाहरण) कालहाणी १ कलंत्री २ मुरक्या ३ गटाणी ४ कुलथ्या ५

५ पारीक बगड्या जौसी बंध छुडाई सू सातूँपूणकीबृतहै महेश्वरीखांप २ है अजमेरा कूकड्या १ नौलखावाहेती २

५ पारीक मूंडक्याव्यास माता जाखड सती सौढल गौत्र सालांस परवर ३ यजुर्वेद मारध्वनी साखा बृतखांप ३ जाखेटिया १ हौलाणी २ सांवलिया ३ (अपरबृत पंचौली झामरचा राजौरियाँकीहै

गुर —— लाडजौसी बृतखांप १ तुरक्या १

(६ खंडेलवाल)

६ खंडेलवाल नवालजौसी बीकनवाल दुवागणका दिल्लीका थांभाका बृतखांप १ गगराणी १

६ खंडेलवाल मूछाल तिवाड़ी बृतखांप १ सौढाणी १

६ खंडेलवाल बढाढर डीडवाण्याँके बृतखांप २ गगड़ १ दुरगड़ २

६ खंडेलवाल मछल्या देवीसंवाय बृतखांप ३ सौढाणी १ डाखेड़ा २ ढौली ३

६ खंडेलवाल बृतखांप १ माणूंधण्याँ १ ॥ आदगुरुदायमाजौपट व्यासथासूयजमाँनकोंकुष्टीजांणछौडदियासूखंडेलवालाँकाआसीससेंबंसबध्या

(पल्लीवाल १)

७ पल्लीवाल धामट माता सावज गौत्र मुग्दल बृतखांप४ चंडक १ भटड़ २ पूंगल्या ३ फौफल्या ४

७ पल्लीवालधामट आद गुरु संखवाल औझा नावंधर १ करवा २ वाहेती ३ लदड़ ४ मल्लड़ ५ तुरक्या ६ डाल्या ७ भइया ८ पूंगल्याचंडकाँमेंसूँ ९

७ पल्लीवाल धामटचंदण सारस्वत वदर दौनोंके बृत सीरमें है

सू आवैसोपावै दोनूँआवैतौबंटआदू आद बराबरबांटलेवै जैसें थांभा २ होय जैसें वृतबंटहै और दक्षणमें कहींकहीं मूँडकाबंटबँटैहै तापड़्या १ घीया २ भूतड़ा ३ कासट ४ रांदड़ ५ गांधीमेसूँ १ (ख्यात) पल्लीवाल धामट मुग्दल रिषीकी औलादकाहै एकसमयमें मुग्दलजी जग्यकरतेथे सू मंत्र १ बाकीरहा औरसाकल्य सामग्री पूर्णहोगई तब आपकीचोटी उखाड़कर एकमंत्र केसाथ साकल्यकर आहूतीपूर्ण- करी ताकरके यासमयमें धामट मुग्दलजीके वंसके ५० पचासवर्ष की आसरे अवस्थामेंहोनेसें चोटी अलोपहोजातीहै

(८ पोकरणा २)

२ पुष्करणा व्यासू गौत्रको सिक देवीजांजला १ चामुंडा वृत खांप ३ केलासारड़ा १ सेठीसा- रड़ा २ मुसाण्याबाहेती ३ यहती नखाँपहै

२ पुष्करणा छांगणी देवीसरवा य वृतखांप ७ राठी १ मालपाणी २ खडल्लोया ३ रायकचौल्या ४ डांगराबाहेती ५ बडोद्या ६ कीया ७

२ पुष्करणा विस्वा वृतखांप २ मल्लबाहेती १ टाँवरी २

२ पुष्करणा प्रौयत बीसा यह नानेराकीलारेप्रौयतबजे परताणी १ बिडला २

२ पुष्करणा जोसी चौवटिया माता चावंडा गौत्र पारास्वर (वृत खांप १ सिकची १) (अपर वृत कालानुसार रतनू चारण)

२ पुष्करणावट्टू वृतखांप २ अटल + १ डुरकट २

अटल + आदगुर गूजरगोड पंचोली बीजार एया १ बटू अब- चितचावैसोहीगुरहै. फेर ॥ अटलों- मेंसे मरोठिया १ गोठणीवाल २ है. इनके गुरुगूजरगोड बीजारण्याँहै.

---

२ पोकरणा छांगाणी ओझा देवीडाबाय वृतखांप ७ राठी १ वोरद्या २ मालाणी ३ मालपाणी ४ कूया ५ डांगरा ६ लोह्या ७

३ गोड तिवाडी वृतखांप १ गोकन्या भंडारी १

३ काव्या तिवाडी वृतखांप २ कचौल्या सौन १ फूल २

ख्यात वार्ता बंद वर्णन ॥

महेश्वरी ७२ खांप मूल व ९८९ बौंक व माता गुरु गौत्र सती पर-वर वेद छंदबंद व बार्तीबंद व खतावणी बहोत्तरखांप मूल व अपनी २ खांपकी फलियें कुल विस्तारपूर्वक खुलासा उदाहरण करके चक्र व वार्तिक पूरितहैं पुन्हन्यातगुरीजिस्में छवन्यातके ब्राह्मण व अपर न्यातके ब्राह्मण जौमहेश्वरियोंके गुरहै तिनकी एक एक खांपके जितनी २ वृत यजमानहैं तिनका खुलासा व आदगुरुवर्णन और एतद्समय प्रसिद्ध गुरु नाम सर्वतरहसें खुलासाकरके वर्णनकीयाहै अब डीडूमहेश्वरीयौंमेंसें फँटकर (धाकड महेश्वरी) खंडेलवाल महेश्वरी व मेडतवाल व टूकवाले इत्यादि बोलेजातेहैं वह खुलासालिखतेहैं डीडूमहेश्वरीयोंमेंसें फँटकर जुदे नाम बोलेगये उनमहेश्वरियोंके व इनडीडूमहेश्वरियौंके आपसमें रोटीव्यवहार व वेटीव्यवहार बिलकुल सन्मंध नहींरहा कच्चीमेंतोकहाँ पर पक्कीमेंभी अपनीअपनीरुचीहै एसेंहीं टूंकवाले महेश्वरी इनडीडूमहेश्वरी ७२ खांपमेंसेंहीं निकलकर जुदे होगये गौत्र वोंक तो यहीहै परउनसें रोटीवेटी वगेरा कोई व्यवहार नहिंरहा वह जैपुर व टूंककेराज्यमें वगरूमहला नीमाडे राणीखेडे कुछ चीतौड करीब-मिलके ५०० । ७०० घरहोंगे वह टूंकमें राज्यके परबसफस लघुजातीकेसंग भौजनकरके लघुहोगये और इन डीडूमहेश्वरियौंसें सन्मंध बिलकुल टूटगया उनका कुल व्यवहार उन्हींमेंहै अब अगाडी इनका इतिहासलिखतेहैं.

अथधाकडमहेश्वरीआदउत्पत्ति ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥ श्रीगुरुसारदसुमरिहर बंदिविष्णुकेचर्ण ॥ धाकडगोतबतीसकथि करप्रसिद्धशिवकर्ण ॥ १ ॥ धाकगढ्ढगुजरातमें बसतमेसरीजात ॥ बडनामींधनवंतसब खंडप्रखंडविख्यात ॥ २ ॥ खांपबहू-

तरबसतहै डीडूछापधराय ॥ धाकडयहिविधबीछडे पलटेबचनक-राय ॥३ ॥ नृपकोप्योतजिधर्मको देनलग्योदुखपूर ॥ तबसबमिलकी न्होंलिखत बसोदिसंतरदूर ॥ ४ ॥ रोपिसुरहसबसाहमिल तज्योनग्र-ततकाल ॥ अंजलकोऊनांलहे लिखीगधोतरगाल ॥ ५ ॥ छिनकए-कमेंछाडकर धनपूरितग्रहधाम ॥ बाहनभूषनबसनतज निकसेलोगत-माम ॥ ६ ॥ फँटेपुरषकुलबीसतब रहेधाकगढमांह ॥ तिनकोंछांडेसक लमिल सगपणकरणोनांह ॥ ७ ॥ बीसबहूतरतेंकढे सोकेहुँगोतब-खाँन ॥ बारहइनमेंअपरमिल यूँबतीसप्रमाँन ॥८॥ (कवित्तघनाक्षरी॥) चंडक १ सोमाणी २ डाड ३ झंवर ४ बजाज ५ राठी ६ मालपाणी ७ जाखेटे ८ भन्साली ९ कासट १० बायती ११॥मूंधडे १२ टवाणी १३ डागा १४ भटड १५ तोसणीवाल १६ काबरा १७ साकोन्याँ १८ घीवा १९ बीसवाँलोहायती २० ॥ नागोरी २१ । बघेरवाले २२ । धारवां २३ । धरवांड २४ । मोरी २५ । मोहर्ता २६ । गरगोती २७ । लाडं २८ । मनीवार २९ । बानिये ॥ मेडंतवाल ३० । गूगले ३१ । कुलम ३२ । मिलेबारहआय भयेशिवकरणबतीसइमजानिये ॥

दोहा ॥ बीसखांपडीडूहुते बारहमिलियाआय ॥ फँटेधाकगढमेंरहे धाकडनामकहाय ॥ १० ॥ भोजनअति आचारयुत बैठेपंगतिजाय ॥ ऊर्धपुंडउपनयनयुत पाटंबरपहिराय ॥ ११ ॥ उज्जलकुलरीतीचले साखनभाँनेंकोय ॥ जातपांतमरजादलखि तबेसगापणहोय ॥ १२ ॥

इति धाकड महेश्वरी धाकगढसे उत्पत्ति गौत्र ३२ समाप्त.

धाकडगोत्रचक्रम् ॥

१	चंडक	८	जाखेडे	१५	भटड	२२	बघेरवाल	२९	मनीवार		
२	सोमाणी	९	भन्साली	१६	तोसणीवाल	२३	धारवा	३०	मेडतवाल		
३	डाड	१०	कासट	१७	काबरा	२४	धरवाड	३१	गूगले		
४	झंवर	११	बायती	१८	साकोन्या	२५	मोरी	३२	कुलम		
५	बजाज	१२	मूंधडे	१९	घीवा	२६	मोहता				
६	राठी	१३	टावाणी	२०	लोहाती	२७	गरगोती				
७	मालपाणी	१४	डागा	२१	नागोरी	२८	लाड				

(चक्रनम्बर १)

१	श्रीश्रीमाल	४	औसवाल	७	पल्लीवाल	१०	महेश्वरीडीडू
२	श्रीमाल	५	खंडेलवाल	८	पौरवाल	११	हूमड
३	अग्रवाल	६	बघेरवाल	९	जेसवाल	१२	चौरंडिया

यह सारीवारहन्यात मध्यदेस (मालवा) की है वो बहोत जगहँमाँन्यहै और किसीदेसमें ऐसेंभीहै चक्र २

(चक्रनम्बर २)

१	श्रीमाल	४	चित्रवाल	७	पौरवाल	१०	महेश्वरी
२	श्रीश्रीमाल	५	पलीवाल	८	खंडेलवाल	११	ठंठवाल
३	औसवाल	६	वघेरवाल	९	मेडतवाल	१२	हरसौरा

यहचक्र २ की ज्ञात गौढवाड गुजरात काठ्यावाड कीहै वहां अग्रवालानहीं जहाँचित्रवाल सामिलगिनेजातेहै खंडेलवाल यानेंप्रसिद्धनाम सरावगीहै यह केवल देसप्रथाहै.

पुन्हसारीहीबारहन्यातवर्णन.

एकसमयमें खंडेलानग्रमध्ये खंडप्रस्थनाम राजा वैश्यजग्यकिया जहाँ चतुरासीज्ञात तो पक्केभोजनमें साँमलहुते तहाँ खंडेलवाल पक्कीमें सांमिलथे एसें (खंडेलवाल माहाजन १ खंडेलवालब्राह्मण २ खंडेलवालखाती ३ यहसब खंडेलवालोंमें सामिलथे) जब राजानें विचारकीयाकी यहतीनूँजात सामिलजीमणाँ उचितनहीं तब कचीरसोंई जुदी व पक्कीरसोंई जुदी करवाई और कहाके जहाँ जिस्की रुचीहोय वहाँजीमों जब खंडेलवालब्राह्मण और खंडेलवाल खातीतो पक्की सामग्रीमें चले गये और खंडेलवाल माहाजन सारीहीबारह न्यातके साथ कच्चीमें जीमे जबतें खंडेलवाल ब्राह्मण व खाती जुदेहोकर अपनी २ जातीमेंगये और माहाजन महाजनोंमें जीमणें लगे बेटीव्यवहारतो अपनी २ जातमें ठेटसेंही करतेथे वैसेंहीकरना और भौजनव्यवहार कच्ची व पक्कीमें

सामिलजीमणाँ दोहा ॥ खंडखँडेलमेंमिली सारिहिवारहन्यौत ॥ खंड प्रस्थनृपकीसमय जीम्यादालरुभात ॥ १ ॥ बेटीअपनींजातमें रौटीसाँमलहौय ॥ काचीपाकीदूधकी भिन्नभावनहिंकौय ॥ २ ॥ (वार्ता) याप्रकार वैश्यजग्यमें सांमिलजीमें उनकानाम और गांम चक्रमें देखो.

(चक्रन्मबर ३)

१ श्रीमाल	भीनमालसें	५ बघेरवाल	बघेरासें	९ पौकरा	पौकरजीसें
२ औसवाल	औसियाँसें	६ पल्लीवाल	पालीसें	१० टींटौडा	टींटौरगढसें
३ मेडतवाल	मेडतासें	७ खंडेलवाल	खंडेलासें	११ कठाडा	खाटूगढसें
४ जायलवाल	जायलसें	८ महेश्वरीडीडू	डीडवाणाँसे	१२ राजपुरा	राजपुरसें

अथचतुरासीज्ञातवर्णन ८४

एकसमय गौढवाड़देसमें पद्मावती नाम नगरीके पौरवाल महाजनकों अतिद्रव्य प्राप्तभयो तब उसनें द्रव्यखरचकरनेंकों वैश्यजग्य करनेंका इरादाकीया तासमय अन्नदेशी वैश्योंकों न्यौता भेज २ बडी प्रार्थनाँकेसाथ आवते जावते के खर्चसमेत द्रव्यपहुँचाया और बडेआग्रहसें चौरासीजातके वैश्योंकों अपनें स्थानपे पधराये और बडी धूमधामसें वैश्य जग्यकीया तहाँ चतुराशीज्ञातके माहाजन अपनें २ ग्राँमतें आये जिनका नाम और ग्राम संक्षेपमात्र चक्रमेंलिखा है

(चक्रन्मबर १)

नाम.	गाम.	नाम.	गाम.	नाम.	गाम.
१ श्रीमाल	भीनमालसें	७ अजमेरा	अजमेरसें	१३ कटनेरा	कटनेरसें
२ श्रीश्रीमाल	हस्तनापुरसें	८ अजोधिया	अयोध्यासें	१४ ककस्थन	वालकूंडासे
३ श्रीखंड	श्रीनगरसें	९ अडालिया	आडणपुरसें	१५ कपौला	नग्रकौटसें
४ श्रीगुरु	आभूनाडौलाई	१० अवकथवाल	औंबेरआभानग्रसे	१६ कौंकरिया	करौलीसें
५ श्रीगौड	सीधपुरसें	११ औसवाल	औसियानग्रसें	१७ खरवा	खेरवासें
६ अगरवाल	अगरौहासें	१२ कठाडा	खाटूसें	१८ खडायता	खडवासें

नाम.	गाम.	नाम.	गाम.	नाम.	गाम.
१९ खेमवाल	खेमानग्रसें	४१ नागर	नागरचालसें	६३ मेडतवाल	मेडतासें
२० खंडेलवाल	खंडेलानग्रसें	४२ नेमा	हरिश्चंद्रपुरीसें	६४ माथुरिया	मथुरासें
२१ गंगराडा	गंगराडसें	४३ नरसिंगपुरा	नरसिंगपुरते	६५ मौड	सीधपुरपाटण
२२ गाहिलवाल	गौहिलगढसें	४४ नवांभरा	नवसरपुरसें	६६ माडलिया	मांडलगढसें
२३ गौलवाल	गौलगढसें	४५ नागिंद्रा	नागिंद्रनग्रसें	६७ राजपुरा	राजपुरसें
२४ गौगवार	गौगासें	४६ नाथचल्ला	सीरौहीसें	६८ राजिया	राजगढसें
२५ गींदोडिया	गींदौडदेवगढ	४७ नाछेला	नाडौलाईसें	६९ लवेचू	लावानग्रसें
२६ चकौड	रणथंभचकावागढ महारीसै	४८ नौटिया	नौसलगढसें	७० लाड	लांवागढसें
२७ चतुरथ	चरणपुरसें	४९ पलीवाल	पालीसें	७१ हरसौरा	हरसौरसें
२८ चीतौडा	चीतौडगढसें	५० परवार	पारानग्रपाली	७२ हूमड	सादवाडासे
२९ चौरंडिया	चावंडियासें	५१ पंचम	पंचमनग्रसे	७३ हलद	हलदानग्रसें
३० जायलवाल	जायलसें	५२ पौकरा	पौकरजीसें	७४ हाकारिया	हाकगढनलवरसे
३१ जालौरा	सौवनगढजा०	५३ पौरवार	पारेवासें	७५ सांभरा	सांभरसें
३२ जेसवाल	जेसलगढसें	५४ पौसरा	पौसरनग्रसें	७६ सडौइया	हिंगलादगढसें
३३ जंबूसरा	जांबूनग्रसे	५५ वघेरवाल	वघेरासें	७७ सरेडवाल	सादडीसें
३४ टींटौडा	टींटौडसें	५६ वदनौरा	बदनौरसें	७८ सौरठवाल	गिरनारसें
३५ टंटेरिया	टंटेरानग्रसें	५७ वरमाका	ब्रह्मपुरसें	७९ सेतवाल	सीतपुरसें
३६ ढूंसर	ढाकलपुरसें	५८ विंदियादा	विदियादसें	८० सौहितवाल	सौहितसें
३७ दसौरा	दसौरसें	५९ वौगार	विसलापुरीसें	८१ सुरंद्रा	सुरंद्रपुरअवंतीसें
३८ धंवलकौष्टी	धौलपुरसें	६० भवनगे	भावनगरसें	८२ सौनैया	सौनगढजालौरसें
३९ धाकड	धाकगढसें	६१ भूंगडवार	भूरपुरसें	८३ सौराडिया	शिवगिरावासिवाणा
४० नारनगरेसा	नराणपुरसें	६२ महेश्वरी	डीडवाणासें	८४	————

(वार्ता) ऐसे वैश्यजग्य पद्मावती नग्रमें हुवा यह प्रथम पौरवार बजतेथे और पदमावती नग्रमें वसतेथे वहाँ वैश्यजग्य कीया तबतें पदमावति पौरवार पदवीपाई याप्रकारसें गौढवाड़देसकी चतुराशीज्ञातहै

अथगुजरातदेसकी ८४ज्ञात

(वार्ता) यह गुजरातदेशकी चौरासीज्ञातमें जोजो माहाजन गिने जातेहैं वह नीचेचक्रमें लिखेहैं किसी ८४ में कोईजातहै और किसी८४ में कोईजातहै यह केवल देसप्रथाहै जो महाजन जिसदेसमें जादाहुये वोही चतुराशीमें जाहर व सामिलहै

अथगुजरातदेसकीचौरासीन्यात

(चक्रनम्बर २)

१	श्रीमाली	१८	खातरवाल	३५	जंबू	५२	वाग्रीवा	६९	मौड़
२	श्रीश्रीमाल	१९	खीची	३६	झलियारा	५३	बावर वाल	७०	मांडलिया
३	अगरवाल	२०	खंडेवाल	३७	ठाकरवाल	५४	वामणवाल	७१	मेंडौरा
४	अनेरवाल	२१	गसौरा	३८	डीड़	५५	वालमीवाल	७२	लाड
५	आढवरजी	२२	गूजारवा	३९	डींडोरिया	५६	वाहौरा	७३	लाडीसाका
६	आरचितवाल	२३	गौयलवाल	४०	डींसावाल	५७	वेडनौरा	७४	लिंगायत
७	औरवाल	२४	नफाक	४१	तेरौडा	५८	भागेरवाल	७५	वाचडा
८	औसवाल	२५	नरसिंघपुरा	४२	तीपौरा	५९	भारीजा	७६	स्तवी
९	अंडौरा	२६	नागर	४३	दसारा	६०	भुंगरवाल	७७	सुररवाल
१०	कढेरवाल	२७	नागेद्रा	४४	दोइलवाल	६१	भुंगडा	७८	सिरकेरा
११	कपोल	२८	नाघौरा	४५	पद्मौरा	६२	मानतवाल	७९	सौनी
१२	करवेरा	२९	चीत्रौडा	४६	पलेवाल	६३	मेडतवाल	८०	सौजतवाल
१३	काकलिया	३०	चहत्रवाल	४७	पुष्करवाल	६४	माड	८१	सारविया
१४	काजौटीवाल	३१	जारौला	४८	पंचमवाल५	६५	मेहवाडा	८२	सौहरवाल
१५	कौरटावाल	३२	जीरणवाल	४९	वटीवरा	६६	मीहीरीया	८३	साचौरा
१६	कंबौवाल	३३	जेलवाल	५०	वरूरी	६७	मंगौरा	८४	हरसौरा
१७	खडायता	३४	जेमा	५१	वाईस	६८	मंडाहुल	८५	———

अथदक्षणप्राँत चतुरासीन्यात.

(चक्रनम्बर ३)

१	श्रीमाल	४	कटनेरा	७	कठनेरा	१०	कंदोइया	१३	खंडवास्त
२	श्रीगुरु	५	ककस्थन	८	काकरिया	११	खडायते	१४	खंडेलवाल
३	कपोला	६	कमाइया	९	कारेगराया	१२	खरवा	१५	गोलवाल

१६	गोंदोड़िया	३१	धाकड़	४६	पोरवाल	६१	ब्रह्माका	७६	आनंदे
१७	गोलपुरा	३२	धँवल	४७	पोसरा	६२	भवनगेह	७७	औसवल
१८	गोगवार	३३	नराया	४८	पंचम	६३	भाकरिया	७८	राजिया
१९	गंगेरवाल	३४	नरसिया	४९	वघेरवाल	६४	भूंगड़वाल	७९	लवेचू
२०	चतुरथ	३५	नरसिंगपुरा	५०	वपछेवाल	६५	मटिया	८०	लाड
२१	चकोड़	३६	नागोरी	५१	वडेला	६६	महता	८१	सडोइया
२२	चक्कचाप	३७	नाथचल्ला	५२	वदवइया	६७	माया	८२	सराडिया
२३	चौराड़िया	३८	नाछेला	५३	वहडा	६८	मांडलिया	८३	स्वरिंद्र
२४	जनोरा	३९	नेमा	५४	बघेरवाल	६९	मोडमांडालि.	८४	सारेडवाल
२५	जालोरा	४०	नोटिया	५५	बागरोरा	७०	मेड़तवाल	८५	सिंगार
२६	जेसवाल	४१	परवाल	५६	वावरिया	७१	अग्रवार	८६	सेतवार
२७	टकचाल	४२	पलीवाल	५७	विदियादा	७२	अष्टवार	८७	सौनैया
२८	टंटारे	४३	पहासया	५८	वुढेला	७३	अवकथवाल	८८	हरद
२९	तरोडा	४४	पवाराछिया	५९	वैस	७४	अस्तकी	८९	हरसोरा
३०	दसोरा	४५	पितादि	६०	वौगार	७५	अडालिया	९०	हाकरिया
	इति दक्षण प्रात ८४ न्यात							९१	हूमड

अथ दक्षणप्रांत ८४ ज्ञात

(कवित घनाक्षरी) हूमर १ खंडेलवाल २ पौरवाल ३ अग्रवाल ४ जेसवाल ५ प्रवार ६ बघेरवाल ७ जानिये ॥ वावरिया ८ रु गोलवाड ९ गोलपुरा १० सिरीमाल ११ ॥ औसवाल १२ मेडतवाल १३ पल्लीवाल १४ बानिये ॥ गंगेरवाल १५ खडायते १६ लवेचू १७ वैस १८ नाथचल्ल १९ ॥ खरुवा २० सडोइया २१ कठनेरा २२ उ.बखानिये ॥ कांकरिया २३ कपोला २४ हरसौरा २५ औ दसौरा २६ फेर ॥ नाछेला २७ टंटारे २८ हर्द २९ जालौरा ३० प्रमानिये ॥ १ ॥ सिरीगुरु ३१ नौटिया ३२ चौरड़िया ३३ भूंगरवार ३४ ॥ धाकड़ ३५ वौगारा ३६ गौगवार ३७ लाड ३८ जातके ॥ अवकथवार ३९ विदियादा ४० ब्रह्माका ४१ सारेडवाल ॥ ४२ मांडलिया ४३ अडालिया ४४ स्वरिंद्र ४५ मायान्यातके ४६ ॥ अष्टवार ४७ चतुरथ ४८ पंचम ४९ वपछेवार ५० ॥ हाकरिया ५१ कंदोइया ५२ सौनैया ५३ आछी भाँतके ॥ राजिया ५४ बडेला ५५ मटिया ५६ सेतवार ५७ चक्कचाप

५८ खंडवस्त ५९ नरसिया ६० भवनगे ६१ हसाथके ॥ २ ॥ कख-स्तन ६२ आनंदे ६३ नागोरी ६४ टकचाल ६५ कहूँ॥ सरडिया ६६ कमइया ६७ अरु पौसरा ६८ बताइये ॥ भाकरिया ६९ वदवइया ७० नेमा ७१ अस्तकी ७२ कारेगराया ७३ ॥ नराया ७४ मांडलियामौड़ ७५ जनौरा ७६ जताइये ॥ पाहसया ७७ चकौड ७८ बहड़ा ७९ धवल ८० पवारछिया ८१ बागरौरा ८२ तरौडा ८३ गींदौड़िया ८४ चताइये ॥ पितादी ८५ बघेरवाल ८६ बूढेला ८७ कठनेरा ॥ ८८ कहूँ सिंगार ८९ नृसिंघपुरा ९० महता ९१ ये भाइये॥ ३ ॥ इति०

अथमध्यदेसचतुरासी.

श्रीगुरु सारद सुमरि हरि बंदुँ बडनके चर्ण ॥ बरणत चौरासी वइस मध्यदेस शिवकर्ण २

(चक्र नम्बर ४)

१	श्रीमाल	१८	खंडपाल	३५	नागर	५२	वायेडा	६९	रागौरा
२	श्रीश्रीमाल	१९	खंडेलवाल	३६	नागेद्रा	५३	वास	७०	लाड
३	अगरवाल	२०	खंदणउडा	३७	नाउरा	५४	वायेच	७१	लाकमखा
४	अलल	२१	खौभू	३८	पधवता	५५	वाल्मींक	७२	सलाउ
५	अचतवाल	२२	गजेरा	३९	पबाडा	५६	भल	७३	सत
६	अष्टवाठिती	२३	गौलेचा	४०	पंचम	५७	भटेवरा	७४	सरखरल
७	अलदउदर	२४	चउचख	४१	पांतीवाल	५८	भागउ	७५	सइडेवाल
८	अठचख	२५	चीतौडा	४२	पौकरवाल	५९	भुगत्त	७६	सुराणी
९	औसवाल	२६	जलहरी	४३	पौरवाल	६०	भ्रगाडी	७७	सान
१०	कथौत्या	२७	जंबूसरा	४४	प्रवरा	६१	मथपर	७८	सौधतवाल
११	करटीवाल	२८	जालोरा	४५	प्रहराय	६२	महेश्वरीडीड़	७९	जायलवाल
१२	कपौल	२९	जीगीपारीजी	४६	प्रदभण	६३	मेडतवाल	८०	हलौरा
१३	करहया	३०	तचत्ररा	४७	फत्व्य	६४	मौड	८१	हरसोरा
१४	कवौहर	३१	तलनडा	४८	वघेरवाल	६५	मांडारा	८२	होहल
१५	ककौला	३२	धाकड	४९	वभीवाल	६६	मंडौहड	८३	हूमड
१६	कुंथतरा	३३	नरसिंगपुरा	५०	वघ्र	६७	मंडौरा	८४	हौहरण
१७	खडायता	३४	नाणीवाल	५१	वसमी	६८	रासीवाल		

अथ श्रीमाल गौत्र १३५

(वार्ता) श्रीमालजातीकेमहाजन १३५ एकसौपैंतीस जातकेगौत्र है तिनकानाम नीचे चक्रमें खुलासा देखौ.

१	कटारिया	२८	चरड़	५५	ध्याधीया	८२	वाईसज्ञ	१०९	मुरारी
२	कहूंधिया	२९	चांडी	५६	तावी	८३	बारीगौत	११०	मूंदड़िया
३	काठ	३०	चुगल	५७	तरट	८४	वायडा	१११	राडिका
४	काल	३१	चडिया	५८	दक्षणत	८५	विमनालक	११२	रांकियाण
५	कालेरा	३२	चंदेरीवाल	५९	नाचण	८६	वीचड	११३	रीहालीम
६	कादइये	३३	छक्कड़िया	६०	नांदरिवाल	८७	बौहलिया	११४	लवाहला
७	कुराडिक	३४	छालिया	६१	निरद्रुम	८८	भद्रसवाल	११५	लडारूप
८	कुठारिया	३५	जलकट	६२	निवहटिया	८९	भांडिया	११६	लडबाला
९	कूकड़ा	३६	जूंड	६३	निवहेडिया	९०	भालौटी	११७	सगरिप
१०	कौडिया	३७	जूंडीवाल	६४	परिमाण	९१	भूवर	११८	सागिया
११	कौफगढ	३८	जांट	६५	पचौसलिया	९२	भंडारिया	११९	सांभउती
१२	कंबौतिया	३९	झामचूर	६६	पडवाड़िया	९३	भांडूगा	१२०	सीधूड
१३	खगल	४०	टांक	६७	पसेरण	९४	मौथा	१२१	सुद्राडा
१४	खारेड	४१	टांकरिया	६८	पंचौभू	९५	महिमवाल	१२२	सौहू
१५	खौर	४२	ठींगड़	६९	पंचासिया	९६	मऊठिया	१२३	सौठिया
१६	खौचड़िया	४३	डहरा	७०	पाताणी	९७	मरदुला	१२४	हाडीगण
१७	खौसड़िया	४४	डागट	७१	पापड़गौत्र	९८	महतियाण	१२५	हेडाऊ
१८	गदउडघा	४५	डूंगरिया	७२	पूरविया	९९	महकुले	१२६	हीडौय्या
१९	गलकटे	४६	ढौर	७३	फलवधिया	१००	मरहठी	१२७	अंगरीप
२०	गपताणियां	४७	ढौढा	७४	फाफू	१०१	मथुरिया	१२८	आकोडूपड
२१	गदइया	४८	तवल	७५	फौफलिया	१०२	मसूरिया	१२९	उवरा
२२	गिलाहला	४९	ताड़िया	७६	फूसपाण	१०३	माथलपुरी	१३०	बोहोरा
२३	गींदौड़चा	५०	तुरक्या	७७	वहापुरिया	१०४	मालवी	१३१	सांगरिया
२४	गूजरिया	५१	दुसाज	७८	वरडा	१०५	मारूमहटा	१३२	पलहौट
२५	गूजर	५२	धनालिया	७९	बदलिया	१०६	मांदौटिया	१३३	घूघरिया
२६	घेवरिया	५३	धूवना	८०	बंदूवी	१०७	मूसल	१३४	कुंचलिया
२७	घीघड़िया	५४	धूपड़	८१	वाहकटे	१०८	मौगा	१३५	—

(वार्ता) यह श्रीमाल जातीके माहजन गौत्र १३५ है और इनका चालचलन विवाहादि कर्मकांड क्रियाव वर्तनूक बहुधा गुजरातियोंकी प्रथासें मिलतीहुईहै और इनका प्रचारभी अतिशयकरके गुजरात काठियावाड गौढवाड झालावाड व मालवा अवंतिप्रांतमें विशेषहै और आद उतपती जिनकीपाई उनकी प्रगटकर दिखाई और अधिकनहिंपाई उनकी किंचितहीदरसाई पाई सौछपाई रहीसौछिपाई ॥

इतिश्री श्रीमालजाती गौत्र १३५ वर्णनसंपूर्ण.

अथ अग्रवार साढासतरह गौत्र ॥

प्रथम भगवाननें च्यारवर्ण उतपन्नकीये ब्राह्मण मुखसें क्षत्रि भुजासें वैश्य उद्र वा जंघासें शुद्र पगथलीसें वह अपना २ अधिकार पाकर जगत विषय स्वकर्मकरतेरहे यह तीनवर्ण (ब्राह्मण क्षत्रि वैश्य) कों द्विजसंज्ञादीऔर कर्मकांडभी वेदोपनीषधोंसें करनेकी आज्ञामिली वहां ब्राह्मण राज्यकार्यकरता वही राज्यरुषी कहलाये जाताथा वहाँ एक राज्यरुषीके वंसमें धनपालनामराजा माहाप्रतापीहुवा और उनकाराज्य प्रतापनग्रमेंथा ताके आठपुत्र और एक मुकटा नाम कंन्याथी ताकंन्याका विवाह याज्ञवल्क रुषीसें कीयाथा और आठपुत्रोंकों विशालनाम राजाकी आठकंन्याव्याही तावरानेमें रंगनामराजा महाप्रतापीहुवा ताके पुत्र विशौक और विशौकके मधु मधु के महिधर ता महिधरके पुत्रपोत्रोंमें अग्रसेननामक राज्यरुषी महाप्रतापी और धर्मज्ञहुवा वह अपनें नामसें आगरानग्र व अगरौहानग्र बसाया और दिल्लीमंडलमें निष्कंटकराज्य करतारहा तासमय पंगनकेराजाके पास दौयनागकंन्या माहारूपवंतथी एककानामतो माधवी और दूसरीकानाम कुमुदथा ताकूंदेखकर सुरपति मौहितहुवा और पंगनपतिसें वह नागकंन्या मांगनेलगा और इधर उसनागकंन्यासें सुरपति मौहितथा तव वह नाग-

कंन्याँ इंद्रकों तो नहिंदी और राजा अग्रसेनकों व्याहनेकी उम्मेद की तब इंद्रनें राजापे कौपकीया और उसके देसमें बृषानहींकी और प्रचंडवायूसें पृथ्वीका जल शौषनकरलिया तबराजा अग्रसेन इंद्रसें जुध्धकीया और फतेपाई फेर सब राज्यकार्य अपनी पाठराणी माधवी कों सौंपकर आप बनमें तपस्याकरनेंलगा वहाँ गर्गमुनीका समागमभया तहाँ उनकी सहायतासें हरद्वारहोकर कासीमें आये और कपिलधारापे जग्यकीया और माहादेवकी कृपाद्रष्टी प्राप्तहुई तब माहादेवजी प्रसन्नहो कर राजासें कहा बरमांग तब राजा यहवर माँगनेंलगाके सुरपति मेरे आधीनरहे जब संभू यहीवर दानदीया और कहाके माहालस्मी देवी ताकी उपासनाकर जिस्सें तेरा भंडार द्रव्यसें पूरितरहे और इंद्रआधी नरहेगा तब राजा माहालक्ष्मीजीकी पूजनकरनेंलगा जब माहालक्ष्मी प्रसन्नहो बरदेकरकहा हे राजन अबतूं कोहलापुरनग्रमेंजा वहाँ महिधर नामराजा नागकंन्याका स्वयंबररचाहै उसकंन्यावोंसें विवाहकरके अपना बंसचला और म्हें तुष्टवानभईहूँ ताकरिके तेरेबंसमें कोईदरीद्री नहिंरहेगा तबराजा तुरतही कोहलापुरपहुँचा वहाँ जाकर महिधरनाम राजाके स्वयंबरमें १७ सतरहनागकंन्याँवोंके संग विवाहकीया फिर हस्तनापुरकेपास आकर अगरोहानग्रसें पंजाबतक अपनाराज्यजमाया- और उनस्त्रियेंासें अपनाबंसबढाया यहबात इंद्रसुनकर महाभयातु रहुवा और नारदमुनीकेसाथ अपनी मधुशालनीनाम अपछरा देकर राजासें पीछा मेलकिया पीछे राजाअग्रसेन यमुनाजीके तटपर अति अनुष्टानकीया तब लक्ष्मी पुन्ह प्रसन्नहोकर कहाके हेराजन तेरेकुलकी अधिकोधिक बृधीहोगा और तेरेनामसें तेराकुल प्रसिद्धरहेगा और मैं तेरेकुलकी रक्षाकरनेवाली कुलदेवीहूँ तूंजा जग्यकर यहकहकर देवीतो

अंतरध्या और राजाजग्यकी पूर्णाहुतीकर ब्राह्मणौंकोंगऊदान
सौब्रणदान [illegible] धनादि धनपूरित [illegible] और [illegible] दक्षिणा [illegible] लिया और [illegible]
अपना राज्य करतारहे [illegible] आरंभशरूरहा सू सत [illegible] संपूर्ण
हुवा और अठारवाँ यज्ञहौरहाथा सू अर्धहुवा तासमय राजा कूँ कुछ
ग्लानी प्राप्तभई तब अर्धजग्यमेंहीं शांतिकरदी ताकारनसें साढीसतरह
जग्यभये तब गर्गमुनीनेंकहा हेराजन तेरेनामसें साढीसतरहगौत्र और
तेरेनामसें कुल वैश्यजाती अग्रवार श्रीमाहालक्ष्मी शक्तिके बरसें और
हमारि आसीर्वादतें प्रगटहौगा तब राजा अग्रसेन अपनें सतरह राणीतो
नागकंन्यावौं और अठारवी राणी मधुशालनी इंद्रकी अपछरा उनौंसें
जौ पुत्रप्रगटहुयेथे उनराज्यपुत्रौंकों अपनी २ स्त्रियौंसहित बुलवाकर
कहा तुम वैश्यपदधारणकरौ और आपसका भ्रातृधर्म छोडकर मेराकुल
अधिकौअधिक प्रगटकरौ तब सतरहराजकुमार अपनेंपिता अग्रसेनकी
आज्ञा व अपनेगुरु गर्गमुनीकी आशीर्वचनलेकर वैश्यपद मंजूरकी
या. और प्रथमगौत्र गुरुनामसें (गर्ग) नामरक्खा बाकीगौत्र जग्यौंके नाम-
सेंरक्खे और अठारवां अर्धजग्यथा उस्कानाम गौलणगौत्ररक्या और क-
हाकेयह आधागौत्र अगाडी प्रगटहौगा ऐसें प्रथक २ नाम रखकर
अग्रवार वैश्यपदवी दी और गुरुगार्गपूत्र (आदगौड केपग पूज यज्ञो-
पवित्रादिविष्णु धर्मधारणकीया और श्रीमाहालक्ष्मिजी कुलदेवीस्थाप-
नकरपूजाकरी वहीविधी भविष्योत्तर पुराण के उत्तर भागमें वर्णनहै
या प्रकार त्रेतायुगके प्रथमचर्ण मितिमार्गशिर्ष कृष्णपक्षकी पंचमी
तिथी और वार शनीश्वर प्रातसमय अग्रवार वंसप्रगटभया (दोहा)
बदमिगसरशनिपंचमीत्रेतापहलेचर्ण ॥ अग्रवारउतपंतभये सुनभा-
खीशिवकर्ण ॥ १ ॥ (वार्ता) याप्रकारसें अग्रवार पदवी लई और
विष्णुधर्म कुलदेवी माहालक्ष्मी गुरु गार्गवबंसके गौड ब्राह्मण ऐसे
साढीसतरह गौत्र ठहराये खुलासा चक्रमें देखौ.

(चक्र नम्बर १)

१	गर्गयानेंगर	४	सिंगल	७	ऐरण						
१	गौयल	५	[illegible]			१०	जिंदल	१३	कुं[illegible]छल	१६	मिंतल
२	[illegible]	[illegible]	कांसल	८	ढेरण	११	जिंजल	१४	[illegible]वंछल	१७	सिंतल
३	मंगल	६	बांसल	९	विंदल	१२	किंदल	१५	[illegible]हल	१८	गौलणगौण

एसें साढीसतरहगौत्र नामरक्खे और अग्रवार वैश्य कहलानेंलगे तापीछे राजा अग्रायणरुषी अपनें पाटवी पूत्र विभूकौं राज्यकार्य सौंपकर आप तपस्या करनेकेनिमित पाथौजबनकौं चलागया पीछे विभूके पूत्र पौत्रोंमें दिवाकर नाम राजाहुवा वह वैष्णव धर्म छौडकर जैनधर्म धारणकरलिया और बहौतसे अग्रवार राज्यकार्यकरनेंवाले जैनीहौगये ताकारनसें अग्रवार वंशमें दौयमतहै केईकवैष्णवधर्मधारिकहै और केईक जैनधर्मधारिकहै ऐसें अपनें २ स्वस्थानोंपें कार्यकरनेंलगें पीछे अगरोहानग्रमें बादस्याह स्यहाब्बुदीननें लडाईकर मुल्ककौं तवाह कीया तासमयमें अग्रवारे अपना वतन छौडकर अपरदेसौंमें जाबसे परंतू बहौतसारहना हस्तनापुरके पश्चिमोत्तरमेंहै और उनगोतोंमेंसें कुछेक नामभी बदलकर दुसरेबौलेगये वहनाम नीचेलिखतेंहैं सूचक्रमें देखौ ॥

(चक्र नम्बर २)

१	गरगौत	४	मंगलगौत	७	कासल	१०	ढेरण	१३	झिंधल	१६	हरहर
२	गौयलगौत	५	तायलगौत	८	वांसल	११	सिंतल	१४	किंधल	१७	बच्छिल
३	सिंगलगौत	६	तरलगौत	९	ऐरण	१२	मिंतल	१५	कच्छिल ॥		गरसूंगूण

(वार्ता पुन्हएसेभीनाम शब्दकाअभ्रंशहोकरदेशप्रथासे बोलेजातेहै)

(चक्र नम्बर ३)

१	गर्ग	४	ंगल	७	कांसिल	१०	ढरण	१३	भधल	१६	गोभिल
२	गोयल	५	तायल	८	वांसिल	११	तुंघल	१४	तिंगल	१७	गावाल
३	सिंहल	६	त्तिल	९	एरण	१२	मित्तल	१५	ठिंबल	१८	गवन

वार्ता याचक्रप्रमाण नामभीबौलेजातेंहैं और केईक अग्रवाले हस्थनापुरसें दक्षिण वा पश्चिम सेखावाटी मारवाड़ गौढवाड़में

वसतेहैं उनकानाम औरही तरहसें जैसें बजाज नागौरी पटवा मेवाड़ा पसारी इत्यादि बौलनेलगगयेहैं वह केवल देसप्रथा व रुजगारकेनामसें रूढीपड़कर बौलतेहैं और असलीगोतोंमेंसें कुछेकगौत लुप्तभीहौग-येहैं पर श्रीमाहालक्ष्मीजीका प्रतापसें बडे २ मायापात्र धर्मज्ञ वैष्णव सेवापरायण हरिहर मताऽनुवैभव व. जैनी सर्वमतधारी मायापरिपूर्ण होकर ब्राजमानहै और दानपुन्यधर्ममें इनकी बुद्धि निपुणहै सूश्रीजी इनवंसकीबृद्धि अधिकोऽधिकरक्खें ॥ इतिअग्रवारवंसोत्पत्ति सहा शि-वकरण रामरतन दरक माहेश्वरी मारवाड़ी मूंडवेवाला कृत समाप्त०

अथ औसवाल माहाजन उत्पति.

(छंदछप्पय) राजाउपलदेपंवार नगरऔसियानरेश्वर ॥ राजरी-तभोगवे सगतसचियादीन्हौंवर ॥ नवसौचरूनिधान दियेसौनइयादेवी ॥ इलाऊपरौंअँगज कियापायनामाकेवी ॥ इमकरीराजभोगवेअदल वौहोत रवरसबदीतहोय ॥ नहिंराजपूत्रचिंतानिपट सगतप्रगटकहिकथासोय १॥ हेराजाकिसकाज करौचिंतामनमाँहीं ॥ सुतनउदरतवलिख्यौ देऊँकिम-अंकबिनाँई ॥ नृपतहोयदिलगीर दीनबायकफिरदाखे ॥ पूत्रबिनाँसुर राय राजम्हारौकुँणराखे ॥ देवीदयाविचार बचनदीन्हौंनिरदौसी ॥ रहो रहोरायनिचिंत पूत्रनिश्चयएकहोसी ॥ जुगजाहरजसपूरसुख घणाँनराँप णहलटसी ॥ चहुवाँणऑणफिरसीअठे पंवाराँगढपलटसी ॥ २ देवीकेव रदान पुन्यराजाफलपायौ ॥ नामदियौजयचंद बरसपनरापरणायौ ॥ पूतपिताभिङपास महलसहलाँसुखमाणें तिणअवसररिषिराय रत्नप्रभुमा सखमाणें ॥ सिखचौरासीसाथ ब्रत्तसंयमसबसाधे धरेध्यानइकतार देव-जिनइंद्रअराधे ॥ सहरमेंगयासिखबहरबा धरमलाभकरताफिरे ॥इणनग्र मौंहिंदातानकौ बसेसूमसाखासिरे ॥ ३ ॥ घरघरसिखफिरगये पवीतर अहारनपायो ॥ बीप्रएकतिणवार बचनइसङौबतलायौ ॥ ममग्रहपावन

करौ धिंन्नधिनभागहमारौ ॥ आजहुवोआवणौं मुनीइहदेसतुमारौ ॥ सूझतौहारदोषणविनाँ खीरखाँडबहराइया ॥ ऊजलेचित्तदोऊजणाँ लेगुर आगलआइया ४ ॥ देखगुराँगोचरी ध्यानआलोहनकीयो ॥ शबदतणेप रवाण जोयब्राह्मणघरलीयो ॥ नग्रमाँहिंनवलाख बसेघरएकसरीखा ॥ सगतपंथमतबाद सीससिंदूरीटीका ॥ समझहुवा थिरमान ध्यानअंतरसूँ खोले ॥ सिष्यप्रतीमाहाराज मुसिकमुखबायकबोले ॥ गुरकहैवारलागी घणीं कहोसिष्यकिह कारणें सूझतोऽहार मिलियो नहीं हूँ फिरियो घरघर बारणें ५ सिष मुखके सुणबैंणऽहारपिरथ्वीपरठायो पिवणस्याप- हुयगयो महलनृपसुतके धायो ॥ पिवणस्यापपीगयो कँवरनेंचैतनकाई ॥ नहींसासविसवास सोग हुयगयोसताई ॥ हाहाकारहुवोसहरमेंदागदेंण- चालीदुनी ॥ रतनप्रभू साम्हल रुदन दयादेखमेल्योमुनी॥ ६ ॥ मुनिबा- यकसुणवेन भ्रम्मराजान भुलानौं॥कोंननामगुरकठे साचदाखवोटिकानौं॥ नृपतबचनसुणकहै मुनीउत्तरइमधारो ॥ उणखेजडेअस्थान कँवरनेलेर- पधारो ॥ साधाँ सरणआय नृपतबीनतीकरावे ॥ सीसहुतोसेहरो मुकट- रिषिचर्णधरावे ॥ माफकरोतकसीरअब आपचूकबखसाइये ॥ मोब्रध्ध- कालकीलाज है गुराँकुँवरजीवाइथे ॥७॥ करुणाँसिंधुदयाल नृपतकूँहांसि- बरदीयो ॥ गयोरोसततकाल मृतकसुततत्छिनजीयो ॥ घिरचोस्वास- बिसवास नैंनखुलियामुखबाचा ॥ रोगदोखसबदूर सबदसतगुरका- साचा ॥ आलसमोडन्तऊठियो कहैनींदआईभलाँ ॥ किहकाजमनें- ल्यायाअठे दुरसकहोसाचीगलाँ ॥ ८ ॥ खँमाखमाँसबकहे ऊठगु- रुचरणाँलागा ॥ मंगलधँवलअपार बधावाआनंदवागा ॥ तोरणछत्रनि- साँण कलससोवनाबधावे भरमोतियनकाथाल सखिनमिलमंवलगावे ॥ ओछाडियामहलबाजारघर रतनाँचोकपुराइया॥जरिखीनखाँपपगपाँति- या रतनप्रभूपधराइया ॥ ९ ॥ नृपतकरेबीनती जोडकरहाजरठाढे क्रपाकरोमाहाराज धरममेंरहसूँगाढो ॥पटापरगनाँगाँव खजानाँखास

खुलाऊँ ॥ कबहुनलौपूँकार हुकमश्रवणाँसुणपाऊँ ॥ गुरुकह्योत्याग्रधन-
माँगवो एकवचनमोहिदीजिये॥मिथ्यातत्यागजिनध्रमगहो दानसीलतप-
कीजिये ॥१०॥ तहतवचनउरधार नृपतश्रावकवृतलीया॥ पुरढूंडीफि-
रवाय नारनरभेलाकीया ॥ भिन्नभिन्नवाखाण सुणेगुरमुखकेबायक ॥
छवकायाप्रतिपाल सीलसंजमसुखदायक ॥ करमनसोबौसकसमिल मा-
नमौडकरजौडिया ॥ सिधान्तजानजिनधर्मकों सक्तिपंथमुखमौडिया
॥ ११ ॥ सीलतणोंद्रढसाच करेपौसापडकूणाँ ॥ सम्मायकसमभाव
समकतीदिनदिनदूणाँ ॥ हिंसाकौनहिलेस देस मेंआणफिराई ॥ धर्मतणाँ-
फलमिष्ट सकेसांभलज्योभाई ॥ इहिभाँतजैनध्रमधारियौ शक्तिपांथ-
मुखमौड़के ॥ गुराँबचनसिरधारिनृप मानमौड़करजौड़के ॥ १२ ॥
(दोहा) ईष्टमिल्योमनमिलगयो मिलमिलमिलियामेल ॥ फूलबास-
घ्रतदूधज्यूँ तिलियनमाँहींतेल ॥ १३ ॥ सहसखचोरासीएकलख घरगि-
णतीपुरमाँह ॥ एकणथालअरोगियाभिन्नभावकछुनाँह ॥ १४ ॥ आँटा-
झगड़ाछौडिया गढमढशस्त्रसिपाह ॥ निरहिंसकनिरकपटह्वै चालतझी-
णीराह ॥ १५ ॥ छंदछप्पय ॥ बहरमानतणें पछे बरषबावनपदलीयौ ॥
श्रीरतनप्रभूसुरनाम तासुसतगुरुब्रतदीयो ॥ ओस्याँहूतऊठिया जाय-
भीनमालवसाणाँ ॥ क्षत्रिहुवासाखअठारा उटेओसवालबखाणाँ ॥ इक-
लाखचोरासीसहस्रघर राजकुलीप्रतिबौधिया ॥ श्रीरतनप्रभूओस्याँन-
गर औसवालजिणदिनकिया ॥ १६ ॥ प्रथम साख पंवारसेस सीसोद
सिंगाला ॥ रणथंभा राठौड बंस चंवाल बचाला ॥ दया भाटी
सौनगरा कछावा धन गौड़ कहीजे ॥ जादम झाला जिंद लाजमरजाद-
लहीजै ॥ खरदरापाटऔपेखरा लेणाँपटाजलाखरा ॥ एकादिवसइतामा-
हाजनहुवा सूरबड़ाभिड़साखरा ॥ १७ ॥ गयौराजधरगई प्रथ्वीपलटी-
पंवाराँ ॥ ऊपलदेराजान करणलाग्योबेपाराँ ॥ इकबचनाँसतबैणझूटकौ-
कंधउठायो ॥ कौडीरुपियौव्याज नफौबधतौनहिंखायौ ॥ इहभाँतविग-

तएसेंहुई दुनियाँलागीदौजगाँ ॥ पंवाराँघरप्रौयताँ ज्यूँऔसवालगुरभौ-
जगाँ ॥ १८ ॥ एकलाखदेगङ एकलखतुरीसमप्पै ॥ कंन्याँवलसेससात
बावनराजाथिरथप्पै ॥ देवीसचियामान भद्रपूजेसैंजौड़े ॥ औस्याँगढ
मेंआय छत्रसौवनोंचहौड़े ॥ समतदौयबावीसवें रिधूनामरहआवियौ ॥
भेसौजसाहभलतीजियौ आभानगररंगछावियौ ॥ १९ ॥ दोहा ॥
समतदौयबावीसके औसवालक्षत्रीहुवा ॥ चवदासौचंवालनख सकलक-
हूंजूवाजुवा ॥ २० ॥

अथ औसवाल माता गौत आचार्य

(बार्ता) औसवाल माहाजन उत्पत्ती वि० संवत २२२ औसि-
याँनगर राजा उपलदे पंवार ताकूँ आचार्यजी श्रीरतनप्रभुजी कंवल-
गच्छे प्रतिबौधितं प्रथम गौत कांकरिया प्रगटकीया तापीछे जाती
नाम गाँमादि नामसें गौत प्रगट सौ यहाँतक की विक्रमसंवत १७००
तक हौतेगये औसवालगौत १४४४ नाम कहतेहैं पर कुछपारनहिंपाया
जौकुछनाममिले वौलिखेहैं (१ श्रीहेमचंद्रसूरीजी आचार्य मलधा-
रगच्छ प्रतिबौधितं) (२ छाजेड़ राठौड़बंस) (३ चीपड़ माता
संचिकाय) (४ डांगी) (५ धाकड़) (६ दूगड़) (७ धूप्या
८ पींपाड़ा) (९ नवलखा माताआसापुरा) (१० कूकड़ ११ चीपड़
१२ गणध १३ चौपड़ा १४ सांड यह ५ गौत भाईहैं मलधारगच्छ
आचार्यजी श्रीहेमचंद्र सूरीजी प्रतिबौध० कूकड़ गौततें ४ फेर प्रगट)
१५पामेचा १६ पौखरणा मातासंचाय सं. २४२प्रगट० १७मरड्यासो-
नी १८ पौकरणा राठौड़ ग्राम हटा साह प्रति० १९ बडौला माताब-
डवल) २० बरडिया २१ बरड २२ बाघमार मातासंचाय अश्विनशु.
९ चैत्रशु. ९ पूजीजे २३ चौरवड़िया मातासंचाय गौत ४ भाईहै आ
ब्रदेव १।२४ गादिया २।२५ गोलेचा ३।२६ पारख ४ ।। भैंसासाहका

बंसमें प्रथम चौरवडिया गौत प्रगटहुवा) २७ मटा २८ खाव्या २९ भीलमाल ३० गौखरू ३१ नपावल्या ३२ सांखला ३३ सुरपुरचा ३४ सुकलेचा ३५ वापणा ३६ वौल्या ३७ सेठिया ३८ दक ३९ सीयाल ४० सालेचा ४१ पूनमिया ४२ नावेडा ४३ हींगड़ ४४ लूणिया ४५ आलावत ४६ पालावत ४७ थरावत ४८ मौहीवाल ४९ खुड़द्या ५० टौडरवाल्या ५१ माधौटिया ५२ गडिया ५३ गौढवाड़चा ५४ पटवा ५५ गांग ५६ दूधेड़िया ५७ संगवी ५८ सौंडल (सौंड ५९ सियाल ६० सालेचा ६१ पूंनम्या ६२ च्याहूँ भाईहै) सौंडल ६३ वौरद्या ६४ वरड माताआसापुरा हलपूजन मितीअश्विनशुक्ल ९ मिति चैत्र-शुक्ल ९ ये दौय तिथिपूजे) (६५ बावेला ॥ चहुवाण मुनि चंद्रसूरजी चक्रेस्वरीदेवी आराधन औस्याँनगरे मंदमांसादित्याग संवत २४२ पीछेभीन मालआया सं. ५५१ पंचौलपणाकौकाम पंचौलीवावेल० (६६ संगवी बावेलमेंसूँ सं. १२७५ बावेलगुसजनीबाजे० मलधारगच्छ श्रीरतनप्रभूसूरदेवप्रतिबोध०) ६७ तेल्या (६८ तलेरा करहेडा पार सनाथजी प्रसादतं तेलखरीदियो मंदिर तेलका गारासूकरायो सं. १५२० जिसबगत राणाजीनांवकढायो तेला तलेरा मलधारगच्छे श्रीहेमचंद्राचार्यजीप्रतिबौधितं० (६९ सौलंखी राजासिंधरावसौलंखीप्रतिबौधितं० ७० छोहोरचा (७१ तातेड़ मातासंचाय लढामहेश्वरीप्रतिबोध सं १०१६ देवीपूजाअश्विनशु. ९ चैत्रशु. ९) ७२ नावेड़ा भीनमालग्रामप्रतिबौ० मल धारगच्छ ७३ खाटेडगौत ७४ रौटागणगौत ७५ कावड्या ७६ आकासमार्गे ७७ पटविद्या ७८ नेणेसरमाताअंवका ७९ डूंगरवाल (८० नपावल्या संतनाथप्रशादतं) ८१ नांदेच्या नंदरायजीनेप्रति० विजयगच्छ (८२ सौनगरा चहुवाण संमत १५३२ विजयगच्छ) (८३ सचेतीढिल्लीवाल पंवार मातासचेतीमलधारपूनमियागच्छ)(८४ लौढा माताबडवलपूजा-अश्विनशु ९ चैत्रशुक्ल ८) (८५ श्रीश्रीमाल ८६ श्रीमाल (८७ गेव

रियासाखा माताब्रह्मसांत पूजा मितिचैत्रशु. ९ अश्विनशु. ९ दोयवार-पूजै संमत २४२ मलधारगच्छे प्रतिबोधितं) (८८ ढिल्लीवाल मातासंचायपूजेचैत्रशु. ९ अश्विनशुक्ल ९ गांव ओसियांछोडके भीनमालजाय वस्या) ८९ बीराणी (९० मटासंमत ४४४ प्रतिबोधितं) पूरबमहेश्वरी मूंधडा पूत्रददाती वोलीग्राम मटागोत्र) (९१ बीराणी बीराजीसूंबीराणीहुवाबीराणीदोयप्रकार) (९२ बाफण हेमचंद्रसूरणजीप्रतिबोधगच्छ (९३ बापणा मेंरश्गौतहैमातासंचायश्रीरतनप्रभूजीप्रतिबोधितं० (९४ सचेती मातासंचाय संमत २४२ गच्छ (९५ सुराणा ९६ सांखला पंवारजगदेवनेंआचार्यजीश्रीहेमचंद्रसुरणजीप्रतिबोधितं जयदेवकेपूत्र २ सूरजी१मघुदेवजी२सू सूरजीकासुराणांसांवलजीकासांखला मातासुसाणी औरलौसल संमत १०३२ अबपांचबोंकहै सुराणां १ सांखला २ ककरेचा ३ फलोदियाश्नखत५(९७ सुरपुरचा माता आसापुरा)९८ सुकलेचा (९९ सीसौद्या बापारावलनेंप्रतिवो०वापाकेपूत्र ३ तीनराफा १ माफ २ श्रवण ३ रांकाका रावल १ डूंगरपुरग्रामेमाफर का राणाजी चीतोडगादीश्रवणकासीसोदिया) १०० नाहार साहालछमणजीमहेश्वरीमूंधडाजिस्केसूँडाजीगुरांप्रतापपुत्रहुवोनाहारीनेंचूंगी तिणसेंनाहारश्री मलधारगच्छ संमत १०३२) (१०१ बापणा पंवारवंस मातासंचाय आश्विनशुक्ल ९ पूजेआचार्यजीश्रीहेमचंद्रसुरणजीप्रतिबोध०) (१०२ रांका बांका रांकाजीकारांका बांकाजीकादक बलभीगाँव रांकाजीका ४ बोक (रांका १०२ काला १०३ गोरा १०४ सेठीपावरा १०५) (बांका १०६ दक १०७) यहछवगोतभाईहै दक संमत १२७५ तेजपालजी बसतपालजीकेपौत्येजीमिया मलधारगच्छ पांचमकीसमच्छरीपाले श्रीहेमचंद्राचार्यजीप्रतिबोध० १०८ खीमसरा १०९ खटवड़मातालखासण सं, २४२ मलधारगच्छ भटारकजीश्रीहेमचंद्रसुरणजीप्रति

चौधे खींवसरग्राम बासखेपमेल्यो जिणसूँ खटवड़ खींवसराकहीजे खींव-सरासाखा गांवखाटूमें पूरणमलजीपंवारप्रतिबोधितं (११० वंब पंवार वंसस २४२ मितिमाहासुद १४ शनिवार भटारकजीश्रीहेमचंद्रसुरणजी प्रतिबोधितंबंबेराग्रामे साहानरायणदासजीकोकुष्टनिवारणं तासमयश्रा-वकधर्मधारणकीयो ताकेपूत्र १६ ताका १६ गौत्र) ११० बंब १११ गाय ११२ आलावत ११३ पालावत ११४ थरावत ११५ मौहीवाल ११६ खुड़द्या ११७ टौडवाल ११८ माधोटिया ११९ गडिया १२० गौढबाड्या १२१ पटवा १२२ बीरावत १२३ दूधेड़िया १२४ गांग १२५ गोध इनसौलहगौतकीमातासंचायमितिअश्विनशुक्क ९चैत्रशु८।९ पूजीजे ।।गांवबंबेरा सूँऊठकर गांव गाँघाणी आया देवलकराया समेत-सिखरजी आभूजी गिरनारजी दादा रिषभदेवजी की यात्राकरीसंवत ४५२ वर्षे पुन्हकुष्टनिवारणं तहां गोध गौत्र स्थापनं गुरुपदपूजनं गुरां-नेंकलपशुत्र मौत्यां कीमाला चंद्रवा ७ मोहोर २५ रुपया १०००० चेला १५ भेटकीया जहांसें मलधार गच्छका श्रावग अंगीकारकीया पुन्योजथं गौत्र १६(१२६ गेलड़ागहलौतबंस नागोरग्राम संमत १५५२ मातादाहमपूजे भटारखजी श्रीहेमचंद्रसुरणजी ताकासिष्य मुनिचंद्रसुर-णजीनागौरआयातबगहलौतां गुरांकाघोड़ाँनेंदाणोंदेवणोंसूमोहोरांका तौ बरा भरकेचढायदीया तब घोड़ाँमोहोराँखाईनहीं तहांगुरांकयोथेबडाग हलड़ाहोघोड़ातोदाणोंखायेहेजबसेंगहलड़ागो तहुवामातादाहमपूजेअश्वि नशु. ९चैत्रशुक्क ८पूजन २)१२७पगारया१२८खेतसी१२९मेड़तवाल राजाविक्रमकेप्रोयतसंकरदासब्राह्मणभीनमालनग्रेशिवधर्मत्याग्यो जैन-मतधारणकीयो कुष्टनिवार्णे ताके दोयपूत्र खेतसी पगारसी सू पगार-सीकापगारया खेतसीका खेतसीगौत पछेमेड़तवालवाज्या यह तीनूँ भाई है मातासौहिलपूजे मितिअश्विनशुक्क ६ चैत्रशुक्क ६ मलधारगच्छे आचार्यजीश्रीहेमचंद्रजीप्रतिबोधितं०

औसवाल गौत नाम.

(श्री)	काला	गणध	(छ)	ढीलीवाल	धाड़ीवाल	पटवा
श्रीमाल	कातरेला	गडिया	छजलाणी	ढेढिया	धाडीवाह	पटविद्या
श्रीश्रीमाल	कावड्या	गहलड़ा	छाजहड़	(त)	धाकड	पगारिया
(अ)	कांकरिया	गाधिया	छाजेड़	तलेरा	धीया	पगारचा
अभड	कंकालिया	गाय	छोहोरचा	तातहड़	धूर	परघाला
अशुभ	कांचालिया	गावड़िया	(ज)	तातेड़	धूंद्या	पारष
आलावत	कुंकम	गांग	जणिया	तिलहरा	धूप्या	पापडिया
आयरा	कुभट	गंधिया	जालौरा	त्रिपेकिया	धेनडीया	पामेचा
आमदेव	कूकड़	गूगलिया	(झ)	तेल्या	धौरचा	पालावत
आलाझाड़	कूहड़	गेवरिया	झंवक	तोडरवाल	धंग	पींपाड़ा
आकाशमार्गे	कूकड़ा	गौरा	झावक	(थ)	(न)	पींपलिया
आँचड़िया	केड	गौखरू	झांवड	थरावत	नवलखा	पचौलीबावेल
आँबागौत	कौवर	गौदेचा	(ट)	थररावत	नपावल्या	पूनमिया
(उ)	कौठारी	गौलेचा	टूंकलिया	(द)	नखत	पूनमिया
उस्तवाल	कौठेचा	गौढवाड्या	टैडरवाल्या	दरगेड़	नडुलाया	पूनम्यॉ
उतकंठ	(ख)	गौध	ठाकुर	दक	नक्षत्रगौत	पूंगलिया
(क)	खटवड़	गौलवच्छा	(ड)	दरड़	नाहर	पौकरणा
कल्याणा	खाटौड़ा	घौसा	डफारिया	दीपग	नाहटा	(फ)
करणावट	खाटेड़	(च)	डागा	दूणीवाल	नावरिया	फूलफगर
कटारिया	खाव्या	चहुबाण	डागुलिया	दूधोड़िया	नाणावट	फौफलिया
कल्यांण	खींवसराझवर	चतुर	डाकूपालिया	दूदवेड़िया	नागपुरा	फौकटिया
कउक	खींमसरा	चीपट	डांगी	दूगड़	नावेडा	फलोधिया
करणाटी	खुडद्या	चीपड़	डूंगरवाल	देसरला	नावेडार	(ब)
कणौड	खेमासरचा	चौरवड़िया	डीड्	देहरा	नाडूल्या	वरहडिया
कठियार	खेमानंदी	चौपड़ा	डौडिया	देवानंदी	नांदेचा	बछायत
करहेडा	खेतसी	चौधरा	(ढ)	दौसी	नेणेसर	वराड
कक्कड़	खडभंडारी	चौपडा	ढावरिया	(ध)	(प)	वडलौया
ककरेचा	(ग)	चंडालिया	ढिल्लीवाल	धनचा	पसला	वडगौत्रा

वलाही	विनयका	वंठिया	मकुयाणा	राखेचा	लौटा	सुरपुरचा
वलदोवा	वीरावत	(भ)	महाभद्र	रावल	लौलग	सुरपुरचा
वणभट	वीरावत	भल्लड़िया	मगदिया	राणाजी	(स)	सुकलेचा
ववाला	वीराणी	भडारा	माल्ह	रायभंडारी	सचेतीढिलीवा	सूरपुरा
ववेल	वीराणीमूघडा	भद्रा	माधोटिया	रांका	सरवला	सेठिया
वराडिया	वुरड	भडकतियां	मुहणाणी	रूप	समुद्रिया	सेठिपावरा
वडौल	वैद्य	भक्कड़	मूंहणौं	रूपधरा	सवरला	सौनगरा
वरड	वेहड़	भटेवरा	मूंहणोत	रूणवाल	सचेती	सोलंखी
वरड़	वेगड़	भाभू	मेड़तवाल	रेहड	सालेचा	सौनी
ब्रह्मेचा	वेताला	भीलमाल	मोहीवाल	राटागण	साहेल	सांड
वाघमार	वेतला	भौराडिया	भौहीवाल	(ल)	सावला	संगवी
वापणा	वौथरा	भौर	मौहववा	लकड़	सावल	संड
वापणा२२भाई	वौकडाया	भंगलिया	मंडोवरा	ललवाणी	सियार	संखला
वाफणा	वौहरा	भंडगौत	मंडोचित	लींगा	सीखा	सुंदर
वाघ्रेचा	वोहारिया	भंगसाली	मंगालिया	लुंवक	सीसोदिया	संवल
बामाणी	वौल्या	(म)	(य)	लुंकड	सीरोहिया	संखवालेचा
वातड़िया	वौरघा	मटा	यक्षगोत	लूणावत	सीयाल	संगवी
वाका	वंव	मरडचासौनी	यौगड	लूणिया	सियाल	संचती
वालड	वंवौड़	मणहडिया	(र)	लेला	सुदेवा	(ह)
वाविल	वंस	मसरा	रतनसुरा	लेवा	सुराणा	हगुडिया
वाहरिया	वंका	मणहड़ा	रातडिया	लौढा	सुंदर	हींगड
						हेमपुरा

अर्जसूचना सविनय.

(वार्ता औसवाल माहाजन गौत्र १४४४ वर्णनकरते हैं उनमेंसे जितनें गौतके नाम गौत्रदेवी पेढमिलेवौलिखदियेहैं बाकी किसी महाशयोंकौयादहोय वहपत्रपौष्टद्वाराभेजेंतो तृतियावृत्तिमेंदर्जकीयाजायगा इसीहेतूसेंस्वजन महाशयोसें बारंबारसविनयप्रार्थनाप्रगटकीहै शि० रा०

अथ जैनमत ८४ गच्छनाम

(अ)	(ग)	(ड)	४२ नाडूलिया	५८ वोकाडिया	(र)
१ अनपुरा	१५ गछपाल	२९ डोकाउबा	४३ नेगमिथा	५९ वोरसडा	७४रूदेलिया
२ आगमियाँ	१६ गुवेलिया	(त)	(प)	(भ)	७५रेवइवा
(उ)	१७ गुदावाल	३० तपा	४४ पलिवाल	६० नरनरा	(स)
३ उठविया	१८ गंगेसरा	३१ तीकाडिया	४५ पालनपुर	६१ भखछा	७६साधुपून० मियाँ
४ ऊसगच्छा	१९ गंधार	(द)	४६ पुनतरा	६२ नावटगा	७७ साचोरा
(क)	(च)	३२ दासरुवा	४७पंचवल्हण	६३ भीमसेनी	७८ सांडोरा
५ कनरसा	२० चित्रवाल	३३ दौथदणी	(ब)	६४ भिन्नमाल	७९सिर्घाति.
६ काछलिया	२१ चितवाल	(ध)	४८ वरडवा	(म)	८० सिद्धपुरा
७ काबोना	२२ चीतोडा	३४ धर्मघोष	४९ बडगछा	६५ मलधार	८१सुराणा
८ किरेडिया	(छ)	३५ धुंधरवा	५० बहेडिया	६६ महकर	८२सूपारिया
९ कुंचडिया	२३छापरीवाल	३६ धुंधरवा	५१ बडोदिया	६७ मसोणिया	८३ सेवता
१० कोरावाल	(ज)	३७ घोषवाल	५२ ब्रह्माणिया	६८ मंडार	८४सगडिया
११ कोछीपुरा	२४ जगायन	(न)	५३ वाइड	६९ मांडलिया	(ह)
(ख)	२५ जालोरा	३८ नागदी	५४ वांघेरा	७० मुजाहरा	८५हसारिया
१२ खरतर	२६ जांगल	३९ नागोरी	५५ विगडा	७१ मुंहडांसि०	
१३ खंभायती	२७ जीणहारा	४० नाणावाल	५६ विजोहरा	७२ मोगडिया	
१४ खंभाणिया	२८ जीरावास	४१ नागरकौटी	५७ वुतपुरा	७३मोरेवडाल	

प्रथम ८४ गच्छ थे. या समयमें ८५ गच्छ है

अथ दसमत १०

१ आंचलियामति २ पाइचंदमति ३ काजामति ४ पाट-णियामति ५ लूंकामति ६ साकरमति ७ कौथलामति ८ कडावामति ९ आतममति १० बीजामति लूंकामेंसूं निकलंक

अथ ८४ गच्छउत्पत्तिनाम

संवत.	गच्छनाम.	संवत.	गच्छनाम.
९९४	प्रथमपोसाल मंडी८४ गच्छहुवा	१५२२	मुहता. लूंकासें लूंकागच्छहुवा
१००१	खरतरगच्छ. ऊजलामहात्माकहीजे.	१५३१	स्वयंमेवलूंकाहुवा.
१२१४	आचल्यागच्छहुवा	१५१८	कुंवरमतिहुवा
१२३४	नागौरीतपाहरसौरागच्छथापनहुवा.	१५७२	तपाजतीक्रियाउद्धारकीयो
१२५०	आगमिया. पूनमियामहात्माहुवा	१५८३	आनंदविमलक्रियाउद्धारकीयो
१२६५	तपौ. प्रथमतपौगच्छ १ चित्रांवाद २ दोनूतपकीयोंसूतपौगच्छहुवा	१५७६	पायचंदक्रियाउद्धारकरी
१५२७	तरंयंति. तरेउदेपुरिया. भवसरियाहुवा.	१५४४	वीजामतीलूंकामाँहसूँहै
		१६०२	आँचलियाक्रियाउद्धारी
		१६०५	खरतरक्रियाउद्धारी
		१७३५	लूंकामाँहसूँढूंढ्या१ वीजामती२ निकले. ढूँढ्या संवत१७३५ हाजीफकीरकीदवासें प्रगट०

अथ पौरवाल जांगडा गौत्र २४

(वार्ता) पौरवारजांगडागौत्र २४ है इस्मेंजैनी व. विष्णुदोनूँ धर्मवालेहैं और इनका रहना बहौत करके चंवलनदीकी छायामें रामपुरा मंदसौर मालवा हुलकर सिंधे के राज्यमें विष्णुपौरवार ३००० तीनहजार घरवसतेहैं वाकीजैनधर्मधारिकभी पौरवार जांगडे मेंदपुर उजीन वगेरे गावौंमेंहै

(पौरवालगोत्र चक्रम्)

१	चौधरी	६	डबकरा	११	ऊधिया	१६	मंडावरचा	२१	नवेपरचा
२	काला	७	भादल्या	१२	बखरांड	१७	मजावल्या	२२	दानगड
३	कामल्या	८	भूत	१३	फरक्या	१८	मुनिया	२३	रतनावत
४	धनघड	९	भेसोटा	१४	लभेपरचा	१९	घाळ्या	२४	खरड्या
५	धनौत्या	१०	सेळ्या	१५	महता	२०	गलिया		

अथ खंडेलवाल श्रावक गौत ८४

प्रथम आदनाथजीसूँलगाय और माहावीरस्वामीपरियंत जैनधर्मके साध जैनीकहावतेरहे फेर महावीरस्वामींकों मुक्तपधारे ६८३ वर्षहोगये तापीछे उजीणनग्रमें विक्रमानामराजा सूर्यवंशी पंवार चकवे मंडलीक राज्यकरके संवतचलाया तदनंतर संवत १एककीसाल अपराजीत मुनि का सिंघाडामें सेंजिनशैनाचार्य ५०० मुनिराज साथलेकर विहारकरता २संवत १कामिति माहाशुक्ल५ कौंखंडेलेआये तहाँ खंडेलानग्रके राजा खंडेलगिर सूर्यवंसी चहुवान राज्यकरे ता खंडेलानग्रकी अमलदारीमें गांव ८३तँयासीलगे वहाँ केईदिनोंसें संपूर्णराज्यधानीमें माहामारी विशू चिकारोग अत्यंतफेलरहाथाजारोगकरिके हजाराँमनुष्य खंडितहोगयेथे तब राजाखंडेलगिर रैयतकी यहविवस्थादेख अतिदुखितहुवा औरमृत्यु आगमनजान भयातुरहोके भोंदेव ब्राह्मण रुषीश्वरों कों बुलायकर ऊंचे स्थानपे बैठाय पूजनकर साविनय प्रार्थनाकरी और कहा अहो भोंदेव यहउपद्रव कायतेंमिटे तव द्विज ज्यौतिष पुराण रमल वेद सुम्रत्यादिषट शास्त्र और शांतिकग्रंथ बिचारकर बोले हे राजन नरमेधजग्यकर ताकरिके शांतिहोवेगी तवयथोचित्तकहकर राजाजप्यकाप्रारंभकरताभया और अज्ञहेतू मनुष्यमंगवानेंकीआज्ञादी तासमय एक मुनराज समस्या नभोमिमें ध्यानलगाय खड़ेहुते तिनकों नृपके किंकर पकडके लेगये और यज्ञसालामें ल्यायके मुनराजकों न्हवाय कर वस्त्र भूषण पहरायेपीछे राजाके हातसें तिलककराय हातमें साकल्यदेकर हवनकीबेदीकुंडमें

स्वाहाकरतेभये देखौं राजानें कैसे अविवेकसें मूर्खताकी सो प्रथमतो मुनिराजका बृतखंडनकीया और चौकसनहींकी केवल अंधपनेकी बातकर कैसा अनाचारकिया देखो अवलतो मुनिराजके ध्यानमें विच्छे पपडा पुन्ह भूषणादि पहराणेंसें बृतखंडितकीया पुन्ह साधूकों जीतेजी होम दिया तापापकरिके देसमें असंख्या गुणा कलेस और उपद्रव होता भया पुन्ह माहाभयंकर घोर समय वरतणेंलगी अग्निदाह अनाबृष्टि प्रचंडबातादि कष्टतें प्रजापीड़ितहोकर राजाकेपास पुकारूगये तबनृ-पतमाहासोचमें अंधाधुंधहोकर मुरछागतहोगया तासमयमें स्वप्नप्राप्तहो मुनिराजके दरसणहोते भये औरमूर्छादूरहोकर पीछेनेत्रखुले तबराजा प्रफुलितचित ऊठकरं रयत और ठाकुरसबउमराव भाई बेटाँ सहित बनमेंविचरतेभये वहाँ पांचसोमुनिराज ध्यानधरतेहुतेतिनकों द्रष्टी-सेंदेख राजाजायकर माहामुनिके चरणारविंदमें मस्तकदे और नाँनाँ-भाँतिसें रुदनकर प्रार्थना करतेभये तव मुनिराजबोले हेराजन दयापालो तबराजा पूछाकरतोभयो हेमाहाराज मेरेदेसमें उपद्रव बहोत-फेलरह्यासो काहेते और केसेंनिरवर्तहो॰ । तवमुनिराजकहतेभये हेराजन यहनरमेधजग्य तेंनेंकिया ताका तातकालफलतेरेकूँप्राप्तहुवाहै तेनेंविनावि वेक मुनिकोंहोमदीया तातेंदुःखपावताहै पुन्ह औरपावेगा जबराजाबहो तलाचारहोकर मानमोड हातजोडकरप्रार्थनाकरताभया तबमाहामुनिरा जकों दयाआवतीभई जबराजाकों प्रतिबोधकरनेंलगे हेराजन पापमेंपुन्य धर्मकहाँ देखतेने भोंदूवोंके कहनेसें नरमेधजग्यका आरंभकर अविवेक सेंमुनिराजकों होमदिया तोहेराजन जरासमझनाचाहियेके तेरेकों तेरा जीव. कैसाप्याराल्गताहैजैसासर्वज्ञजाणले येहीग्यानकामूलहै अबतुम कों यहजैनधर्म रुचताहोयतो अंगीकारकरो औरधर्मपालो व जिनधर्मके मंदिर चैताले कराके ग्रांम२ और देशदेशांतर परगनोंमें प्रतिमापधरा वो तोशांतिहोवेगी तबराजा बडेभावतें पूजनकरवाईऔर अपनें उमराव

८३तंयासीठाकूरॉसमेत श्रीगुरॉसें श्रावकधर्म अंगीकारकीया क्षत्रि ८२ और दौयगांवके सुनारहाजरथे वहसबजनें मिलकर श्रीजिनसैन्याचार्य जी माहामुनीके चरणॉलागतेभये तापीछे संपुर्णदेसमेंशांतिभई और जिनधर्मकी महिमा बधी तहाँ शिव वैष्णव धर्म छौडकर जिनधर्म सारेदेस आचर्यौ तासमयमें मुनिविहारकरनेंकी इच्छ्याकरी तबराजा हातजौडकरकह्यौ हे माहाराज अब हमारेकूँ क्या आज्ञाहौय सौहुकमकीजे तब श्रीजिनसैन्याचार्य माहामुनिराजाकौं यहबखसीसकरी और साहागोत ठहरायौ सौठीलारातोसाह बाकीगांवॉके नाम गौतहै ॥साहकीदेवीचक्रेश्वरी बाकीका ठाकुर ८३की देवी आपरके राजकुलीकी और गावके नामसें गौत इसीतरह ८४ गौतठहराया और खंडेलवाल श्रावक यानेंसरावगी जाती प्रगटभई अब ८४गौतकी बंसावली गांव देवी गौत लिखतेहैं.

खंडेलवालश्रावक गौत्र ८४

सं.	गौत.	वंस.	गांव.	देवी.
१	साह	चौहान	खंडेलौ	चक्रेश्वरी
२	पाटणी	तंवर	पाटणी	आमा
३	पापडीवाल	चौहान	पापडी	चक्रेश्वरी
४	दौसा	राठौड	दौसा	जमाय
५	सेठी	सौमवंसी	सेठाणियौ	चक्रेश्वरी
६	भौसा	चौहाण	भौसाणी	नांदणी
७	गौधा	गौधड़	गौधाणी	मातणी
८	चादूवाड़	चंदेला	चंदूवाड	मातण
९	मौठ्या	ठीमर	मौठ्या	औरल
१०	अजमेरा	गौड	अजमेरचौ	नांदणी
११	दरड़ौद्या	चौहाण	दरडौद	चक्रेश्वरी
१२	गदइया	चौहान	गदयौ	चक्रेश्वरी
१३	पाहाड्या	चौहान	पाहाडी	चक्रेश्वरी
१४	भूंच	सूर्यवंश	भूंछड	आमण
१५	वज	हेमवंश	वजाणी	आमण
१६	वज्जमहाराया	हेमवंश	वजमासी	मौहणी
१७	राऊफा	सौम	रालौली	औरल

सं.	गौत.	वंस	गांव.	देवी.
१८	पाटौद्या	तंवर	पाटौदी	पद्मावती
१९	गगवाल	कछावा	गगवाणी	जमबाय
२०	पाद्यडा	चौहान	पादणी	चक्रेश्वरी
२१	सौनी	सौलखी	सौहनी	आमण
२२	बिलाला	ठीमरसौम	विलाला	औरल
२३	विरलाला	कुरुवंसी	छौटीविलाली	सौतल
२४	विन्यायक्या	गहलौत	विन्यायकी	वेथी
२५	वांकलीवाल	मौहिल	वांकली	जीणी
२६	कांसलीवाल	मौहिल	कांसली	जीणी
२७	पापल्या	सौढा	पापली	आमण
२८	सौगाणी	सूर्य	सौगाणी	कन्हाडी
२९	जांझरचा	कछावा	जांझरी	जमवाय
३०	कटारचा	कछावा	कटारचौ	जमवाय
३१	वेद	सौरडी	वदवासा	आमणी
३२	टौंग्या	पंवार	टौंगाणी	पावड़ी
३३	वौहोरा	सौढा	बोहोरी	सौतली
३४	काला	कुरु	कुलवाडी	सौहणी
३५	छावडा	चौहान	छावड़ा	औरल
३६	लौंग्या	सूर्यबंस	लगाणी	आमणी
३७	लुहाडया	मौरत्या	लुहाड्या	लौसिल
३८	भंडसाली	सौलंखी	भंडसाली	आमणी
३९	दगवत	सौलंखी	दरडौद	आमणी
४०	चौधरी	तंवर	चौधत्या	पद्मावती
४१	पौटल्या	गहलौत	पौटला	पद्मावति
४२	गींदौड़चौ	सौढा	गिन्दौड़ी	श्रीदेवी
४३	साखूण्या	सौढा	साखूणी	सिखराय
४४	अनौपड्या	चंदेला	अनौपड़ी	मातणी
४५	निगोत्या	गौड़	नागौती	नांदर्णा
४६	पांगुल्या	चहुवाण	पांगुल्यौ	चक्रेश्वरी
४७	भूलाण्या	चहुवाण	भूलाणी	चक्रेश्वरी
४८	पीतल्या	चहुवाण	पीतल्यौ	चक्रेश्वरी
४९	बनमाली	चहुवाण	वनमाल	चक्रेश्वरी
५०	अरड़क	चहुवाण	अरड़क	चक्रेश्वरी
५१	रावत्या	ठीमरसौम	रावत्यौ	औटल

सं.	गौत.	वंस	गांव.	देवी.
५२	मौदी	ठीमरसौम	मौदहसी	औरल
५३	कौकणराज्या	कुरुवंसी	कौकणज्या	सौनल
५४	जुगराज्या	कुरुवंसी	जुगराज्या	सौनल
५५	मूलराज्या	कुरुवंसी	मूलराज्या	सौनल
५६	छहडचा	कुरुवंसी	छाहड़च	सौनल
५७	दुकडा	दुजाल	दुकड़ा	हेमा
५८	गौती	दुजाल	गौतड़ा	हेमा
५९	कुलभाण्या	दुजाल	कुलभाणी	हेमा
६०	वीरखंड्या	दुजाल	वीरखंडी	हेमा
६१	सरपत्या	मौहिल	सरपती	जीण
६२	चिरडक्या	चौहाण	चिरडकी	चक्रेश्वरी
६३	निगर्द्या	गौड	निरगद	नांदणी
६४	निरपौल्या	गौड	निरपाल	नांदणी
६५	सरवडचा	गौड़	सरवडचा	नांदणी
६६	कडेवडा	गौड	कड़वगरी	नांदणी
६७	सांभरचा	चहुवाण	सांभरचौ	चक्रेस्वरी
६८	हलद्या	मौहिल	हरलौद	जाणिधयाड़ा

सं.	गौत.	वंस.	गांव.	देवी.
६९	सौमगसा	गहलौत	सौमद	चौथी
७०	बंबा	सौढा	बंबाली	सिखराय
७१	चौवाण्या	चहुवाण	चौवरत्या	चक्रेश्वरी
७२	राजहंस	सौढा	राजहंस	सिखराय
७३	अहंकारचा	सौढा	अहंकर	सिखराय
७४	भूसावड़्या	कुरु	भसवड़्या	सौनल
७५	मौलसरा	सौढा	मौलसर	सिखराय
७६	भांगड़ा	खीमर	भांगड़	औरल
७७	लौहड़्या	मौरठा	लौहट	लौसलविया
७८	खेत्रपाल्या	दुजाल	खेत्रपाल्यौ	हेमा
७९	राजभद्रा	सांखला	राजभद्रा	सुरसती
८०	भुंवाल्या	कछावा	भुंवाल	जमवाय
८१	जलवाण्या	कछावा	जलवाणी	जमवाय
८२	वेदाल्या	ठीमर	वनवौड	औरल
८३	लठीवाल	सौढा	लटवाड़ा	श्रीदेवी
८४	निरपाल्या	सौरटा	निरपती	अमाणी

इति खंडेलवाल श्रावक ८४ गौत वंस गांव देवी उत्पति संपूर्ण शुभम्

जैनमत सिद्धवरकूंटनामक स्थान वर्णन ॥

इस्को प्रथम प्रसिद्धकर्त्ता इन्दोर सहरमें मोदी भूरजी सूरजमलजी मोतीलालजी श्रावकपांपल्यागोत्रवालेहै ॥ यह इतिहासभी धर्माभिलाषी जैनीभाइयोंके धर्मबृद्धिहितार्थ हमलिखतेहैं कि यहस्थान मालवदेस इन्दोरसें २२ कोश दक्षण व खंडवासें उत्तरमेंहै इष्टेसन खेडीघाट व सनावदसें ३ कोश ऊँकारेस्वरतीर्थवहासें १ मील श्रीभेरूंसिंहजी रावराणाकाराज्यमें पंथ्यानामकग्राम रेवानदीके पश्चिम् कावेरीनदीके तटपरहै और यात्राभी माघशुक्ल ८ सें १५ पूर्णमातक हरसालहोकर अनेकप्रकार पूजाप्रभावना धर्मोन्नतीहोतीहै इसस्थानका इतिहास प्रथम ऊपरलिखेनामवालोंनें छपवायाथा अववहि श्रीमान्य मोतीलालजी मोदीकी आज्ञाले हमइसग्रंथमेंवर्णनकरतेहैं ॥ श्रीवीतरागदेव ॥

स्वस्तिश्री आर्य्यावर्त शुभस्थान उत्तमजन आवास सर्वोपमायोग्य सकलगुणनिधान गुणग्राहक ब्रषानुरागी ब्रषद्ध्ज धर्मावतार धर्मात्मा गुणगणालंकृत भूषित चारकाणाम् प्रतिपालक मित्थ्यात्वनाशक सत्य प्रकाशक अनेकनयधारी कुगतिगदविदारी तत्वश्रद्धाधारी स्वगुण हित निहारी दिगम्बरआम्नाय श्रीसकलसंघचउविध धर्मकेउत्साही योग्य विदितहोकि परमपुरुष वीतराग धर्मकी अधिकमहिमाँहै कि इसपंचमकालमेंभी साधर्मिजनकेहेतु तत्काल धर्मबृद्धि कारणदरसावेहै परंतु निश्चय दृढविस्वास विनाँ कार्यसिद्धनहिंहोय यातें प्रथम दयामइधर्मनिग्रंथ गुरु सत्य शास्त्रका दृढश्रधा राखे तव तत्काल कार्यसिद्धहोय ॥ सो साधर्मिजन इसवार्ताको अवश्य निर्णयकर दृढ श्रधानको प्राप्तहोंगे भव्यजन जो शास्त्र द्वाराआजपर्यंत विदितथाकि सिद्धवरकूंट नामक सिद्धक्षेत्र रेवानदीकेतट माग्धसें पश्चिमादिशामेंहै एसा अनेकशास्त्रोंमें माहात्म वर्णनकियाहै पुन्ह श्रीनिर्वाणकांडमें लिखाहै ॥ गाथा ॥ रेवा-

तडम्मितीरे दक्षिणभायस्मिसिद्धवरकूटे ॥ आउटय कोडिउणि. रेवा-तडम्मि तीरे संभवनाथस्स केवलुप्पती आउटय कोडिऊं (भावार्थ)

दोचक्रवर्ति दसकामदेव साढेतीनक्रोड़ मुनिराज कर्मरूपीशब्दको. ध्यानरूपी खड्गकर विदार सिद्धपदको प्राप्तहुयेहैं ताते यहभूमि देवनि कर बंदनीकशुद्धहै यासिवाय औरभी असंख्यात मुनि मोक्षगयेहैं याप्र कार माहात्म प्रगट था परंतुयथार्थ स्थानकी भूमी अप्रगटथी सो ऐसें विदितहुई कि श्रीमंत भट्टार्क महेंद्रकीर्ति श्रीइन्दोरपट्टका स्वप्नद्वारा संवत १९३५ कार्तिककृष्ण १४ कों श्रीसिद्धक्षेत्रकी रचना वश्रीजिन-विंदके दर्शन सरिता गिरइत्यादि शास्त्रोक्त दृष्टिआये तब उक्तस्थल चिन्हके निर्णयहेतू उसस्थानपेगये अपूर्व आश्चर्यकारी अतिशय दृष्टिआये कि उक्तस्थल अतिरमणीक शोभायमान् मोहनीरूपहै ॥ वहाँ सिंह श्याल मनुष्य रागद्वेस रहित एकसंग विचरतेदेखे यथार्थहैकि जिना-तिसयके प्रभाव सिद्धक्षेत्रस्थल क्यौंन अतिशय युक्तहोय अवश्यहोयही-होय (दोहा) श्रीजिनव्रषश्रधानते पावकपानीहोय ॥ अहिहरमत्तरुदृष्ट सह तापदसेवतसोय ॥ १ ॥ इत्यादि अतिशयदेख विस्वासधार आगे वनमें गमनकिया तो साक्षात श्रीचंद्रप्रभस्वामीकी प्राचीनप्रतिमा संवत १२७९ मिति वैशाखशुक्क ६ राणाउदयसिंहजीके राज्यमें स्वामी विशालभूषणके हाथकीप्रतिष्टित दृष्टिआई और द्वितियप्रतिष्टा श्रीसोमसेन स्वामी केहात साहा माणकचंद हेमदास सुत धर्मदासनें कराई ऐसें भांति२प्रतिमाके दर्शनहुये और प्राचीन मंदिरभी द्रष्टीआया ताद्वारपर श्री बीतराग छविकीमूर्ति बनीहुई यासिवाय २।३ देवालयजिनमंदिर फूटेहुये द्रष्टिआये तब निश्चयहुवा कि यही सिद्धवरकूट सिद्धक्षेत्र अतिशय युक्त प्रगटहुवा ॥ तब शास्त्रवेता धर्मानुरागी कर्नाटकवासी भट्टार्क श्रीचारुकीर्तिजी व श्रीगोमठस्वामीवाले श्रीसूरसेनभट्टाचार्य आदि माहाशय दृष्टिकर स्थलनिरूपणकिया तब सत्यनिश्चयहुवाकि सिद्धवर-

कूटनामाँ तीर्थ यहीहै यह वार्ता संवत १९४० में निश्चयहुई तब भट्टा-
केश्रीमहेंद्रकीर्तिजी इन्दोर पट्टकी आज्ञानुसार मोदीजी श्रीभूरजी सूरज-
मलजी मोतीलालजी इन्दोरीलालजी फूलचंदजी श्रावक पांपल्यागोत्रकी
इच्छाउक्त स्थान नविन श्रीजिनभवन बनानेकीहुई ॥ श्रीमंत गुणखान
पुण्याधिकारी राजाधिराज श्रीहुल्कर इन्दोर श्रीतुकोजीराव हालविद्य-
मानश्रीमंत राजाधिराज शिवाजीराव हुल्करकी आज्ञा और सहायताले
कर सम्वत १९४० माघशुक्ल ३ शुभलग्न श्रीजिनालयका काम प्रारंभ
किया सो आजपर्यंत कामप्रचलितहै व धर्मशाला अनेकधर्मस्थान भी
वनगयेहै सत्यहै जोजीव पुण्यकीप्राप्ति व निजअर्थ साधनकी इच्छाक-
रतेहै तिनहीका उत्तमधन धर्मकार्यमें लगताहै हेभव्यजनों॰ द्रव्य
विनाशिक दामनीवत स्थिरनहींरहताहै और अंतसमय साथभीनहिंजा-
ताहै यहसबजानतेहै पर लोभीमनुष्य धर्मकार्यमें भी नाहिं खरचते केव-
ललोभवश्य अविवेकताकाकारनहै जिनधर्म प्रभावसे अनेक विघ्न टले
व सुखस्वरूप होय प्रवर्ततेहै ॥ उक्तस्थलके दर्शनप्रभावसें अनेकप्रका-
रकी व्याधा मिटतीहै और युक्तभूमी की रजभी शुद्धभावसें निश्चयकर
शरीरमेंलगानेसें अनेकरोगदूरहोय सुंदरता प्रगटकर्ती है व,निवासकरनेसें
मनकी विशुद्धताहो द्रव्यकी प्राप्तिहोतीहै यहअवश्यसत्यहै ॥ यहीस्था-
नपे श्रीजिनमंदिरनहेतू इन्दोरसरकारसें अधिक मदतहुय लकडी चूना
ईंट पथ्थर आदि इनामीमिले व यात्रानिमित्त भूमीका महसूल माफ-
होकर यात्रियोंकेरक्ष्यार्थ प्रयत भी स्वच्छतापूर्वक रहताहै और
मंदिरकी देखरेखके अधिकारी मन्नालालजी वाकलीवाल उच्छाहयुक्तहै
या भूमीके दर्शनतें अनेक पापनाशहोके उत्तमगति और उत्कृष्टसुख
प्राप्तहोयहै ॥ याते सर्व साधर्मिजनके कल्याणार्थ यह पत्रद्वारा उक्तस्था-
नकी भूमि कर व, ठिकाना विदितकीयाहै ॥ सो उत्तमजन धर्मकेग्राहक-
उत्तमसुखकेवांछक इष्टवस्तुके संजोगार्थ अवश्य उक्तभूमीके दर्शनकर

अपना नरभव कृतार्थकरें और द्रव्यकी महिमाँभी तीर्थ यात्रा धर्मकार्य कीयेतें सफलहोयहै ॥ अहो भ्रात्रिगणों धर्म अपंग (पांगला) है सो साधर्मी बुद्धिमान गुणज्ञोके चलायेसें चलताहै यहविचार अवश्य तीर्थ यात्रानिमित्त उद्योगकरणाचाहिये मार्गकीघोषना प्रथमवर्णनकरचुके ॥ भव्यजन दर्शनाभिलाषी दर्शनवंदनाभावभक्तिसें कर मनुष्यजन्मको सुफलकरें तातें शिव (मोक्ष) का अविन्यासी सुख प्राप्तहोय ॥ श्लोक ॥ धर्मो सर्व सुखाकरो हितकरो धर्मं बुद्धाश्चिन्वते ॥ धर्मेणैव समाप्यते शिवसुखं धर्माय तस्मैनमः ॥ १ ॥ भावार्थ ॥ धर्मअप्रवलहै तातें सम्पूर्ण सुखप्राप्तहोय धर्मतें कल्याण व बुद्धिकी वृद्धिहोय पुन्ह ॥ धर्मरूपी समूद्रमध्ये अविनाशी लक्ष्मीवसेहै और धर्मके प्रभावते ४ पदार्थ (द्रव्य अर्थ काम मोक्ष) सिद्धहोयहै ॥ अधिकक्यालिखे ॥ दोहा ॥ यहअथाहआर्णवसुभग कौकवि पारलहाय ॥ गुणसमूहकथनीकरन गणधरथकितरहाय ॥ १ ॥ श्रीसिद्धवरशुभकूंटहै अतिशययुक्तमहान ॥ नमो भूमिताहाँतेंगये अगनितमुनिनिर्वान ॥ २ ॥ शुभऊँकारपुरीशुभग मालवदेशवखान ॥ रेवातटपश्चिमदिशा सिद्धसुक्षेत्रप्रदान ॥ ३ तारजमहिमाँकोकहै वपुलागतगदजाय ॥ उत्तमक्षोभायुक्तहो मनवंछितफलपाय ४सुरपतिनितपूजाकरेभावभक्तिउरधार॥वसुविधिरिपुदलअघहरेपावत मोदअपार५ सज्जनजनतिहिभूमिको नितप्रतिकरतप्रकाश॥धारतप्रेमानंदअतिकुगतिकुज्ञानविनाश६वालमुकुंदरचनाकरी गोधागौत्रवखान॥जिनचरणांबुजनितनमै सदरकामठीथान ॥ ७ ॥ द्रगरुवेदग्रहब्रह्मशुभ सम्वतलेहुविचार ॥ पोषचंद्रदशमीअसित पत्रपूर्णकरसार ॥ ८ ॥

इति सिद्धिवरकूंटपत्रम् ॥

आपका—

शिवकरण रामरतन दरक रामसागर छापखाना इन्दोर.

अथ बघेरवाल ५२ गौत प्रारंभ

(वार्ता) बघेरवाल माहाजन गांव बघेरामें राजा वग्रसैन्यकी समयमें उत्पन्न भये गौत. ५२

सं. गौत.	सं. गौत.	सं. गौत.	सं. गौत.
१ खटवडगौत	१४ बनवाडयागौत	२७ जिठाणीवालगौ.	४० पापल्यागौत
२ लावावासगौत	१५ धौल्यागौत	२८ सथूरयागौत	४१ भूंगरवालगौत
३ साखूण्यागौत	१६ पगारयागौत	२९ जौगियागौत	४२ ठगगौत
४ धनौत्या गौत	१७ बौरखंडयागौत	३० अंवेपुरागौत	४३ बहरियागौत
५ सावधरागौत	१८ दीवडयागौत	३१ निगौत्यागौत	४४ चमारयागौत
६ बावरयागौत	१९ वडमूंडयागौत	३२ कावरियागौत	४५ सुरलायागौत
७ सीधडातौडगौ.	२० तातहडयागौत	३३ ठाइयागौत	४६ सौरायागौत
८ बागडयागौत	२१ मंडायागौत	३४ कुचील्यागौत	४७ सीलौसगौत
९ हरसौरागौत	२२ बालदचटगौत	३५ मादलियागौत	४८ साबूण्यागौत
१० सादूलागौत	२३ पीतल्यागौत	३६ सेठयागौत	४९ गंवालगौत
११ कौटियागौत	२४ दगौरयगौत	३७ मुंईवालगौत	५० केतग्यागौत
१२ भाडारयागौत	२५ भूरयागौत	३८ सांभरयागौत	५१ खरडयागौत
१३ कटारयागौत	२६ देहतौडागौत	३९ सरवाडयागौत	५२ ————

अथ नरसिंगपुरा महाजन जैनी गौत्र.

भटारखजी श्रीरामसेनजी की थापना १०८

(वार्ता) येजो नरसिंगपुरा महाजनहै इनकी उत्पत्ति नरसिंगपुर नग्रतेंहै भटारखजी श्री रामसेनजी माहाराजका उपदेसकरिके मिथ्यातधर्म त्यागनकर निरहिंसक धर्म धारणकिया.

सं. गौत.	देवी.	सं. गौत.	देवी.
१ खडनर	वारणीदेवी	४ रयणपारखा	रयणीदेवी
२ पुलपगर	पावईदेवी	५ अभयिग्रा	रोहणीदेवी
३ भीलणहौडा	अवाईदेवी	६ भुद्रपसार	भवानीदेवी

सं. गौत.	देवी	सं. गौत.	देवी
७ चिभडिया	घरूदेवी	१८ खांभीगौत	वरवासनीदेवी
८ पवलमथा	पावईदेवी	१९ हरसौलगौत	चक्रेश्वरीदेवी
९ पद्महृ	पलवीदेवी	२० नागरगौत	नीणेश्वरीदेवी
१० सुमनोहर	सौहणीदेवी	२१ जसौहरगौत	झांझणीदेवी
११ कलसधर	मौरिणदेवी	२२ झडपड़ागौत	पिशाचीदेवी
१२ कुंकूलौ	चक्रेश्वरीदेवी	२३ बारौडगौत	पिपलादेवी
१३ वौरठेच	बहुरूपणीदेवी	२४ कथौटियागौत	पिरणदेवी
१४ सापड़िथा	पसावतीदेवी	२५ पंचलौलगौ.	मौरणदेवी
१५ तेलियागौत	कांतेश्वरीदेवी	२६ मौकरवाडा	
१६ बलौलागौत	अंबादेवी	२७ वसौहरागौत	सीवाणीदेवी
१७ खेलणगौत	कंटेश्वरीदेवी		

गौरारा माहाजन जैनी गौत

(वार्ता) श्रावक ३ तीनतरहकाहै १ गौरारे २ गौलसिंघारे ३ गौलापूरब यहतीनप्रकारसें बौलेजातेहैं और इनसबलौगौंका जैनमतहै और रहनाइनका ग्वालियर इटावा आगरा इलाखेमेंहैं उत्पतिकुछबरा-बरपाईगईनहीं फगतगौतमिले सू लिखदीयेहैं किसीप्रियमित्रोंके पास इस्का इतिहास कुछहौ लिखके पत्र द्वाराभेजें तो तृतियाबृत्तिमें सामिल पुस्तककेकीयाजावेगा.

सं गौत	सं गौत	सं गौत	सं गौत
१ पावेकेसेगेई.	७ कौसाडिया	१३ ढनसइमागौत	१८ चौधरीकूकरचा
२ गयेलीकेसेंगेई	८ सौहानें	१४ अदवइया	१९ डघागौत
३ पेरिया	९ जमसरिया	१५ सराफगौत	२० हसटिया
४ वेद्गौत	१० चौधरीजासूद	१६ चौधरीवरादके	२१ वडसइया
५ नरवेदपुरवेद	११ चौधरीकौलसे	१७ चौधरीआंतरीके	२२ तेतगुरिया
६ सिमरइया	१२ वरेइयागौत		

सगाई व दत्तपूत्रविषयमें सिक्षा.

(वार्ता) सगाईकरनें व दत्तपूत्र (खोले) लेनेकी समयमें चाहि-येकि कंन्याँ पूत्रोंकी परीक्षाकरले और एसा अंधाधुंधीनकरें पहलेतो नहिंदेखे और पीछे नाप्रशंद कर झगड़ाडाले इस्काप्रथमही बंदोवस्त यहहै कि अपणा परख परखाय देख चोख समझ बूझकर सनमंधकरें वा दत्तकलेवें तो यहाँकोईकहेंगेके परिक्षाक्याकरनाहै जोकुछ किसम-तमें लिखाहै वैसाहुवाहीरहेगा भलाँ किसनें बर अच्छादेखा और कंन्याँके किसमतमें दुःखहीलिखाहोगा तथा दत्तपूत्र अच्छादेखा और कुपात्रनिमटेगा तवक्या जोरहै तोयहबातठीकहै पर वहतो अंतरंगलक्ष-णहै अच्छानिमटणा व बुरानिमटणाँ वहतो अगाड़ीरहा हाँ इतनाँतो यहाँभीजरूरहै के उनकीबोध और प्रनालिका पिछाडीकी देखनाचा-हिये कहतेहैं के माजैसीडीकरी और घड़ाजैसीठीकरी. तापेएकद्रष्टांत एकसमय एकसाहूकारनें यहमिसरासुना के माताकेगुण. कंन्यामेंआताहै और पिताका गुण पूत्रमें आताहै वल्के. दादाकेपोतामें और नाँनीकेगु-णदोहतीमें वहाँएक द्रष्टांत प्रतक्षअविलोकनहुवाके एकसाहूकारके पूत्रवधूकी नाँनीं विषअहारकीयाथा तब परिक्षालेनेंकेनिमित साहूका-रनें अपना द्रव्य व संपूर्णकारखानोंकी कूँचियें व मालकी बेटेकीवहूकों सोंपदी बादचंदमुद्दतके सहूकार एकाएकही घबरायाहुवा आकर पूत्र वधूसेंकहा अयबहू आजतेरा पहननेंका गहना दागीना समेत सबद्रव्य देवेतो इज्जतरहै और इज्जतरहजायगीतो फेरही द्रव्यबहोतहोजायगा सो हेबहू सबद्रव्य मेरेकूँ जलदीदे तब पुत्रवधूबोली तुम्हारी इज्जत कालह जाती आजहीजावे में द्रव्यनहिंदेउंगी और जादतीकरोगेतो विषपानक-रलूंगी यहवचन पुत्रवधूके मुखसें सुनकर हसकेबोले बस मेरेकों कुछद्र-

व्यकी बांछनानहीं फकत तेरा इमतिहानही लेनाथा यह कहकर यहदोहा कहनेंलगा (दोहा) मायसरीखीधीवडी पूत्रपितासमथाय ॥ दादी नानीनिरखिये औलपहूंतेआय ॥ १ ॥ बेबड़कीनाँनींपियो जहरसुण्योए-कसेठ ॥ धनमाँग्योविषदाखियो औलपहूँतीठेट ॥ २ ॥ च्यारुंहिंपल्लाँ-ऊजली कसरनदीषेकोय ॥ जिणघरतोरणबानिये धणकुलवंतीहोय ॥ ॥ ३ ॥ (वार्ता) सोहेस्वजन प्रियबरमित्रों परमेश्वरनें अपनेंकों श्रवण नेत्रादि दीयेहें सो वाङ्यके रूप रंग देखनेके वास्तेहें सो यहाँ कंन्याँ पूत्रोंकों निरख परख करके लेना देना उचितहे जैसें कॉणा खोड़ा लूल्हा अंधा चीपड़ा कूवड़ा कुष्टी तिरछादेखनेंवाला बकाईखोरा अर्धअंगरहा हुवा विरडमुखा गूंगा बहरा उन्मंत उलू पेटी लत्ती दिनांध गंजा मृघी पां डुरोग क्षईरोग जालंधर इत्यादि रोग खोड़ वालोंको नेत्रोंसें परिक्षाकरके देखनाचाहिये हाँ इनमेंके कितेक पूत्र कन्या कुछकँवारेनांहिरहेंगे पर आपस मेंदेख परखकर समझके दत्तकलेना व सगपणकरना मुनासिबहे नहींतो अगाडी झगडाऊठकर छोडनाँ छुडाना चाहोगे यह बातभी बुरीहे उधरवालेकहेंगे पहलेक्यूंनहिंदेखलीया इधरवालेकहेंगे तुमनेंक्यूंनहिंकह दिया तोदेखो यहाँ नेत्रोंकी परिज्ञा अच्छीहे सो पहलेदेख परख लेनाँहीं उचितहे और ऐसाभीकहाहे (श्लोक) मूर्खो १ शठो २ पापरतो ३ ह्यसीलो ४ बृद्धो ५ दरीद्री ६ च नपुंस ७ कोवा ॥ नित्यं प्रवाशी ८ निकटं ९ च दूरे १० दोषा दसा त्याज्य ददोच कन्या ॥ १ ॥ (वार्ता) मूर्ख शठहो पापेष्टीहो सीलरहित (कुसंगी) हो बृद्धहो नपुंसक (पूर्षा-र्थसेंहीनहो) नित्यही विदेसगमनी विदेस भ्रमनेंवालाहोय वा अत्यंतही-नजीक एकमोहोल्लेमें रहतेहोय तो वहाँ लज्जाहीनहोनेंका संभवहे वा बहोत दूरहोय जिनका मिलापहोनाँहीं दुर्लभ वा महानरोगीहोय वहिं प्रथमही देखनाउचितहे पुन्ह सगपणकीयेवाद एसे अपलक्षण प्राप्तहोजाय वा पायाजाय तो सगपणछूटनेंमेंभी कुछअयोग्यनहीं यहाँ कंन्या अबला-

वोंकी भी तरफ पंचजराध्यॉनरक्खें क्योंकी कंन्यॉंतोकेवल धर्ममर्यादामें बंधीहुई ॥ माता पिता पंचोंके आधीनहै तो अपनेंकों उचितहैकि धर्म मर्यादा वो लज्या कायमरहनेंका ही परियत्नकरें जैसें सगपणकीया और पाणीग्रहण (विवाह) नहिंहुवा वहाँतक यहउपायहै फेर कुछयत्ननहीं यहाँविचारकरनाचाहिये जैसें हिंज (नपुंसक) निकलजाय कुष्टहोजाय हातपाँवटूटकर अपंगहोकर कमाखानेसें जातारहै वा पांडुरोग जलंधर अंडबृद्धि मृघी पथरी आदि माहानरोग उत्पन्नहोजाय तो सगपणछूटनेमें कुछहरजनहीं पर दत्तपूत्रतो लीयेबाद कहाँजाय वहतो अन्नवस्त्र वहाँहींपा-वेगा परंतू सगाईमेंतो प्रथम जरूरहीदेखनाचाहिये और विवाहमें तोर-णकीसमय स्त्रियाँ गीतभीगातीहै के० (सासूनिरखजँवाईये पछेदेलीओ-लभा०) तो समझनाचाहियेकि यह देखकर परिक्षाकरनाँ तो प्रथमही-ठीकहै जो यहपरिक्षा प्रथमहीकरके सगपणकरो गेतो फेर कोईप्रकारकी भी फिसाद झगडा खडानहिंहोगा और दोनोंतरफ स्नेहबराबरबनारहेगा और इसबारेमें झगडाउठनेंसें दोनूंतरफका स्नेहउठजाताहैं वल्के पक्षप-कडकर धडा भी डाललेतेहैं वहाँ सबका मगजफिरकर क्रोधितहोके आपसका सबव्यवहार प्रथक २ करलेतेहैं तो जरा समझनेकीबातहै के ज्ञातीमें कितनाबडा बखेडा पडकर नुकसानहोताहै और अपरजा तवाले भी हसतेहैं तो यहाँप्रथमही विचारकर कार्यकरनाउचितहै (पुन्ह) सगाईविषयमें एक और भी विचारआताहैके अपनेंलोगोंमें कईकलोग कुँवारेरहजातेहैं. इस्का क्यासबब है तो कुछेकजानागयाके पहले तो कपडे छीनणेमें एकबेटीकाबाप ही बहोतहै जो सगाईकीहाँ भरे और सगाई करतीवखत यह भी हिसाब करना पडता है के इतनें रुपयेतो प्रथम बेटीकेबापकों देनेंकूँचाहिये और इतनेंरुपये गुरांकोंदापे और पेटियोंके और इतनेरुपये कंचनीयोंकेनचानेके और इतनेंरुपये वारूदउडानेंमें और इतनेंरुपये खानें पीनें कपडे वरी वरा

तके खरचमेयूँ करके हिसाबकरतेहैं तो पूँजीकम और खरचमें तो एक दमडी भी कमनहिंहोसकती जब विचारकरनापडेगा के वहन बेटी भाई बिरादरके यहाँसें हूंचहांचकर लावेंगे कभी वोभी सरतंतलगावे तोएक औरभीभूलनिकलतीहै वोक्या तो वोयहहैकि साहजीने ठहराये हुये रुपये तो लेहीलिये और तोरणपरलेना उनकेमनमेंहींरही दिलचाहे उत्तनालेकर तोरणबानणेंदेंगे और पहलीलीयेवो रुपयेतो घरमें खरच-भीडालदिये और सगाईबेटीकीकरहीदी पर एकझगडा उतनींही पूँजी का फेरनिकला वोभी पूंजी खरचकरनेंको जरूरहोनाँ वोयहहैके गहणाँ इस्कों इतनें और उतने रुपयेंका घालोगेतो सगाईसही रहेगी अब इत-ना और उतना गहनाँ घालेतो ल्यावेकहाँसें और साहजीकहे उतनाँन-हिंघालो तो इज्जतगई और माँगपरणावेनहीं एसे सादेआदमियोंपर तो यहमुसीवतबीततीहै और कोईधनवानहोय वह गहना जादानहिंघा-ले तो बेटीकाबाप कहताहै कि क्या हमखाजातेहैं तो यहबातजरूरहै पर केईकलोग हजारोंरुपयोंके दागीनें खायभीबेठतेहै आजकल गहने दागीनें का बडाही रकीणाँ निकलगयाहै इसपरसें हमारे काँनकी सुनी-हुई और खुदहष्टी गोचर (देखी) हुईबात केवल दृष्टांतकेवास्ते लिख-तेहैं एकसाहजीनें बेटीकीसगाईकरी और गहनेकेबाबत झगडापडग या जब लोगबोले तुमकों गहनेसें क्याकामहै अगलाधनवानहै परणके अपनेंघरमेंलेजायगा जब बहोतहीं गहना पहरायगा तब उसनें यहजवा-बदीयाके इसकेपांचच्यारबेटेहैं नजानें यह गहना मेरीबेटीकों पूरादे या नहिंदे हमारेतो इतनेहजाररुपयेंके दागीनेंका इकरारहै जब एकभलेआ दमींनेंकहांक्यूँइज्जतकरतेहो गहनेमेंतुमकों क्या आण्याँहै बेटीका व्याह करदो जबवह साहजी बेटीकाबापबोला तुमठीककहतेहो परंतू कालक-दंतर इसबेटीका खावंद स्वर्गवासीहोजायतो फेर मेरीबेटी क्या खावे और इसकेक्यासाहारारहा इसवास्ते इतनाँदागीना पहले इस्केवास्ते

घलानाँ चाहताहूँ सो धौलीमींढीतक खर्च का साहारा इस्केपासहोजाय इतनीसुन वह चुपहोरहा देखो अपनेंलोकोंमें एसी २ समझवारीकी बातें होनेंलगी के और दुसरी नीचजातीमेंभी एसीबात कोई कंन्याँकापिता नहिंकहै एसी २ नीचीवातोंपे अपणें लोगोंका ध्यानपहुचनेंलगा यह बातमेंयहांनहिंलिखता परंतू क्याकरे कारनके वास्ते लिखनाँहींपडा देखो सगपनमें एसी २ विचारकी बातेंहोनेंलगी जब गरीबआदमींहोय वहतोकँवाराहीरहे क्योंके इतनाद्द्व्य खर्चकरनेंकी सामर्थनहीं और कहाँसेंल्यावे जब उनपुरषोंकीतो उम्मर द्रव्यवगेर यूँहींगई जवकोईक अधीर्य मनुष्य कुछऔरही तजवीजलगालेवे जैसें किसकी माँगकों उडाय वहकाय लेजाय परणलेवे बोभी राज और न्यातका गुन्हेगारहोकर दुःखपावे ऐसी २ उपाधियें फकत अत्यंत द्रव्यखर्चेहोनेसें खडीहोतीहैं इस कमखर्चकरनेंका बंदोबस्तकरना केवल पंचोंके आधीनहै जैसें महेश्वरीप्रबंध मेवाडके भीलवाडेमें सभाहोकर ११२ गामके महेश्वरी पंच सिरदारोंने समग्रहो २८ नयमबांधाहै उस्कों अविलोकनकरनेसें आसा हैकि अन्यग्रामोके पंचोंका भी चित प्रबंधकार्यमें जरूरलगेगा उस्में यह एकबडीगहनबातलिखीहै कि जोसख्स बेटीकीरीतलेवे उस्केयहां गुडगालनेकेसिवाय सक्करकी पंचआज्ञानहिंदेवे यहांतककी उनकों किसी कार्यमें पांचवर्षतक सक्करगालनेकी सखत्मनाईनियम १९ के मुताबिकरहै(देखो)धन्यहै उनपूर्षोंकों जो बेटीकापेसा (हलाहल जहरकाप्याला) लेनेवाले लोगोकी एसीदुर्दसा प्रगटकी तो यकीनहै इस विषपान (बेटीकीरीत) कों लोग जरूर त्यागनकरेंगे यह विषपानक्या वल्के बेटीका रक्तपानहै कन्याके घरका पानीतो नहींपीतेहै. पर इतना द्रव्य हरलेवेकि जिस्सें अपनी सातपीढीतक एसकरे वाहरे वाह रीतलेनातोकेवल कन्याकों अजियावत वेचदेनाहै वस अबअधिकालिखनामुनासिबनहीं.

(पुन्ह) अपनेलोग धर्मशास्त्रों व वेदोक्त ग्रंथानुसार विवाहादि करतेहैं

सो कर्म और कर्तव्यताता ग्रंथोंके प्रमाणसें करनाँहीं उचितहै परंतू ग्रंथवहोतसे प्राचीन शतयुगीहै और अभी कलयुग वर्तमानहै इस्में जराविचारनेकी बातहै जैसें विवाह लग्नविषय लिखाहै कि (श्लोक) पंचवर्षात् भवेगौरि सप्तवर्षाच रोहणी नववर्षात् भवेकंन्याँ तत्रऊर्द्ध रजस्वला ॥ १ ॥ भावार्थयहहैके पांचवर्षकी कन्याका विवाह करेतो गौरी (पार्वती) के समान फलहै ॥ और सप्तवर्षकी कंन्याँका विवाह रोहणीवत नववर्षकी कंन्यासंज्ञा या उपरांत रजस्वलासंज्ञा प्राप्तहोजातीहै वा ऐसेंभीकहाहै ८ वर्षकीगौरी ९ वर्षकीरोहणी १० वर्षकीकंन्याँ या पश्चात् रजस्वला संज्ञाहै ॥ सो यहलिखना कौनसी समय और किसवास्तेथा और अबवर्तमान कौनसमय आयाहै इस्का जरा विचार करना चाहिये देखो उस समयमें आयूभी दीर्घ होतीथी और माहामारी हेजा राजरोग (पानीजरा मोतीजरा थोथाजरा) लकवा फिरंगवाय धणकिया प्लेगरोगादि अनेक प्राणघातिक व्याधियेंभी नहींथी और उसवखतमें अवषधियेंभी अति प्रबल गुँणदायक सिघ्ररो-गनाशकथी सो वैद्यक ग्रंथोंके देखनेसें विदितहोताहै और याकालमें अवषधियें भी गुणहीन अल्पताकत होगई और उससमयमें अमृत संजीवन अमरफल आदि होतेथे जिस्सें मृतक जीजातेथे सो अब कलमें एसेपदार्थ भी गुप्तहोगये और प्रथम छोटें २ गांवडोंमें भी वहोतसें वृद्धपूर्ष स्थितथे अब यासमयमें बडे २ सहरोंमें भी वृद्धपूर्षोंका दर्शन भी दूर्लभहोगया और प्राचीन ग्रंथोंमें येभीलिखाहै कि पिताबैठे पूत्र स्वर्गवासी नहींहोताथा सो यासमयमें दादा प्रदादा बैठे पूत्र पौत्र कालवस्थ होजातेहैं ऐसी गतीदेखनेंसें निश्चयहोताहै की जबवह ग्रंथब-नेथे उससमयके और इससमयके वहोतही फरकपडगया इसवास्ते मेरालिखना अनुभविक (विचारसें) यहीहै के पांच छव वर्षकी कन्या-का विवाहकरना बडाही नेष्टकर्महै (सरासरी कन्याँवोंको जहरकापि-

लानाहै) क्योंके वोविचारी व्याह और बरमें क्या समझे विवाहेपीछे विधवाहोजाय तो उस अबलाका जन्म व्यतीतहोना बडाही मुष्कलहो-जाय क्योंके अपने उज्जललोकोंमें पुनर्विवाह तो होताहीनहीं और पुरषोंके वास्ते नोनौवार बल्के सोसौवार तक विवाह करनेकी आज्ञादीगई जरा विचारनेंकी बातहै कि पुरसोंकोतो किसीबातकी तकलीफहीनहीं पासद्रव्यहोना बुढेकी नाड़डिगडिगाटकरे तोभी धनपात्र आठवर्षकी कंन्याकों बरे क्योंके वृद्धविवाह वर्जनीय कोईप्रबंधनहीं फिर डरहीक्याहै कानपकड़के अजियावत अबला खरीदलाये अब देखिये वो विचारी अबला कमउमरमें पाणीग्रहणकीहुई बालरंडा होजाय तो वो क्याक्याकर्म करके उम्मर निकालेगी कदापिकाल उस्कों मदनके सतावनेमें दृढतानहिंरही और किसीतरहका उस्के उद्रमें बखेड़ा खड़ाहोगया तब अवलतो वो हिंस्सा (गर्भपात)हीकरेगी और जो निर्वर्तनहिंहुई तो अपना प्राणोंसें हातधोवेगी इस्सें भी बची तबउस्के इज्जतकाक्या हालहै जातवाले जातसें और घरवाले घरसें व पीहरवाले पीहरसें जिधर जाय उधरधक्काही धक्का तोसोचनाचाहियेकि ऐसी दुर्दसाहोनेका सबब क्याहै हाँ प्राचीन ग्रंथानुसार चलनेंमें हमकुछ संकानहींकरते धर्मशास्त्र मानणांहीं उचितहै पर कुछसमयकालभीदेखनाचाहिये हाँकन्याँ खाली हातहोजानेकातों कुछउपाय मनुष्यकेहातनहीं यहतो ईश्वरीमायाहै पर हमारी राहामें आताहै कि इधरतो कन्या बरयोग्यहोकर समझनें लग-जाय और उधर पतिकोंभी स्त्रिकीचाहनाहोय वैसीसमयमें विवाहकर-देना उचितहै वह अपनेस्थानपे जहाँतक पति चिरंजीवरहै वहाँतक सं-सारका व्यवहारादिक अच्छीतरहसें समझकर करके अपने मनका मनोर्थ पूर्णकरले बिलकूलही कमउमरमें कन्याका विवाहकरदेना तो घातकरनेतुल्यहै देखो इससमय सर्वत्रदेसमें रेल बोटज्याझ सें बिलायत और अपरदेशोंतक जाना सुगमहोगया और जहाँ परंदोंकाभीगुजा

रा नहीथा वहाँतकमनुष्य पहुचनेंलगे और छोटेरबचोंका विवाहकरके पिता पूत्रकों बेपारादिकवास्ते लेके देशाटन गमनकरतेहैं वह ऽस्त्रिःपूर्षोके समझे पीछेभी मिलापहोना दुर्लभहै क्योंके देशाटन दूरकामामला और लोभकी जालमें फसना निनानवेंके फेरमें लगेरहतेहै इधर नानाप्रकारके रोगोंने जालफेलाया बस कमउमरमें कालके पंजेमें आगया तो फिर उसअबलाका ईस्वरही मालिकहै मनका मनोर्थ अपूर्णही रह जाताहै ॥इसवास्ते विवाहकाभीकुछनयम कायमहोजाय के कन्याका विवाह समझेबगेर नहिंहोय और विवाहकीये पश्चात दोनोंका एकत्रप नहोंनेका भी नयम (गोंना) सर्वत्र लोक मान्य होनाउचितहै यहाँ कुछहास्यकीबात उपन्नकरना मुनासिबनहीं जरा कलुकाळकी प्रचंडधारा कों देखकर विचाररूपी नयमकी नवकासें अबला (कन्या) वोंकों सहायतादेना चाहिये ताकि अल्पजीवनमें अपना मनोर्थ पूर्णकरले इसकार्यमें हाश्यकरना केवल मूर्खताहै क्योंके आयूका नयमनहीं (कीयासो काम०रहगया तो बेकाम०) (पुन्ह) विवाहादिकोंमें अपने लोग द्रव्यभी हैसियतसें जादे खरचनें लगगये यहभी स्त्रियोंके हक्कमेंबुराहै क्योंकी उससमयमेंतो प्रचंडवेगपे चढकर दुसरेलोगोंकी बराबरीका उत्साहसें खर्चदेतेहैं पर आखरकों चौटीका पसीना एडीतक आयाहीरहताहै फेर यातो देशाटन करनाहोगा या घर, जर, (गहना) या नाम बदनामकर परायामालहर या बेनबेटी भानजी मित्रकों जुहार, खड्डा भरनापडेगा और ग्रहकार्यके नित्यखर्चकों भीतंगकरना पडेगा तबभी उसद्रव्यहानी जोहैसियतसें अधिककीहै बडीमुसीवतसें बराबरहोगा ॥ जोअगर उधारही मिलगया तो पीछाभी देनापडेगा और पासद्रव्यहै वो कुलखर्चकरदिया तो फेर कमानेका भी कार्यकरनेमें हानीहोगा क्योंके द्रव्यसें द्रव्य पैदाहोताहै (केवल शरीरकी महनतसें तो पेटहीभरेगा इसवास्ते हैसियतसें अधिक खर्च-

करना भी बुराहै यहभी कायदा पंचायतके जरियेसें कायमहोना मुना-
सिबहै और पंचोंकों भी चाहिये कि धजा धौवती नारेल सुपारिये
पतासे सिंघाडे इत्यादि रकीणोंमें बेवाजबी कपडे नहींछीनले क्योंके
यहपैसा बेटीकेघरकाहै एसानहोकि रीत रसम में विचारे सगेका घर
पराया होजाय नेग जोग बाजबी निरभाउ लगनेदेना यह पंचोंका धर्महै
सबका दिन एकसानहिंरहता ए हरदमविचारकर पंचनिरभाऊ नयम
अपने २ ग्राम प्रथावत कायमकरें तासें कीर्तिप्रकाशितहो ॥ और घर-
धणीं भी अपनीइज्जत व हैसियतका हरदम विचारकर खर्चकरें कि-
सीकी बरोबरीकर फेरदुःखपाना उचितनहीं (पुन्ह) बरातमें बहो-
तसे मनुष्य लेजानेका क्या सबबहै एभी समझनाचाहिये एकतो वहां
कुछ सिसपाल कृष्णादिकों के युद्धहुवाथा इसतरहसें झगडेका संभवहै
या कीर्तिबढानाहै(हांस्वे जातीके पूर्ष अधिकहोना येठीकहै पर अन्यलो-
गोंको लेजानातो (जैसें गाय दोय गंडकोंकूं डालना) बेमुनासिबहै
चाहिये कि दुतरफे अपने ग्रामके व सगा सनेही भाई मित्र दस
बीस मनुष्योंकी समकितीसें विवाहकर लेना जिस्सें जातीका
बखेडा किसीप्रकार नहिंहोय केवल साक्षीभूत (गवाह) है इसी-
कारनसें दुतरफे बिरादर इखट्ठे कीयेजातेहैं इनके समक्ष विवाहादि
कार्य हुवा तो फेर बर कन्याके परस्पर व्यवहारमें किसीप्रकारकी
हानीनहीं केवल येही सबब पायागया कदापी अधिक मनुष्य
ही लेजाना चाहो तो भी दुसरोंकी बराबरीकर फेरफजीतहोना मुनासि-
बनहीं जैसै यार दोस्त बहन बेटियोंकों हौंचहाँच बजारसें भी उधार ले
वडीसीबरात बना इज्जतबधाईतो वो भी इज्जत अलपदेरकीहै आखर
कों देनांहींपडेगा और साफउत्तर देवेठेंगेतो उसकीर्तिसें यह अपकी-
र्तीका दाग केई पीढियों तक नाहिं धुपेगा ॥ तो चाहियेकि प्रथमही वि-
चारकर काम अपनी हैसियतमुजबकरे आमदनी मुजब खर्चकरना

चतुरमनुष्योंका कामहै जैसें (जेता पाव पसारिये तेती लंबी सौड)
विनाविचारे करोगेतो भीतरका बट्टा कभी उपरनहींआनेदेगा नन्ना
भनोगेतो इज्जतमें हांनी ॥ और सरमसें मुंहछिपावोगे तो गुप्त आहसें
भस्म हो जींदगीसें हात धोवैठोगे बस अब जादालिखना हमारीभूलहै
इसलिखनेपर अल्पबुद्धिमनुष्य जानेंगे के लिखनेवाला बडा कमहि-
म्मत निरधन कृपणहोगा तो खैर मुनासिबमें आवेज्यूं समझो पर भी-
तरका घावतो सब अपने २ दिलका दिलसें जानतेही होंगे मेरा लिख-
ना तो यहीहैके घरकी सरधा मुजब खर्चकरो लोगोंकी बराबरीकर फेर
दुःखपाना मुनासिबनहीं ॥ इसपें कोईकहेगाकी फेर कमाना किसवा-
स्तेहै पूत्रजन्मोत्सव विवाह और माता पितावोंका खर्च वहां जो द्रव्य
नाहिं खरचा तो फेर कमानाँहीं व्यर्थ है वोठीक पर समझनेकी बातहै
कि पैसा जिसबारीकीसें पैदाहुवाहै उस्कों वैसेही उत्तम कार्य में हैसि-
यतमुजब खरचनाचाहिये अगरकिसीके धाडेकाही माल हाथलग-
गयाहोतो उसीतौर उडादो क्योंके द्रव्यआगमनमें महनत नाहिंहुई तो
फेर खर्चकरनेमें भी विलंबकरना मुनासिबनहीं पर धाडाभी हरवख-
तहातलगनेकानहीं इसबातोंपें द्रष्टांततो बहोतहै सोकहांतकलिखें इतनेंहीं
लिखनेकों स्वजनपूर्ष वाचके हासी नहींकरेंगेतो में बडा मोटा इनाम
बखसा मानूंगा (पुन्ह) आजकल उत्साहोंमें बहोतसा बारूद उडाते
हैं तहां अवलतो अग्नी प्रकोपसें(आगलगकर)मकानादि अनेक पदार्थों
व मनुष्योंतककी हानीहोजातीहै द्वितीय सूक्ष्मजीव असंख्यात धूम्रा-
दिसें नाशहोजातेहैं केवल द्रष्टीकों आनंदतो इतनांहीं के बतीदिखाई
और चिरकालमेंही भडाभडहोकर आखरकों धूम्रहीधूम्र बस नफा-
नुकशानका हिसाब इन्साफके काँटेमें तौलकर करदेखो (पुन्ह)
रंडियोंके नचाने व बाजंत्रियोंसें बाजेबजवाने में भी वैसाहीखर्च पर
यहठीकहै विवाहादिकहै वो खुसीका दिनहै इसदिन सबलोग खुसीहो-

नाचाहिये इसवास्ते अपने घरानेंमुजब खुसीभीकरना उचितहै परंरंडि-
योंकूं नचवाना उससमय अपने यारदोस्तोंसें रुपे दिलवाना येक्याबातहै
अपने घरसेंखर्चना सोतोठीक और उधारीहाँती मित्रबिरादरोंसें बरततेहो
तो. बखतसदैव सबका एकसा नहिंरहता जब खर्चनेका बखतहै. और
मुफलसीकाजोरसें दबाहुवाहै तो. उससमय उलटी अपकीर्तिका तिलक
लगेगाबल्केउधरवाले मित्रोंके मुखसेंभी यहवार्ता प्रगटहोगीके जवइनके
घरपे उत्सवथाजबहमनें इतने और उतने रुपे रंडियोंकों दियाथा आज
हमारेयहां आकर इनोंनें कुछभी नहिं किया. तो वहां उनमित्रोंको
निरमान्यहोकर नीचेदेखनापडेगा. तो आनंदकार्यमें मित्रोंकों अना-
नंद प्राप्तहोना. ऐसीलेवादेवीहै सो यहखर्चकरवाना अनुचितबातहै देखो
ऐसे विवाहोंमें अपने घरकी बहन बेटीयोंकों तो सूकीही निकालदे
और कंचनी कलावतोंकों हजारोंरुपये मँनदे पर वोभी खरच अपने
घरानेकी रीतिकों समझकर गुंजासमुजब करनालाजिमहै एसाकरना
मुनासिबनहीं के आगे हमारे ऐसें और वैसें होताआयाहै और हम हमे-
सेंसें ऐसेंही करतेआयेहैं जब हमारालिखना और आपमित्रोंका समझ-
नाव्यर्थहै ऐसेंही चलनेदो पर हमारीरायतोयहहै के सबकाम अपनें
घरानेके रीवाज व गुंजास मुजब समझकर करना दूसरोंकी बराबरी
करनेमें आखर दुःख कष्टकी उन्नतीहै ॥ नुखते महोत्सव स्यादी वि-
वाह पुत्र जन्मोत्सवादिक में खर्चकरना इसीवास्ते कमानाहै पर संपूर्ण-
धन एकहीकार्यमें व्ययकरदेना तोफिरकोई तंगीकाबखत आगया तो
फिर हिरणकीसी छक्काकूद चौकडियां भूलकर कांनभींच ग्यारतीयाँ
मनाते नजरआवोगे इसवास्ते पहलेसेंही सह्मलकर चलना ठीकहै
इसलिखनेकों केईक अतिदीर्घबुद्धिःजन मनुष्य (अत्यंतबुद्धिसें
अजीर्ण होगया हो वहमनुष्य) मेरेकों दरीद्री वा कम हिम्मत गिनेंगे
क्योंकि इसनसियतमालामें कुल द्रव्यका व्यय कमहोनेका उपाय लि-

खाहै पर हेदीर्घबुद्धिः अति धनवानों यह मेरालिखना अनुचित मत-
समझो मेनें खुद नजरोंसें देखाहै कि जो अंधे घोडे चढ हजारो लुटा-
तेथे वो रोटीसें मोहोताज हातपसारे फिरतेहैं द्रव्य व्यय करनातो
सुगम रीतीसें ही होसक्ताहै पर द्रव्य पैदाकर संग्रहकरना अपनेहात-
नहींहै जब कोईकहेंकि जैसाहोनाहोय वैसाहोगा वो ठीकपर ऐसासम-
झना संसारत्यागी वितर्कजन योगीपुर्षोंका कामहै जिसकठिनतासें
द्रव्य उपार्जन होताहै वैसेहीं श्रेष्टकार्योंमें व्ययकरना चतुरपुर्षोंकाका
महै पर यह सब खर्च करना तो अपनी २ खुसीसें है परंतू एक जबर
खरच गुरॉकेदापेका औरहै पर यहाकुँछ थौडासालिखताहूँ हैतोविचार
नेकीबात परंतू पक्षबाँधकर लौग नाराजहौजानेकाडरहै इसवास्ते किं-
चितही लिखते है (समझनेंसें इतनांहीं बहोत)

प्रथम विवाहसमयका रूढीमतवर्णनकरताहूंके

लग्न चँवरीसमय ब्राह्मण अपनें भाईवंद जादाआणेसें और बढजानेकेभ
यसें जलदीही हतलेवा गणजोडा करके बेदीकेपास स्थितकरदेतेहै और
बहोतहीसिघ्र सबकामनिमेटकर अर्धविवाहकरके जीवणेसें डावेबाजू झट
पट विठादेतेहें क्योंकी कोई भाईवंद आपडेतो दापेमें पाँती पडालेवें इ
सवास्ते वहाँतक्कातोकाम जलदीसेंहीं निमटालेवेंगे कूछपूजन किया
और कुछनकिया सटपटकर जीवणेसें डावेकराय निश्चिंतहोवेठतेहेफेर
तो पैसोंकेवास्ते ठौड२सिरपचीकरके दिनउगादें वहाँतक भी विवाहपूरा
नहिंकरेंगे और बैठेसुलफा तमाखू हुक्के वेफिकर उडायेकरेंगे क्योंकि
भाईवंदोंका भयतो जीवणेसें डावेबाजूलियेपीछे दापेमेंबटपडनेका मिट
हीगया पर देखौ इसकाँममें यजमानके घरमें क्या २ फायदेहुये यह
विचारकरनाँचाहिये प्रथमतौ हतलेवाजुडायेपीछे गौत्राचार चँवरचाँमेंसु
नातेहै तथा केइगावौंमें तौरणजीतेपीछे वा वरणामेंभी गौत्राचारसुणातेहैं

तौ देखौ यह गौत्राचार किसबखतसुणानाँचाहिये और गौत्राचार सुनानें का हेतूक्याहै तौ हेस्वजन प्रियवरमित्रौं इसगौत्राचार सुणनेंका हेतूतौय हहै के बर कन्याँ दोनौंही एकगौत्रके नहिंहोजाय याकारनसें गौत्राचार सुण्या सुणाया जाताहै और दोनौंतरफके भाईबंधु वृध्धपुरष भी इक्खटे हौतेहैं तौ सपरदान सगाईकीवखत गौत्राचार सुणना सुणाना उचितहै अर्धविवाह तौहोगया वा तौरणजीतलीया फेर गौत्राचारसुणना सुणाना क्याकामआवेगा जब वर कन्याँ दोनोंका एकहीगौत्रमिलगयातौफेरक्याइलाज है क्योंकी अर्धविवाहतौ होहीगयायह गौत्राचार प्रथमसुणनाउचितहै पुन्ह एक औरभी शास्त्रविरुद्ध वात हौतीहै के हतलेवा जलदी जूडायकर जीवणाहाततौ गुतायदेतेहैं और पीछे डावाहातसें देवपूजन कन्याँभूदान गऊदानादिसर्वकार्य बामहातसें करवातेहैं और दक्षणहात हतलेवामें ताकीदीसें फकत गुरु भाईवंदोंके जादाआजानें और दापेमें बंटपडजानेंके भयसें दक्षिणसे बामभागी तुरतही करादेतेहैं वहाँ यजमानका शुभकार्य पूजनादि दक्षणहातसें काँहाँहुवा पर गुरुलोगौंकातौ दापामें बंट बचहीगया जरासोचनेकीबातहै के वामहातसें सुभकार्य पूजनादि करना कोई ग्रंथमें नहिंलिखा यहाँ प्रमाण प्राचीन ग्रंथौंकाहीमुख्यहै ॥ पुन्ह कंन्याँ दान भूदान गउदानादि पूजन वामहातसें कार्यकरनाहौताहै फेर उसहातकौं गुरु ब्राह्मण वेदियाजी शुद्धकरवातेहैं सो यहाँ बडीहास्यकी वात हैके यहडावाहस्त पहलेही वो शुद्धहोगा वहवर मलमूत्रसें रहितहोके उजलाई वामहातसें नहिंकरताहौगा क्योंके वामहात जो अशुद्धहौतातोपूजनादि शुभकार्योंमें प्रथमही शुद्ध करवाते पुन्ह औरभी वहोतसें हरजहै कहांतकलिखें क्योंके साचीकहनेसें लौगनाराजहौजातेहैं परंतू विवाह विषे गुरुलौगोंकी वहोतसी धूमधामपाईजातीहै इनका कुछ सज्जन ब्राह्मण अपनेंकौं विचारकरना चाहिये क्योंके बेवाजवतकलीफौंसें यजमानौंका हृदय कंपितहोकर गुरुभाव लूतहोजाताहै यह कलुकाल

समयहै इधर राज्यकायदाभी आमआनंदकेवास्तेहैं (पुन्ह) एक और गुरुलोगों ब्राह्मणोंकी महान् गलती पाईजातीहै के केईक ब्राह्मण यजमानकों गौत्राचार कानमें सुनातेहैं इसका क्या प्रयोजनहै तो जाना गयाके यह गौत्राचार इनब्राह्मणोंके भाईबंद नहिंसुणले कारन सुनलेगा तब सीखजायगा तौवह वंट दापेमें बंटानाचावेगा तो यहां हजारां प्रस्नहै कि भाईबंद हो गा वह गौत्राचारजानें वा न हिंजानें वंटतो बटायही लेगा परंतू आपलोग गौत्राचार कानमें सुनातेहो इस्मेंहमकों भ्रमखडाहोताहै सुबाहैके गौत्र आपहीकों यादनहीं और महेश्वरीकालडका भोलाभाला गौत्राचारमें क्यासमझे और क्यायादहै आपनें कानमें गौत्राचारकी जगँहँ फोतराचार कहदिया तो वोभी मंजुरकिया व उस्के भावे वोहीसच्चहै और एसेंही गौत्र बढकर सेकडो वल्के ४०० तरहके गौत्रनामहोगये बाकी प्रथमतो राज कुली ३६ के गौत्र ३६ छतीसहीहोगा पर बहोत्तर उमरावोंके ७२ खांप महेश्वरीहुये तो बहोत्तर गौत्र समझो पर यह जादानाम बढनेका मकसद केवलयही गूप्तकहनेसें पायागया परंतू प्रगट गौत्राचारसुणनेमें दुसरा ब्राह्मण सुनकर भाईबंद बणजाताहोगा एसाकुछहोय जबतो कानमेंभी नहिंसुणाना और मुखसेंभी उच्चारण नहिं करणाँ केवल मननकरके प्राणायाम्यही करलेनाउचितहै क्योंके इस गौत्राचार उच्चारणसें भाईबंदखडाहोकर दापामेंबंटलेलेवे यह तो आपकेहकमें बडा नुकसानहै इसहालतमें तो बरके कानमेंभी कहना मुनासबनहिं पर यहगुरुलोगोंकी केवलवोहै जिस्कों यहाँक्यालिखें इधर हमारे भाई बंद विचारे बृतकरके आसावंत गौत्राचार सुणनेकों आयेथे उन्होंनें क्यासुना वहँ बडे बुढे मनुष्य इसवट्टेहोंना इस्का सबब तो यहथाके गौत्राचार सुणके यादरक्खें के अमुकगौत्र हमाराहै और अमुकगौत्रवाले हमारे सगेहैं गौत्राचार सुनानेंका प्रथमकारनतो यहीथा के दोनोंके गौत्र एकनहिं मिलजाय इसवास्ते चाहियेकि गौत्राचार

सगाईकी व सपरदानकी समय सुणायाजाय उचितवाततोयहहै
(पुन्ह) और एकदुसरा दापेकी समयका गभौला फेर इस्सेंभीजादे
मालूमपड़ताहै वह यहहै के विवाहादिकोंकीसमय इनब्राह्मणोंमें कोई-
कडाकी भाईबंद मच्छ आपड़ताहै वह दापेके रुपे किसीदुसरेभाईकों
नहिं ठहरानेंदेताहै और जो कोई दुसरा भाईबंद ठहरायलेवे तो आप
नहिं मानताहै और आपठहरायलेताहै जब दुसरे भाईबंद गरीबोंकों जैसें
समझे वैसें समझायलेताहै बलके डराय धमकायकर दाबलेताहै वह डाकी
मच्छ गुर जजमानकेपास दापेजितने वा आधेरुपे सूंकके पहलेहीलेलेता
है जब दापाठहरनेका कामपारपडनेदेताहै तो देखो यहां विचारकरनेंकी
बातहै के अपन माहाजनही हरठौर सूंकेंदेकर उनमच्छोंकों बढायदेते हैंतो
यहांसूंकदेनेका क्याप्रयोजनथा क्याजंगलमें किसीनें फासीडालीथी
क्या दुराचार्योंसें लुटे जातेथे तथा कोईदुसमनोंसें छुटनाथा या जमकिं-
करोंनें घेरादियाथा देखो अपनेंघरकेतोगुरु और गनीमोंजैसाकामकरे
पुन्ह हरवखतअपनेंसेंलेनेकीहीआसारक्खे इधर अपनलोग अपनें गुरु
जानकर देनेकीही आसारखाकरतेहैं परंतू विवाहादिकोंमेंतो खुसवख-
तीकीवखतहै क्या दोरुपे जादा और क्या कम हम इसबातसें नाराज-
नहीं पर बारूदउडाना और कंचनियोंनचाके द्रव्यव्ययकरना जिस्सें
तो यहबहतरहै कभीनकभी रसोईतो बनाकर जिमावेंगे देखो यहबाततो
हुई पर एकओर नवीहासीकी बातहैके कर्मकांडविषयमें देखो गुरुलो-
गोंकों क्या अच्छिवखत यजमानसें स्वारथकरनेकों मिलती है देखो
इधरसेंतो एकआदमीं घरसें मृत्युपावें उधर विचारेकों जातका मनाव-
णाँ करणेंकी वखत व पावणें आते हैं उनसें बातकरनेकामौका एसी
समय इनगुरुवोंनें कैसा रोका के अन्ननहिं खाना व पानी नहिंपीनाँ
और पिंडनहिंउठाना बैठेरखना घरके सबकामोंसें हरकतकरदेनां
गागरि (दोवणी) केपास काचेतागेसें बांधके यजमानकों बिठारखना

और इतनें और उतनें रुपये दापेके माँगके अडाबैठनाँ इस्का भी जराविचार गुरुलोगकरेंगे और इसलिखनेंपर नाराजनहिंहोंगे यहबात समझकर विचारणेकेवास्तेलिखीहै जादालिखनेका मेरेकूं क्याप्रयोज-नहै दापाके दसरुपे जादाकरलेतो भाईबंदसब गुरुलोगबाँटखाय पर इस्मेंयजमानकी सरधा देखकर कम जादा ठहरानेका जराविचाररखना लाजमहै पर मच्छगुरुजी डरा धमकाके अलगही अपनाकाम निका-ललेना यह काम कुछ अच्छा नहिंमालूमहोताहै इसबातकों सर्वपंचजा नतेहैं और जानकर फेरबी यह एकरूडीपकडरक्खीहै कारन यहाँकुछ फगतमच्छगुरूजीकीही गलतीनहीं कुछ पंचोंकीभी चेष्टा लडानें भि डानेंमेंहोगा नाहितो पंच रकीणाँ दापेका क्यूँनहिंबांधते क्या पंच रकी णाँ नहींबांधसकतेहैं क्या पंचोंकी बांधी कार कोई उलंघनकरसक्ताहै गुरू लोगतो अपणेहीहै सो पंचोंका यथोचित बाँध्यारकीणाँ मंजूरहीकरेंगे दे खो राजा और इश्वरभी पंचोंका कीयाकाम मंजूरकर लिहाजहीवरतते हैं तो पंचोंकों उचितहैकि दापेका रकीणाँ मुनासब समझकर जरूरबाँधें प रंतू पंचोंमेंसें सिरेपंच बडेसेठजीकी कुछहाजरी वहमच्छगुरूजी साझते होंगे तब यहमदतहै पर यहमदत जातके बेटेकों तकलीफदेनेंकी अ पनेंही लोगोंकी पाईजातीहै इस्का पंचोंकों विचारकरनाचाहिये और दापे का बंदोबस्तबहोतजगैंहै पंचोंनें बांधरक्खाहै जैसाही बंदोबस्त सबज गैंहके पंच बाँधेंगेतो कहींभी हल्ला दंगा फिशाद व तकलीफ हरकत किसीकों नहिंहोगी और यजमानोंका प्यारभी अपनें गुरुलोगोंपर विशे षबढेगा एसी मृतकसमय यजमाँनकों तंगकरनेंसें ह्रदयस्थान कंपितहो कर गुरुभाव लुप्तहोनेंकी वृद्धिहै तोयहाँ गुरुलोगोंकों चाहियेकि जरा द यालुतासें घरकीसरधामुजब दापालेनेंकी आसारक्खें और अपनी शां तबुद्धिःसें यजमानोंकों आशीर्वाद देंगे ताकरिके अपनें लोगोंमें विशेष आनंद फलप्राप्तहोगा (देखो विचारकरनेकी बातहैके इस भरतखंडमें मा

हाजनतौ सेकडौं जातीकेबसतेहैं पर यहसारीबारहन्यातके माहाजन कुछस्वधर्ममें और शुद्धाचारमें निपुण और पुन्यातमाहै परंतू सब माहाजनौंमें आजकल कुछ अपन महेश्वरी अपना घौडा अगाडी निकालतेहैं जैसीही गुरुलोगोंकी धांधलहै पर अपनेंलोगोंमें बरदासहै जैसी औरजातके माहाजनौंमें नहिंपाईगई अब न जानेतौ अपनेंगुरुलोगोंकी सामर्थताहै नजानेंपंचौंकीगलतीहै न जानेंक्याहै पर विचारतौ दोनोंकों करनाठीकहै और पंचौंकाधर्महै के हरबातौंका बंदोबस्त एसाकरेजिसमेंसबका नृभाव अच्छी सुलभरीती और सुगमतासें हौजाय यह मेरीतौ विनंती सहित लिखना समझनेंके लियेहै फेर सबतरहका बंदोबस्त करना सबपंचौंके अखतियारहै पर इनबातौंका बंदोबस्त जरूरकरना उचित है (जिस्सें ज्ञाती भाइयोंकी अनेक तकलीफें मिटें)

॥ श्रीः ॥

(दत्तपूत्रविषयप्रस्न)

(वार्ता) यहदत्तपूत्रकेलेनेमें प्रस्नकीयेहैं ताकाउतरमें जुदा२नहिंलिखा कारण सर्वदेशीप्रथा एकसाँनहीं कहींकतो धर्मशास्त्र मनुं याज्ञवल्क पाराश्वरादि स्मृतियोंके प्रमानसें दत्तकलेतेहैं और कहीं२देशप्रथा फगत रूढीहीपडरहीहै पुन्हकहींकहींक स्वैगोत्रसिवाय कंन्याँशिशु (दोहिता) कौंभी दत्तकलेतेहैं यह अपने२देश व सहरौंकीप्रथाहै सर्वदेशी एकप्रथा नहींपाईगई और धर्मशास्त्रमतानुसार प्रस्नलिखदेता परंतू सर्वदेशके महेश्वरीमान्य मानणेंकीआसानहीं कारन देश२ कारूढीमत जुदापडगया यहीकारनसें केवल दत्तपूत्रके प्रस्नहीलिखेहैं पुन्ह यहीप्रस्नलिखके मान्यवर सेठबिसनलालजी मिणियार की मारफत जोधपुर माहेश्वरीसभामें श्रावणशुक्ल१संवत१९५० कौं पेसकीये तौ वहाँ वैश्यकुलभूषण माहेश्वरीसभा समग्रहौकर यहप्रस्नबाचेगये तबसर्वविद्वज्जनमंडलीकौं अतिआ

नंदप्राप्तभया और उक्तसभासंपादिक महाशयोंकी यहीराहाहुईके जोम्हें ऊपरलिखआयाहूँऐसेंहीं प्रस्नछापकर प्रसिद्धकरणाँ फेर सबकी अनुमति मंगवाकर सर्वदेशमान्य उत्तरलिखणाँयोग्यहै यह आज्ञामिली और अन्यसभावोंसेंभी यहीआज्ञाउपस्थितहुई तब वैसाहीप्रस्नलिख आपमाहाशयोंकी द्रष्टीगोचरदेके सविनय प्राथनाकरताहूँके यथोचित सर्वमान्य उतरलिखभेजें ताकरिके मेरीअभिलाषापूर्णहो और सर्ववैश्य माहेश्वरी प्रियमित्रोंको दतपूत्रबारेमें सहायतामिले.

(अथदत्तपूत्रप्रस्नप्रारंभ)

१ किस्कापूत्र किस्कोंगोदीलेनाँ

२ दत्तकमें क्याक्या रीतरसूमहोनाँ देशपृथा वा धर्मशास्त्रमर्यादादी.

३ पूत्रको दत्तकदेनेंमें किस्काहक्कहै (पूर्षकावा स्त्रिका)

४ दत्तककिस२कीआज्ञासेंआवे.

५ पूत्रको माता दत्तक देसकेक्या.

६ माता पूत्रदोयहै मातापूत्रको दत्तकदेवे औरकरजेदार मनाकरे कि हमारा करजाचुकावो तो मन्हाँकरसक्के यानहीं.

७ माता पूत्रकोंदत्तकदेवे और दुसरापुत्रनहींहोय तब करजेवालेकाहक्क दत्तकलेनेंवालेपे लागूहोसक्ताहैक्या.

८ वडाभाईकी आज्ञावगेर छोटा भाई स्वेइछ्यासें दत्तकजासक्ता हैक्या

९ छोटाभाईकीआज्ञाविना वडाभाई दत्तकजासक्ताहैक्या

१० भाई भाईजुदाहोके हिस्सेका धनसमेत दत्तकजासकेक्या

११ भाई भाईकों दत्तकदेसकेक्या छोटेकोंवडा या बडेको छोटा.

१२ वडाभाई छोटेकोंदत्तकदेते भाईबंधमनाकरसक्ते हैक्या

१३ पिता अकेलाही पूत्रकों दत्तक देसक्ताहैक्या

१४ भाईवंध दाइयेदार मृतकमातापिताके एकहि पूत्रहो दत्तकदेसक्तेहैक्या

१५ अपनीस्वैइच्छासें दत्तकजांस-
क्ताहैक्या

१६ च्यारभाईभेलेरहते एककंवा-
रा दत्तकलेसक्ताहैक्या

१७ अकेलाई कंवाराहौय दत्तकले
क्ताहैक्या

१८ एकहीहौ नपुसक (हिंज) दत्त
कलेसक्ताहैक्या

१९ नपुंसक परण्याहुवाहौय एक-
हीभाई वहदत्तकलेसक्ताहैक्या

२० दौभायोंमेंसें एकविवाहिताभाई
नपुंसक दत्तकलेसक्ताहैक्या

२१ सर्वअंगहीन घरमें अकेला
हौय दत्तकलेसक्ताहैक्या

२२ एकनेंप्रथमविवाहकीया संता-
ननेंहोते दुसराविवाहकीया पु-
न्ह संताननेंहोते दत्तकलेतौ-
किस्केनामसेंआवे स्त्रिलघुके
नामसेंदत्तकवजेगा या वडी
स्त्रीकादत्तकवजेगा,

२३ पतीकायमहौ दोनूँअपूर्णीस्त्रि
याँ दौयदत्तकलेसक्ताहैक्या

२४ एककेच्यारपूत्र च्यारूँकावि
वाहकरदिया उसमेंसेंएक लू-
ल्हा लंगडा अंधा बहरा सर्व-
इंद्रियोंसेंहीन केवलएकशिशु-
नइंद्री विषयकरणेंनिमित का-
यमहै दत्तकलेसक्ताहैक्या

२५ दोयसासू एकबहू तीनूँविधवा
दत्तककिस्केनामसेंआवे

२६ दोयसासू एकबहू तीनौंजुदा-
जुदादत्तकलेसक्तीहैक्या

२७ तीनभायोंमें एकस्वर्गवासीहो-
गया उस्कीवेवा भेलेरहते देवर
जेठोंकीआज्ञावगेर दत्तकले-
नाचाहे तौ लेसक्तीहैक्या

२८ एकके च्यारपूत्रौंकी च्यारूँ-
वेवा सुसराकेभेलेरहते सुसरा
कीआज्ञावगेर च्यारूँहींजुदा
जुदादत्तकले तौ लेसक्तीहैक्या

२९ एककेच्यारपूत्रौंकीवेवा सुसरा
अपनेंनामसें दत्तकलेसकेक्या

३० एसेंहीं एकवेवापुत्रवधूकेनामसें
दत्तकलासक्ताहैक्या

३१ प्रथमदत्तकलीया वादमेंविवा-
हितास्त्रिकेपूत्रहोगया तौ वह
लीयाहुवा दत्तक पीछा फिर
सक्ताहै क्या

३२ च्यारभाइयोंमें एककेपूत्रहौते
दुसरेभाईवंदोंकापूत्र भाइयौं-

कीआज्ञाविनाँ दतकले तौ ले-
सक्ताहैक्या

३३ दिवरजिठानीं दोनूँविधवा भे-
लीरहते एकदतकलेसकेक्या

३४ एककेच्यारपूत्रोंमेंएककीस्त्रि-
वेवा ताकौंसुसरालधुपूत्र (दे-
वर) दत्तकदेवेतौदेसकेक्या—

३५ च्यारपूत्रौंमेंदौयविधवा उनकौं
सुसरादोनौंलघुपूत्रौं (देवरौं)
कौंदत्तकदेवे तौदेसक्ताहैक्या

३६ दौयऽस्त्रिवेवा वडीकेदौयपूत्र
छौटीकेएकपूत्र तीनूँहीपरणेंहु
ये वहछौटीकापूत्र कालवसहौ
य तवछौटीसासू आपकीवहू
केदतकलावे तो देवरजेठोंकी
आज्ञाविनलासक्तीहैक्या

३७ दौयसासू वेवा एकछौठीसासू
केपूत्रकीवेवा उस्केदतकलेना
हौय और वडीसासूकेपूत्र उम
रमेंलघुहौय तव वहदेवरसंज्ञक
हौके दतक आसक्ताहैक्या

३८ पिता पूत्रकौंदत्तकदेवे पूत्रइन-
कारकरे तौ जवरीसेंदेसक्तेक्या

३९ पुत्रस्वैइछ्यासे दत्तकजावै पि-
ताइनकारकरै तौ कैसें

४० दोयपुत्रौंमें एकदत्तकदेवे दुस-
राफौतहौजावे तवफौतहोनेंवा-
लेकीवेवा दत्तकलेवे वहाँसुस-
रारौकसक्ताहैक्या

४१ दौयपुत्रमें एकदतकदीया दुस-
रा विवाहिताफौतहुवा वृधपि-
ता दतकअपनेंनामसेंलेनाचाहै
और वेवाबेटेकीवहुमनाँकरे तौ
रौकसकतीहैक्या

४२ दोयपुत्रोंमें एकदत्तकदीया दु-
सराकँवारामरगया सिरपेकर-
जातो दत्तपूत्रदियाउसपे लागू
हौसक्ताहैक्या

४३ दोयपुत्रोंमेंसें एकपुत्रकँवारेकौं
दत्तकदेते वोहोराकर्जदाररौके
तौरौकसक्ताहैक्या

४४ दौयपुत्रपरण्याँहुवामेंसेंएककौं-
दतकदेतेवोहोरारौकसकेक्या

४५ दौयभाईमेंसेंएकभाईस्वैइछ्या
सेंदत्तकजावेतवदेणाएकपेहेका
यमरहा या गयाउस्पेभीलागू-
हौसक्ताहैक्या

४६ प्रथम स्त्रिअपूत्र दुसरीकेपुत्र
वडीअपूत्रणीदत्तकलेसकेक्या

४७ प्रथम स्त्रिकेपूत्रछोटीअपूत्रणी-

दत्तकलेसक्तीहैक्या

४८ एककेपूत्र दूजीअपूत्रणीं पती-जीवता वहपती अपूत्रणींस्त्रि-केदत्तक अपणें हातसेंलावे तौ लासक्ताहै क्या.

४९ कंन्या परणायके घरजँवाई र-खलेतेंहैं यहभीएकप्रकारका-दत्तकसंज्ञाहै इस्कीरीतरसूम-क्या क्या होनाचाहिये.

५० घरजँवाईरखना मुनासबहै क्या

५१ भाणजा दोहिता दत्तकलेनेमें क्या २ हानी और क्या क्या फायदा है.

५२ भाणजा दोहिता दत्तकलेते स्वैगौत्री भाईबंद बर्जसक्तेहैक्या

५३ नजीकीभाई बंदकेलडकाहोते दूरकापूत्रआसक्ताहैक्या.

५४ भाईबंदकेलड़कानहीं और दू-रकालातेरौकसक्ता हैं क्या.

५५ अपूत्रमातापिता कन्याकों जर जेवर जमींन देसकती हैक्या.

५६ च्यारभायोंमेंएककीबेवा भेले-रहतेदत्तकलेनाचाहै देवर जेठ इनकाकरे तबउस्के पतीका कर्मकांड किस्केहातसेंहोनां.

५७ च्यारभायोंमें लघुभ्रातृस्वर्ग-वासीहोजाय और तीनूँवडे-भाई अपूत्रहोय वह लघुभ्रातृ-कीवेवा दत्तकलेनाचाहे तबजे-ठबोले के हमारेभीनहीं तूँक-सेंलेगी वहस्वर्गवासी लघुभ्रा-तृका कर्मकांड किस्केहातसें-होगा क्योंके सबभाईवडेहै.

५८ च्यारभाईमें एककीबेवा धन-पाँतीछोडके दत्तकलेतीकैसें.

५९ च्यारभाईयोंमें एककी बेवा देवरजेठोंकों कहै कि यातो तुमदत्तकदो यादुसरालयानेकी आज्ञादो जिस्सेंमेरापतीका-नामरहै तौदत्तकविषय उजर-पोंहोचसक्ताहैं क्या.

६० एकएकपूत्रतीनूँभाइयोंके चौ-थेकीवेवा अपूत्रणी दत्तकलेना चाहै और कुलव्यवहार च्या-रूँभाईकाभेलाहै वह दत्तक-लेसक्तीहैक्या.

६१ एकनेंदोयव्याहकीये दोनोंके-एकएकपूत्रहुवा एकपूत्रकेपौ-त्रहुवा वहपरणायेबाद पूत्रऔर पौत्र दोनोंकालवसहुये व. सा-

सूसौभाग्यवती पतीकीआज्ञा विनाँ अपनेंपूत्र वा पौत्र वा प्रपौत्र दत्तकलेवेतौलेसकेक्या

६२ एककेदोयस्त्रि दोनोंसेंप्रगटदोयपूत्र दोनोंव्याहे एकपौत्रवौभीव्याहे पुत्रपौत्रकालवस उस्केदत्तकलावे तब पिताकीतो आज्ञा और पुत्रइनकारीहोय तो दत्तकआसक्ताहे क्या.

६३ एककेदोस्त्रिसेंदोयपुत्र दोनोंकोंव्याहे एककेपुत्रहुवा व एक अपुत्रकालवसहुवा उसपुत्रकी बेवा सुसरा और देवर व देवरपुत्रकीआज्ञाविन दत्तकलेतोआवेयानहीं.

६४ एसेंहीविधवा अपुत्रणीं सुसरा सासू की आज्ञासें और देवरप्रतिकूलहे या जेठप्रतिकूलहे और जेठकेभी एकहीपुत्रहे तो उसबेवाके दत्तकआवेयानहीं

६५ एककेदोयस्त्रिएकएकपूत्र एक पौत्र एकपौत्र वृध और १ पुत्र १ पौत्र कालवसहो तब विधवा सासू वहू पौत्राकीवहू तीनूँहीं जुदाजुदादत्तकले या सासूअपनेनामसेंले वा बहूकेनामसेंले वा पौत्रवधूकेनामसें ले तहाँ वडीकापुत्र छोटीमाताकों या छोटिकापुत्र वडीमाताकों मनाँकरे तो वहपुत्र शोतनकाजायासमझ आज्ञाउलंघनकर पुत्र पौत्र या प्रपौत्रादिदत्तकलेनाँचाहे तो दत्तक आसक्ताहैया नहीं

६६ एकनेंदोयव्याहकीया एकस्त्रिके दोयपूत्र एक स्त्रि अपुत्र वह दोनोंपूत्रव्याहेपीछेसंताननेंहोते स्वर्गवासीहोगये सुसराजीताहे वह अपुत्रणीं अपनेंदत्तकलेनाचाहे वा बहूदोनों दत्तकलेनाचाहे वा बृध्ध आपलेनाचाहे तहाँ हककिसकेनामसेंदत्तकआनेका है वा दत्तककेहकदारकौनहै.

६७ एकनेंप्रथमव्याहकीया एकपुत्रहोकर वा ऽस्त्रिकालवसहुई पुन्हबृद्ध दुसराव्याहकीया एक पुत्रउस्केहुवा दोनोंपुत्रविवाहे बाद स्वर्गवासीहुये तब एकसौभाग्यवती सासू और दोय विधवापुत्रवधू दत्तकले किस्के नामसेंआवे

६८ एकस्त्रि १ पुत्रजनफौतहुई दुसरीस्त्रिके२पूत्र पतितीनूपूत्र स्वर्गवासीहुये तबबेवासासू तीन वहूवेवा इनच्यारोंमें दतकले तौ किस्केनामसें आवे

६९ एकसासू ३ वहूवेवा च्याऊँहींजुदाजुदादत्तकले कर अपना२नामरखेतोलेसकेयानहीं

७० एकविधवा सासू तीनविधवा वहू एकनपुंसकपुत्र इस्मेंसासू अपनेंनामसें दत्तकले तो तीनूँ वहूमेंसें कोई वा नपुंसकपुत्र मन्हाँकरे तो करसकेयानहीं

७१ एकपुर्षनेंप्रथमव्याहकीयाएक पुत्रहुवा परणायापीछे स्वर्गवासीहोगया तव वहीपूर्ष १ स्त्रिहोते पुन्हविवाहकीया एक पुत्रहुवासें वादमें बृध्धस्वर्गवासीहुवा अवदोयसासू एकवडी किविधवावहू एकछोटीकापुत्र वहवडी अपनेंपौतादतकलेवै तहाँछोटीकापूत्र मनाँकरे तो करसकताहैक्या

७२ एकपुर्षके प्रथमव्याहसें एक पुत्र नपुंसक दुसरेव्याहसें१पुत्र पर्णाया फौतहुवा अव नपुंशकतें कुल नहीं वधसके और एकसासू पौत्रदतकले तो नपुंसक वरजसकताहैक्या

७३ एकप्रथमस्त्रिके दोयपुत्रहुवा परणायाँवाद पूत्र स्वर्गवासी हुवे तवदुसराव्याहसें एकपुत्र वोनपुंशक बृधस्वर्गवासीहुवा अबबडीअपनेंदतक वा दोनों बेवावहुवोंके दत्तकलेनाचाहै लहौडीभीमोजुदहै तबकिस्की आज्ञाहोना

७४ बडीकेदोयपुत्र छोटीके १ पुत्र वोतोनपुंसक और बड़ीकेपुत्र परणायेवादस्वर्गवासी तबनपुंशक पुत्रकीमाता दत्तकलेवे तो किस्कीआज्ञासेंआवे

७५ एसेंहीदोयसासू दोयबहुप्रथक २ दतकलेनाचाहैतोआसकेया नहीं औरनपुंशककाव्याहकैहै

७६ एककेदोयपुत्र दोनोंव्याहे बडा स्वर्गवासी छोटानपुंशक तब बेवा दतकलेनाचाहे और देवररोकेतो कैसा

७७ दोभाईव्याहेहुये छोटास्वर्गवासीहुवा बडानपुंशक भेलेरहते छोटेकीबेवादतलेवे तबनपुंशकजेठरौकसकताहै या नहीं विवाहकीयाहुवास्त्रिसहितहै

७८ एकपूर्षविदेशगया जीतेमरेका पत्तानहीं वहस्त्रिदतकलेंनाचाहे तो लेसकेक्या या किस्की आज्ञाहोना

७९ च्यारभाइयोंमें एकभाईबडाव दुकानमें नामचलताहै और द्रव्यभी उस्कापैदाकियाहुवा है वहपूर्षसन्यस्थलेके भिक्षान्नभोजनकरनेंलगगया उस्की स्त्रिदत्तकलेनाचाहे और देवर वरजे तो रोकसकतेहैंक्या

८० एकपूर्षसन्यस्थधारणकर रोटी अपनेंहातकी स्वैकृतखाताहै उस्कीस्त्रिकों दत्तकलेंनेंका अधिकारहै या नहीं

८१ तीनभाइयोंमें एकसंन्यासले भौजनघरेआकेकरताहै उस्की स्त्रि दत्तकले तो लेसकेयानहीं

८२ एककापति सन्यासलेके विटलगयाताकीस्त्रि पूत्रलेसकेक्या

८३ विटलेपतीकीस्त्रि दत्तकले तव नजीकीभाईबंधरौकसकेक्या

८४ च्यारभाईथितावितबाँटके अलगहोगये बादमें एकभाईविटल गया उस्कीस्त्रि दत्तकले तव देवर जेठ रौकसक्तेहैक्या

८५ भानजा व दोहिता व जवाई दत्तकलियातबउनकेगुरुको न पहलीके ब आयेजहांके दापाकिस्कोमिले इत्यादि

एसे २ दत्तपुत्र (खोल) विषे सेकड़ौंप्रकारके प्रस्नखड़ेहोतेहैं परंतू यहाँकुल ८५ ही प्रस्नमूनेंमाफक किंचितदरसायेहैं बाकी इसीप्रस्नोंका प्रस्तार (फेलाव) होकर बहोतसेहोजातेहैं अब इसीप्रस्नोंके अंतरगत (अंतरंगलक्षण) वारिसहकदार व इनकेहिस्सेबंट किस२का कितना २ व कैसेहोना वौलिखतेहैं

[वारिसहक्कदार व हिस्साबंटविषयप्रश्न]

१ हकदार पुर्षहै किऽस्त्रिहै
२ हिस्साबंटपुर्षकोंमिलनाँ केऽ स्त्रिकोंमिलना
३ दोयस्त्रिअपुत्रणीं खाँवंदमरेबाद धनकीमालकणीकोंण
४ च्यारभाइयोंमें एकभाईपरण्याहुवा लूल्हा लंगड़ा अंधा वहरा सर्वइंद्रियोंसे हीन परविषय इन्द्रीं साबतहै भाइयों सेंहिस्सा बंट मिलेयानहीं व कैसाहक्कहै
५ च्यारभाइयोंमें एककी औरत वेवा भेलेसें जुदीहोनाचाहै तौ देवर जेठोंसें हिस्सा बंट जर जेवर जमीनका लेसकेक्या
६ च्यारभाइयोंमें एककीवेवा गाँव कूवा खेत खान वाग घर दुकानादि में बंटलेसकेक्या
७ च्यारपुत्रोंकीवेवा पुन्हसुसरान विनविवाहकर पूत्रपेदाकरेतहाँ च्यारूँविधवावोंकाक्याहक्कहै
८ एकनेंदोयव्याहकीये पहलीऽस्त्रिअपूत्रणी और दूसरीकेपुत्र तवपहली अपूत्रणींस्त्रिका क्या हकहै
९ पहलीपुत्रणी द्वितियाअपुत्रणीं उस्काक्याहक्कहै
१० प्रथमदत्तकलीया बादमेंव्याहताऽस्त्रिके पूत्रहुवा तबप्रथमदत्तपूत्रलिया उस्काकितनाँहकहै पीताजीते॰
११ प्रथमदत्तक पीछे पूत्रजन्म भेलाईदोनूँभाईरहै पितामरे बादजुदाहोय तबहिस्साबंटकितना औरकैसा॰
१२ प्रथमदत्तक दूसराजन्म्या दोनों कोंजुदाकर पिताअपनाहिस्सा ले जुदाहो पीछेस्वर्गवासीहुवाँ उसकेहिसेके जर व जेवर जमीनका हिस्साबंटकैसा
१३ प्रथमदत्तक दूसरा घरजन्मपुत्र जुदा पिताजुदा सौवर्षपूगणेसें उस्कादेण लेण काजकिरियावरका हक्कंकिसपैं
१४ प्रथमदत्तक दूसराजन्म्याँ पिता मरेबाद माताके खर्चकाफर-

जकिस्पेदोनों (पैयाएकपे)

१५ च्यारभाइयोंमें एकजुदाहौना चाहै तो हिस्साकिसकिसची-जमें और सराफीदुकानहोतो क्यातरीकाहै

१६ तीनभाईपरणे एककँवारा पितास्वर्गवासीहुवा वोजुदेहौना चाहै तव कँवारेकावंटकितना और कैसाहौना

१७ पिताच्यारपुत्रौंसांमलरहकर एकपांचवाँपुत्रकौं जुदाकरे तो हिस्सावंटकितना औरकैसा-हौना (लेनदेनादिमें)

१८ माता पिता दोनोंहीपुत्रौंसें अ-लगरहै तो हिस्साकितना

१९ बडोंकेहातकें द्रव्यमें मातापि-ता २ पुत्रौंका बंटकितना कैसा

२० सासू सुसरा विधवाबेवा २ हिस्सावंटकैसा

२१ सासूविधवा दोनूबहूविधवा ध-नपेमालकीकिस्की

२२ सासू १ बहू २ तीनूँहींविधवा-नहिंवणते हिस्सावंटकैसा

२३ च्यारोंदिवरजिठाणीं विधवा हिस्सावंटकैसाहौना

२४ च्यारौंविधवाँमें एककेपूत्रहैध-नकामालककौंन

२५ च्यारविधवा एककेपूत्र जुदेहो-नाचाहै तो बंटकैसा

२६ च्यारूंपुत्रजुदेकरे तबमातापि-ताकाहिस्साकितनाँ

२७ च्यारपूत्र एकमाता जुदाहौय तो माताकाहिस्साकितनाँ

२८ च्यारपूत्र माता अलग मरेवाद उसधनका हिस्साकैसा

२९ च्यारपुत्रोंकों जुदाकर पिता एकपुत्रकेभेलारहै स्वर्गवासी होनेंबाद उसपिताकेंहिस्सेका हकदारकौंन

३० वृधपिता मृत्युसमय अपनाध-न एकपुत्रकोंदेंसक्ताहैक्या

३१ एकनेंदोयव्याहकिया दोनौं स्त्रिके दोदो पुत्रहुये हिस्साबं-टकरनाचाहै तबकैसा औरकि तना २ हौनाँ

३२ एकस्त्रिकेतीनपुत्र एककेएक पूत्र हिस्साबंटकर जुदेहो-नाचाहै तोएकपिता २ माता ४ पुत्र कैसाबंटहौनाँ

३३ च्यारोंपुत्रोंकोंजुदाकर वृधपि-

तादोनोंऽस्त्रियोंसमतें जुदारहे वह स्वर्गवासीहोनेसें धनकामालककौंन

३४ दोयमातासें च्यारभाई माता पितामरेबाद हिस्साकितना

३५ बडीकेपूत्र २ छोटीके १ व्याहकियाहुवा पितामरे ओर दोनौंमाताकायम तवहिस्साबंट कितना व कैसा

३६ वडीकापूत्र २ छौटीके ३ मातामरेतें हितावंटकैसा

३७ बडीकापूत्र २ परण्याँ छोटीका पुत्र १ कंवारा हिसाकैसा

३८ बडीका १ कंवारा छौटीका २ परण्या हिस्साकैसाहोनाँ

३९ दौयमात ४ भाई (एकके३) एकके १) हिस्साकैसाहोना

४० बडीके २ छोटीके १ व्याहा हुवा मरजावै तब बंटकितना

४१ बडीकेएकपरण्या एककंवारा छौटीके १ परण्या एकपौता बंटकरै तबकितना औरकैसा होना.

४२ छोटीके १ वडीके २ पोत्र ३ बेटा ३ परणेवाद बंटकैसाहोनाँ

४३ एकव्याहतास्त्रिके तीनपूत्रएक केएकपूत्र च्यारूँजुदेहोय तव दोयमाता अेकापिता उनकाहिसाकितनाहोय

४४ प्रथमव्याहताऽस्त्रिके तीनपूत्र वादमेंस्वर्गवासीहो दुसराव्याह सें एकपूत्र इनच्यारूँकों जुदाकरै तववृधपिताएकस्त्रि सहित कितनाहिसा व पूत्रोंका कैसाहिसावंटहो

४५ दोयस्त्रियोंमें छोटीकालवश्य हो उस्केहिसेकावारिसकौंन

४६ दोयस्त्रियोंमें बडीमृत्युपावे तव उस्केहिस्सेकामालिककौंन

४७ दोयपुत्रोंमें एकदत्तकदिया दुसराफोतहुवा बृधपितावमाता स्वर्गवासीहोते धनकामालिककौन

४८ दोयपूत्र एकदत्तकदिया दुसरा फोतहुवा कँवाराहो० व माता और बृधपिता स्वर्गवासीहोय तव सिरकादेणाँ देकेरिणसेंमुक्तकौंनकरणाँ वा किसपेलागू है वारिसकौंन

४९ एककेपूत्र दूजीअपूत्रणी पती

मरेतें धनमेंहिस्साकैसेंहोनाँ

५० एकभाईकेदोयपूत्र दूसराकेए-ककन्याँ जुदेहोनेंबाद कंन्याँ काविवाहकर घरजवाँईरक्खे और जरजेवरजमीनका कुल-मालिकबनावे तो बनसकेया क्या क्यामिले

५१ लड्कीपरणाय घरजँवाईरखे बाद वृधकेपूत्रजन्में तबघरज-वाँईकोंदूरकरे तो जवाँईका कुछउजरहिस्सावंटमेंहैया नहीं

५२ भाणजा दोहिता रीतरसूमसें दत्तकलेनेंवाद पूत्रहोजावे तब आपसमेंहिस्सावंटकैसा

५३माता पिता बेटेसेंविरूधहो बेटी कोधनदेवे बेटामनाकरे कि धन-तोवरवादकरतेहो सिरका देना-कौनदेगा ऐसे रोकनाचाहे तो जीतेपितापूत्र रोकसक्ताहैक्या

५४ एसेंहींसर्वस्वधन पितालुटाना चाहे वाजमीनपुन्यार्थ देनाचा-हे तो पुत्ररोकसकताहैक्या

५५ च्यारभाईभेलाहोते एककीबे-वाजुदीहोनाचाहे और पाँती-माँगे तो मिलसकतीहैक्या वा क्याहकहै

५६च्यारभाइयोंमें एककीवेवा पा-सधनहै देणेमेंपातीदेकीनहीं

५७ च्यारभाइयोंमें एकभाईकाम काकरताथा वोसवगहणादागी-ना व रोकड अपनीस्त्रिकों सोंप स्वर्गवासीहोगया सिरपे-करज तीनभाईकँवारे माता पितावृधइसबारेमें उसबे-वापाससें धनक्योंकरलेनावा-कैसाहिस्साहोना

५८ एककेदोस्त्रि प्रथमके २ पूत्र व्याहेहुयेस्वर्गवासीहोगये व उ-स्कीमाताभी कालवश्य दूसरी स्त्रिअपूत्रणी सू वृध्धजीते वहू-विधवा दोनोंजुदीहोनाचाहैतो हिस्सावंटकैसें

५९ एसेंहींभेलीरहकर पांतीमाँगे तो कैसें वा क्यादस्तूरहै

६० एककेदोस्त्रि अपूत्रणी पतीका-लवश्यहुवा दोनोंल्होडी वडी में धनकीमालकीकिस्की वाहि-स्साकरैतोकैसें

६१ एकनेंप्रथमव्याहकीया उस्के

१ पूत्रहुवा वोव्याहेवादस्वर्गवा-
सीहुवा तववृधदुसराव्याहकी-
या उस्के भी १ पूत्रविवाहकी-
येतें कालवश्यहुवा व वृद्धभी-
पर्मधामपहुँचे ते दोयसासू दो-
यवहूअवधनपेमालकीकिस्की
हौना

६२ एसेंहींनहिंवणते जुदेहौनाचाहै
तौ हिस्सावंटकैसा

६३ एसेंहीं सासू एक दौयबहू
हिस्साकिस्कूँकितनाहौना

६४ एसेंहीं सुसरा सासू दोयवहू न-
हिंवणते हिस्सावंटकैसा

६५ एकसासू दोयवहू छोटीवहूजु-
दीहौनाचावे तो धनकाउजरदो-
नोमेंसेकिस्सेंकरे धनपेमालकी
किस्की

६६ दोयसासूविधवा दौयबहूविध-
वा एकदेवरनपुंशक नहिंवणेते
जुदीहौनाचाहे तव जर जेवर
जमीनपै कैसावंटहोवे

६७ एकनेंप्रथमव्याहकीया एकपू-
त्रहुवा परणायापछेमरगयातव
फेरव्याहकीया उस्केएकपूत्र-
हुवा वृधपूर्षकालवश्यसें दोय-
सासू एकविधवाबहू एकछोटी
काजणाहुवापूत्र येजुदेहौनाचा-
हेतबकिस्कारहक्कितना रहै

६८ एकपूर्षनें प्रथमव्याहकीया ए-
कपूत्रहुवा बहनपुंशकहै दुसरे
व्याहतासें एकपूत्रहुवा वोपर
णायेवाद मृत्युपाई वृधभीका-
लवश्यहौते धनमेंपातीकरै तो
(एकमाता और १ नपुंशकपु-
त्र) इधर (एकसासू ओरविध-
वाबहु) हिस्सावंट जर जेवर ज-
मीनमें कितना और कैसेंहोनाँ

६९ एककेप्रथमस्त्रिके २ पूत्र पर-
णायेवादमृत्युपाई दुसरीस्त्रीसें
एकनपुंशकपूत्रहुवा वृध्धस्वर्ग
वाशी ० धनकाहिस्सावंटकैसें
(एकसासूदोयवहू) एकमाता
एकनपुंशकपूत्र)

७० भोजाईविधवा जेठनपुंशक सा-
सूविधवा धनपेअखतियारकि-
स्का और जुदीहोनीचाहे तो
भोजाईकाक्यावंटहो

७१ एककेदोयपुत्र दोनौंव्याहे एक
पूर्षथावोस्वर्गवासी नपुंशक
और उस्कीऔरत सौभाग्य

वती वृध नहौते जुदेहोनाचाहे तबवंटकैसा सासू १ वहू १ नपुंशकस्त्रिसह २

७२ विवाहकीया हुवा नपुंशकका पांतीमेंहककितना

७३ एककापतिविदेशगया जीतेमरेकापत्तानहीं ऽस्त्रिदेवरजेठोंसें जुदीहो हिसाबंटमिलेयानही-वा कैसा

७४ च्यारभाई बडेकानामदुकान में धनभीउस्काकमाया वो सन्यासीहोगया उस्कीऔरतदेवर जेठोंसें धनमाँगे वा हिस्सा बंट जर जेवर जमीन में माँगे तो मिलेयानहीं वा कितना

७५ एसेंहीसन्यासी रोटीघरेआकेखाताहै तोस्त्रिकाहिस्सामिलेयानही

७६ तीनभाईमे एकविटलगया उस्कीस्त्रि देवरजेठोंसें जुदीहोकर अकेलीरहनाचाहे तो हिस्साबंटमिले या कितना कैसा

७७ तीनभायोंसें जुदेहोनेंबाद एक विटलकरचलाजाय बादमेआकर अपनीपांतीकी जमींनपे दाइयाकरसक्ताहै या नहीं

७८ एकसन्यास मनसेंहीलेकेचला गया और बिटलानहीं पीछे आकर भाइयोसेंपाँतीमाँगे तो मिलसकेयानहीं.

७९ एसेंहीपरण्याहुवाहोय पीछा आके स्त्रिकेसाथहोकर भाइयोंसेंहिस्साबंटमाँगे तोमिलसके या नहीं

८० एसेंहीं कंवाराहोय भूलकरसन्यस्थहोगया विटलानहीं पीछा आकरभाइयोंसें पांतीमाँगे तो मिलेयानहीं.

८१ भाईभाईजुदेहोनेंबाद सन्यास लेले तो सहूकारोंका कर्जकिस्पैं

८२ च्यारभाईभेलेरहते एकसंन्यासलेलेतो उस्कीपांतीकाकर्जकिस्पैं

८३ संन्यासधारणकरनेमें किस्की आज्ञाहोतीहै वा उस्कीस्त्रिका खर्च व पांती व दत्तकवगेरा क्याक्याकायदाहै

८४ हिस्सेबंटमेंपांती मर्दकी या औरतकी.

८५ एक भाईनें दोयव्याह एकनें

ककीया हिस्साबंटकैसाहोनाँ

८६ भाईभाईजुदेहोनेंबाद एकभाई भोजाई समेत कालवश्यहो उस्के २ कंन्याँहै कंवारी वापरणीं उस्काविवाह वा मामेरा किसनें करणा वा भरणपौषण व श्राध कर्मादि कौंनपेलागूहै व उस्के धनका व देनलेनका मालिककौंन

८७ भाईभौजाईवगेरधनमुफलिस है वा भौजाईविधवाहै वा अपंग कुष्टीइत्यादीरोगीहै तोपालन पौषणकिस्पै.

८८ इनसबकार्योंमें हकदारमर्दहै या औरतहै

८९ पांती औरतकोंमिले या मर्द-कौंया नपुंशककौं.

९० एकमर्दघरमेंहोतां दुसरी भाई कीबहू या काकी भोजाई इ-त्यादि विधवाऽस्त्रियोंका क्या हक्कहै हिसाबंटहै या नहीं

९१ च्यारभाईमें तीनपरणें एककँ-वारा धन वा रिणहो धनमें पां-तीकितनीं और कैसी रिणमें पातीकिसकिस्की कितनी २

९२ एकके च्यारपूत्र परणायके जु-देकिये सबके एक २ लड्का एककापतीस्वर्गवासीहुवा तब उसनें आपकापूत्र दूसरा दूर-काभाईबंदकौं दत्तकदेदिया अब करजदारोंकाकरजा कौंन चुकावै वा भाइयोंपेलागूहौस-क्ताहैक्या.

९३ एसेहीपुत्रदूसरेकोंदेदिया बाद वो स्वर्गवासीहुवा तब उसपूत्र केधन वा रिणकाहकदार कौं-नरहा

९४ एकविधवा स्त्रि पूत्र दूसरेकों दत्तकदेदिया वाद आपकाल-वसहुई तव उसस्त्रिका धन व रिण कौंनदेवे लेवै०

९५ एकपूर्षके दोयस्त्रि दोनोंके एक २ पूत्र एककौंपरणाया एक पौत्रहुवा वाद बाप बेटा पोता स्वर्गवासीहुवा फगतएककँवा-रापूत्र दोयमाता एकभोजाई एकप्रभोजाई इनके आपसमें नहिंबणते जुदेहोनाचाहै तब हिस्साबंट कितना औरकैसा किन २ कौंकितना २ मिले

९६ एकपुत्र उस्कीस्त्रि दोयमाता एकभोजाई एक प्रभोजाई एक नंपुशकभांइ व भतीज हिस्सा-बंटकैसे और कितना २ होना.

९७ एकमाता एककाकी दोय भोजाई सबविधवा एकनपुंश-क अब हिस्सा बंट करे तो जर जेवर जमीन बाग कूवा इत्यादिका बंटकैसेंहोना इस धनपे मालकी किस्की और बंटकर देनेवाला कौन किस तरहसे बंटहोना

९८ इनसबबातोंमें हकदार हिस्से बंटकामालककौंनहै.

[अथ अपुत्रणीबिधवाऽस्त्रिविषयप्रश्न]

१ अपुत्रणीबिधवाऽस्त्रि अपणेबं टकीजमीन बेचसक्तीहैक्या

२ अपुत्रणीविधवा अपनाद्रव्य किसीकों बखसीसकरसक्तीहै क्या (स्थावर वा जंगम)

३ अपुत्रणीविधवा अपनीजमीन पुन्यार्थ देसकतीहैक्या

४ अपुत्रणीविधवा अपनावंटकी जमीन गिरवीरखसक्तीहैक्या

५ अपुत्रणीविधवा अपनीजमीन बेटीकोंदेसक्तीहैक्या

६ अपुत्रवणीविधवा अपनावंटकी जमीन बखसीसकरसक्तीहैक्या

७ अपुत्रणीविधवास्त्रि अपनीज-मी जायदात गहणा दागीना घर खेतादि कुलबिभवलिये भाईबंदों देवर जेठोंसें अलग-रहतीहै और जीतेजी अपनी स्थावर जंगम सबचीजों ऊप-रलिखेमुजब करे तो नजकि भाईबंद रोकसकतेहै क्या जी तेजीविधवा अपुत्रणीके धनपे वारसी किस्कीहोना वा है

(भाईभाइयोंकाशुद्धाशुद्धव्यवहार.)

१ भाईभाईभेलारहे रुजगारभे-ला खर्चभेला रोटीएकचौके जीमें पूत्र कंन्याका विवाहसा-मल खर्चखाता आरानुखता लेनदेनबेपार व्यवहार सबसाम-लसो उत्तम

२ भाईभाई धनबाँटले बेपार व्यवहार सांमल रोटीएकचोके बढताधन व खर्च अपना २ सालकीसाल आंकड़ाबाँधे जमा वा लेखे अपना २ माडलेवै सो सम

३ भाईभाई बेपारसामिल रोटीजुदीजुदी दामअपने २

४ भाईभाई बेपार जुदा रोटीसाँमल खर्चेहिसाबबंटसेंनाँवेंमंडे

५ भाईभाई जुदे बेपार व्यवहार विवाहादि रोटीखर्चसर्वतजुदा होवे (ऐसाभी होता है)

६ भाईभाईदुकाना अपनें २ नामसें धन हाण बृद्धि व खर्चेसांमिल विवाहादिखर्चे व रकम गहना दागीना जादा कम अपने २ नांवेंमंडें रोटीजुदी २ एसातरीकारक्खे

७ याप्रकारसें भाईभाई जुदे भेले रहनेका उत्तम सम मध्यम सम अधम कनीष्टादि छवप्रकारके तरीकेहै देखो भेलेरहनेंमें वा जुदेहोनेमें क्या २ हानी व लाभहै सुविचारो

अथ

[अनुभाविक उत्तर ०]

सूचना संक्षेपमात्रलिखतेहैं कि उत्तरतो इनप्रस्नोंका कुछआपलोगों सें प्रबंधबंधकर आनेंकीआशाहै पर हमकों अनुभवहुई बोबाते लिख जाहरकर्तेहैं सो भीजराबाचके विचारकरैं

१ धनमेंहक्क पूर्षकाहै ऽस्त्रियोंका नहिं स्त्रि घरमें १० होय और पूत्र १ एकहींदिनकाहोगा तो जन्मतेही मालकवोही पूर्षहै

२ विधवा ऽस्त्रियोंकाहक्क रोटी कपडा घराणेंमुजब हातखरच धर्मपुन्यकों परवोभीकुलमर्यादमेंचलेतो (मनइच्छितपूत्र नहींकरसके)

३ नपुंशककाहक्क रोटीकपडा खर्च चाहेराजपूत्रक्यौंनहिंहोय कुल मरजादमेंचलेजबमिले और

कुलमर्यादउलंघजावे तोयेभी नहीं

४ देनेंकरजेकाफर्ज परण्याहुवापे हैं कँवारेपेनहीं परसर्वस्वविभवकामालिकहै तो देनें लेनेंका भी हकदारवहीहोगा

५क्रियाभ्रष्टहोनेंवाद हकदारी वारसी व बंट हिसानहिंमिले

॥ श्रीः ॥

[प्रवंद्धकार्य सूचनिक सिक्षा.]

प्रियवर माहेश्वरी जातीभाइयों आप आपसमें इकलास रखके इतने कार्यका प्रबंध तो जरूर करें जिस्सें आपकी सुकीर्ति प्रगटहो और अपनी ज्ञातीमें कुरीतियाँ निवार्ण हुय अनेक व्याधी मिट आरोग्यता प्रगटे और सर्व ज्ञाती भाइयोंकों सुल्लभतासें हैसियात मुजब कार्यकर अपनी अभिलाषा पूर्णकरनेका अवकाश्य मिले यह ज्ञाती प्रबंद्ध (कायदा) अपने २ ग्राम व देश प्रथावत सर्वजगँह जरूर वाँधेंगे यह पूर्ण आसाहै.

(सिक्षा)

१कम खर्च करना औरोंकी बरावरी करनेसें आखिर नतीजा बुराहै (सदैव दिनएकसा नहिं)

२ कम उम्मर में श्यादी करनेंसें वीर्यहानीहोकर अनेकरोगोत्पत्तिहोतीहै,

३ वृध्धविवाह वर्जनीय प्रबंद्धहोना ३५ उपरांत व४० वर्ष उपरांत तो जरूरही वर्जनेयोग्यहै

४ कन्याकाविवाह १० वर्षसें उपरांत १४ वषकेभीतर होजाय तो श्रेष्टहै

५ आटेसाटेकी सगाईकरनेमें धर्मकीहानीहै

६ कंन्याकीरीत लेकरधर्मखाके नामवदनाम करनेसें बचना

७ गरीबभाई कमखरचसें कार्य करे उनकीहाश्यनाहिं करना

समझनाचाहिये कि सबकादिन एकसानहिंरहता

८ गरीबभाइयों के व बेमाबापके बालकोंकौंसहायतादेना

९ विद्याकाप्रचार पाठशालाबनानेकीकौशिशकरना

१० स्त्रियोंकोंपढानेकाउद्योगकरना

११ जग्योपवित्रस्नानसंध्यादिधर्मोन्नतीकरनेमें मदतदेना

१२ इल्महुन्नर सीखनेकीकौशिश व कारखानाकरना

१३ कुरीतीनिवार्णार्थ प्रबंद्धबांधना

१४आतसबाजी रंडियाँ वगेरेमें नफेनुकशानकाविचारकरना

१५ विधवास्त्रियोंके खर्चका प्रबंद्ध दया युक्तविचारकरना

१६ सगाई दत्तपूत्रादि रीतरसूम का प्रबंद्धबांधना

१७ गुरांकादापाविवाहविषय व मृतकदोवण्याँदिका प्रबंद्धहोना

१८ कमउमर वालेकेनुखतेकीआज्ञादेनाभी अयोग्यहै

१९ किरकोलखर्च धजा धौवती नेगरकीणाँ कमीणआदिका कांसा व रोकड़देनेका प्रबंद्ध

२० सुभकार्यमें नारेल सुपारी गींदोडा आदिकानयम

२१ प्रबंद्धहरकार्यका अपने २ ग्रामदेशप्रथावतकरनायोग्यहै

२२ सर्वोपरीकाम यहहै कि आपसमें इकलासरखकेनिरपक्षहो धर्मनीतीयुक्त प्रबंद्धबांधनाहम तो लिखनेकेताबेदारहैं आगे अखतियारपंचौंकाहै

आपकाताबेदार.

शिवकरण रामरतनदरक

माहेश्वरीमूंडवे वाला.

श्री

सिक्षा आचारविषय

अपन विष्णुधर्मधारिक लोगोंनें आचार फगत न्हाना व धौनाही मा-
नरक्खाहै तौजरूरहैके वगेरन्हाँनेंसें क्याआचार पर अपनें न्हानेमेंतो बीस
घड़ेपानीतक पारपडजायतौ भी अच्छाहै पर धौना क्या यहखबर ज-
रूररखनाचाहिये देखिये अपनें नवहीद्वारौंसेंमल आठौंपहर चुवताहीरह-
ताहै परंतूइननवद्वारौंमें दौयद्वार एकतौमल औरदूसरामूत्रद्वार यहदौय
महान्भ्रष्टहै इनद्वारौंसेंऔरसवहीद्वार उत्तममानेंगयेहैं और सतद्वारौंसेंउ-
त्तमकार्यभी बनसक्ताहै पर यहदौयद्वार तौ केवल मलमूत्रश्रवाहीहै तब
चाहियेके इन मलद्वारौंकों अच्छीतरह धौकेपवीत्रकरें परंतू यहवाततौ
अपनी २ एकांतरही नजानें धौई के पौंची पर प्रसिद्धमेंझाड़ेके हात
धौजानना अच्छीतरहसें आजायगा तौ भी आचार ठीकरहामानेंगे देखौ
महाराष्ट्रदेशके उत्तमवर्ण अच्छे वेदपाठी व आचारीकर्मकांडके जाणनेंवा
ले मलसें फरागतहोके हातनाहिंधौतेहैं केवल दौअंगुलियें पृथ्वीसें स्पर्स
करके एकपैसेभरपानी उसीलौटेमेंसें जौमलशुद्धीकौंलेगयेथे शेषवचाला-
तेहैं उसीसेंजरासा धौलेतेहैं पुन्ह उसीपानीसें दाँतुन मुखप्रछालकरके गा-
यत्रीपाठकरशुद्धहोजातेहैं उसमेंसें थौडासाछींटा कामपडेतौ पवित्रमंत्रक
साथ अपने शरीरपे भी डाललेतेहैं तव कुछेक अनुभवसें जानाजाताहै
के उनकेहात अशुद्धनहिंहौतेहैं क्योंके वहविवेकी पुर्ष मूलद्वारके हात
काहेकौं स्पर्स करतेहौंगे जवहातधौनेकाक्याकाम वहतोशुद्धहीरहा परंतू
हमलोगौंकौंतो मलद्वार हातसेंमल २ के धौनापड़ताहै इसवास्ते पहलेतौ
वामाँहात जादानहिंतौ तीनवारतौ सूखीरखौंडी वा मृतकासें खूबस-
फाकरें फेर वामहस्त मृतिका जलसें ३ वार अलगधौकर संकारहितक-
रले फेर जादानहिंतौ तीनवार दोनौंहस्तमिलायकर मृतिका जलयुक्त म-

देनकर २ केधोवे मुख्यहातधोना अच्छीरीतीसें आजावेगातो देखनेंवा-
लोंकों मलद्वारभी शुद्धिकरआनेकी पूरिताहोगी नहिंतो पानीकितनाँहीं
ढोलो परमलसें सफाईकहाँ देखो पहले यह न्हाँनेंका मूलधोनाहै इसवा-
स्ते हात मूँहँ नाक अच्छीतरहसेंधोवे यह द्वारश्रेष्ट रखनेंसें कोईरोगभी
प्रगटनहिंहोगा और पासवैठनेंवालोंकों भी कभी गिलानीनहिंआवेगा दे-
खोगुजरातदेशकी प्रथा कैसीउत्तम देखनेंलायकहै के मलसें फरागतहो
के मूलद्वार शुद्धिकरो वा नकरो पर दांतुनकरनेका झगडातो १ पहर
सें कमदेरीमें पारनहिंपडेगा वल्के जलदीकाकामहोगातो रस्तेचलते म-
लश्रवतेभी दांतुनकीयेसें रोटीखावेंगे इसीतरह देशप्रथावोंसें आचारमें
विचार वगेरफरकपडजाताहै पर मलद्वारतो सर्वदेशोंमें एकसाही माना
जाय यहठीकहै एसेंकहींआचारजादा और विचारकाखड्डा और कहींविचा
रहीविचार और आचारकाखड्डा समझकेदेखोतो आचारथोडाहीहोय
और विचारसावतरहेगा तोक्रियानेष्टनहिंहोवेगी मुख्य खान पानोंमें अ-
मष मदिरादि व नीचजातीकेहात व घरका खान पानोंसेंवचणाँ मुख्य
शुद्धाचार वालोंकों४ वातोंसें हरदमवचकररहणा औरविचाररखनाचाहि
ये (मल मूत्र मदिरा आमस सें वहोतवचतेरहे) पुन्ह पुराचीन आचा-
र्योंनें वेदादिकोंमें मदिरा आदि सर्ववस्तु लीनलिखगयेहैं वह श्रुतियें
वाचपठके अपनेंलोगोंकों डहकनानहिंचाहिये वहलिखनाभी उनका
सचहै परंतू यहवात तामसियोंकेलियेहैं सात्विक धर्मवालोंकों तो शुद्ध
आचार रखनाउचितहै देखो अपना शुद्धाचर्ण रखनेकों कैसे २ प्रबंध
वांधेहैं. यहाँतककी शाक भी विदरंगहोय ताकात्याज्यकीया जैसें (गाजर
काँदा सलगम मसूरकीदाल लहसुण वगेरे वहोतसीकविदरंग और वद-
वोकी वस्तुवों छोडदी) पुन्ह गुड़केसाथदुग्ध वेरीवमूलकेदांतुण महुवेके
पत्तेकी पत्रावल इत्यादिका त्यागकीया सोकेवल शुद्धाचारकेलियेहै पर
एकवहोतमोटीभूल अपणे विष्णुधर्मधारीक लोगोंमें रूडीपडरहीहैके रा-

त्रिभोजन और अणछाणियाँपाणी देखो अणछाणियाँपाणीमें असं-ख्याजीव चलते हलते नाचते कूदते कलवलते तो पीजातेहैं और शुद्धाचारीजी कहलायेजातेहै तो यहाँ दयाकाधर्म अपनाँ कहाँरहा लक्खोंजीवोंका नाश कर पेटमें भरलीये जब अनुकंपातोगई पर सुग्याभीनहिं आई परंतू अपनेंकोंक्यादोषहै अपनें आचार्य गुरुसोभीतो अणछानेंपानिकी भिन्ननहिंगिनते और कहतेहैं यहजलतो आपहीजीवरूपहै और जीवनइस्कानामहै वहठीक परंतू उसजलमें जीव चलतेहलतेहै सोवहजीवतो न्यारेहैं उनकों तो बचावो परउनजीवजंतुवोका वचनाकहाँहै देखो अपनेगुर आचार्य गंगागुर गयागुर कासीगुर जगदीसगुर कानकूब्ज उत्कल माथुर तो वडेवडेमच्छोंका आचर्णकरते हैं औरसंध्योपासनागंगाकीतीरपर करनेंको वेठते हैं तव जाल और कंटकडालके मच्छपकडा करते हैं तोछिपा २ के कुछऔरभी खानपानादि कियेकरतेहोंगे एसासुनते हैंतो इस्मेंक्याफरकहै जो उन्होंनें अपनेंहातसें लटपटातेहुये मानिहातसेंवनाचर्वणकिया तव सीधासोदा कसाईकालेनें में क्याग्लानीकाकामहै और अपनेंगुर सारस्वत ब्राह्मणहै उनकी उत्पत्ति पंजाबदेससें कहते हैं तहाँपंजाबदेशमें यहीसारस्वत अभीतक दसपांचमनुष्य सामिल होके बजारमेंसेंभैंसा मेढा वकरा जीता मोललेके हातसेंवनाय चबाजातेहै पुन्ह इधरवाले सारस्वत देवीपूत्रतो कहलातेहैं परंतू अन्नदेशी प्रथाप्रनालिकामें चलतेहैं पंजाबमेंतो अभीतक यहकामकरतेहैं हा हा राम राम राम अनुकंपा हृदयस्थानसे उठके कहाँ जाछिपी पर नाहिं २ यहबात झूटीहोगी वेदपाठी ब्रह्मवेत्ता ब्राह्मणऐसे निठुरकर्म काहेकों करेंगे और जोकरतेहीहोंगें तो आसाहै कि जरूर त्यागनकर शुद्ध धर्म धारणकरेंगे और दाधीच दायवें ब्राह्मण अपनेगुरु करतेतो माहामायाकीपूजाहै पर शुद्धाचारसें उज्वलक्रियाकरतेहैं और ब्राह्मणोंके गुरू सन्यासी वहभी शिवशाक्ति उपासनावालेहैं इसीतरह जिन २ गुरु

वोंका अपनेंकों धर्मउपदेसहोताहै सोतो इसतरहका उपदेसदेनाचाहेंगे अब अपनें शुद्धाचार चलनेका रस्तातो श्रीभगानके ही हातरहा वि-चारकरदेखो और विवादछोडो हमजिसरस्तेचलतेहोंगे वैसाही उपदेस देंगे हरएकतरहसें श्लोक श्रुति स्मृत्योंसें अपने मनकामनोंर्थ पूरण करहीलेवेंगे कोईप्रतिवादी साम्हनें वोलेगा। उस्कों हरएकतरहसें वेदोंकी सफील और पुरान कुरानादि आयुधोंसे मार हटाय अपनी जयकरही लेवेंगे पर वहचलते हलते जंतू मारखानेंकी हिंसावोंकों कहाँछिपाकेर-क्खेंगे हमकों चरचामेंतो लखोंवखतजीतजाय परंतू एकहिंसानहिंकरे तो वह करोड़वार हमारेगुरु और आचार्य नहिंतो वह है सो है यहाँ अब क्यालिखें हमारे वडोंके पुज्यहै ताकारनसें हमकों भी पूजणाँभागहै परंतू हाय हाय थूथू राम राम राम उनतड़फते जीवोंकों पेटमेंभरलेवै एसेगु-रोंकों हमकायासेंतो पूजलेवेंगे परंतू मन और वचनसेंतो विचारहीकरते रहेंगे क्याकरें वडोंके मानें पूजे गुरू और पंथपक्षोंमें वंधेहुये कदापी हमसमझ वी जावेंगेतो भी हमकों तो वंधेहुये मरकटकी नाँई उनके ना-चके संग नाचनाँही पड़ेगा. पुन्ह, रात्रिभोजनविषयमें भारत भा-गवत मार्कण्ड उद्यालक वालमींक वशीष्टादि वडे २ रिषराजोंनें रात्रिभो-जनका निषेधकियाहै जो प्रमाण श्रुति स्मृति श्लोकोंसें भूषितकरें तो वडासाक पोथा वणजाय सो कहाँतकलिखें और वाचनेंवालोंसेंभी नहिं वाच्याजाय परंतू अत्रदेशी विष्णुधर्मधारिक भाईयोंमें एसी रूडीपड रहीहै के जोभोजन दिनकों तय्यारभीहोगयाहोय तोभी कहेंगेके तारेऊ-गजानेदो फेरतारेदेखके व्यालूकरेंगे अभी अधर्विवमें क्या भोजनकर-णा और एकश्लोकभी मार्कंडेह पुराणका याद करलेतेहै आशय यहहैके एकसूर्यमें दोवखत भोजन नहिंकरणा सो हैविद्वज्जनों जराविचारतोकरो यहश्लोककिनके वास्तेथा और क्या अर्थहै यह वातब्राह्मणोंके वास्ते थी के एकदिनमें एकहीवार भोजनकरणाँ पुन्ह दूसरेदिन फेर वहीषटकर्मों

सें निवर्तहोकर ईश्वर अरपित भोजनकरणाँ परंतू रात्रिभोजन करनाँ तोन हींलिखा केवल १ सूर्यमें एकबखतही भोंजन करनाँ यहबातथी और एकदिनमें दोयबखत भोजनकरना तामसियोंकाधर्महै सात्वकियोंकातो अल्पअहार और एकहीवार भोजनहोताहै अभीदेखो वहोतसे ब्रह्मचार्य और साधूसंत एकवारही भोजनकरतेहैं और इधररात्रिभोजन रोचिकों के समझमेंतो एसाहीआताहै परंतू उनलोगोंके एककारनसेंतों रात्रिभोज-नही सिद्धकरनापडेगा के प्रातसमय अरोंदयतो माखणमिश्रि और पी-छेदूधरबडिये पुन्ह राजभोगकी तयारीके मालमसाले सघन अहार सां-झतकनहिंपचनेंसें रात्रि भोजनहीं द्रढकरणाँपडा और जिसरस्ते अपनें आचार्य गुरुचले उसीरस्ते अपणेंकों चलना भाग्यहै परंतू दिनके भोज-न जैसा रात्रिभोजनमें सुखनहीं देखो प्रथम तो यहगुणहैके दिनमेंभोज-नकीया वो रात्रिसयनसमेंतक पचनेपेआजायगा और जलपानकी इछ्याभी पूरितकरलेगा तब अजीर्णादि रोगभीउत्पन्ननहिंहोंगे और पेट में वायू वर्द्धनभी नहिं होगी और निद्राभी सुगमरीतीसें आजावेगी रोगोंकी उत्पाति फकत अजीर्ण आजरण अपचअहाररहनेसें और भोजन पेजल नहिं पोंहोचनेसें होती है तो दिनका भोजन कर-ना अच्छाहै जीवोंका पडना और नहिं पडनाँ तो दूररहा पर कीडी मकोडी रात्रिमें कहाँदीखेगी खैर जानेदोजी दिनकों भीतो पा-नीके जीव लक्खों किलविलातेहुये एकहात कपडेसेंहीं बचसकतेहैं वहभी अपणें पेटमें गटकायजातेहैं तो रात्रीमें अणदीखतेजीव पडन्ते नहिं पडन्ते किसनें देखे ॥ और थोडे वहोत पडहीगये तोक्याहुवा हमनूहानें धोनें और तीखेतिलकोंसें आचारीतोबाजहीजावेंगे और सोदोयसो श्लोककंठा करलेवेंगे तो माहात्माजी कहलायेजावेंगे पर हैपर्म पवीत्र वैष्णव धर्मधारिक स्वजनवर महामित्रों आप विचारकरदेखोगे तो शुद्धाचार भक्षाभक्षके विवेक और विचारसेंहींहै और जहाँभक्ष अभक्षव-स्तुवोंका विचारनहीं वहांही अनाचर्ण औ अनाचारहै परंतू कितेकलोग

वालपनेसेंही लोभमेंलागके कुलधर्मरीतीकों छोडकर फगत पेटहीभरनेंके उद्योगमें लगजातेहैं इधर वेसेंही यजमान कीर्तिधर्मधारिकहोजातेहैं जैसें दक्षनकेवैश्य भंडाराकरे और ब्राह्मणोंको दक्षणा आठआनेसेंलगाकर ५ पांच ७ सातरुपेतकदेतेहैं वहां भोंदेव साठ २ सौसौकोस तकके रात्यूँरात कासीदोंसें भी अधिक दौड़के जापहुँचतेहैं वहाँ कहाँतो संध्यावंदन और कहाँकान्हानाँधोनाँ वल्के लघुसंकाभी खडे २ करके अगाड़ी चलनेसेंहीं ध्यानरखतेहैं आगेजाकर जीमेवहाँ संजोगी वैरागी कुलटूट जिस्के जात न पाँत वावाजूके कुलसतरे और सातमा खाती बापसुनार दादीदरजण दादालुहार और पूछेतो अंतनपार एसे २ भोजनभंडारेमें सामल जहाँगुरड़े डाकोत कारटिये भी विचारे कहाँ जाय कोईजात जामिलेतो कौनपहचानें और कौनकिस्कोंजानें वहाँतो गफेमारनेंसेंहींकाम लियेदक्षणाकेदाम और भगेदूसरेभंडारेपे तीसरेहीगाम परसेठजीतो कीर्तिदानहीसेंराजी और भोंदेव दक्षणाकेहीअनुरागी वहाँधर्मकहाँ केवल लोभसेंहींकामहै जवहमारेएसेगुरु भंडारोंहींमेंदौड़ २ केअपढरहजातेहैं और हमारेमहेश्वरियोंके जवविवाहादि कर्मकांड व हवनादिकोंका काम पड़े तव महाराष्ट्र ब्राह्मण आकर शुद्रसंज्ञाकायमकर शुद्रकमलाकर शुद्रवास्तव शुद्रसंह्हिताहीसें वेदोक्त मंत्रपढकर कर्मकरावतेहैं तहाँ वेदमंत्रभाषण हीनहींकरते तोजरादेखो भग्वानने ४ वर्ण उत्पन्नकिए और ब्राह्मण क्षत्रि वैश्य इन तीनवर्णोंकों वेदपठनका अधिकारदिया तो दक्षणके महेश्वरी वैश्य शुद्रवतक्यूँहोगये यहवडेआचर्यकीवातहै देखो और देशोंके मनुष्योंसें इनकाआचार न्हाँना धोना स्वेतवस्त्र तीखेतिलक कंठी कटिशुत्रादि सवतरहसें स्वच्छदीखताहैं और पुन्हशुद्रसंज्ञाक्यूँमिली. तो कुछेक जानागयाके वहदक्षणके वैश्य महराष्ट्रदेसप्रथा कुछ कमरखतेहोंगे जैसें महराष्ट्रदेशी विप्र मलसेंरहितहोके हात व मुखप्रछालादि उसीशेष जलसें करलेतेहैं व रंडास्त्रियोंका कियापाक भोजन वा लहसुण प्याजा-

दि भक्षण व मामा मासी आदिकी कंन्यावोंसें विवाह एसे २ कामकरते हैं वैसेंही महेश्वरी नहींकरनेके कारन शुद्रठहरायेगये मालूमहोतेहैं शायत मलसें रहितहोके हातमृतिकासें धोलेतेहोंगे जिस्सें वहशुद्रवतसमझेगये तबउनब्राह्मणोंके नजीक तो मूलद्वारभी धोनाभुनासबनहींथा परंतूक्याकरे जबकुलगुरू पंचगौड़ अपढरहगये और अपणेंकों कर्मकरावणाहींपड़े तब दुसरीजातीके ब्राह्मण चाहेशुद्रछोडके औरही कुछ कायमकरले तोक्याजोरहै पर गुरुलोगोंकों एसी २ कासीदियें कराके द्रव्यदक्षणादेतेहैं जब उनकों पढनेकी समयकबमिले अहर निस भागनेंसेंहींकाम और याहीकारनसें दीन मलीन शुद्रपदकों प्राप्तहोगये और होतेहीजातेहैं तो जराविचारनेकीबातहै दान और दक्षणाँ देनेमें हम नाराज नहींपर ब्रह्मकर्म और आचारविचारनेष्टहोताहै यहीजराविचार आताहै जादाक्यालिखें इति०

श्रीः ।

ब्रह्मकर्मरहितद्विज मुख. चपेटिका.

हेद्विजवर महाश्रेष्टविद्वज्जनों माहेश्वरीकुलगुरूजी जरातोविचारकरो के इसच्यारवर्णमें प्रथमवर्ण आपकाहै और हमारे तृवर्ण (क्षत्रि वैश्य शुद्र) के आपगुरुहोकर हमारेकों धर्मोंपदेसदेके शास्त्रानुकूल धर्ममार्ग में चलानेकी आशारखतेहो और हमभी आपके मुखारविंदके बचनों कों सच्चे और मुक्तिफलदायक समझके हृदयस्थानविषय स्थापनकरलेतेहैं और उसीबचनोंप्रमान चलतेहैं पर एक आश्चर्य उत्पन्नहोताहै के हमतो आपसें लघुवर्णमेंहैं और आपउच्यवर्णहोकर ब्रह्मकर्म छोडके कलुविडंबनरूप क्योधारणकरतेहो क्याकलूआकर एकीजगँहै उच्चस्था

नदेखके प्रवेशहोंबैठा तौक्या आप कलूकों शास्त्रोंकेशस्त्रसें नहिंभगासक
तेहो क्या आपकीसामर्थामें कुछअबलप्राप्तहोगयाहै आपतो सर्वज्ञ और
सर्वशास्त्रव्यक्ता सर्वजगतगुरु भोंदेवहो जरातो विचारनेकी बात है क्या
एसे २ कर्म कीयेवगेर पेटनहिं भरता. या ब्रह्मकर्मकरनेमें आपकों कुछ
ग्लानी प्रगटहोकर यहकर्म श्रेष्टपायागया. तब कोईकहेके एसीहाजरी
साधेविनाँ पेटनहिं भरता तौयह अनेकद्विज कर्मसाधन बराबरकरतेहैं
वौक्या भूखेमरतेहैं आपहमारे पर्मगुरु श्रेष्टाचारीहोकर ब्रह्मषटकर्मछोड
के कलुषटकर्म क्याधारणकरलिया जैसें चूल्हा. चक्की मूखल (मूशल)
इत्यादि तो जराहास्यकीबात प्रगटहोतीहै के आपजो एसे निठुरकर्म
नहिं करो और स्वधर्मिकविद्या अध्धेनकर श्रेष्टउपदेस हमलोगोंकों
करके धर्ममार्गमें चलावोगेतो क्या आपकेहानीहोती है जबकोईकद्वि-
जवर कहेंगे के विद्यासीखी क्याकामआतीहै और कौंनसुनताहै वौबात
ठीक. आप झूटीकपोल कल्पितकथावों. वा रसाणादि मंत्रोंकीबातेंतो
छोडदो और सच्चे सच्चे वाक्योंका (शब्द) उच्चारणकर धर्ममार्गप्रगटकरोगे
तो सर्वमनुष्य मंजूरकरेंगे. परंतू दासत्वकर्म करनातो अयोग्यहै इस्सेंतो
एसे २ कार्यभीउत्तम है पढना पढावना जोतिष वैद्यक दुकानदारी
सराफा नौकरी इत्यादि पर जानागयाके इनसबकार्योंकामूल विद्याअ-
द्धेनकरनाहोताहै और यहपरिश्रमसेंही सिद्ध होती है और पाकादिका-
कार्यमें आटाविगडेतौहीपराया पेटतोभरहीलेंगे पर इनद्विजवरोंके यह
कामोंसें हमारे तृवर्णोंकोंतो बडी सहायतामिली के हमारेघरकी और
तोंकातो परीश्रममिटा आपकुलगुरूजी भोजनसिद्ध करके जीमायदि-
येहीकरो और गीलेलक्कडजलाके अद्रिस्य असंख्यात जीवोंका घमस्या
नकीयेहीकरो क्या गिलानी है पेटतो भरहीजायगा दक्षणाँ-
काहीक्याफिकर है पर आप लोगोंकों जरा विचारणेंकी
वात है के आप सर्वोपरी कुल धर्मप्रवर्तीक यह निठुरकर्म अंगीकृत

करके दासत्वपद क्यूँधारणकीयाहै परक्याकरे कबूतरकोतो कूवाहीदाख और कोईकहेगा तो कलूकौदोषलगा खडेरहेंगे तोकलूनेंक्या आपका जातीगुण छीनलिया इधर हमारेवैश्यौकाभी धर्म कैसालुप्तहुवाहै के भौदेवौंसें दासत्वकर्मकरवाना और आप मायापात्रबणकर कुलगुरूजी-को धर्महीनबनादेना जलपीके उचीष्टपात्रतक द्विजवरोंके करकमलगत करदेतेहैं और भौजनसिद्धिकराके आपप्रथमजीमना पुन्ह शेषान्नद्विज-वर भौजनकराना तोशेषान्न उचीष्टवत गिनाजाताहै परक्यागिलानीहै पेटभरनेसेंहींकाम ब्रह्मकर्मजावो चाहेरहो यहाँतोयहीकर्म (पाकाधिकार) सर्वोपरी पायागया और अत्युत्तम द्रष्टीगोचर मन्नानंदप्राप्तहुवा पुन्ह वे-दोच्चारणकीजगह तो फागुनकेख्याल व मंत्रोंकीजगह कुफारकाबकना गऊ मुखीकीजगह तमाखूके बटवेमेंहात यज्ञकीएवजमें चिलमकापलीता देव पित्रोंके आवाहनकीजगह चिलमाकारंग वलीपानकीजगह लोटाभ-रभंग फेरकुलगुरूजीबनेंउन्मत जैसाजड़भरतजीकेभाई परमिलगई हम लोग एकयजमानोंकीहीकमाई ढूंढतेढूंढतेमिले कहूँ मरेकीबधाई जब खु सीमनावे के दापातो तैयारहोयहीगया और पेटइधरभरहींलिया अब धर्म कर्म साधनकी महनत क्यूँ करें पर हेस्वजन हमारेकुलगुरूजी यहमेरा-लिखना निंदामतसमझो आपहमारेकुलगुरू धर्मोपदेशदेनेवाले आपही ब्रह्मकर्मछोडकर कलुविडंबनरूप धारणकरलोगे तो फेर हमाराक्याहा-लहै क्योंके हमारे धर्मरक्षकतो आपहीहो यहमेरालिखना अनुचितमत-समझो यहचेतावणीके शब्दपुष्पगेंद मारीहै सो जरा दयालुताधारणकर बाचके किंचित बिचारकरणाचाहिये कितेकलोंग एसेकर्म धारनकरलिये-है वह यहाँकावितोंमें देखो क्षमाकरवाचो (कवित्त) धरिकेंअनेकभेख विदुकबहरूप्याजैसे धर्मकेबिगारवेकू कलियुगखिनायेहैं ॥ ब्राह्मणक्षिय-जायनाई सोनीग्रहपाककरे छोडेनाछतीसपोन सूतकमेंन्हायेहैं ॥ रसना-करनेंत्रदग्ध पराअन्नपतीग्रहा परदाराहरखिनिरखि मंत्रकाफुरायेहैं ॥

देखौरेदेखौद्विजदौंजगीदरीद्रभरे छौडषटकर्मखौटेकर्मनकौंधायेहैं ॥१॥ ऊँठलादेवहिललादे खेतीकासीदीकरे तंत्रजंत्रजादूकर मंत्रकोफुरायेहैं॥ चाडीकरचुगलीढौरगाडचौंकीदलालीकरे वारुणीपीधूम्रपान गुरगुरीघुरायेहैं॥ मृत्युसमयजीमें कंठरुकेपीछेदानलेत घाटासरावें गुरुगागरीगुरायेहैं॥ कहैशिवकर्ण माठेकाजरिषराजकरें थौरेसेगनाये गुनलाखनदुरायेहैं ॥ २ ॥ गंगामेंगूप्तदान छौडेनाछतीसपौंन हींजरे कलावत भाँड वैस्या- ग्रहखायेहैं ॥ ग्रहणमांहिंअष्टमाहा भूमीअरुहेमग्रहै भस्मीलेंजायअस्त गंगाकौंधायेहैं ॥ सूतकअरुपातक नीचदानेंकौंनटतनाँहिं थौडेसेगनाय हाय बहुतसेबहायेहैं॥कहैशिवकर्ण रिखराजपदखौयवैठे हैतोकलुआपरूप कुलगुरुकहायेहैं ॥ ३ ॥ नटज्यूँगुलाचाखाय नाचतरिझायगाय एकपे- टकाज कौटचेटिकचहायेहैं॥ कचौरीपकौरीपूरीहलवाजलेबपाक लक्कड भाड़झौंक जीवलाखनदहाये हैं ॥ भयेविभचारीविप्र कहाँ ब्रह्म वारीपद वानप्रस्तदंड त्याग मूसरउठायेहैं ॥ छडे पीसे पौवे धौवे कहाँलौंगनाऊँ यातें कहैशिवकर्ण गुन थौरेसेगायेहैं ॥४॥ (छंदइंद्रवज्र) ब्राह्मण शेषवचे- सोभखे जुजमानकोंभौजन पहले करावे॥सेठडकारेरुवावसुरे पुनिछींकत- थूकरसोईमें जावे॥नीरपिवायके लौटालेहातमें सहजविछाय पलंग उठावे॥ हशिवकर्णगुरूकेगुरू अरुदासभत्यारेकासीदिकूँ धावे ॥ ५ ॥ नाइसुनार कुम्हार कमीनकि चिलमतें विप्रकरे धुम्रपाना॥स्याफिभिजोवे सुनारकि- कूंडितें राखेजुदीये अचारदिखाना॥देहसोलेह नटेनकभू भखलीन अलीन मलीनकादानाँ पूछेतोदोषकलूकुँलगायके धायकेमालजितहितितखाना ॥६॥ ब्राह्मणवेद तज्यौपढिवौ चढिमहल अटारिपें रागनि गावें ॥ हौरिके ख्याल कुफारखके वनितावननाचिके अंग दिखावे ॥ हाततंबूरोसतारलिये कठतालदेतालघरौघर धावे ॥ जौस्वरग्यानिहुवेधनवान तिन्हेंपदगायके- जायरिझावे ॥७॥ विप्रनवेद तज्यौतातजो पण ब्राह्मण्याँवेदलवेदगुनाये ॥ गीतरुगारिकुफारिकेमंत्र रिचापढि स्यामकोगानसुनाये ॥ लेजजमाँनके-

पीत्र्योंकानाम पठायके नर्कहिमाँझिभुँजाये ॥ हाशिवकर्णदशाद्विजदेवकि शेषपेभारलेशीशधु नाये ॥८॥ ॥ कवित्त ॥ भङवेदलालदूत ब्राह्मणभत्यारेभये॥ब्राह्मण्याँन्हवावेसीस गूँथेंसेठाणीकौ॥झारेलिवायजाय. दासीज्यूँ हजूरी माँय हातमुँहुँधुवावे लौटाल्यावे भरपाणींकौ॥बिछौनाउठावे फेरदाँतुण करावे दौरझारूलगावे करे काम महतराणीकौ॥कहे शिवकरण देखौ दासभयेडौलेहाय. पूज्यतेंअपूज्य रूपकलूकीनिसानीकौ ॥९॥छंदइंद्रवज्र॥टेरेकेकाजसवेरेहि ऊठिके हेरेदसूँदिसलूँकारिजैसें॥भूकारिदौर मधूकारिहेत मिलेतितचाटतकूकारिवेसें॥ टुकरिदेकोउझूकारिहात लेखूखरिचाबतसूकरितैसें ॥ केतिकबात छिपायहिये शिवकर्णगुराणिकिखौलिये केसें ॥ (१०) ब्राह्मणिजीमे मलेछग्रहे सुतकौंदोहुठौरको दौरखवावे॥कामसुवावङ औसरब्यावको ढौलपेनाचकेगीत गवावे॥जौजजमानत्रियेमरिजायतो रौटि बनायकेबालधवावे ॥ कामकरेशिवकर्णसबे घरलौंडिकिलौंडिगुराणिकवावै॥११॥ जायसँदेसोदेआवेसगानकौं नौतादेतेङादेलावनाँबाँटै॥नावणदासिबडारणज्यौं कुटणीसमदौ रिकेटेरालेचाटै॥सूतकपातअसूचिहित्यापर खायकेछौतसबन्नकिदाटै॥ यूँशिवकर्णगुराणिफिरे गुरदौरकुसामँदहाटहिहाटै ॥१२॥ (दोहा) सेठपधारेसासरे गुरपङकानियाँजाय ॥ गुरपतनींदेडायजे औलंदीसंगआय॥१३॥ रातग्रहेयजमाँनके रातीजगौजगाय॥ कूकङबौलेगेरकढ चकचूँदङीलगाय ॥१४॥ (कवित्तछप्पय) गौवरकचरौकरे मुरङभरगाडौल्यावे ॥ गुरूकरेनीरणीं नारछौकराहँगावे॥ माँजेथालकचौल पलँगऊठायपिसावे ॥ जंगलजावेसाथ दौङकरचरणधुवावे ॥ चौकबुहारेचूँपसूँ घडाँघडाँपाणीभरे ॥ दानदेसाहजिणविप्रनें भरेचिलमहौकाधरे ॥ १५ ॥ (छदइंद्रवज्र) क्षत्रिनछाँडदयौक्षितपारिबो वैश्यनछाँडिदयादिलदानें ॥ शूद्रनकौंअधिकारभयौंतब विप्रनकौंकहोकेसेंपछाने ॥ ऊँचकरेसबनीचकेकर्मरु धर्मकौंछूद्रभलीविधजानें ॥ यूँशिवकर्णविलौमभये त्रिसनाबसउद्यमऔरहिठानें ॥ १६ ॥ इति०

श्री

[इतिहासविद्याविषय.]

देखना चाहिये के विद्या पढने पढावने वगेर भूल कर अविद्य हो सद् विद्या नष्ट हो जातीहै जैसें एक समयमें विद्या नष्ट होनेसें यत्र देशी मनुष्य अनार्य (अविद्य) हो गयेथे जब तातार देशके ब्राह्मण आके अनार्यसें आर्य (अज्ञानियोंसें ज्ञानी) कीये ॥ अनार्य होनेका कारन सत् संगत वगेर विद्यानेष्टहो अविद्य (विद्याहीन मूर्ख) होगये और वहीरीती इसदेसमें अभीतक प्रचलितहै कि एकएकसें विद्या हुन्नरगोप्यरखतेहै यहाँ तक कि पिता पूत्रकोंभी आंख सें नहि दिखावे और न सिखावे अपने पेटमें हीं लेकेपर लोक गमन कर जाय भलाहुवाकि इसदिनोंमें यहाँ इंग्रेजराज्यधानीकेसबबसें कोईपढौ औरकोईपढावौ और पढनेंपढावनेंकों ग्रंथोंकीभी सहायता इस छापखानौंकीवृद्धिसेंमिली यदि जौ यहनाहिंहोते तौ आजतकपीछेवौही अत्रदेशीमनुष्य अनार्यहोजाते उसदिनौंमेंतौ तातारदेशके ब्राह्मणौंनें अनार्यके आर्यकरलियेथे पर अबकहाँकेब्राह्मणआयके विद्याकाप्रकाशकर आर्यकरते उन्होंनेंतौ अनार्यसें आर्यकर वहोतसेमनुष्योंकों पीछेविद्यावानकर अपनेंकाममेंलाये व अपनीजातीमेंभी मिलालियेकरतेथे औरउनकेग्यानध्यानमेंनहिंआते उनकों (अनार्य अनाडी) कहतेथेजैसें (मूर्ख) आज्ञानीकों अबभी अनारीकहतेहै फेर तातारदेशियोंनेभी यत्रदेशीप्रथामुजब एसावंदोबस्तबाँधाके अपनेढबमें जौजौ मनुष्य आवे उनकोंतौपढावौ बाकीके मनुष्योंकों अपने अनुचर शुद्रवत रक्खौ और उनकों विद्या हुन्नर कुछमतसिखावौ पढने नहि देना और कोईपढनेका आरंभहीकरेतौ उनकोंदंडदेना एसावंदोबस्तबाँधाके यहतौफगत अपनेचाकर बेगा-

रीहीरहै इसीतरहसें शुद्रोंकेवास्ते पढानेकी वहीप्रथा यहाँतककी अंग्रेज राज्य धानीका प्रचारनहींहुवाया चलाआताथा और वैश्योंकोंभी इतना हीपढातेथे के अंकोंकीतोदस पाटियें और कका बाराखड़ी सिद्धासमान वर्ग सौईमाहा अशुद्धघोर पुन्ह वहीप्रथा अत्रदेशीपाँडियोंमें अभीतक चलीआतीहै एसाघोरअशुद्धशब्दोंका उच्चारणकरवातेहैंके सवउम्मरही पढनेमें पूर्णकरदे तवभी वाचना आनाकठिनहै क्योंकी प्रथमहीएकअक्षरमें अनेकखोट द्रढादेतेहैं जैसें फगतएक (क) अक्षरकों ककोकोडको कहकरसिखातेहैं और (ख) अक्षरकों खखोखाजूल्यो और (ग) अक्षरकों गगागोरीगायव्याई इसीतरहवतीसअक्षरोंमे अनेकखोटसिखातेहैं और मात्राकेविषयमें लघुकोंदीर्घवदीर्घकोंलघुबोलकर समझादेतेहैं पुन्ह कँवले (क) कनें (का) पछूं (कि) अग्यूँ (की) इत्यादि एसेशब्दोचारणकरातेहै फेर एसाहीउनकों थोड़ासा कागदलिखणा वाचणाँ सिखायके थौडीसीजोड बाकी समझायके रोजनावाँ खाता व्याज भतलादेतेहैं (अधिकविद्याकिमर्थं) फेरउनकालिखाकागदभी वेसेही फार सीनवेसजी आसराबाजी कुछसदावंदीलिखावट रगोंतीसें सिररगड़ाकराकरतेहै और लिखेकुछ बचेकुछ जेसेलिखे गूँद औरबाचे गूदी गूंदा गदा गेंद गांदी गुदी गोदा इत्यादि औरहि पुन्ह लिखेतो काकाजी अजमेरगया म्हेरूईलीया थेरूईलीज्यो परंतू विनामात्रासें एसाबचे के काकाजी आज मरगया म्हे रोयलीया थे रोयलीज्यो और कितेकएसा भीलिखतेहैं सो उसीबखतका लिखाहुवा पीछाउसीसें भी नहिंबचे जब कोईकहेके देखो इस्में क्या २ लिखचुके वाचकेसुनावो तो पीछा ज्वाब देवेके इधरकालिखा पीछाइधरही वाचनेसें अशुभहोजाताहै श्रीजीकरे अगलवाचहीलेगा एसेलिखेपछि वाचनेंपे एकहास्यमिसराभीहै एकनेकागदलिखवाया और लिखनेंवालेसेंकहा जरापीछावाचकेसुनावो तवलेखगजीनें ज्वावदीया॰इतकालेखणियाँबाचे सो के उतकावाचणियाँ मर-

गया० मतलब आपकालिखाहुवा आपसेंबचै न सगेबापसेंबचे० और विचारेछोकरे दस २ वर्षतक पढ २ सिररगड़ाकरतेहैं पर एकमात्राका-भी अच्छीतरह उच्चारणनहींकरसकते क्योंके केवल एक (क) अक्षर-कोंकक्कोकोडको पढादिया अबविचारेक्याबाचे इन अत्रदेशीपाँडियोंनें छोकरोंका जीना मृतकवतकरदिया जैसेंढोर वतरखदिया० अबबाचना लिखना शुद्धशब्दों का उच्चारणतो दूरहीरहगया तो अत्रदेशीऐसेंपाडियों-काएकअपर विलायत केटापूमेंमुल्कबसजानेकी हम इस्वरसेंप्रार्थना जरू रकरेंगे जीस्सेंअत्रदेशी भोलेबालकोंकाअविद्य (विधारहित) रहजानेका दुःख मिटे इधर जतीलोगोंनें श्रावकोंके छोकरोकोंथोड़ा बहोत बाचणाँप-ढणाँ ठीकर२सिखाया कारण जैनमतकेग्रंथ सम्मायक प्रतिक्रमण तवन सिज्याय शुत्रादि सीखके भगतीकरेंगे तो हमकोंभी ठीकमानेंगे यहहेतू सेंपढाया ऐसे हमारेगुरु वैष्णवलोगोंनें भी बाचणाँ पढणातोनहीं परतू पंचरत्न गीता सहश्रनामादि पाठ पोथियोंसें कंठकरवाये परंतू वहीपाठ दुसरी पोथी पुस्तकपे नहिंवाचसक्ते जोकोइपूछेकि यहाँक्यालिखाहै तो हरिहर कहेंगेकि हमक्याजाणें हमतो केवल मुखपाठहीकरतेहैं कोईपू-छेकि पाठ सेंक्यालाभहोगा तो कहदेंगेके हमाराभलाहो कर वैकुंठप्रातहो-जाँयगे अर्थसें क्याकामहै एसेमुसलमीनोंनें भी कुरानसरीफकेतीसूँसिफारे जवानीहीपढके हाफिजजीवन पुजातेहैं अर्थअल्लाजाने पर अबयासमयमें इंग्रेजराज्यधानीसें छापखानेंप्रगटहोकर ग्रंथतार्थछपके विद्याप्रकाशितहो मिलनेंलगी तो कुछेकअर्थजाननेंभीलगें देखाहमारेधर्मप्रकासित याज्ञ-वल्क मनूमहाराज पारासरादि ऋषियांनें श्रुति स्मृतियोंमें तीनवर्ण (ब्राह्मण क्षत्रि वैश्य) कों वेदपढनेंका अधिकारलिखगये पर अबहम-कों वेदतोकहाँ पूरासाक स्वरव्यंजन (कका बाराखड़ी) भीअच्छी तरहसेंपढायदेते तो वेद और उपनीषद सबहीमानलेते पर धन्यहै एसे गुरूपांडियेजीकों सोंवैश्योंकातोजन्म खूबहीविगाड़ा कुछउपमा और

नकलंमिसलेंलिखें तो एकमाहाभारतवतग्रंथवनजाय हम वैश्यलोगोंका लिखनातोक्या और वाचनाक्या (दोहा) करविगरीसुधरीजबाँ वाचिकवणिकवसेख हींगमिरचजीरोंकहै इगमरजरलिखदेत ॥ १ ॥ यहलिखकरअटकलसें वाचलेना यहतोएकरफत और रगौती आसराबंदूहै. पर पढानेमेंतौकपटहीरक्खा. नजानेआपपाँडे जीभीइतनाहीं जानते हैं खैर औरउसवखतमें केईकब्राम्हणोंनें वौधमत (जैन) धारणकरलिया था परवौभी आर्यकहलायेजातेथे और अभीतकभी ग्यानके धारण करनेवाली औरतोंकों आर्याजी कहते हैं और वौधधर्मधारिकपूर्वलोग मतकीजयऔर विजयकरनेसें उनकानाम. छापपड़के जयविजय सूर चंद्रकीर्तिजी इत्यादि नामपड़कर आर्यकहलानाभूलगये वहआजतकभी आर्यदेस व अनार्यदेस (ज्ञानियोंकादेस और अज्ञानियोंकादेस) वर्णनकरतेहैं एसें आर्यदेस केईवार विद्याविसर्जनहोहोके अनार्य होगये थे इसदेसमें दोयवातकीहानी हमेसें रहाकरतीहै एकतौविद्या गोप्यरखनेसेंनेष्टहोजातीहै और एकराजावोंकाराज्य भलीतरहनहिंरहता० जब विद्याभीअपरदेशीआआकेपढातेहैं जैसें राज्यभीअपरदेशीआआकरदबालेतेहैं कारनयहहैके विद्यातोगोप्यरखकर नहिंपढावनेसेंनेष्टहोजातीहै और राज्य राजनीतीबगेरनेष्टहोजाताहै अत्रदेशीराजावोंमें यहएकरूढीपड़रहीहै के पढने और विद्या व नीतिसेंक्याहोनाहै हमतकदीरकाखातेहैं और कामेती दिवान मुत्सदी भी अपने लोभवश्यराजपुत्रोंकों यहीसिक्षाउपदेसद्रढातेहै के (द्रष्टांत दोहा)॥ पढढोवेपोठेबणिक रखेराजरीपीक॥ अणभणियाँघोडाँचढे भणियाँमाँगेभीक ॥ १ ॥ राजामाहाराजा आपतोदारूड़ापीवो और मारूड़ागवावो जवतोराजामहाराजा मनमेंफूल जातेहैं और मौजेंघरहीमेंकीयेकरतेहैं रयतविगडोचाहे राजबिगड़ो पीछेकेईदिनोंमें पैसेकीतंगीआवेहीगी जबरयतपर तोफान डंड डालकर उनकाद्रव्यहरनाँसरूकर खजानाँभरेंगे चुगल और अ-

न्याइयौंकी मिसलतें कानधरे तब रयतकीसुनवाईकौनकरे इसीतरह-
रयतकाटूटना और तालावकाफूटना क्यापालबंधसके राजबिगडहीजाय
फेरइसीतरह अत्रदेशी पोहोपदेव पंडितोंके पौथियेंतौ बडेबुड्ढौकेहातकी
घरमेंधरीहुईतौ वहौतसीरहतीहै पर नतौआपपढे और नकिसी कौंपढावे
पौथियोंसेंमटके व हंडेभर २ कर गोप्य कररखतेहैं. और जानाकरतेहैं
के हमारेघरमें वहौतसीविद्याभरीहुईहै जिसघमंडमें रातेमातेफिराकरते
हैं. पर यहवातइसदेसमें खूबहै के जिसके बापदादौंनें कुछ विद्याका
प्रचारकर प्रसिद्ध होगयाहो. वस उसीके नामसें दसपांचपीढीतकतौ
पूजीजेहीकरेंगे और विद्यापढकर महनतकरनेंका क्याकाम दीखनेकेही
टपकूरहकर कमाखाना वडाडाढा वडापाघडा वडाहीनीचा लंबाधौता
वडामौटा वगलमें पौथा पर विद्याविनथौथा पंडतजी बजारमेंसें निकले
तब भौलेभाले मनुष्य आसारक्खे की माहाराजइधरकृपाकरे पर वह-
तौपोहोपदेवजी सीधेघरसेंमंदिर और मंदिरसेंपीछेघर. आकर गूप्तपाठ
सेवनकर अद्रिस्य बनवेठतेहैं कोईविद्या अभिलाषी आकर कुछ प्रस्न
करनेकी अभिलाषाही करे तौ घरवाले कहदेवेकी माहाराज गौप्यविद्या
पाठसेवन करतेहैं पर जाना जाता है कि यह केवल अविद्यापनकी
लज्ज्याका वाहाना गौप्य पाठहै यहाँ कुछगुफामें गूह्य मंत्रका सेवन
कुछ नहीं. वही है जौ ऊपरलिखा० एसेतौ अविद्यरहनेका कारनहुवा
और पीछे किसीसमय उनकेघरके पुस्तकोंकी यह गती हौजातीहै के
बृषाऋतुमें अचानचक पाणीआपडताहै और पुस्तकें मटकाहंडौंमें.
हौतीहै सौपानीसें भरके पौथाजीतौ गलसड जातेहैं फिर पंडित पोहो
पदेवजी फगता फगतहीरहजातेहैं पर किसीकौं एक अक्षर नतौदेवे औ-
रन सीखे औरन सिखावे बापबेटेसेंही विद्यागुप्तरखलेतेहैं यहाँतककी
मृत्युसमय तकभी कोई पूछेगातौनहिं भतलावेंगे तुस्नीहोकर वहविद्या
तौ स्मस्याणभौमीमें संगहीलेजायँगे इसी हेतू या देसकी विद्या नष्ट

होगई तब अपरदेशी विद्यवान आयके यत्र देशियोंको विद्यवानकिये एसेंहीं राजनीतीबिन राजावोंकाराज्यनेष्टहोहोकर अपरदेशकेराजावोंनेंराज्य अपनेंआधीनकरलिया यहसबहानी विद्यानहिंपढावनेसेंहोतीहे

देखोअबतो माहाराष्टदेशीलोग बडेविद्यवान और बिचिशणहोगये पर केईदिनोंपहले एसेअशक्तहोगयेथे किजिनकों संध्या गायत्री भी यादनहिंरहीं जबवेदतोदूररहा तबद्रवड देशवालोंनेंआकर पढाके पंडितकीये एसेंबालबोधी विद्याभीदेवभाषासहित (देवनागरी) देवनग्रवाले यत्रदेशमेंलाकर प्रकाशितकी जिस्सें इसदेसवालोंका कामचलताहे इसी तरह अभी अंग्रेजराज्यधानीमेंभी जगें२ मदरसे वपाठशालावोंहोकर वाहरकीविद्यासें अत्तहदेशी लखोंमनुष्यसुधरगये परंतू अपनेंलोगसमझ तेहैंके यहसबविद्या अपनेंदेशमेंसेंहीं इनकोंप्राप्तहुई ओर यह विद्वान बनकर अपनेंकोंही उपदेशयोग्यहोगये ॥ तोठीक एसाहीसमझो परंतू अपनीविद्या ओर अपनसेंहींनेष्टक्युंहुई तोजानागयाके गोप्यरखनेसेंही यहहानीहोतीहे ओर अबभीयत्रदेशीपंडिततो शदविद्यापढावनेकीइच्छाही नहींरखते फिकरहेके अबहीसीखीहुईविद्या भूलभालके अनार्यनाहिंहोजाय पर एकआसाजरूरबँधीके इधरतो कायदेकानून जारीहुये ओर इस बाचेपढेबगेरश्रेष्टकार्यनहिंचलता सोजराबाचपढकर द्रष्टीगोचरकरनाँहींपडेगा ओर इधरछापेखानोंकेसबबसें असंख्यातग्रंथ छपकर प्रकाशितहो रहेहे सो पोहोपदेवतो अबभीगोप्यकरनाचाहेंगे पर कहींनकहींतो विद्यारूपी मणिचमककरप्रकाशितरहेहेंगा इनछापखानोंकी विद्याकायश ओर कीर्ति धन्यवाद सहवारंवारमानणेंयोग्यहें ॥ विद्यापढकर पढावनेसें अधिकवृद्धिहोतीहे ओर गूप्तकरनेसें प्रकाश हीन होजाताहे जैसें दीपककीक्राति पवनकेसंगप्रकाशितहे ओरदीपककापवनबंधकरनेसें क्रांति हीन याने (बुझकर) नाशकोंप्राप्तहोजाताहे वैसेंहीं विद्यादबाकर गुप्तरखनेसें नेष्टहोजातीहे तब पीछाप्रकाशितहोनेमें वडाक्लेशउत्पन्नहोताहे तो प्रथम

हीउचीतहैके विद्या पढनें पढानेंका उद्योखकरें देखो अपनभीतोकिसीसें सीखीहै ओर उस्सेंसीखकर अत्यंतआनंदयुतद्रव्यसंग्रहभीकीया तो अ गाडीसिखाकर प्रकाशकरनाचाहिये यहकार्य अतहींश्रेष्टसमझकर पढा नेंकाउद्योगसदैवरक्खें हमारातो स्वजन सद्विद्यावान पुर्षोंसें वारूंवार स विनय यहीप्रार्थनाहै आसाहैकि स्वीकार करेंगेविद्याकेसिवाय अन्यवस्तु नहिंहै ॥ श्लोक ॥ विद्यानामनरस्यरुपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तंधनं ॥ वि द्याभोगकरीयशः सुखकरी विद्यागुरुणांगुरु ॥ विद्याबंधुजनोविदेशगमने विद्यापरंदैवतं ॥ विद्याराजसुपूज्यते नहिंधनंविद्याविहीनःपशुः ॥ १ ॥ ऐसासमझ विद्यासीखनासिखानाचाहिये.

श्री

अथकन्या.सिक्षा

प्रथम कन्यावोंके मातापितावोंकों चाहिये कि कन्याकोंजन्मसेंही श्रे ष्टचलन शुद्धशब्दभाषण साहाकारा जीकारा मधुरताकेसाथबोलणाँसि खावे रेंकारा तूंकारा गाली कटुकबचन ईरखा ईसखा ऐसेवाक्यनहिंसी खनेंदे जबच्यारपाँचवर्षकीहोजावे तब (लैंहगागाघरादि) वस्त्रपहरणाँसि खावें पुन्हजीमणाँ बडीचातुरता केसाथहोना टेराटपका व हात व मुँहभी नाकतकनहिंभरले व थालीकेबाहरनहिंविखेरे ॥ और अधिकथालीमेंभी नहिंलिपटावें यहचतुराईबालपनेंसेंहींआवेगी औरएसालाडनहिंलडावेकी कन्याघरघरभटकतीफिरे और हासीखिलवतकरदांतानिकाले व नाचकूद केवेसरमवेहयाहोजाय (पुन्ह) चुराकेमिठाईखाय सबसेंलडतीफिरे जोऐ सेर कुलक्षणबालपनेमेंसीखेगीवह सुसरारमेंजाकर मातापिताकों हमेसेंगा लियेंदिवायगीइसवास्ते कन्याकों जन्मसेंहीं लाज सरम चातुरता सुभाष ण सिखानाचाहिये ॥ पुन्ह केईकलोगकहते है कि बडीहोगी जब लाजस रमबहोतहीसीखलेगी तो यहकहनाउनलोगोंकीबडीभूलहै क्योंके कच्चे

घडेकेतोकारीलगानानहिंचाहे और पकनेंपर कारीलगानेकीइच्छाकरे यहमूर्खताहे समझनाँचाहिये कि जन्मसेंकुलक्षणसीखे फेरभूलकरशुलक्षणआनाकाठिनहे इस्सेंबालपनेमेंही शुलक्षणसिखानाउचितहे औरविशेष बेअदबीकेगीत गार व नाचना यहभीबुरा सुशोभित कलाकिंचितहीचाहियेयहतोऽस्त्रियौंका स्वाभाविकधर्महे जबबडीहोवे तब हावभावगानविनोदादिआपहीआपप्रगटहोजातेहें बालपनेमेंतो कन्याकों चातुरीसिखानाचाहिये क्योंके कन्यापरायेघरजावेगी कुछन सिखावोगे तो सुसरारवालेगालियेंदेवेंगे जिस्कौंसुनकर वहकन्या घरमेंकलहकराकरेगी वही कलह तुमारेतकपोंहोंचेगी क्योंकेबेटीका सुख दुःख पीहरतक आयाकरताहे जिस्सेंउचितहेके प्रथमतो घरकाधंधामें प्रवीणकरें यद्यपिआप लक्षाधिपतिहोय तोभी कन्याँको इतनीचातुरीतोजरूरसिखानाचाहिये जैसे बरतनमाँजणाँ घरनीप ढोल झाडू बुहारूदके साफरखणाँ माँडणाँ चित्रणाँ नाजसोझणाँ दालचुगणाँ वीणनाँ नाडा डोरी कसणाँ गूंथणाँ सींवणाँ कसीदानिकालणा शाक पाक शुद्धकरणाँ भोजनादि पाकबणावणाँ (शूपकारविद्या) जलछाणनेंकीस्वच्छक्रिया उज्जलता वस्त्रधोके उज्जलरखणाँ इत्यादिहस्तक्रिया चतुराई सुल्लभरीतीसें सिखानाचाहिये. (पुन्ह) कन्याँवोंकों पढनें पढानेंका तो अपनेंमहेश्वरीलोगोंमें प्रचारहीनरहा तो अब मेरेलिखनेंसें कोंन पढावेगा देखोकोई अविवेकी अबूझ अन्याई अंधोंनें कैसा धोखा डालदियाहे के अस्त्रिकोंपढावे तो विधवा (रांड) होजावे व कोई कहखडे होजातेहेंके एक घरमें दोकलमनाहिं चलनें देनाँ जोकदापि उनकोंपूछें कि दोयकलमक्यों नहिं चलनाँ और पढनेसें कैसें रांडहो जाय. तबवहअविवेकी मनुष्य. लडनेंकों तैयार होजातेहें और प्रमाणिकउत्तर कुछनहिं देसक्ते देखो इनलोगोंनेंऽस्त्रिरांड (विधवा) नहिं होनें की क्या अच्छी दवा ढूंढली है आ हा हा इसबातपे बडीहासी आती है के उनदी

र्थेबुद्धि चातुरपाँडेजीकौं पूछनाँचाहिये के यह लखों औरतें विधवाहै और हुयेजातीहै सौक्या सब पढी हुई है. एसाईतो होताहोय जबतौ पढाणाँतौ कहाँ परकिसीकौं पढते आंखसेंभी नहिं देखना चाहिये परंतू हे विवेकी पूर्षों जराविचारतौकरौ. पढनेसें रांड (विधवा) हौनेंका धौखा केवल मूरखोंनें डाला है अबइनऽस्त्रियोंकौं पढानेका फायदा जौलिखूँ तौ बडीही किताब भरजाय कन्यापढनेसें पतीकौं जीवहानी पोंहोंचना यह भ्रमतौ हृदयस्थानसें दूरहीकरें देखो मुसलमानौंकी औरतें कुलपढीहुई होती है. और दक्षणी व गुजराती व पूर्वदेशियोंमेंभी कन्यावौंकौं पढानेंके मदरसे जगँहँ २ हो करपढाई जाती है माहाजन ओसवालोंमेंभी किंचित पढनेंका प्रचारहै और ब्राह्मणौंकी कन्याँवौंभी वहोतसी पढीहोती है पुन्ह क्षत्रियोंमेंभीऽस्त्रियौं पढी होती है. पर आपणमहेश्वरियोंमें तौ पढानेंका नामही नहिं लेते देखौ यहकैसी आँटपडरहीहै और कैसी भूलहै. नजानेंकिसनें धौखाडालाहै सबमुलकमें सबलोगौंकीऽस्त्रियों पढी हुई होती है पर वह सबविधवा होती तो नहिं देखी देखौ काशमीरमें छतीसपौंणकीऽस्त्रियें पढकर वेद पुराणकी पुस्तकें लिखा करती है चीण और अपरबिलायतौंमें सबऽस्त्रियेंपढकर अनेक चीजौंपे कसिदे ऽ स्त्रियोंके हातके आते है उनमें कैसे स्पष्ट अक्षर हिंदी अंग्रेजी बंगाली लिखेहोतेहैं और ऽस्त्रियौंपढकर अपनेंपतीकौं कितनीं सहायतापोंहोंचाती है अव्वलतोठंढीछाँहवैठेरहनाँ जाजमविछौना स्वच्छविछेहुये और इज्जतसें अपनेंघरवैठीरहकर और अच्छी २ श्रेष्टचीजोंबनाना पढना लिखना इस्सें द्रव्यकापैदाहोना व अपनेपतिकौं अनेकसाहतादेना व नामवरीजाहरहौना तोयहसबविद्याकागुणहैं और पढनेपढावनेंमें कुछदौषणनहिंपायाजाता फायदातौप्रतक्षहीजाहरहै देखौजिस्कीऽस्त्रिपढीहुईहै और उसकापतीकहिंविदेसमेंहै वह जौकुछदिलकी अभिलाषाकेसमाचारहै दुतरफेलिखपढकर अपनाआपहीसमझलेतेहै॥

वहवातेंसिवायस्त्रिपूर्षोंके तिसरानहिंजानसक्ता और जौस्त्रियें लिखीपढी नहिं होतीहै वह पतीकों कुछकेफियतलिखवानाचाहे तब अव्वलतो पर- पूर्षसें लाचारीसहितभाषणकरनापडेगा और केईदिनकुसामँदियेकरते २ पत्रलिखनेंकीहाँभरेगा तो मौकाभीपत्रलिखनेका एकांतहीदेखेंगे और जौकोईऐसी हकीकतहै कि जिस्कों जाहरनहिंकरसकती तौ वह मनकीअभिलाषा मनहीमेंरहेगी और जौजाहरकरे तो वहवाततीजेका- नहौतीहै और पत्रलिखनेंवालेसें लज्ज्याभीखुलजातीहै यहाँतक किसंक खुलकर व्यभिचारसंगक्रिया और धर्मभीनेष्ट हौजानाकुछअसंभवनहिं इस्सेंभीजादाखराबियें बहौतसीहौतीसुनी व खुदनजरोंसेंवीदेखी पर जादा जाहरेमेंनहिंलिखसकते यह सब नेष्टकर्म अपढस्त्रियोंके सबबसेंहौताहै और जोकुछगुह्यबात लिखनेंवालेकौंनहिंकहै तौ पतीतक पत्रद्वाराजाहरभी नहिंहौती जबपतीमिले तब अपनेंदिलकाआशयकहेगी क्योंके कोईभी गुप्तवात (ऽस्त्रिपूर्षके) परस्परकहनेकारीवाजहै और दोनोंमेंसें एकका शरीरनाशहौगया तो बस दिलकीदिलहीमेंरही (पुन्ह) स्त्रियोंके नहिं पढनेसें एक औरभीबडी हानीहै कि लेनदेन बहीपानाँ खत खाता तम स्सुक पटा रहननामा फारखती भाईबंट मकानादि तकसीमनामा वगेरा कागजातहै और पतीस्वर्गवासीहौगया तो अपढस्त्री वहकुलदस्ताएवज दुसरोंकों भतलावेगी वहाँ अनेकप्रकारकेनुकशानहै कहाँतकलिखें सुजन मनुष्य थोडेमेंहींसमझलेंगे देखौ पढीऽस्त्रि पतीकों अनेककार्योंमें सहा- यतादेसक्तीहै यहाँतककी राज्यादिकुलव्यवहार अपनेंघरका वौ स्वच्छ- तासें चलायसकेगी (पुन्ह) घरघराणाँ व्यवहार द्रव्य लेन देन कुछ नहिंविगडनेंदेगी अब इसदेशकी अपढअविद्य (मूढ)ऽस्त्रियौं अपनेंप- तीकौं क्यालाभपोंहोंचासक्ती उलटी तकलीफहीदेतीहै और अपनेंपुत्र- पौत्रोंकों विद्या व सिक्षा चालचलन व्यवहार व कन्याँवौंकौं चातुरीव- गेरा क्यासिखावेगी देखौ कन्याँकापढनानिषेधहौता तो अपनेंपितामह

ब्रह्मांजी सरस्वतीकों क्योंपढाते पढनेंलिखनेंवाली स्त्रि नेष्टकार्य प्रथम तोकरेहीनहीं और किसीसेंबणहीजायगा तो धर्मसेंडरेहीगी और नेष्टकार्यकरनेंवाली स्त्रियोंकों सिक्षादेतीहीरहेगी कितेकलो ग ऐसे द्रष्टांतदेतेहेंके स्त्रिजोपढीहुईहोगावो अपनादिलचाहेजिस केपासस्वयंपत्रलिखअपने दिलकाअभिप्राय (जैसाचाहेवैसा) जाह्-रकर मनोच्छितकार्यपूर्णकरलेगी तोजराविचारनेकीबातहे किअनेकस्त्रि येंनेष्टकर्मकरनामडुबातीहेसो क्यासवपढीहुईहेनहिंनहिं पढीहुई स्त्रिहोगावो अनेकपुस्तकोंके द्रष्टांत बाचपढहरतरह नेष्टकर्मोसें बचेहीगी और अप ढमूढ स्त्रियेंहे उनकों सिवायखानेपीनेपहरनेओढने बराबर कीमेंकहकह-मारहसनेकेओरकामनहिंहे वह स्त्रियेजो कुमार्गी होजानेमेंतो कुछआश्चर्य हीनहीं क्योकेवहनिंदककर्म कथावोंको क्यासमझे शुद्ध धर्मप्रवर्तिक होना येतो सतसंगतकाफलहे (कर्मकीगतिकोईजाननहिंसक्ता) हमारी राहा-तो यह है कि कन्याकोंजरूरपढाना जिस्सेंसंसारव्यवहारकार्य औरधर्मा धर्ममेंसमझके कुछपरलोकहितकारी धर्ममार्ग की पुस्तकोंका भीपाठ-करे अविद्यमनुष्यतो पशुवतहे और मानुषदेहभी बारंबारप्राप्तनहिंहोति इसवास्ते उचितहे कि कन्याकों जरूरपढाना. ॥ इति० ॥

श्रीः

[वैश्य व्यवहार रत्नमाला सिक्षा.]

चोपई—श्रीगुरुदेवचरणचितराखूँ ॥ वैश्यव्यव्हाररत्नयहभाखूँ ॥
परथमशिशुसिक्षासुनलीजे ॥ सुजनहोयनीकेचितदीजे ॥१॥
दोहा—श्रीगुरुदेवमनायहूँ पूरेमनकेकाज ॥ पुनिबंदनपरिब्रह्मकों सज्ज नसंतसमाज ॥ २॥ बंदुँजगकेकविनकों चतुरनकोंसिरनाय ॥ सिक्षाग्रंथ बनायहूँ बालबोधसुखदाय ॥ ३ ॥ (अथसिक्षा) प्रातसमयनितऊ

ठिके सुमरौश्रीगुरुदेव ॥ गुरतेंज्ञानजुपाइये लहेसकलविधिभेव ॥ ४ ॥ संथालेगुरुदेवपैं घोखेचित्तलगाय ॥ कंठचढेततकालही जनमलगेसुखपाय ॥ ५ ॥ पाकेभाँडेनाँलगे कारीकौड़उपाय ॥ ब्रद्धापनविद्यापढे चढेन कंठसुभाय ॥ ६ ॥ तातेंमेरीबीनती सबजनतेंकरजौर ॥ बालक सिक्षादीजिये ज्यूँनृपदंडेचौर ॥ ७ ॥ स्यामदामअरुदंडले भेदच्यारपरकार ॥ नृपतसकरपेंसाँचले बालकविद्यासार ॥८॥ जबबालककोजन्महै कीजैहरखउछाव ॥ ईष्टसहितगुरपूजिये कुलकुलदेवमनाय ॥ ९ ॥ रखौ खिलावणकारणें उज्जलकुलकीधाय ॥ खानपानउज्जलअलप दधिघ्रतदूधपिलाय ॥१०॥ नितउज्जलपौसाखिये निरमलनीरन्हवाय ॥ चितचौकसकरराखिये मुखमृतिकानाँहिंखाय ॥ ११ ॥ जबमुखवाणीउच्चरे सुंदरबचन सिखाय ॥ रेतूँकबहुनकहिसके यह सबकेमनभाय ॥१२

तबखेलनमेंचितलगे बालमंडलीमांय॥उज्जलबरणमिलाइये नीच संगनहिंथाय ॥ १३ ॥ बरषपंचकोजबहुवे विद्यागुरुपेजाय ॥ वहुतबीनतीकीजिये बालकहितसिरनाय ॥ १४ ॥ सुणीप्रसंस्याआपकी विद्यागुण भरपूर ॥ बालअग्यानउडाइयें ग्यानउदितघटसूर ॥ १५ ॥ यहममबालकतौतला समझतनाँहिंअजान ॥ याकोंबहुतप्रकारकी दीज्येविद्यादान ॥ १६ ॥ रौजहाजरीलीजिये कीजेबहुतबखान ॥ प्रीतरीतमुखभाखिये जबलगिपूत्रअजान ॥ १७ ॥ कहूंकुसंगनहोसके कीजेजत्नसुसंग ॥ बालकविद्याराचिहै ज्यूंमजीठकौरंग ॥ १८ ॥ द्रष्टांत सोरठा ॥ बालपनेकीबाण बाणहतीजेहितताड़िका॥ शिवधनुतोड़्यौताँण रामबाणरावणहत्यौ॥ १९ ॥ इन्द्रसीलकोंछौड बालपनेसेंयोकुसंग गुरुगौतमघरजाय जूणसहश्रपसिद्धजग॥२०॥ दोहा बालपणेंचौपड़रम्या पंडवपव्याकुपाठ॥ राजगमायौबनलयौ सिरमेंदईबराट ॥ २१ ॥ बालपनेचौरीकरी मोसौजनम्प्रयंत ॥ कौस्तुभमणिदानवहरी चौरीकृष्णदयंत ॥ २२ ॥ ग्वालकु-

संगनपायके चौरीमाखनखाय ॥ राजपायरुकमाणिंहरी प्रकृतीबालसुभा-
य ॥ २३ ॥ हौतकुसंगनबडनकौं लेतकुलक्षणअंग ॥ साचकहैशिवक-
र्णियो कीज्ये जत्नसुसंग ॥२४॥ बरषदवादसकोहुवे जबअनहेतजनाय॥
मंदमंदसीत्रासदे विभ्रमवचनसुनाय ॥ २५ ॥ नितपतलीजैहाजरी दीजे-
सीसधुनाय ॥ कछुनपढ्यौयूँ बौलिये आगेऔरसुनाय ॥ २६ ॥ ज्यूंज्यूं-
पढपढचतुरह्वै त्यूंत्यूंकरियेधीर ॥ हुन्नरहदबसिखाइये चलगतचालउमीर
॥ २७ ॥ सगपणसौंजबणाइये जौड्पेढकोजौय आदअंतलगपूछिये घ-
णकुलवंतीहौय ॥ २८ ॥ भूषणवसनबनाइये खूबीरंगसुरंग ॥ बर्षपांच-
सुखदीजिये पितातणेंपरसंग ॥ २९ ॥ वरषचतुर्दसकौहुवे जबएकग्यान-
उपाय ॥ एकदौयगुरुईष्टका दीज्यैग्रंथपढाय ॥ ३० ॥ चवदेविद्यानिधान
कर कलाबहूतरजौय ॥ पूत्रपरौटनरीतहै सुणलीज्यौसबकौय ॥ ३१ ॥
यहचवदेविद्याप्रगटजगतमाँहिंविख्यात ॥ नामधरूँक्रमतेंसबहि चातुरहि-
यधरिवात ॥ ३२ ॥ राग[1] रसायण[2] नृत्य[3] गत[4] नटविद्या[5] बेदंग[6]॥तुरीचढण[7]
व्याक्रणपढण[8] जानतजौतिष[9]अंग ॥ ३३ ॥ धनुषबाण[10] रथहांकबो[11] चित्त[12]-
चौरी ब्रह्मग्यान[13] ॥ जलतीरण[14] धीरजधरण[15] चववेविद्यानिदान ॥ ३४ ॥
सर्वोपरिधीरजधरण विद्यानामवसेक यातेंसबहीसिद्धहै धरौधीयपुनिएक
॥ ३५ ॥ प्रथमपरीक्षादीजिये खातारौकड्दाम ॥ तौलमौलअरुभावका
दीज्येभैदतमाम ॥ ३६ ॥ चूंपचाँप भूषणवसन बैठकमानमरौड ॥ ठु-
कराईसबसोंमिलत कीज्येनाहिंअखौड ॥ ३७ ॥ यहिविधिपूत्रपरौटिके
कुशलकरौसबकाम ॥ जगसपूतसौभालहे बहुतकमावेदाम ॥३८॥ बाल
बौधशिवकर्णकहि यहलरकनकेहेत ॥ चतुरनकौंबहुग्रंथहै लीज्यौअरथ-
समेत ॥ ३९ इतीरीताशिशुकौंसबे सीखावैगुनवान ॥ मान्यलेंहिसबठौर
वहबाजेचतुरसुजान ॥ ४० ॥ इति वैश्यव्यवहार रत्नमाला बालबौध
सिक्षाचालीसी ॥ सहाशिवकरण रामरतन दरक मूंडवेवाला, कृत.

श्री

[बेपारी बोधवचन शिक्षा]

(दोहा) सकलरीतबेपारकी बोधवचनरसरीत ॥ वैश्यधर्मकोमूल है सुनौस्वजनकरप्रीत ॥ १ ॥ ऊठप्रभातदुकानकों नमसकारकरखोल ॥ झाडबिछायतकीजिये राखोपूरातोल ॥ २ ॥ घडीलगावोमालकी इकहिसाबकरबोल ॥ सत्यपुरषकीबोवनी कीज्जैसच्चामोल ॥ ३ ॥ साद-रसहितमिलापकर पूछौसबकुसलात ॥ जोआवेपरग्रामतें हसकरकीज्ये-बात ॥ ४ ॥ आवतमिलियेभावतें जावतकरियेप्रीत ॥ वैश्या बनिक सुनार ठग अंगच्यार एकरीत ॥ ५ ॥ मीठीबाणीबोलिये ॥ गाहकसह-जसुभाय ॥ भूलदामकोउअधिकदे देपीछापलटाय ॥ ६ ॥ अधिकलो-भनहिंकीजिये तजदुकानमतिजाय ॥ वैश्यबोधहिरदेधरे ठगतेंनांहिठ-गाय ॥ ७ ॥ भूलप्रतीतनकीजिये होतकोऊअनजान ॥ भेदनदीज्येआ-पको परकोलेहिंपछान ॥ ८ ॥ जहाँजुहारबहुमित्रता तहाँनकरोउधार ॥ भाणेजानहिंविणजिये समदीविणज्याँहार ॥ ९ ॥ सालाबहन्योईससुर धीयजँवाईवीर ॥ एता विणजनकीजिये कहकरगयेकवीर ॥ १० ॥ गह-णाँगाँठापारका गिरवेधरोआँकाय ॥ कौलबोलकीमतअसल लीज्योंतोल-लिखाय ॥ ११ ॥ चीजहोयहरएकहीं सस्तीहोयसुभाय ॥ तोखरीदकरली-जिये माससवायाथाय ॥ १२ ॥ अनसंग्रहकरताँबने आयेभावनराख ॥बाढी सेतीदीजिये नवोसवायोसाख ॥ १३ ॥ सकलअन्नमें जीवकी उतपतहोय अपार ॥ तातेंवस्तुअनेकहे पापरहितव्योपार ॥ १४ ॥ भांगतमाखूला-खलोहो नीलखारविषढोर ॥ लकडकसाईठगबधिक तजोजुवारीचोर ॥ ॥ १५ ॥ एताविणजनकीजियेलाखगुणाँजोहोय ॥ देखपडोसीविणजता जीतीगयानकोय ॥ १६ ॥ काढाकाढेऔरका देवेअमरउधार ॥ सिरप-

ररिणरहजातहै तामेंफेरनसार ॥ १७ ॥ पुराचीनसाख १ ॥ काढाकाढे-देहउधारा ॥ जाकाजायाफिरेकँवारा ॥ उधारहारटांगरारीता ॥ रायोंचे-तनसेंकहै रोकलियासोजीता ॥ १८ ॥ (दोहा) जोवैरीसिरपरनहीं तोतुमकरोउधार ॥ सज्जनतेंदुसमणहुवै कहशिवकरणविचार ॥ १९ ॥ बहुतजतनकरराखिये पैसेजैसीचीज ॥ मुसकलसेंपैदाकिया फोगटमत-कररीझ ॥ २० ॥ खरचदामपैदाससम लोकोंकीक्याहोड ॥ तेतापांव-पसारिये जेतीलंबीसोड़ ॥ २१ ॥ पैदाखरचसम्हालके चलियेमध्यवि-व्हार ॥ भलोकहैसबलोकमें नहिंतरकहैगँवार ॥ २२ ॥ आरानुगतामा-हरा कीज्यैजुक्तविचार ॥ घरमरहैहुरमतवधै एहीलोकाचार ॥ २३ ॥ बृद्धहोयघरआपणें सज्जनसकल मिलाय ॥ बहुतवीनतीकीजिये मुखसें मीष्टखिलाय ॥ २४ ॥ जिणघरबृद्धउछावहै तजकड़वाईबाद ॥ मीठा-जीमणभूलसीकड़वाबोल्यायाद ॥ २५ ॥ काहूरीसनकीजिये काहूमती रिसाय ॥ गालीठट्ठामस्करी नामुखवैरबसाय ॥ २६ ॥ हलकीबाणीं-बोलतां ओछीउपजैबुद्ध ॥ मीठीबाणींमनरँजे सबकोंआवतशुद्ध ॥ २७ ॥ चालबडोंकीचालिये होयअनोपमरीत ॥ हैकुचालतज-दीजिये बहुरनकरियेचीत ॥ २८ ॥ मोटाकामकमायके मतगर-भीजोकोय ॥ बडेएकतेंएकहीं आलेआलेहोय ॥ २९ ॥ छुटबे पारीजानकर हलकीनकरजबान ॥ माटीनीप्याजानजे चूल्हास-कलसमान ॥ ३० ॥ मांडूगिरमालागिरी तहांएकभेंसासाह ॥ सुणमो-सोगुजरातको दीन्हीलांगखुलाय ॥ ३१ ॥ कबहूभूलनकीजिये मोटां-सेतीवाद ॥ जोजीतेतोहिहारसम जबतबहोतविखाद ॥ ३२ ॥ रेसजनां-कीज्योमती सबलाँविणजरुबैर ॥ लांगखुलाईलंकगत छिनकनलागीवैर॥ ॥ ३३ ॥ रामवैररावणमुँवो मांडूभेंसासाह ॥ तेलविणजगुजरातमें दी-न्हींलाँगखुलाय ॥ ३४ ॥ अधिकपुराणोंनग्रतज अरुकुसंगकुग्राम ॥ त-जकुमित्रततकालही बसोनविनसुग्राम ॥ ३५ ॥ बालआलनाहिंकीजीये

बडांनकीज्यैबैर ॥ गाँवकसालेछोडिये धनवतबसियेसेहेर ॥ ३६ ॥ नवाअन्नभोजनकरो पाणीपीवोछाँण ॥ खातापीताघालणाँ सगाकरोतोजाँण ॥ ३७ ॥ बहुतगुंजनहिंकीजिये अधिकमित्रताजाँण ॥ दीन्हींभेदसुनारकौं बीप्रभयोबिनप्राँण ॥ ३८ ॥ सुनीबातअतिमर्मकी काहूमतीसुनाय ॥ जोजाहरकीयांवने तो रैस्येरैस्यजनाय ॥ ३९ ॥ मुखतेंनिकसेदुःखहुवे ऐसीबातछिपाय सवासेरअनपचतहे तैसेंगुपतलिपाय॥ ४० ॥ द्रष्टांत पुराचीन कवित ॥ १ ॥ एकतोसुनतबात बुद्धकेसयानपसों स्वातजलसीपजैसें अंतरधरतुहे ॥ ताहीतनताकके तकतमरजीवासे पावतनहिंपारजोपें सिंधुमेंपरतुहे ॥ एकजोसुनतबात कंठमेंपरतआत नाहनकहेतेंअति अंतरजरतुहे ॥ एकसुनऐसेंयूँ प्रकाशकरेठौरठौर मानूँदीपमालकाके दीपकसेजरतुहे ॥ ४१ ॥ दोहा॥ तीनपूतलीपातस्या मेल्हीलेनपरक्ख ॥ एकअमोलएकलाखकी एककोडीतीनतरक्क ॥ ४२ ॥ मीत्रद्रोहघरघातसम चुगली चोर अन्याय ॥ ढक्याउघाडेपारका नरकनझेलेताय ॥ ४३ ॥ राजसभापरवेसकर हरहुन्नरतेंजाय ॥ तजोसूंकचुगलीअहूँ तोनृपपूजेपाय ॥४४॥ गूष्टकरेजोदोयमिल दीज्येनांहींकाँन ॥ चूँपबिनाँहसवोनहीं अधिकनकीजेताँन ॥४५॥ दोयआपसमेंबोलताँ बिचेनबोलोबीर ॥ चुपकतालरसपीजिये मूलगहोमतिधीर ॥ ४६ ॥ तंतमिलेजबबोलिये सबकूंवैणसुहाय ॥ आठमासगूंगीरहे पिकुअमृतरसपाय॥ ॥ ४७ ॥ मनमजूसगुणरत्नहे चुपकदेतहेताल ॥ गाहकविनाँनखोलिये बायकबचनरसाल ॥ ४८ ॥ बैठहताईबुझनकीरसकीबातनभाक ॥ समझतकहाविनोदमें वेकरबीकेगहाक ॥ ४९ ॥ पुराचीन १ ॥ रेगायनयहगायसुत तूंजानतपरवीन ॥ यहगाहककरबनिके तेंजुलियोकरबीन ॥ ॥ ५० ॥ मूरखकोमुखबिंबहे निकसतबचनभुयंग ॥ ताकीअवषधमूनहेजहरनव्यापतअंग ॥ ५१ ॥ कीयेबादगँवारसूँ उलटीबुद्धसराय कहोहीरक्योंफोरिये पथ्थरसेतीजाय॥ ५२ ॥ ओछेनरकीसंगतें निश्चयहोतकुं-

संग ॥ इंडधरेपिकुकाकघर पायौरंगकुरंग ॥ ५३ ॥ औछासंगत जौहुवे समयपायबनजाय ॥ कामनिकारौआपनों द्यौततछिनछिट काय ॥ ५४ ॥ भूलनकीजैजामनी झूटीसाखनगौय ॥ अणदी- ठीमतआदरे सुणीसुझूटीहौय ॥ ५५ ॥ बुधजनवैरनकीजिये जौ- हैतौहुसियार ॥ भूलप्रतीतनकीजिये कौटकरेजौप्यार ॥ ५६ ॥ पु- राचीन ॥ १ ॥ पायपरेहूपिशुनतें मिलनहींकीजेबात ॥ नमतचंचजौकू- पकौं जीवनहरलेजात ॥ ५७ ॥ पहुणपरायेमतचढे भूषणबसनकृपाण ॥ परघरपरत्रियभौगताँ जबतबदुखकीखान ॥ ५८ ॥ मंदमांसपरघरगमन परधनजूवाझूट ॥ अमलतमाखूभांगनव सज्जनदीज्यौपूठ ॥ ५९ ॥ स- कलविसनतें बीगरे सुधरे नाहिंप्रवीन ॥ धनछीजेकायादहै जगकुशौभ है दीन ॥ ६० ॥ मित्रकरौकुलवानकौं गरवाग्रीष्टगँभीर ॥ विपतपरचाँ विरचेनहीं वहसज्जनमतिधीर ॥ ६१ ॥ पुराचीन ॥ सौसज्जनअरुलाख- मिंत मजलिसमित्रअनेक ॥ भीरपरचाँभाजेनहीं सौलाखनमेंएक॥६२॥ काल व्याल गज केसरी रिपु अगनी सुलतान ॥ सतमित्रशिवकरणकह देख्यासुण्याँनकान ॥६३॥ नापिक कापिक हेमकुट चक्री तक्री धौट ॥ यह खटमित्रनजाणिये चुग्गाऊपरचौट ॥ ६४ ॥ कणवारचा कागा कुता गौलाँ किसड़ीगौठ ॥ एतामित्रनजाणिये चुग्गाऊपरचौट ॥ ६५ ॥ वैश्या भडवा बांदरा भांड भालु अरु वैद ॥ एतापलटेपलकमें बभ्भा- षष्टनखेद ॥ ६६ ॥ रेबारी रौगी रिणीं जूवारी करसाँण ॥ चौर रसाणीं गारडू अष्टझूटकीखाँन ॥ ६७ ॥ अतिलज्या अतिधीरता अतिआलश अभिमान ॥ सप्तभवनदारीद्रके ॥ कलह ऊंघ अज्ञान ॥ ६८ ॥ बहुम- हिनत बहुमित्रता बहु हुन्नर बलवान॥ पुनिसुबुद्ध अरुसुगमता धनकेस- समकान ॥ ६९ ॥ सबसुलच्छाहिरदेधरौ तजकुलक्षविप्रीत ॥ जगसौभि तमघचालिये एहबडौंकीरीत ॥ ७० ॥ बौधबचनबहुविध किये सीखस लूझे कौय ॥ बाचाविगाडेमूंहकौं नाँकछुहासलहौय ॥ ७१ ॥ वैश्यरीति

जानूँनहीं स्वजननकरियौरीस हैकृपालकहोठीकहै यह मोकूंबखसीस ॥
॥ ७२ ॥ ४० ॥ इतिवैश्यव्यव्हाररत्न माला वैपारी बौध वचन ॥

श्री

अथ हुन्नरियोंका इतिहास

सद्दा शिवकरण रामरतन दरक माहेश्वरी मारवाडी मूँडवेवाले
की प्रार्थनासहित विनयहै कि इस्कों बारंबारबाचना ॥

यासंसारविषय हुन्नर औरविद्या व्यवहार और बेपार यहच्यारबातमु-
ख्यहै इनबस्तुवोंसेंहीन जोमनुष्यहै उसकाजीवनहीबृथाहै सो विद्याप्रक-
र्णतो प्रथमहीवर्णनकरचुके अब व्यवहारसंमंधी व हुन्नरियोंकीबातें व
हुन्नरकागुणलिखतेहैं अपनेलोगोंनें व्यवहारइसबेपारहीकोंमानरक्खाहै
पर बेपार और व्यवहारकास्वरूपजुदाजुदाहै व्यवहारकहतेहै संसारव्य-
वहार पर इसकीजड समझनाचाहिये जिस्सेंसबव्यवहारबराबरचले प्रथ-
मतोसत्यवचन और सच्चेकौल बौल सच्चे हलन चलन सच्चेलेनदेनरक्खे
छलछेद्रछोडकर सत्यवचनभाषणकरे और न्यायनीतीमेंबरते यहतो
व्यवहारकीजड़है ॥ अपनासोअपना परायासोपराया इस्कोंव्यवहार-
कहतेहैं बेपारादि सब इससत्यव्यवहारकेपेटमें है चाहेजिसचीजकाबेपा-
रकरो अब अपनेंलोगोंकों फगत बेपार और गुमास्तगिरिहीप्रसन्दहै
जोकदासकोईबेपारकरनेकों पैसानमिले वहफिरगुमास्तगिरिहीकरे और
यहदोनोंरुजगारोंसेंछूटजाय तो आजकल सौदा सट्टा आवरेज पेटी
औरपानीकासौदा जैसाके जुवाकाखेल इत्यादिरुजगारकरतेहैं पर
जबइनमेंभीपूरानपड़े तब वहसहरछोडकर दुसरेसहरमें व दुसरेमुलक-
में जापड़तेहैं जबकुछदिनतकतो वहाँकेलोगोंसें पहचानकरे और रोटि-
योंके मोहोताजहोकर लोगोंकीखुसामँदियेंकरतेफिरे पर कुछहुन्नर व

विद्या अद्धेननहिंकरलेते जौकदापी कोईहुन्नरसीखलेतेतौ काहेकौंकिसी-
की खुसामदकरते और क्यूँस्वस्थानछोडकर परमुलकोंमेंभ्रमणकरते
और अपनेंपास कुछहुन्नरहौतातों अपनीखुसामदलौगकरते कहाहैके सद
विद्याचकिधनै) ॥ सद्यविद्याहैहुन्नर सौपासहौवे तब प्रथमतौअपनास्वदे-
सहीनहिंछूटे जौकदापि मनइच्छ्यासें परदेसभ्रमणकरे तौभी जहाँजावेत-
हाँ आदरपूर्वक वहाँकेलौग हुन्नरीकौंरक्खें और वहांभीउस्सें हुन्नरसीख-
नेकीइच्छ्याकरे और हुन्नरीजिससहरमेंजावेवहाँजातेहीअपनाहुन्नरप्रका-
शकर पैसेपेदाकरलेवे और अपनागुजर अच्छीतरहसें चलालेवे रौटियों-
सें मोहोताजकभीनरहेगा परंतू अपनेंलोगोंकोंतौ हुन्नर सीखनेकी बडी-
हीसरमआतीहै और यहबातकहखड़ेहोजातेहैंके हमारेबडेबुढ्ढेतौबडे नामी
थे और अबहमयहहुन्नरकाकामकैसेंसीखें औरकैसें करें हमारे घरानेंमेंतौ
एसाधंधाकिसीनेंनहिंकीया देखौ उसदुरदशामेंभी हुन्नरसीखनाबुरामालू-
मपड़ा और इधर उधर भटक २ कर अपनेंबडेबुढ्ढोंका नामप्रसिद्धकरते
हैं लौगकहतेहैं के यह अमुकेघरानेंकेहैं बिचारे आजकाल बेरुजगारेहैं ॥
देखौ सबदेसोंमें और सबबिलायतोंमें सबजातकेलौग सबतरहके हुन्नर-
सीखके ताजीरौटियें कमाखातेहैं और हजारोंकोशौंतक अपनानामभी
जाहरकरलेतेहैं और हुन्नरसें एसीइज्जतबढालेते हैं केपिछाड़ीवालेभी
सेकडौं पीढियौंतक उसनामसे कमाखातेहैं देखौ अपरबिलायतोंमें है तौ
बडे २ हुन्नरी पर एकछौटेसेहुन्नरीका कैसा नामप्रसिद्ध हुवा है (राजस)
वहराजसके कैंची और चकू वगेरा सौउनके घरके औजार जिसकि-
सीके हातमें आताहै वह पीछा नहिं रखता खरीदहीलेता है एसें और
भीकई औजार बनाते हैं सौ सबभरतखंडमें जाहरहौगये हैं उस्के बनाये
हुये औजार हरएकआदमी मुखके माँगे दाम देकेलेजाते हैं इसी तरह
और हुन्नरियोंके नाम गनाऊँ तौ एक बडीसीकिताबभरजाय मुख्य हु-
न्नर बडीचीजहै इस्सें हजारों आदमीं पेटभरते हैं और इसविद्या हुन्नर

कीजड पेटमें रहती है नतो कोई चुरासके न धाडवीलूँटसके नकोइज-
बरदस्तीसें लेसके जोकोइसीखे सो उनसिखानेंवालेका सागीर्दही हो जाय
और उम्मरतक सिखानेंवालेका नामलेकर अपनाकानखींचके उसका-
र्यका प्रारंभकरे पुन्ह हून्नरीजहाँजावे जहाँ अगाडीसें अगाडी सबतत-
वीर हाजर और मौजूदहोजातीहै और नौकरी गुमास्तगिरीकीजड प-
त्थरपर वरनेपत्थरसेंभी गजभरऊँची है सौवर्षतेपानीमेंभी सूखजाय
और बेपार अपारहै पर इस्की जडपूँजी है और समयकालवर्तमान भा-
व रगौती रुख हमेसेंदेखाकरे तब जड़हरी रहती है और निद्रावस्थ हो-
नेंसें तो छतीपूँजी मंदी मंदवाडोंमें जड लुप्त हो जानेकी आशा है पर
इसजडकों बचाना बडेबागवानोंकाकामहै नहिंतो सूकजाय इसजडको
हरीरखना इस्में साचका जल और लेनदेनबराबररखनेका व्यवहारहै
उस्कोंविचाररूपी बाड़दके बचाना और झुटरूपी प्रचंडपवनसे वहवे
पाररूपी वृक्ष जडमूलसे उखड जाताहै तब वह बेपाररूपी बागके रक्ष-
क (बागवान) निकम्में हो जाते हैं तब केईदिनोंतक तो दुकानके
अडुवारदानोंसेंकामचलावे फिरतो गहनोंपर हातडालनापडताहै क्योंके
रोजमररेकाखरचतो कहाँतककमकरेंगे फेर घर हवेली और बरतनवा-
सण कपडे लत्ते भी बेचणेंमें आजाते हैं परंतू निकम्मेंबेठे पूरापडनामु-
सकल पीतेपीतेसमुद्रभी खालीहोजाय और सीर यानेंपानीकीं आवँदव-
गेर कूप नदी सागरादि सबही खालीहोकर सूखजाय ऐसें कितनेलोग
बेरुजगारहोकर निकम्में रोटियें मोहताजहो फिरते हैं पर हुन्नरसीखके
कमाखाना स्वीकार नहिंकरते क्योंकि बडेघरानेंवाले रेसमके पोतडोंके
जन्मे हुयेकों हुन्नर और छोटाधंधाकरना अच्छानहिंलगता फेर इसपे
कहनावटोंभी है (दोहा) केहंसामोतीचुगे केलंघनकरजाय ॥ छीज-
भीजघरमेंगले तोकमायनहींखाय ॥ १ ॥ इसीतरहसें घरमेंबैठे २ सब
धन और अलेबण अड्डाबारदानाथित बित गहना कपड़ेबेच २ के

खायपूराकर घरमें बैठे २ गरतेहैं और छीजकेमरतेहैं पर वहबडघरजी कुछभीपुर्षार्थनहींकरसक्के बिचारे मारेसरमके कुछभीविद्या व हुन्नर व हिल्ला नहिंकरते अजीवहतौबडेघराणेंके जन्मेलाडलेपूत्रपौत्रहै पर बडे घरानेमें गुमास्तेरहेहुयेभीकबी बेरुजगारेहोजातेहैं तब अपनेमालकोंकी नाँई घरमें रोटियोंमोहोताजहोकर बैठेरहतेहैं और कहाकरतेहैं कि हमउस ठिकानोंमें कामकमायेहुये छोटाधंधाक्याकरें हमारीनजरमें कोईरुज-गारजमतानहीं देखोभूखेंतोमरतेहैं और कपडों केपैवंद (थेगलियें) और पगडीमेंचींथरे भरकर टापटीपसेंनिकम्में जूतियें चटकातेफिरतेहैं पर एसीदुरदसामें भीकोईविद्या हुन्नरकों सीखके हिल्लानहिंउठासकते दे-खोकोईभी हुन्नरसीखलेते तो लोगोंकीखुसामदक्योंकरते उलटीखुसामद लोगहुन्नर[illegible]कीकरतेहैंबिनपूँजी और बिनपहचान परदेशोंमें हुन्नरी स-बसेंमित्रहोके धनकमालेतेहैंऔर अपनानाम प्रगटकरलेतेहैं पररोटियों सेंतोकभी मोहोताजनाहिंरहते इसपे एकद्रष्टांतदेतेहैं (कहानी) गुज-शतदेसमें एकबडासाहूकार लक्षाधिपति बडाबरबीर बुद्धीवजीर धर्म-नीतीपालकथा ताके मनोजमंजरीनामस्त्रीथी जाके गभाधानहोकर एक-कन्याँजन्मी ताकंन्याँकानाम क्रांतिप्रभारक्खा वोकंन्याँ एसीसुसोभित रूपशोभाग्यकीसीमूर्ति दसवर्षकीहोकर विद्या मेंनिपुणभई और देश-देशांत्रोंमें क्रांतिकाउद्योतहोकर बडेबडेसहरोंके सहूकारलोग स्वजाती-वालोंकी मंगनीआनेंलगी पर साहूकारनें यहीप्रणधारणकीयाके जोवि-द्या व हुन्नरमेंनिपुणहोगा (धनवान व दरीद्रीहीहो) ताकूं कन्याँदूंगा ॥ जबकोईविशाला कन्यांकीमंगनीकाआता ताकूंसेठजीपूछतेकी कँवरजी कुछविद्या हुन्नर भि सीखेहैं तब बशीठी (दलाल) कहतेकी उनकोंइन बातोंसेंक्याकाम बहतोबडेमोटेघराणेंके और घड़ेकडूंबे(बडेपरिवार)वाले धनवंतहै उनके हुन्नर और विद्या सीखणेंसें क्याकाम हजारों मनुष्य उन केहाजरीमें हाजरखडेरहतेहै और धनवानकीआसाकरतेहैं तबपीछा सेठ

कन्याँकापिता यहकहताकिठीकहै म्हेंकोईहुन्नरीढूँढताहूँ इसीतरहकरते२ कन्यावरयोग्यहोगई तबकेईदिनोंबाद एकलड़का अपनेंमतप्रनालिकाका स्वजाती बहुहुन्नरी नजरआया पर उस्केमाता पिता तो जन्मसमेंहीं स्वर्ग वासीहोगयेथे और कोईसगानसनमंधी जानेअकाससेंपटका और जमीन-झेला कोईजाणनापिछान परंतू वहलड़का हरएक्हुन्नरकरके नित्यकूवा खोदकर जलपीये यानें हमेसाँनविनहुन्नरकर रोटीकमाकेखावे औरबा-कीवचतासो पैसाहुन्नरसीखनेमें लगादे तव सेठउसलड्केको बुलाकर अपनीबेटीका विवाह बडेउत्सवसें आनंदपूर्वक करदिया और वहस्त्रि पूर्ष आनंदमेंरहनेंलगें वनित्यनविनहुन्नरकर अच्छीरीतीसें अपनेंघरकाका-मचलावे फेर केईदिनोंकेबाद देसमें वारहकालीपड़कर परा कहोके वह मुलकलुटगया धनवानके कंगालहोगये किसीकेपास कोडीपैसानरहा जि स वखतमेंसबलोग अपना२जीलेके जिधरचाहे उधर भगचले एक २ सें मिलनेंभीनहिंपाये माईपूतबिछुटगये तववहबहुहुन्नरीजीतो आपकीऔर तकोंलेकर अहमदावादसरीखे सहरमें जापहुँचे और वहाँजाकर हुन्नर काचलनदेखा तबरेसमी व कलाबत्तूके खीनखाँपवणानासीखकर थोडे सेदिनोंमें दोरुपयेरोजकेकमाऊहोगये बस रोजकेरोज दोरुपेकमा केलाकर अपनीऽस्त्रिकों सोंपदियेकरता बहोतदिनहोगये तवएकदिन पाडोसननें बहुहुन्नरीजीकी औरतकों पूछाके बाईतुम यहाँआये-थे जव तुमारेफटेहुये कपडेथे और पैसाभी मुम्हारेपासनहींथा अबतोतुम अच्छीतरहसें खातेउडातेहो तुमारेक्यापैदासहै जब वोवहुहुन्नरीजीकी औरतबोली के मेरेकोंतो कुछखबरनहीं नजानें-क्याहिल्लाकरतेहैं पर मेरेकूँतो दोरुपरोजलयादेतेहै खरचचठासोउठा बाकीबचेसोजमाकरतीहूँ जबवहपडोसनबोलीके नेकबखत पूछतोसही देखेंक्याधंधा और क्यापैसाकरके दोरुपेरोज कमालाताहै एसाहोतो जो-यहधंधाकरतेहैं वह हमभीकरें जबउसनेंकहा हाँम्हेंआजपूछूँगी तबवहब-

हुहुन्नरीजी सांझकों आये तबऽस्त्रिनेंपूछाके आपदोरुपये रोज किस-
धंधेसें कमायकरल्यातेहो जब पूर्षनेंकहाके तुमकों पूछनेंसेंक्या काम तु-
मतोचिकनीरोटियेंखावो और अच्छे २ रेस्मी जरी खीनखांपके स्वस्छ-
वस्त्र पहरो और मोजकरो तब वो अस्त्रि बिचारीचुपहोरही परउसपड़ो-
सनकों कहाँजकपड़तीथी दुसरेरोज फिरभीपूछा जबवोबोली के मेरे-
कोंतो कुछभीनहिंबतलाया और कहा तुमकोंपूछनेंसेंक्याकामहै तुमतो-
खुसीकरो तबपड़ोसनबोली के तेरापतीबडाकपटीहै सो ऽस्त्रितक-
कोंभीभेदनहिंदेता तबवह ऽस्त्रिबोली बाईकैसेंकरूँ जबवहपड़ोसनबो-
ली अयनेकबखत तूँ एकदिन इस्केपीछेजायकर देखतोसही के वहक-
हाँतोजाताहै और क्याकामकर कमाताहै खबरतोले बस यहकहतेही व-
हस्त्रि मूर्ख अविवेकताधारणकर भ्रमातुरहोय यहीकार्यकरणा उचितस-
मझा बस तकदीरकाफूटना और कमाखानेसेंछूटना क्याइलाजहै जबउ-
सऽस्त्रिनें दुसरेदिन अपनेंखावँदका पीछालिया और चलते २ एतो
वहींपहुँचा के जहाँसालवी और कोष्टी बुणकरोंका मोहोलाथा जाकेबे-
जाबुणनेंलगा और नलीयेंचलानेंलगा अब ऽस्त्रिनेंयहदसाआंखोंसदेख
आहभरतीहुई पीछी अपनेंघरआके रोनें पीटनें लगी और अपनेंमाता
पितावोंकोंगालियेंदेनेंलगी और बडीमुसीबतसें दिनव्यतीता सांझ-
हुवा और बहुहुन्नरीजीभी आये तोदेखतेक्याहै के घरमें दीवानबाती
रोटियेंतोकहाँ पर पानीभीनहीं जबतो बहुहुन्नरीजीनें बडेअपसोसकेसा-
थ अपनीऽस्त्रिकोंपूछा के आजयेक्याहै घरमेंदीवाहै नें बाती और आ-
हभरक्यूँ कूटतेहोछाती खेरतोहै क्या आपकों कुछभूतबातादि बीमारी-
तोनहीं है यहक्यादुर्दशाहोरहीहै तबतो वहऽस्त्रि माहाभयंकरक्रोधितहो
अपनेंपतीको अनुचितवाक्य अतिनिठुर गारियोंदेनेंलगी और कहनें-
लगी के अरेढेढ तूँदूरखडारह तूँतोबुणकर बेजाबणनेंवालाहै तेनेंमेरा
धर्मनेष्टकरदिया और दोनोंलोकों (अयलोकपलोक) सें बिगाडकर

बिटालदी तबउसनेंजानाकि भेदखुलगया औरतकीजातबेहया और मूर्खहोतीहै अब साचकहें तो कबमानती है किसमतफूटगया कमानाछूटगया घरानाँटूटगया दिनधौलेलूटगया अबसाचकहेंतौकबमाने औरकव इमानआताहै अबतोजोकहेसोहीमाननाचाहिये नहिंतौयहक्रौधकर प्रानकीहानीकरबैठेगी यहविचार लघुतासें वहअपनीऽस्त्रिकों समझाकरकहनेंलगा अबआपचुपरहो मेंजोकुछहूँसोहूँ अबआपकीक्यासलहाहैसोकहो तबवोऽस्त्रिबोली के बस अबमेरेकोंतोमेरेपीहर मेरे माबापकेपास पहूँचादो तबवहबोलाके चलो परउसकेमाबापभी कालमेंलूट खुसके गुजरातकेगावोंमें नटविद्याकाहुन्नरकरके अपनें कुटंबकापालनकरतथे चंद्रोज में यहभीचले २ उसहीगावोंमेंआनिकले आके एकसराहमेंउतरे और बहुहुन्नरीजी कुछसामानखानेपीनेंका लानेंको बजारमेंगये तहाँ आगेउन केससुरारवालेढोलतोबजारहेहें और बांसरोपरक्खाहै नाचकूदके च्यारछ बआनेंकेतोपैसे और दससेरनाजभीपैदाकरलियाथातब बहुहुनरीदेखकर तुरतहीसराहमेंपीछागया और अपनीऽस्त्रिसेंकहाके एक एसातमासा देखकरआयाहूं सो मेनेंमेरी सबउम्मरमेंभीनहिंदेखो और नेकानाँसुना जबवहस्त्रिबोलीकेकहाँहै तब उस्कोंसंगलेजाकर वहअजबतमासा नटविद्याकादिखाया वहाँ जाके देखेतोक्याहै के उसऔरतकाबापतो कुरकट (कूकडा) बनके नाजचुनताहै और अपनीपरेंसँवारताहै और उस्के भाई गुलाचाखाखाकर नाचते और भावजें बांसपरबरतलेके नृत्यकरतीहै और छोटे छोकरे छोकरियें तालियेंपीट २ के भलेभलेकरतेहैं जबतो इस ऽस्त्रिनेभी अपनें माता पिता भाइयोंकों पहचानके और बिलबिलातीहुई उनके कदमोंमेंजागिरी तब उन्होंनेंभी अपनीबेटीकों पहचानकर कंठलगाली अबतो सबमिले मिलाये और डेरेपेगये जहाँ सबोंनें स्नान ध्याँन करिके रसोईजीमणेंकोंबैठे तब वह बहुहुन्नरीजीकी अस्त्रिकहनेंलगीके मेरेकों तो दूर औरऊपरसेंहीं रोटीपरूसदो म्हेंतो इसबुनक

रसें विटलगईहूं तब वह महाहुन्नरी नटजीबोले के यह हालकैसेंक्याहै सो कहो तबतो वह बहुहुन्नरी जीनें हकीकतकही के हमनेंतो फकत का लकाटनेंकेनिमित रेसमी और जरीकाकाम बणनेंका हुन्नरसीखकर दि- नतेरकीयेहैं तबतोवह माहाहुन्नरी नृत्यकारीजी प्रसन्नहोकर कहनेंलगे हमतो बांस चढ और नाचकूदके पेटसा गुजाराहै और आपनेंतो अ- च्छाहुन्नरसीखलीयाहै सो ठंढीछाँयेंबैठके दोरुपयेरोज इसकालमेंभीक- मायें हमसेंतो तुमअच्छाहुन्नरसीखे आवो सबमिलके एक पंगत और एक थालमें भोजनकरें कमायखाया और पड्याहुवापाया जबअपनीं बेटीकों समुझाईके बेटीनतो यह बुनकरहै और नहमनट है येतो वखत- निकालनेंकी सबहीखटपटहै ॥ संदेसचोरी पर देसभीक ॥ एसेंबेटीकों समझाकर सबमिलपरस्पर भोजनकीये पीछे केईदिनोंकेबाद देशमें सु- काल हुवा सब लोग अपनें २ स्वस्थानोंपें जाकर आनंदपूर्वकरहनेंलगे॥ (पुन्ह)एक बादस्याहके हुन्नरसीखनेंका इतिहास इस हुन्नरसें बादस्या- हकीज्यानवचीहै हुन्नरअजबचीजहै (कहानीबादस्याहकी) एक चंद्रप्रस्थनामनग्र वडारमणीकथा वहाँ सोभनसुरेद्रराजा राज्यकरताथा तहाँ दैवयोग्य यवनोंकाप्रचारहो यवनोंकीगादीस्थापनहुई ताकावंशमें एकगुलवस्ता फिरोजस्याह बादस्याहहुवावो बडारूप गुण राज्यनीतीमें प्रवीणथा और रयतकों अपणें पुत्र पौत्रवत जाणकर न्यायनीतीमें वर- तता और उस्के राज्यमें सबरयत आनंदकरतीथी और उसीनग्रमें एक नीलगर अतिविद्या व हुन्नरीबसताथा जिसके एकवेटीथी सो बडीहीरूप सील गुण गंभीरथी उस्केरूपकोंदेखकर स्वरराजभीच- कितहोताथा परयवनजातीजानकर दिलमेंधीर्यधरलेता और मनुष्यतो- देखतेही भूमीपरलोटजाते और कामवसहोकर चितवनहीकरते एकदि- नवहलडकी अपनीअटारीपे न्हायकेबालसुखारहीथी तासमय बादस्या- ह की सवारीआनिकली और बादस्याह व उसलडकीकीच्यारनिजरहु-

ई देखतेहीमोहितहो खुदाकाशुकरकर कहनेंलगा या अल्लाबखसीसकर यहकहकर पीछाबादस्याहीमेंजाकर उसनीलगरकोंबुलाया और बहोत-आदरपूर्वकबिठाया बादश्याहने च्यारबातें इधर उधर की करके आखर बडीनम्रतासें बेटीमाँगी तब नीलगरनेज्वाबदीया के हुजूर मेरीबेटीतो कोईहुन्नरीहोगा उस्कोंबिवाहीजायगी बिगरहुन्नरी किसीहीबडे आदमीं और धनवानकों नहिंदूंगा तबबादश्याहबोला हमारा हजारोंकोसोंतक-तोराज्यहै और अरबों खरबों की पैदासहै व खासखजानेंजगें२भरेपडेहै लखोंहुन्नरीहमारेपासनाकघिसतेरहतेहैं और छोटेमोटेहुन्नरीतो मिलनेकी आसाहीआसामें बुड्ढेहोगये पर मेरामिलापहीकहाँ यहमेरीबादस्याहीके-अगाडी हुन्नर क्याचीजहै जब वहनीलगरबोला के अयबादस्याह जब बंदेकेसिरपर मुसीबत औ तबाही आपडतीहै तब धन माल और खा-सखजानेंक्याकामआवै वहाँतोफगत आपही आप दमोदमरहजातेहैं नो-करचाकर हजूरियोंमें हाजर अपनेहातऔरपाँव जब एकहीसच्चासाहुन्न रकिसीकोंयादहोय तो सबजिहान उस्केताबे होसकतीहै यह हुन्न-रअजबचीजहै यहसुन बादस्याहनेंजाना के वगेरहुन्नरतो यहअ-पनीलडकीकोंनहिंदेगा अबकोईएसाहुन्नरसीखना जिस्मेंकहींबाहर-नजानापडे और बजनभीनउठानापडे अपनेंघरबैठें च्यारआने-कीउपाय कोईबीहुन्नरसें करके इसकोंबतलादेवें जब बादस्याहनें सबहुन्नरियोंकों बुलबाकर हुन्नरतजबीजा तो सीना और कसी-दानिकालना प्रसंदआया क्योंके ठंढीछाँयबैठकरतोसीना औरजाजम-काविछोनाँ पुन्ह वजनहीउठानासोडेढरत्तीकीसूई जबबादस्याहनें थोडे हीदिनोंमें सीना और कसीदानिकालनासीखकर च्यारछवआनेरोजके-पैदाकरके नीलगरकोंबतलादिये जबनीलगरराजीहोकर अपनीबेटीव्या-हदी अब बादस्याहउसस्त्रिसेंआनंदकियेकरे ॥ बादएकवर्षके एकदिन बादस्याह अर्द्धरात्रीकोंगिस्तदेनेंअकेलाहीजानिकला तो आगेबजारमें

क्यादेखताहैके सबबेपारीतो अपनी २ दुकानेंबंदकर घरकोंगये ॥ और एकबडीहीदुकानआके रातकोंखुली जिस्कीरोशनीं और दरेसीदेखकर बादस्याहबहौतप्रसन्नहुवा और सेठभीएसाआनकेबैठा के उस्केपहननें-केकपडे औरगहनें दागीनें (जरजेवरकपड़ा) एसे अमोलथे कि वाद स्याहनेंभीनकभीदेखा और नपहना और मुखउस्काचंद्रमाँकेतुल्यच मकताथा और उस्केखदमतगारहजूरियेभी एसेथे के जिनके साम्हनें बाद स्याहकीउमीरायतभी हमालोंकेजैसी दिखाईदेरहीथी जबबादस्याहनें विचारकीया के देखो मेरेसहरमेंभी कैसे २ साहूकारबस्तेहैं जिनकों म्हेंपहचानताभीनहीं अबतोसेठजीगरीबों व फकीरोंकों खैरातबाँटनाश-रूकीया तो अनापसनापरुपये और असरफियेंफेंकनेंलगे जबतोबाद-स्याहनेंसोचा के यहकोई गूपतमायाधारीहै अबकलसवारीकरके मिल-नाचाहिये खैर मिलेंगेतोकल परइसबखतफकीरीभेषमें इस्सेंकुछसवाल-तोकरचलें तब बादस्याहनेंजाकर सेठसेंदुवाकरी तबसेठभीइस्कीतरफ-देखकरबहोतखुसहुवा के देखोक्यापचहत्ताजवान और क्याअंगरंगमेंभ-रपूरहै और अलबत्ते इसआदमींकेबदनमें लोहूभी एकमनसवामनजरू-रहोगा क्योंके वहसेठतोममाई गिराथा वोतोआदमीयोंकेसरीरमें चकू और नस्तर मार चीरके गरममसालेभरकर ऊंधाटाँगता और नीचेभ-टीजलाकर वादामकेतेलमें वह खूनटपकाकर भजियेतललेताइसीतरह लखोंआदमीयोंकीं ज्यानतोवोलेईचुकाथा (पुन्ह) इसीफिकरमें रात दिन व लखोंकीतलासमेंथा कोईभी चंगा आदमीं चढतेलोहूका देखेपीछे हरतरहकेपेचकरके उसकीज्यानपरजाल डालहीदेताथा इसीआशयसें वह बहोतसेरुपये और असरफियेंबाँटबाँटकर धरमातमाँपणेंकावाना रखताथा वह बहोतप्यारसें बादस्याहसेंपूछनेंलगाके क्यों फकीरसाहब किधरसें आपआये और क्याआपकोंचाहिये बादस्याहबोलाकि सेठजी काबुलकीतरफसेंआयाहूँ और बाबालालस्याहपीरकी जारतकेवास्ते

अकेलानिकला बडेघराणेंकाहूँ पर में बेखरचभूखाहूँ सो ताजाभोजन-
चाहताहूँ तबतौसेठजीबडेहीप्रसन्नहोके कहनेंलगे हाँ फकीरसाहब ताजेसें
ताजाभोजन अभीमेरे वास्तेबनताहै सो आपमेरेघरकोंपधारियें एक
मेरीबेटी रसोईबनानेमेंबडीहीचतुरहै जिसनें अनेकप्रकारके श्याकपा-
कादितय्यारकीयेहोंगे जबबादस्याहनेंविचारा के इसकाघरबीदेखलेना-
चाहिये और यहसेठऐसाकफशूरतहै तो इस्कीबेटीभीजादारूपवंतहोगी
क्योंकी आदमींसें औरत जादास्वरूपवानहोतीहै एसीविचारके बादस्या-
हउससेठकेमकान जानेंका इरादाकर संगहोलिया और घरकोंजापहुँचे
तबसेठनेंबादस्याहकों अगाड़ीकरलिया और आपपीछे २ खिड़कियेंबं-
दकरके बडीहीकुलफेंलगाताचला अबबादस्याह पहलीकेदरबज्जेपर जाय
देखेतोबडाहीजापता पलटन औरतोपें पड़ीहुईहै और चौकीपहरे छबीनें
ल्हेस २ नंगीतलवारें और चढीहुईकबानें हातोंमेंतोलेहुये भाले तकते
हुयेखड़ेहैं वोएसेजवानथेके जानेजमराजकेसेदूत और भाभड़ाभूत जैसे
बिडरेहुयेरजपूत ॥ खड़ेथे एसे २ सातदरवज्जे और सातहीपरकोटेआये
जबबादस्याहनेपूछाक्यों बाबूयहइतनाक्याजापताहै जबसेठकहनेंलगा
अयफकीरसाहब क्यापूछतेहो ग्रस्थकामकानहै एकमेरेबेटीहै और मेरी
औरत और म्हेंहूँ नकोइबेटाहैनपोताहै मेरेपासअठारहअरबकातो-
धनहै और एकपारसका बडामोटा डल्लाहै अबकोई अच्छासाघरानें-
का श्याणाँआदमीढूँढताहूँ सो उसेबेटीव्याहदूं और सबधनउस्कोंसोंप-
केम्हेंएकांतबैठ मालाजप अपनाजन्मसुधारूँ इसवास्ते जापतारखा
करताहूँ नजानेंकोनसीबखतक्याहै खैर बातेंकरते २ बादस्याहकोंतो
महलकेअंदर लेजायके एककमरेमेंजाबिठाया और आपसाडेतीनम-
नकी कुलफबाहरलगाकर चलागया जातीबखतबहोतसीखातरकरगया
व कहताचला कि आजमेराकारजसिद्धहुवा घरबैठेजँवाईआगये अबमे-
रीबेटीका आपसेंव्याहकरदूंगा और अभीआपकों भोजनकरानेंकों

वोहीआवेगी कहकेचलदिया इधरबादस्याह उस्कीबेटीकोंदेखनेकी उम्मेदमें बैठाहुवा अपनींआँखोंकीपलकेंगिण २ के उसीकासुम्रण व ध्यानधर यादगिरीमेंथा कि किसबखतआवे और उसेंदेखूँ इतनें में-हींतो उसलड्कीकीपैंजुन व गुधरोंकी रमक झमक और अेडियोंकी धमक बादस्याहके श्रवणमें आवाजआई देखीतोनहीं पर उसगजगमनी और हंसाचलनीके रुनकझुनककी आवाज सेंही बादस्याहकातोमनो-जउत्पन्नहोगया इतनेंमेंहींतोवो आकेहाजरहुई औरबहोतनमृताकेसाथ तसलीमबजाई व हातजोड्करबोली के आपभोजनकीजिये एकछोटी सीखिड़की उनकीकुरसीकेपासखुलीहुईथी उसीमेंसेंभोजनकेतासकें और कटोरे प्याले सोंपनेशरूकिये जबबादस्याहनेंकहाके आपअंदर-क्योंनहिंआतीहो तबउसनेंजवाबदीया के मेरेबापकाहुकमनहीं और अभीमेंकुँवारीहूँ बादस्याहनेंकहाके हमकों बाहरभीतरपायखानेंजानें और न्हानेंकीजरूरतहै सो उधरकादरवज्जाखोलदो उसनेंकहा साढेती-नमनपक्केकाताला उसदरवज्जेकेलगाहुवाहै तबबादस्याहनेंपूछायेक्या अ-बबाहरभीतरकहाँजाना और कहाँन्हानाँ जबवोबोली के भीतरहीतारत और पानीकेहोद फँवारेनजरबागमोजूदहै ॥ बादस्याहनेंपूछा के ताला-क्योंलगाहै तबउसनें मधुरता और बडेप्यारसें जवाबदीया के हुजुर में मदभागन इनकेघरमें एसेबखतकीजनमींहूँ सो मेरेवास्तेकोइआदमीं व्याहकरनेकोंलातेहैं और वहमहिनें दोमहिनेंसें खापीके भागकरचले-जातेहैं बहोतसेआदमीं तजवीज २ रहगये म्हेंइतनीबडीहोगई अबआप-कोंमेरीस्यादीवास्तेल्यायेहैं सोएसानहो आपभीधोकादेजावेइसवास्ते आपकोंतालेमें और बहोतजापतेकेसाथरखनाचाहतेहैं बसमेरेकों आप-केपल्लेलगाके चंदरोजपीछे मेरेमाँ बाप तो बद्रीनारायणजीकापाहाड़ोंमें तपस्याकरननेकोंचलेजाँयँगे फिरपीछेतुम और हम बादस्याहनेंकहाके बहोतअच्छीबात परअबअपनाव्याहकबहोगा ज्वाबदियाके आतेमहि-

नेमें जबतोबादस्याहकों बहोतखुसीहुई और उसभोजनकोंदेखकर खुसीहो वल्केउसके रंग रूप सुगंधीसेंहीं मनतृप्तहोगया जीमतीबखत हरएक श्याक पाकादि मुखमेंलेतेथे जबउनकों वहावहाहीकहनापडताथा पेटतोंभरगयाथा पर मन और मनसातो नैंधापी खैर सरमांसरमीसें चलूँभरी और मौछन पान सुपारी खाई तो वोभी एसीपाचनथी के खायापीयासबहजम दिनमें तीन च्यार बखत तासकेंआतीथी जिसमें एसेमसालेपूरितथे के जिसके खानेंपीनेसें नितहमेसे लोहूदूनाहो और उसकीखुसबोईसें बदनफूलता और कुवतबढताजावे उसममईगिराकेतो लोहूसेंहींकामथा जिसतरहगवलीगायें और भेंसियोंकों मालखिलातेहें सोफगतदूधकेवास्ते अवतोदिनपरदिन बादस्याहके तन बदनमें मस्तीछागई और इसलडकीसें दीदारबाजी व दिलराजीकीयाँकरे और मारेकुवतके कूदनें फाँदनें कुस्ती व दंडपेलकेसिवा जकनपडता और दिनभीनाहिंगुजरताथा इधर यहलडकीभीजोबनमेंभरपूर और रंगमेंजहूरथी इस्कोंभी बादस्याहकों देखनें और नजरमिलानेका शोखपडगयाथा पर वोतोजाणतीथीके यहकितनेदिनकापाँवणाँहे इनकीदोस्तीमेंक्यालाभहोगा आखरतोयहभी उसभट्टीपेंचढनेवालाहे परभलाँ दोदिन नजरमिलापतोकरलें इसीतरह एकदिनदोनोंके दीदारबाजीहोकर दिलमिलीहोरहीथी जबबादस्याहनेंपूछा अब अपनीश्यादीकबहोगी यहसुनके ममईगिरेकीबेटी दिलगीरहोकर हातजमींनपरपटकादिये और निसासा डालकेकहनेलगीकी कहाँकीश्यादी और कहाँकाव्याह ज्यानपरगुजरनेवालीहे बादस्याहनेपूछाके यहकेसीबात वहबोलीके कुछकहनेसुणनेंकी बातनहीं वोमिलासहे (कहूँतोमामारीजाय ॥ नाँकहूँतोबापकुत्ताखाय) (सेर) (क्याकहूँ कहानहिं जाता हियाउथलके छातीभरआता) जबबादस्याहनेंपूछा आपएसेदिलगीरक्योंहो तबवहलडकी निष्कपटहोकेकहनेलगी अयभलेआदमी तुमयहाँकहाँआफसेहो यहमेराबापतोममईगि-

राहे सौ लखौंआदमियौंकालोहूनिकालके भजियेतलडाले और ममई बनार२ कर मुलकौंमेंबेचडाली आपकीभीस्यादी उसीभट्टीपरहौनेंवालीहै अब इसकाकुछभीजतननहीं और अबमेरीभीमौतआगई बादस्याहनेपूछाके तुमारीमौतक्यूँ जबजबावदिया के मेरेबापनेइसमकानमें आपजैसे सेकडौंआदमीं केदकररक्खेहैं उनकीहाजरी रोजलीयेकरताहै मै और मेरी तीनबहनें औरहै वहसब अपनें २ जुम्मेंके केदियोकौं भोजनकराके आँखेंमिलाकर उनकौंखुसरखाकरतीहै ताजेभोजनसेंतो लोहूबढताजाता है और हमारीदिलदिलासासें लोहूछीजनेंनहिंपाताहै मेंतो सबबंदीवानौंकौं नजरमिलाकेखुसीहीकरतीफिरतीहूँ नाराजहोनेंसें लोहूसूखजाय अबमेनेंआपकौं यहथासोहालसबकहदिया और आपनेसुना सुनतेही आपकेच हरेकीगुलाबीरंगत फीकीनजरआनेलगगई उसरंगतकौं मेराबापपरखनें वालाहै जब वहबातसुनकर बादस्याह उस्कौंखातरतसल्लीदेके बिदाकी और आप अपनेंदिलकौं मजबूतकरकेबैठा जातीबखतकहगई के अबमेरे कौंभी मारडालेगा म्हेंतोमौलकीलीहुईलौंडीहूँ इससेठने दाइयोंसे सरत करलीहके कोईभी खफसूरत छोकरी कहींभीहोयतोउडायल्यावो या मौ लमिलजायतोमुखकेमाँगेरुपयेदेके लेआवो तुमकौं मुखमाँगीकिंमतदूगा एसेकरदूँगा के फेर तुमकौं उम्मरभरभी कमानाँनपडे पर जनमतेहील्यानाचाहिये फेरकुछकामकीनहीं इसीतरह इसनें पांचसात छोटी२छोकरियें औरभी पालरक्खी है यहसुन बादस्याहनेंकहा खैर देखेंगे घबराणाँनहीं जिंदगीहोगी तोजीयेंगे एसी सुनकर वोतो चलीगई बादस्याहनें अपनें दिलकौंरोकके और खुसीकीखुसबोई उडाई चहरापानींसें छाँट पौंच पांनकावीडाचाबा और स्वचित्तहोकरबैठा इतनेंमेंतो वहममाईगिराआया और आपसमें तसलीमातसलीम बडीहीखुसीसें सलामीं आदाबी हुई बादस्याहनें पूछा अब हमारी इयादी कबतकहोगी तब ठगसेठबोला हालदसदिनकी देरी है बादस्याहनेकहा कि बहुतदिनहोगये जबठगसेठ

वौला मौलासाहव घरग्रस्थियौंका काम है और एकाएकहीमेरेवेटीहै जिसके व्याहकीतय्यारीकरनाहै भाईवंदौंसें वरावरीका व्यवहार है खाने पीनेकी तयारी कपडेरंगेसींयेजातेहैं सव भाइयौंसें हमेसः येहीसल्लाह मिसलतेंहौतीहै कुछतयारीहुई कुछहौगी फिरव्याहहीव्याह जव वादस्याहनें पूछा कि कितनाक खरचहौगा ठगसेठवौला अलवत्ते दशपाँच लाखकातौसमझौ वादस्याहनेंकहा यहतो वहौतखरचहै हमारेयहाँकेसेठौंसाहूकारौंके एक लाखरुपये भी कोईसेकलगाताहौगा ठगसेठवौला अजी फकीरसाहव वहकायकेसेठ और कायकेसाहूकार वौतौ सव हमारे शागीरद् आसामियेंहैं हमारे यहाँ लाखरुपयोंकातो रौसनीवास्तेतेल और नजानें आतसवाजीमें दौय च्यारलाखका वारूदउडजाताहौगा जवमेराव्याहहुवाथा तववीसलाखरुपये तौ हमारी तरफके लगेथे और वतीसलाखरुपये सगौंनें लगायेथे जववादस्याहनें कहा के आपकी तरफके तौ दसपाँचलाख और कुछहमारी तरफके भीतौ चाहिये जव ठगसेठवौला के यहसव आपहीकातौ है मेरेवालकनहोताथा जवमेंनेंमानकरीथी के वेटाहोगातौ आधाधन खैरात करूँगा और वेटीहुई तौ सवघर वार धन दौलत उस्कौंदेके वद्रीनारायणका पाहाडौंमेंजाके तपस्याकरूँगा इसवास्ते यहमाल सव आपहीकाहै मेनेंतौआपकौं आँखसेंदेखते ही आपकेनामसें सवधन संकल्प करदियाहै और आपकेपास क्याहै आपतौ अतीतफकीरहौ और म्हेंतौगिरस्थहूँ वादस्याहनेंकहा के क्या फकीरौंकेपास कुछभी गुरुकेनाम कालटकानहौगा तौ उसनें फकीरीलेकेभी क्याकिया क्याहमारेपास एसावी लटकानहौगा जिस्में हमारे व्याहकाभी पूरान पडे ठगसेठवौला आपकेपास क्यूँ नहिंहौगा आपतौवडे वली औकरामातीहौ जववादस्याहनें अपनें हकपरदवामाँगी और उस नीलगरकौं यादकर अपनें कॉनकौंखेंचके आदावबजाई और वहसीनें औ कसीदेकाहुन्नर यादकीयाथा जोकुछ इसवखतमें काम आवेतोयह

आवे बादस्याहबोलाके आजजरासाकलाबत्तू और रेसमतो मेरेकोलादो और अच्छादरियाईका साढेतीनहात लंबाचौडाकपडा चहियेगा ठगसे- ठबोलाके इसका क्या होगा बादस्याहनेंकहा के में मेरेगुरूके साथ भेस्तमें जायाकरताथा सो मेंनें वहाँ कुछकसीदा सीखलीयाथा और वहाँकेअगवाइयें व पिछवाइयें परदे चंद्रवोंकी सिपतसबदेखके ध्या- नमेंले आयाहूँ ठगबोला एसे कसीदेसें क्या होना यहाँतो लखोंकाख- रचहै बादस्याहनेंकहा फकीरोंके लटके भीतो देखो खैर ठगनें दे- खाके इस्को नाराज न करणाँ हाँ भरकेचला बेटीकेसंग सबचीजेंभेजदी वहलेकरआकेहाजरहुई और पूछनेंलगी के आपइस्काक्याकरोगे ज्वाब दियाके दिलकोंतारमावेंगे और दिनकाटेंगे लोहूबनारहेगा तो हमारीतो मौतहोनाँहीहैपर तुमतोबचजावोगे वहबोलीके कोईभीउपायसें आपका- प्रानबचजायतो मेरीज्यानतो आपकेकुरबानहै परक्याकरूँ इससाढेतीन- मनकेतालेके कुंजीबीतोनहीं है ॥ जबयहताला कारीगरकेपासघडाजा- ताहै तबइस्केकुँजीनाहिंआतीहै जबबंदीवानकों बाहरनिकालकर भटी- दिखाईजातीहै उसदिनयहताला मेराबाप अपनेंहातसेंतोडताहै और बंदीवानकों बाहरनिकाललेताहै नहींतोम्हें आपकीज्यानकबीनहिंजानें- देती पर बेवसहूँ बादस्याहनें अपनेंदिलकीबात कुछनकही और दिल- मेंसोचा के औरतकीजातहैऽस्त्रिकेपेटमें बात ठहरतीनहीं हरतरहसें को- ईबीसखस पुसलायके पूछसकतेहैं और अबलाकीजात मारेखुसी व धमकीसेंकहदेतीहै खैर अबतो बादस्याहनें नीलगरकों यादकिया फिर अपनेंउस्ताजकानामलेकर कसीदानिकालनाशरूकिया और उसनें अपनेंवजीरकेनामसें (अंकपल्लीअपनींअपनीदोनोंकीइयारतकाइसारा) लिखके सबअहवाल ममाईगिरेकेमकानका और जापतेका व गलीकों चेकापत्ता ठिकाना व अपनेंतनकीविवस्था सबरूबरूमिलनेंजैसी लि- खदी और बीसहजाररुपयोंतक इसचंद्रवेकों तो खरीदो पुन्ह अगवाई

पिछवाई पड़दे बिछायत बनवानेका इस्कौंहुकमदौ सौ इसलालचसें यह बनवावेगा जिस्सें अपनेंआपसमें चिट्ठिमिलापरहेगा और छुडानेंका इलाजकरौ परजबरदसतीकरनेसें मेरीज्यानकाखोफहै और आपकौं आपका हातमल २ के रौनापीटनाहौगा अबतौ सबहकीकत उसचंद्रवेमें अंकशारतलिषकर उसठगसेठममईगिरेकौं वीसहजाररुपयेमें बेचनेकाहुकमदीया और कहदियाके बीसहजारसेंकमएककौडीभीनहिं लेनाँसेठबौला फकीरसाहब इस्केबीसहजाररुपये कौंनदेवेगा ज्वाबदिया के तुमकौं फकीरोंकेलटकौंकी क्यामालूम इस्कौंतोवहखरीदेगा कि जो कोइभेस्तकेबयाँनकीकिताबाँ वाचापढाव जानताहौगा बससेठबजारमेंलेजाकर बेचनेंकौंखडाहुवा तबउसचंदरवेकारंगढंगदेखके सैकडौंआदमीआतेथे परमौलउस्का बीसहजाररुपयासुनके चुपचापहौकरअपनेंकाँ नमूँद चलेजातेथेपरबादस्याहके जानेंकेपीछे बजीरनें एसा बंदौबस्तकीयाथाके जगँहँ२ हलकारे व जासूद गौरंदे खडेकरादियेथे और कहरक्खा था के सहरमें कोईभी नवीजूनीबात व नवीजूनीचीज आश्चर्यकीदेखौ सुनौं उस्की मेरेकौंखबरदौ किसनेंकिस्कौं कही और किसनें किनसेंसुनी फेर उनकेघरठिकानेंकाभीपत्ता यादरक्खौ हरएक जगँहँ हरठौड़ डाकेंबिठारक्खीथी जब वहनबीबात गौरंदौंनेंसुनींऔर देखीके दसपाँचरुपयौं काचंदरवा औरबीसहजारमौलके यहबातभीतौ नईसेंनईहै जायकरवजीरसेंअर्जगुदराई सुनतेहीवजीरनें चंद्रवाबुलवाकरदेखा औरदेखतेही अपनेंप्यारे मालिककेहातकीनिसानीं खतबाचकर मगनहौगया और ऊठकेआदावबजाय सिरपेचढाय छातीसेंलगाय मुखसेंचूम आँखौंकीपलकौंकेलगाया व आँखेंमूँदमालिक्केसेंदुवामागी और उससेठसेंपूछा केसेठजीसच २ कहौ इस्काक्याहादियाहै और यहचीजआपकहाँसेखरीदलायेहौ यहतौभेस्तकीनिशानीहै यातौकोई परेस्तौंकेहातकाकामहै और याकोईपरीजातकेहातकानिसानहै या कोई वली औलियौंनें भेस्तदेखी

होगी जिस्केहातलगेहोंगे यहचीज इसजमीनकेपरदेपर मिलनाँकहाँ है यहतो कोईउसमालिककेघरकी सिपतजाणनेंवालोंकी लहरमहरकासोदा हुवाहै हमारीकिताबोंमें लिखाहुवाहै वहसबसितइस्मेहै ॥ यहबातेंपह-लेवादस्याहनें ममईगिरेकोंकहीथी सोसब हकीकत अपनें वजीरकों उस चंद्रवेमेंलिखके वाकिफकरदियाथा वोहीबातें सबवजीर किताबोंमेंलि-खी भतलाके उस्ककी तारीफकरनेंलगा जबसेठनें इस्केबीसहजार रुप-येकहे तबवजीरनेंकहा क्या जादाहै लेपधारें पर यहकामतो सेठजी अधूराहीरहा इस्की अगवाई पिछवाई परदे भी और होनाँचाहिये यह तो फगतचंद्रवाहीहै जबममाईगिरावोला के मेरेविलायतोंसें मालआता हीरहताहै औरभी आड़तियोंकों इसकी तलासमें रहनेंकालिखदूँगा सो आपकों जहाँहोगा जहाँसें मंगवादूँगा वजीरबोलाके आपकीमहरबा नीहोगीतो आपमँगवाहीदोगे अगाड़ीकिसमतहमारेहैं सेटकहनेंलगा के इतनींक्यादिलगीरीहै यहतोमँगवाहीदेऊँगा वजीरनेंबहोतलाचारी वआ-जीजीकेसाथ उस्कोंरुपयेदे रवानेंकीया और चलती बखत वजीर बोलाके अगाडीके कामवास्ते कुछरुपये पेसगीलेपधारें ॥ सेठनेंजबावदी या के वहाँक्याकमीहै वजीरनेंनामठिकानाँ भी पूछा तोउसनेंकुछसच्चा और कुछझूटा लिखवादिया वजीरनेंकहा सेठजी यादरखना एसानहो के आपभूलजावें ममईगिराबोला हुजूरनभूलूँगा यहकहके चला अपनें घर आया सेठनेंविचारकीया के इसआदमीके लोहूनिकालनेंसें रुपये आते उस्सेंतोदुगनें तिगनें एकचंदरवेमेंहीं मिलगये तो फेरक्याजानें कित नेरुपये पैदाकरवादेगा देखाजायगा हालइस्सें यहकामतोबनवालेवें लोभ केथोभकहाँ लोभहीगलाकटाताहै जबठगसेठनें तुरतही अच्छा रंगीन बारीकरेशमव रेसमीदरियाईकपड़ा और सोनेरी रूपेरी बहोतउमंदासें उमंदा चमकदार जरी हररंगत और हरतरहके लेजाके वादस्याहके साँमनेंरक्खदी और वडेपियारसें बोलने लगे और वहबीसहजाररुपये

भी साँम्हनेंरक्खदिये केफकीरसाहब आपनेंजोकहाथा वैसाहीहुवा पह लेतो मेरादिलबजारमें बहोतनाराजरहा परअखीरमें एकगिरायक एसा मिलगयाहै के वहतो नजानें क्याक्याचीजेंबनवायगा अब आपएकतोअ- गवाई और एकपिछवाई व परदेयहजल्दीसें तैयारकरोगेतो आपकीतर- फसेंभी व्याहकेकाममें सबमालअसबाब खरीदाजायगा और यहवीसहजा ररुपये उसचंदरवाके आपरक्खो बादस्याहनेंकहा के आपहीरक्खो क्या बीससें और क्याहोताहैतीससें यहाँतोलखोंकाखरचहै सेठबोला क्यामुजा काहै आपकेपास एसेरलटकेहैं बादशाहनेंकहा के और इस्सें भी अच्छे कसीदेनिकालनाजानताहूँ सो लखोंरुपयोंकेगंजलगजाँयगे सेठजीयाँहाँ तो क्याहै पर आपऔरहीविलायतोंमें भेजकर बिकवातेजावोगे तो लखोंतोक्याहै परकिरोड़ोंरुपयेंघरबेटेहीचलेआवेंगे भेस्तनमूनेंकीबातें अगाड़ीके पैगंबर किताबोंमें लिखतोगयेथे पर देखनेंकोंकहाँ यहबातें सुनकरबस ममईगिरतोदंगहोगया और कहनेंलगाके अब आपइस्कों जल्दीसेंहीतेयारकरकेदो हाल आपकाव्यावहोजाय ॥ जब बादस्या- हनें जाजम बिछोनाँ पिछवाई बनानाशरूकीया और सबकेफियतमुह- ल्ला ठिकाना गली कोंचा व जापतेकासबहालकोट किल्ला दरवज्जा ताला सिफाई फोज तोपें कुल्लकेफियत परदेपिछवाईमें अंकपल्लीलिखदी और अपना हालभीलिखसमझाया और लाखरुपयेदेनेका हुकमदीया बस तैयारकरके सेठममईगिरेकोंदीया और कहादियाके इस्कोंकोईभी- खरीदकरे एकलाखरुपयोंसें कमतीमेंनहिंदेना वहाँऔरकौनखरीदताथा वजीरकेही खजमतदार आकरदुकानपे ताकीद कियाकरतेथे उसरोज तय्यारहोनेसें ठगसेठ वजीरकेहीनजरजागुदराई वजीरनेंउठके ताजी- मदी और वह अंकपल्लीके खत बाचपढकर और निहायतखुसीमनाके बोले क्योंसेठजीहमारेतोंईष्टकेनमूनेकाकसीदाहै पर इस्कावाजबीहदि- याकहोहमकोंकहाँतकमिसलकेगा उसनेंकहा इस्केलाखरुपयेदिलवावो वजीरबोलाकेवाहवासेठजी तुमतोबडेहीईमानदारहो हमनेंभीयहीसुम्मार

एकडेडलाख दौलाखकेलगबग गिनरक्खाथा झटपटही खजानचीपे रु-
क्कालिखदिया और सेठसेंकहाजावोखजानचीसें अच्छेआकरीआँटके मु-
खकेमाँगेहुये और पचीसहजारहमारी खुसीकेआपकों इनामके बखसीसहै
सवालाखरुपेलीजिये जब जातेहीखजानचीनें रुपयौंकीथेलियेंनिकालदी
इतनेमेंतो वजीरनें एसातौफानउठाया के एकदोदुकाना बजारमेंलुटवाके
हल्ला बजादिया तब ठगसेठवजीरपासआकर अर्जकी के हजूरबजारतौं
लुटताहै अबमेरीरौकड़काक्याहालकरूँ वजीरनेंकहाकि में बजारका
अभीबंदौबस्तकरताहूँ आपतो अपनीरौकड़ लेपधारें म्हेंजापतादेकर
पहुँचादेताहूँ तबवजीरनें एक २ थेलीकेसाथ च्यारच्यारसिपाई नंगी-
तलवारौंवाले संगकरदिये जबसेठजीखुसीहोकर बादस्याहीफौजसंगही-
लेचले और उस्केपीछेही वजीर सहरकाबंदौबस्तकेवास्ते बहोतसेसि-
पाइयोंकोंलेचला और सबतौपें व रिसालौंपर हुकमदेचला बस सब
फौज सिपाई मंमईगिरेके घरजापहुँचे लुहार सुथार और वेलदारों कों
तोयेहीहुकमथा के इसठगसेठकेमक्कानकों फौड़ फाड़ और तौंड़ ताड़
खौद खाद मेदानहीदिखलादो इधररौकड़केसाथ सिपाईगयेथे उन्हौंने
तो जातेही सेठकेसिपाइयोंकौंगिरफतारकीया और सबशस्त्रौंसहित
तौपखानेकोंघेरलिया और ठगसेठकौं पकड़जेरकिया व कमरेतकपहुँचे
बादस्याहकों बाहरनिकाललीया इतनेमें वजीरभी लहसकरलेकेजापहुँचा
और ममईगिरेकों कत्लकाहुकमदीया और वहलड़कियें वा बादस्याहकी
खेरख्वाहलड़कीथीउस्कों बादस्याहीजनानेंदाखलकीऔरसबकेदियोंकों
रिहाईदीअबबादस्याहकों सवारीकराके हाथियोंकेहलके व चँवरोंकेफट
कारेनकीब नोकर दौमर२पुकारे निसाण नोपत नगारे लहसकर सिपाईलारे
वडीधामधूमसें सवारीबजारतकपधारे आगेलीलगरकामकानआया तब
बादस्याह फौजकों खडीरहनेंकाहुकमदे आपनीचेउतर नीलगरकेघर-
कौंगया और बुजर्ग उस्तादके पाँवोपड़ कहनेंलगा के आपकेहुन्नरनें

मेरीज्यानबचाईहै जोमें सीना और कसीदानिकालना नहिंसीखता तो हममारेजाते मेरेलोहूकेभजिये तो औरहीखाते अब सबलोग सरकारसे खरचलो और हुन्नरसीखो यहहुकमदिया और देशदेशांतरोंसें हुन्नरियोंकों बुलवायकर अपनें शहरमें बसाय बडामानदिया ॥ इसीतरहसें हस्तनापुरके राजा पाँडवहुन्नरीथे देखो उन्होंनें राजाहोकर कैसाहुन्नरसीखलीयाथा जैसे राजायुधीष्टर व्याकर्णविद्यामेंप्रविण औरपौराणविद्या इस्तामलहीकररक्खीथी भीमसेन शूपग्रंथानुसार श्याकपाकादिबनानेंमेचतुरथा और अरजुन नाट्यविद्यामेंनिपुणथा नकुल सहदेव जोतिषी व अश्वविद्यामें श्रेष्टथे जब आपतकालआकर द्यूतकर्म (चौपड़) सें हारकेराज्यछोड वनोवासधारणकीया सोभी १२ वर्षगूप्तरहना तो एसी दुर्दशामेंभी हुन्नरकेजोरसें राजाविराटग्रह अपना २ कार्यप्रगटकर दिनतेरकीये पुन्ह युद्धादिकरके अपनाराज्यभीपीछालेलिया और एसे२ बहोतसेलोगोंने हुन्नरसीखके द्रव्यभीपेदाकीया और अपनानाम भी अछी तरहसें मुलकोंमेंजाहरकीया और हुन्नरकेसाथ अपनें मुसीबतकेदिनकाटे और इसभरतखंडके राजावों नें आगेबहोतसे हुन्नरियोंकों बुलवाकरआदरपूर्वक अपनेंराज्यमेंबसाये उनहुन्नरियोंकी बनाईहुईचीजें और लोगोंकों सिखाईहुई अभीतककामदेतीहै और जमीनमें सें सप्तधातू व उपधातू यहसबहुन्नरियोंनेंनिकालीहै (पुन्ह) इनधातूवोंका फेराफेरभी केइहुन्नरियोंनें करके बस्तुवेंबनाई जैसें पचीससेरताँबा और पनरासेर जस्त मिलाके पीतलबनाया व पचीससेर ताँबा और पनरासेर कथीर मिलाके कांशाकरलिया वहबरतन जगतकेउपयोगी और प्रासिद्धहै एसेंहीं सोना व चांदी के बरतन व गहना दागीना बनेवोजाहरहीहै और पथ्थर पहाड जमीन ढूंढके चमकदारपथ्थर भी हुन्नरीयोंने निकाले व सुधारे (माणकहीरापन्नापुखराजइत्यादि) और इसहुन्नरकेजाणनेंवाले अबभी अपनीइज्जतसें ठंढीछाँहबैठे अपनागुजर अछीतरहसेंचलाकर

चिकनीरोटियेखातेहैं और खरीददारोंसें कुसामंदीयेभीकरातेहैं ॥ हुन्नरियोंका दरजा अच्छासमझकर राजावोंनेंभी मान्यदेबसाये जैसें जोधपुरके राजासाहेब वखतसिंघजी नागोरथे जब एसे२कारीगर बुलवा२के नागोरमेंवसाये उनकारीगरोंके बनायेहुए औजार संचे व सतारकेतारहैतोलोहा पर सोनेंसेंद्रिगुणाँमोलपातेहैं उनतारों बगेर सतार बीन इकतारा सारंगी चिकारादि वाजोंका कामनहिंचलता इनकायहीजीवहै और दांत लाख कांच नारेली बंगडी चूडी रंग रोशनाई वारूद इत्यादी औरभी सेकड़ोंचीजोंके बनानेवालेकों बसाये उनकी बनाई चीजें सबजगतकेउपकारार्थहै एसे सच्चेहुन्नर सीखेहुये हरबखत व हरजगेंहैं कामआतेहैं.

एसेंहीं जैपूरके राजा सवाइजेसिंहजीनें जैपुरमें अच्छे २ हुन्नरी बुलवा २ के बसाये सो उनहुन्नरियोंकी बनाईहुईचीजे सेकडोंकोसोंतक जाहर और उपकाराऽर्थ है और हुन्नरी जाँहाँचाहेवहाँ मिलसके और आदरपाकर द्रव्यपेदाकरे और नामभीप्रसिद्धकर उस्तादवजे व हुन्नरसे जो चाहेसोकरसके यहहुन्नर अजबचीजहै (देखो) मेनेंबी एक छोटासा हुन्नर छापखानेका सीखलियाहै जिस्से हमारे दिनभी अच्छीतरहसेगुजरतेहै और थोड़ानामभी जाहरकिया सो आपलोगोंके श्रवणमें आयाहीहोगा नहींतो मेरेको कोन जानता और कोन पहचानता इसवास्ते हमारी राहमेंतो सच्चाहुन्नर और सद्यविद्या सीखना अच्छानजरआया इस्में नामवरी व द्रव्य संग्रह होना दोनोंहकी वृद्धीहै-

हे सुजनविद्वजन प्रियमित्रो हुन्नरभीसीखो तो ऐसासीखो जिस्सें धापकेतोपेटभरो और सुखसें अपनी नींदसोवो और ऊठो किसीकातगादा ओलभा मतसहो एसा ओलभावी वुरा के जिस्के सुनतेही अपना शरीरतपजाय और खूनतक गरमीपहुँचे और प्रसंशा सद्यविधा व हुन्नर सच्चेकामोंमें हमेसा वाहवाईही मिले और नकददामहातमें आवे ऐंड और उधारमे न फसे साहुकारकी रकम हातमे रक्खें

हजारों हुन्नरका हुन्नर एकयहीहै जो हुन्नरतोसीखजाय और पूँजी
अेंडकरबेठे तो दिनमुसीबतसेंकटे प्रथमतो अपणेंलोग हुन्नर व
हस्तकारी सीखनेकी इच्छाभीनकरे जोकदापि हुन्नर व हस्तकारी सी-
खेंईलेंगेतो ऐसीसीखेंगे के जिस्में झूट और कपट खोट प्रपंच ठगाई
दगावाजी इत्यादि और विद्याभीपढेंगे तो ऐसीपढेंगे जैसी पहलेवर्णन
करचुकेहैं और हुन्नरभीसीखेंगेतोऐसा जैसें (हींग किस्तूरी केसर
इत्यादिनकलीबनानाँ) व अमर करपूर अतर इत्यादिमें भेलकर नक-
लीबनाना व खोटेनकलीवनाके बेचना जिसकेखानें लगानें सें शरीर
विगड़कर अनेकरोगउत्पन्नहोजाय जैसें अच्छीहींगमेंमिलावट लहशुन-
गूंदइत्यादि० व अतमेंतेलचरवीइत्यादि० व केसरमें कँवलप्रयाग
वद्धिद्दलअंकूर० और किस्तूरीमें लहूमंसादि० अमरमें सुगंधीमसाले
मौम अफीममें गुड अेलिया सिंगदराज रब्बा इत्यादि एसे २ हुन्नरसें
नकलीचीजें बनाय २ और कपटसें बेच २ कर अपणें कुटमका पौष-
णकरतेहै वह आजकलह वडेहुन्नरियोंमेंजम्माहै और हुन्नरीकहलाये
जातेहै और इस्सेंभीबडेहुन्नरीवहहै के जैसें बहुतसीकपटविद्या व हात-
कीकारीगरी यहाँतककरतेहैं के नकलीमोती और नकली माँणक पन्ना
इत्यादि बनाके व एसी २कपट हुन्नरकीजिनसें जिनकोंबना २ कर और
छिपा२केचौरीसें व दूसरोंकेहातसें व कपटकर गिरिवीरखदे वहवडेहुन्नरी
कहलायेजातेहैं और इस्सेंभी बडेहुन्नरी एसे२कपट खोटविद्या करनेंवाले
होते हैं वह बहुहुन्नरी खोटे नोट हुंडियें दस्ताएवज रुपिये असरफियें
इत्यादि बनाकर चोरी छिपीसें छानें ओले गली कूंचोंमें व दुसरोंके
हातसें कपटकर चलातेहैं और आखिरकों पकडीजकर दुरदशाकों
भी पहुँचतेहैं पर सहूकारी हुन्नर नहींसीखेंगे जो हस्तकारी कारीगरीके
सदव्यवहारके होते हैं जिस्सें अपना नामप्रसिद्धहो व अगाडी सब
लोगोंकों फायदापहुचे किसीका बिगाड़ा नहिंहोय और आप हुन्नरीनि-

कपट होके देश देशांतरोंमें बेच व भेजके अपना नाम अच्छीतरहसें प्रसिद्धकरे एसाहुन्नर नहिंकरेके बतावेतो तंत्र और कहे मंत्र और कपट रसाणादिक दिखाके ठगे व सोनें चांदीके जोडे बनाकर ठगविद्याकर बेचें व बदलकर गिरवीधरे तथा जूवे और गंजफे काफदानोंसें ठगखानेका हुन्नरकरे ऐसे हुन्नर तो फकत चोरी छुपी कपटविद्याकेहै हुन्नर ऐसा सीखनाचाहिये कि जिस्सें अच्छी तरहसें तो अपने कुटम्बका पालन पोषन करे और अपना नाम ठाम ग्राम मोहोल्ला बाजार व बाप दादा प्रदादाके नाम व उस्तादकानाम ग्रामाधीस (राजा) का नाम इत्यादि अनेक प्रसिद्ध होते हैं ऐसी सदविद्या व सच्चा हुन्नर सीखना उचितहै लुच्चे गुंडे चोर इन्याई जुवारी जाली फासीगिरे पेंटी गलकट्टे जेबकट्टे उठाईगिरे खोटीचीजें बनानेवाले ठग कुबुद्धि इत्यादि की संगत नहिं करना संगतकाफल अवश्यकरलगताहै जैसें (कोयलोंकी दलाली में काला मुँह) एसासमझके सुमार्गमेंचलना योग्य है ॥

इति वैश्यकुलभूषण व इतिहास कल्पद्रुम माहेश्वरी कुलशुद्धदर्पण सहा शिवकरण रामरतन दरक माहेश्वरी मारवाडी मूंडवेवाला इन्दोर निवासी कृत प्र. भा. संपूर्ण शुभम्

[अथ तारीखचक्रम्]

सन १८८८ से १९५५ पर्यंत.

तारीखदेखनेंकीरीति जिसवारकों तारीखदेखनाहो तब प्रथम ईस्वीसनके सन्मुख वर्गअक्षरदेखो पुन्ह इंग्रेजीमासके सन्मुख वहीवर्गाक्षरपे उँगलीधर नीचेचलकर दिनकेवारपेआवे फिर उसीवारकेडावेबाजू (बामभाग) चक्रमें तारीखदेखो उसीबारकों वहीतारीखहोगा वर्गकोष्टक नम्बर २ में वर्गकेदोयअक्षरहै सो प्रथम अक्षर जानेवारी और फरवरीकाजानों शेषाक्षर सर्वमासकागिनों ॥ यहदोयअक्षर फरवरीचौथेवर्ष २९ तारीखकाहोताहै इसवास्तेहै ईस्वीसनके च्यारकाभागदेनेसें पूर्ण० वचे उसवर्षमें फरवरी २९ तारीखकाहोगा शेषवर्ष २८ तारीखकोजानो.

तारीख चक्र.

ईस्वी सनमें. वर्गादि मासांत् वर्गः बारं प्रमुख. तारीख आगमनचक्र.

सन इसवी. १			वर्ग. २
१८८८	०	१९२८	क छ
८९	१९०१	२९	च
९०	२	३०	ङ
९१	३	३१	घ
९२	४	३२	ग ख
९३	५	३३	क
९४	६	३४	छ
९५	७	३५	च
९६	८	३६	ङ घ
९७	९	३७	ग
९८	१०	३८	ख
१८९९	११	३९	क
०	१२	४०	छ च
०	१३	४१	ङ
०	१४	४२	घ
०	१५	४३	ग
०	१६	४४	ख क
१९००	१७	४५	छ
०	१८	४६	च
०	१९	४७	ङ
०	२०	४८	घ ग
०	२१	४९	ख
०	२२	५०	क
०	२३	५१	छ
०	२४	५२	च ङ
०	२५	५३	घ
०	२६	५४	ग
०	२७	५५	ख

मास. ३	वर्ग. ४						
जनवरी. अक्टंबर. १ १०	क	ख	ग	घ	ङ	च	छ
मई. ५	ख	ग	घ	ङ	च	छ	क
अगष्ट. ८	ग	घ	ङ	च	छ	क	ख
फरवरी. २ मार्च. ३ नवंबर. ११	घ	ङ	च	छ	क	ख	ग
जून. ६	ङ	च	छ	क	ख	ग	घ
सतंबर. डिसंबर. ९ १२	च	छ	क	ख	ग	घ	ङ
अप्रेल. जुलई. ४ ७	छ	क	ख	ग	घ	ङ	च

तारीख. ६					(वार.) ५						
१	८	१५	२२	२९	र	श	शु	गु	बु	मं	चं
२	९	१६	२३	३०	चं	र	श	शु	गु	बु	मं
३	१०	१७	२४	३१	मं	चं	र	श	शु	गु	बु
४	११	१८	२५	....	बु	मं	चं	र	श	शु	गु
५	१२	१९	२६	....	गु	बु	मं	चं	र	श	शु
६	१३	२०	२७	....	शु	गु	बु	मं	चं	र	श
७	१४	२१	२८	....	श	शु	गु	बु	मं	चं	र

श्रीः

अथ रमल प्रस्नावली.

सहा शिवकरणरामरतन दरक माहेश्वरीमूंडवेवालाकृत लिख्यते

(वार्ता)

जोप्रछकप्रश्नपूछनेकोआवेउसकेमुखसोंचारशब्दकाउच्चारकरवानांएकतो फलकानामपूछनां दूसरासातवारोंमेंसेंवारकानांमपूछना तिसरेकोईनक्षत्र कानांमपूछनां चोथाकोईपक्षीकानामपूछनाँ येचारशब्दचारवारबुलवावे एकएकशब्दकाअक्षरगिनतेजानाँ जोदोकीआवेतोदोकाअंकधरतेजानाँ एकीआवेतोएककाअंकधरतेजाना ऐसेचारबारकेचारअंकोंकीपंगतीरच नां पीछेवोहीचिन्हकेअंकप्रश्नावलीमेंदेखकेफलकहनाँ

२१२१ हेप्रच्छकयहप्रश्नआनंदकारीहैचिंताभयखेदहूरहोगी मित्रमिलाप धनलाभ स्त्रीलाभ व्यापारलाभ गईवस्तुमिले एकमलीनपुरुषतेरेसिर कलंकधरताहै तूंनिकलंकहै एकतेरामित्रहै उसकीसलासेकारजकरेगा-तो मनकी इच्छापूर्णहोकारजसिद्धहोगा ॥ १ ॥

११२२ हेप्रछक यहप्रश्नमध्यमहैं येकारजकलेसकेसाथहोगा पीडाकासनमंधहै कुछदेवदोष पितृपीडा चोरभय व्यापारमेंनुकसानहोय तीनदिनपीछे एकअभ्यागतकूं भोजनदे कारजकर लाभहोगा कुछअछीवातसुनेगा मनकूँविश्रामआवेगा ॥ २ ॥

२२२२ हेप्रछकयहप्रश्नउत्तमहै जोतेरीइछाहोयसोपूरणहोगी मनोरथसिद्ध रोगभयनाश धनलाभ राज्यसन्मान कृषीव्यापारलाभ विदेशगमने आनंदसोंआवे एकतेरेकों पिछलेदिनोंमेंस्वप्नआयाथा क्याकहायादकर वोवस्तुपावेगा ॥ ३ ॥

२११२ हेप्रछक यहप्रश्नचितदेकेसुन तेरेदिलकासंसातत्कालनिवृतहोगा जोवस्तुचाहताहैसोसीघ्रहीमिलेगी राजसन्मानरोगनास्तीगतवस्तुप्राप्ति-

मित्रलाभशत्रुक्षय एकचुगलतेरीचुगलीचितवताहै मुखसूंमीठारहताहै ठिंगणेकदमाकाहैभरोसामतकर इष्टदेवकासुमरनकरभलाहोगा ॥ ४ ॥
२२१२ हेप्रछकयहप्रश्नभलाहै गुंजधनप्राप्तहोगा निरउद्यमनरहो बुद्धिबलचलनेंदो आलसअरुकायरताछोडो धीरजपकड़ो एकपुरुषतेराविश्वासराखताहै भलाचाहताहै कारजपूरणकरेगा गइवस्तुमिलेएकपूरवपुन्यप्रगटेगा कुछपुन्यकरभलाहोगा ॥ ५ ॥
१२११ हेप्रछक येप्रश्नअधमहै येकारजमतकर पीडाप्राप्तहोगी एकगुप्तपापसतावताहै तैंनैबहोतउपावकी मिलासोहाथनरहा उद्यमकरफेरपावेगा बंधमोक्षरोगनाशशत्रुनाशहोगा कुछपुन्यकरभलाहोगा ॥ ६ ॥
१२२२ हेप्रछक तेराचितबडाउदारहै परंतुकुछप्रारब्धरेषाजोरनहींकरती धनपावताहैजातारहताहै मित्रकपटाईहोजातीहै विश्वासकिसीकामतकर एकबडीबातसेबचेहो दुखदूरहुवा सुखप्राप्तहोगा लाभहोगा गइवस्तुपावे राजसनमान सदगुरुकाध्यानकरभलाहोगा ॥ ७ ॥
२२११ हेप्रछक तेरेकूंबस्तप्राप्तहुईवहगईकरताहैसोकारजविपरजयहोजाताहै बडेकष्टसेंमिलेतोभोगनहीं कुछश्रापितदोषहै अबतेरामनलुभायाहै वस्तुप्राप्तहोकेहाणहोगीकुछमंदग्रहदेवदोषापितृशांतिकरभलाहोगा८
२१२२ हेप्रछक तुमबडेबुधवानहोपरंतुबुधचलतीनहीं पासाउलटापडताहै अबजोकारजपरअमलकरतेहोसोकाठिणहैधीरजकरो जिसेंकारजचाहतेहोवोस्वार्थीहैं विश्वासनकरो मित्राइमेंलाभनहीं मित्रमीठेबोलतेहैं विसवासदेतेहैं परंतुकपटरखतेहैं पुण्यकरभलाहोगा ॥ ९ ॥
१२१२ हेपृछक यहप्रश्नचित्तदेसुनो दिलसफाकरो संकलपविकलपक्यों करतेहोयहकारजआतुरहोगा एकपुरुसतेरेमुखमीठाबोलताहै पिछाडीबदीकरताहै । तेरामनोरथसिद्धकरनेंकोंएकउपावसुनछटाकभरअन्नघृतमिष्टान्नमिलायकरचीटियोंकोंनितप्रतिडालदियेकर लाभहोगा दुस्मननासहोगा फत्तेपावेगा ॥ १० ॥

११२१ हेप्रछक यहप्रश्ननपुंसकहै कारजआधाहोगा कुछधीरजकर एकपुरुषतुमसेंमित्राइकरकेसलाहदेताहै सोकुटिलहै तेराधनहराचाहताहै विश्वासनकर अबएकसुजनमिलेगा थोडेदिनकरूरहे दिनपंदरापीछे आनंदहोगा अभ्यागतसेवाकरभलाहोगा ॥ ११ ॥

२१११ हेप्रछक तुमबडेचतुर धीरजवंत प्रतिष्टितहो येकारजविचारासो अफलहै कपटाइकेसाथ हैरानहोगे अर्थनमिलेगा लाभछोडो वनग न करो १० दिनकठोरहे तुमघरसेचले जब अपसगुणहुवा खेती अफल वाणिजहान चोरभयरोगप्राप्ती संकाहैतो दोघडीठहरकर प्रश्नफेरपूछ संसयददूरहोगा कुछपुण्यकरभलाहोगा ॥ १२ ॥

(१२२१) हेप्रछकतेराचिततृष्णाकरकेडोलताहै औरखहोतमनसूबेकरमनलडुखाताहै धनकीउपायबहोतजानताहै ॥ लोकोमेंतेरीप्रशंसाहै परंतु उद्यमफुरतानहींकारजविपरजयहोजाताहै कुछहातसेगया एकतेरे मनसापापलगाहै जिसकीआतापहै सांतीकरभलाहोगा ॥ १३ ॥

(२२२१) हेप्रछक येप्रश्नउत्तमहै गइवस्तुमिले बंधमोक्षराजसनमान व्यापारलाभविछुटेमिले गुप्तपदार्थप्राप्ती शत्रुनाश रोगक्षय कारजअतुरसेकर ढीलनकर रातकोंस्वप्नआताहै आलसरहताहै कल्पनासतावर्तीहै कुछपुन्यकर अभ्यागतसेवाकर मलीनदेवकीछायाटलेगी पितृदोषनिवर्त्त होगा ॥ १४ ॥

(१११२) हेप्रछक यहप्रश्नलाभकारीहे व्योपारकर स्यामऔरसुपेदवस्तुचतुष्पदअन्नघृततेलसंग्रहकरलाभहोगा गईवस्तुपावेरोगनास भयनास देवकाकुछबोलबोल्यासोभूलगया राज्यसनमानजसप्राप्ती कोइअच्छीवातसुनेगा इष्टकोंयादकर दिलसफारख भलाहोगा ॥ १५ ॥

(११११) हेप्रछक येप्रश्ननेष्टहे कार्यनास्तीचोरभयराजभय रोगपीडा क्लेश उद्वेग गर्भपातदूरगमनपंथचलावे बंधप्राप्तमंदग्रहक्रूरहे ग्रहशांतीकर सुखप्राप्तहोगाआठसनीवारपीपलवृक्षपूजप्रदक्षिणादेमंत्रजप ॥

ॐनमःशिवार्यममग्रहेशांतिकुरुकुरुस्वाहाः ॥ येमंत्रजपकेनमस्कारकर-विपुलधनपावेगा ॥ १६ ॥ इति श्रीरमलप्रश्नावली सहाशिवकरण रामरतन दरक माहेश्वरी मूंडवेवाला कृत सम्पूर्ण.

अथ दंतबत्तीसीप्रश्नावली

दोहा ॥ जेतेअक्षरनरकहै तेत्रिगुणाकरलेह ॥ भागसातकादीजिये जो-तिसकहाकरेह ॥१॥ थिरयेंकी तुरतेबिहुंतिहुंतिहुंचंलणकरेह ॥ चहुंमार-गपांचैंघरेछेआवेकुसलेह ॥२॥ जो भागेभांगेमिले करैकलाहकुटेव ॥ दं-तबत्तिसीकाप्रश्नभाखतहैसहदेव ॥३॥ इतिदंतबतीसीप्रस्नसंपूर्ण ॥

अथ रामरावण प्रश्न.

कवितछपै॥रामनामसिद्धकाज सीतादुषशोकविषादं स्यामध्रम्महनुमंत फतेलछमनकरबादं ॥ लाभबभी-क्षणलहेप्रितसुग्रीवसुहासं अंगदज्वाबजरूरजीतनलनी लहुलासं ॥ क्षयरावण भयसूप्रका मेघनाददुषदानिये शिवकर्णसुपारीकरधरो कोष्टकअंकपिछानिये१इति॥
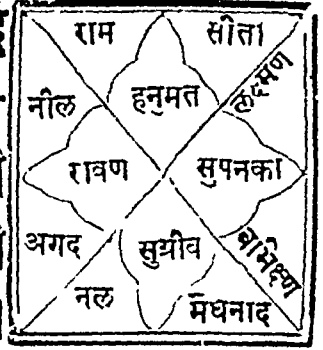
(अथचोरीमेंवस्तुगईहोयजिस्काप्रश्न) ॥जिसनक्षत्रकोंगईहोयसोनक्षत्र देखिकेफलकहो ॥ मिले तथा न मिले तथा कितनेदिनमेंमिले तथा कौणदिसागई कौणलेगया ॥ (ताका चक्रमें खुलासा देखो.)

कोष्टक

अंधे	रो	पु	उ फा	वि	पू षा	ध	रे	अंधा नक्षत्रमें गई वस्तु तुरत मिले पूरबदिसा गई. उत्तम जातिका ले गया.
मंद	मृ	श्ले	ह	अ	उ षा	श	अ	मंद नक्षत्रमें गई वस्तु दिन ३ में आवे दक्षिण दिसामें गई. वैस्य जातीका लेगया.
मध्य	आ	म	चि	ज्ये	अ	पू भा	भ	मध्यम नक्षत्रमें गई दिन ६४ में मिले पश्चिम दिसा गई. मध्यम जातीका लेगया.
सुलोचन	पु	पू फा	स्वा	मू	श्र	उ भा	कृ	नहीं मिले उत्तर दिसा गई शूद्र जातीका लेगया.

निवेदन.

ईश्वरनें यासंसारमें मनुष्ययोनी कैसीउत्तमपैदाकीहै के संपूर्णशुभ-कार्य इसीजन्ममें बनसके या योनी पश्यात् पशुपक्षी योनीमें कुछकार्य धर्ममर्यादाका नहींहोसक्ता याकारनतें किसीनें मंदिरबनाया किसीनें कूवानिवाण बगीचा पुल धर्मशाळा सुखस्थान धर्मपुरा सदाबृत भोजन-शाला अन्नक्षेत्र छबन्यात नवन्यात भंडारा ब्रह्मभोज्य यज्ञादि व कि-सीनें ब्राह्मणोंकी कन्याँवोंका व बहन भाणज्योंका विवाह इत्यादि बडे २ शुभकार्यकरिके अपना माम जाहर किया परंतु यह सब काम धन-वान लक्ष्मीपात्रोंकाहै मेंदरीद्री क्यासहसा जगउपयोगी कार्यकरसकूँ औ-र मनका बेगएसाहै जैसें (परबिनपरेवा सागरउलंघ्योचहे) पर द्रव्यतो मेरेपासनहीं और चंदरोज दुनियाँमें नामरहनेकी अभिलाषा होती है ईश्वरनें दो अक्षरका ज्ञानभी दिया तब विचाररूपी समुद्रकी तरंग-उठी के हे मनुष्य तेनें जिसजातीमेंजन्मलीया और उसजातीमें कुछ-उपकाराऽर्थ फायदानहींकीया तो जीनाँही मृतकपशुवत है यहविचार गुरुइष्टमनाय कलमउठाई तो प्रथम ज्ञातीउपकाराऽर्थ श्री इतिहास कल्पद्रुम माहेश्वरी कुलशुद्धदर्पण नामकग्रंथ वर्णन कर अपनी जातीका स्वरूप दर्पणवतही दिखादिया पर कुछेक ज्ञातीप्रबंध कायदा भी प्रका-शित हो जानेंकी आशाउत्पन्नभई और बिचारनेकी बात है के अपनी जातमें कोईप्रकारका कानूनकायदा बंदोबस्तका कायम नहीं और इसी-कारणसे अनेक प्रकारके फंदे झगड़ेरगड़े खड़े हो जाते है (देखो) बहोत-सेगाँवोंमे धड़ापड २ कर फंट पड़ रहा है व औरभीजगे पडनेकाकुछ ता-ज्जु बनहीं इस्का कारन क्याहै तोजराजानागयाके जातीमें कोई प्रकारका प्रबंधनहींओर बगेरप्रबंद्ध मनुष्य मनमुखसें जिधर बहोत आदमीजबर दस्त वा धनवान मिलगये और उन्होंनें जैसाचाहा वैसा मनमुखत्यारी-सें भला या बुरा कुछभी कामकरलिया और किसीनें नहिं मानी तो ध-

झपाड़ लिया वा नहिंमानणेंवालेकों जुदाकरदिया इसीतरहसें
श व देशांतरोंमें एकतानहिंरही (देखो) सबजातौंमें रीवाज और ५।
यदाहे और अपनी महेश्वरीज्ञातीमें कुछकायदा रीवाजकायमनहीं केव
ल जबरदस्तौंकाधौंसाहे इसवास्ते मेरीप्रार्थनाहे कि इस्का ५
वस्तहोकर कायदाकानून (जैसें) सगाई सगपण दत्तपूत्र वारि ९
दार हिस्साबंट गुरांकादापा खर्चखातेकाप्रबंध व कन्याँकाविवाह कित
नेंवर्षकीकन्याँसें कितनेंवर्षतक पूर्षकाकितनेंवर्षसें कितनेंवर्षतक इत्या
दि प्रबंद्ध बँधजाय तो ज्ञातीमें स्वच्छता प्रीती आनंदयुतबनीरहे और
किसीप्रकारका झगडा नहिंपड़े इसबारेमें फगत प्रस्न वा कुछेक बातें
जो मेरी बुद्धि व अनुभवमें आई वा धर्मशास्त्रमेंभी यथोचित वारूढी
मतसें भी शुद्धपाईगई वो वर्णनकीहै पर आप प्रियवर मित्रोंसे
यहप्रार्थनाकरताहूं के एसाकायदा बँधकर सर्वदेशीमान्य सर्वप्रबंद्ध का-
यमकर लिखभेजें तो छापकर प्रकाशितकरूं जिस्सें अपनीजातमें बंदो.
वस्त बनारहेगा तो म्हें येही एकबडासाकार्य समझलेऊँगा (क्योंकि)
इस्कीभी जातकों फायदारूपी ठंढीहवा प्रकाशितहोगा यहसबवातोंमें
देशरीवाज और कुलमर्यादामुख्यहे पर धर्मशास्त्रादिकोंकाभी जरावा-
क्यमिश्रितहोनाँउचितहै और इसग्रंथमें भूलचूकहोय वहभी कृपाकर
शूचितकरें ताके पुनरावृत्तिमें शुधारणाँकीजाय (पत्र) हमकों
इसपत्तेसें पोष्टद्वारादे अपना आशय स्पष्टाक्षरोंमें प्रकाशितकरें.

आपकाअनुचरचर्णरजवंछिक.

सहा शिवकरण रामरतनदरक
माहेश्वरी मूंडवे वाला.

श्रीरामसागर छापखाना इन्दोर.

॥ श्रीः ॥

वैश्यकुलभूषण.

व

इतिहास कल्पद्रुम माहेश्वरी कुलशुद्धदर्पणस्य.

अनुक्रमणिका.

अनुक्रमणिका.

इति वैश्यकुलभूषण व इतिहासकल्पद्रुमसमाहेश्वरी कुलशुद्धदर्पणस्य अनुक्रमणिका समाप्त।

आपका कृपाकांक्षि.

सदाशिवकरण रामरतनदरक माहेश्वरी मारवाडी मूंडवेवाला.

श्रीरामसागर छापखाना इन्दोर.